Bharatiya Bhasha Jyothi Series

भारतीय भाषा ज्योति

मराठी

HINDI - MARATHI



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Ministry of Human Resource Development, Department of Higher Education, Government of India)
Hunsur Road, Manasagangotri
Mysuru – 570 006
website: www.ciil.org

भूमिका

हिंदी भाषा-भाषियों को ध्यान में रखते हुए, हिंदी माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन और अध्यापन के लिए तैयार की गई पाठ्य सामग्रियों की शृंखला है 'भारतीय भाषा ज्योती'। इस शृंखला की पुस्तकों की रचना भारत सरकार के भारतीय भाषा संस्थान (मैसूर) तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के सहयोग से संचालित कार्यशालाओं में हुई थी। *भारतीय भाषा ज्योति : मराठी* पुस्तक इस शृंखला की एक कड़ी है।

इन पाठ्य सामग्रियों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् छात्रों से निम्नलिखित भाषिक निपुणताओं की अपेक्षा की जाती हैं:

1. मराठी भाषी द्वारा भाषा प्रयोग की विभिन्न स्थितियों में किए जानेवाले दिन-प्रतिदिन के वार्तालापों का सुनकर समझना,
2. रेडियो व टी.वी. पर प्रसारित होनेवाले समाचारों, विज्ञापनों, उद्‌घोषणाओं और अन्य कार्यक्रमों का सार ग्रहण करना,
3. कक्षा में सहपाठियों के साथ अपनी दिनचर्या के विषय में सरल वाक्यों में बातचीत करना एवं मराठी भषियों से इन विषयों पर औपचारिक तथा अनौपचारिक संदर्भों में चर्चा करना,
4. मराठी भाषा में पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सूचनापट्टों, इश्तहारों, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रकार के पत्रों आदि से संबंधित छोटे छोटे अनुच्छेदों को पढ़ना और साथ ही शब्दकोश और संदर्भ ग्रंथों का उपयोग कर पाना,
5. विभिन्न विषयों पर छोटे छोटे गद्यांश लिखना, व्यक्तिगत एवं अन्य प्रकार के पत्र लिखना तथा अपनी रुचि के परिचित तथा सरल विषयों पर निर्देशित व स्वतंत्र लेख लिखना,
6. शब्दकोश की सहायता लेते हुए मराठी से हिंदी में और हिंदी से मराठी में किसी भी गद्य सामग्री का अनुवाद करना, तथा
7. मराठी भाषा के साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों अथवा परिवेश की जानकारी प्राप्त करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य पुस्तक की रचना की गई है। भाषा के चारों कौशलों-श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन पर यहाँ समान रूप से बल दिया गया है। श्रवण और भाषण कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में वार्तालाप दिए गए हैं और उस के बाद मौखिक अभ्यास के लिए पर्याप्त सामग्री है। इसी प्रकार वाचन और लेखन कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में एक वाचन अनुच्छेद है और सात ही अभ्यास भी। यह पुस्तक कक्षा में अद्यापक की सहायता से भाषा सीखने के लिए तैयार की गई है।

मराठी लिखने के लिए देवनागरी लिपि का ही प्रयोग होता है। इस प्रकार मराठी तथा हिंदी में लिपि समान है। कुछ अक्षरों के उच्चारण में हिंदी तथा मराठी में अंतर पाया जाता है। इस के संबंध में विस्तृत विवरण 'भूमिका' के बाद दिया गया है।

इस पुस्तक के चार भाग हैं - भूमिका, मराठी उच्चारण, पाठमाला तथा शब्दसूची। पुस्तक के पाठों में भाषा संरचनाओं पर आधारित वार्तालाप तथा अभ्यास, वाचन-लेखन, अनुवाद अभ्यास तथा सरल व्याकरणिक व सांस्कृतिक बिंदुओं के विषय में पर्याप्त जानकारी दी गई है। 'शब्दसूची' में पाठों में आए मराठी शब्दों को वर्णक्रम में प्रस्तुत कर उनके अर्थ हिंदी में दिए गए हैं।

पाठों का ढाँचा इस प्रकार है -

1. वार्तालाप
2. पाठ में आए नए शब्दों के अर्थ
3. अभ्यास
4. वाचन अनुच्छेद (पढ़िए और समझिए)
5. अनुच्छेद में प्रयुक्त नए शब्दों के अर्थ
6. अनुच्छेद संबंधी अभ्यास
7. अनुवाद तथा लेखन अभ्यास
8. व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

पाठ में दिए गए वार्तालाप तथा वाचन अनुच्छेद में एक सी ही संरचनाओं का प्रयोग किया गया है। यही संरचनाएँ पाठ के शिक्षण-बिंदु हैं। अनुवाद तथा लेखन अभ्यास भी इन्हीं शिक्षण-बिंदुओं पर आधारित हैं।

पुस्तक के वार्तालापों का चयन भाषा-प्रयोग की उन सामान्य स्थितियों को लेकर किया गया है जिनका सामना हमें अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में करना पड़ता है। उदाहरण के लिए किसी परिचित के घर जाना, किसी उत्सव में सम्मिलित होना, बढ़ती-महंगाई पर चर्चा करना, किराये का मकान खोजना या मकान बनवाने के कष्टों की चर्चा करना, इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाना, किसी दर्शनीय स्थल पर घूमने जाना आदि वार्तालाप के विभिन्न विषयों को अलग ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है जिससे विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि मराठी भाषा में निवेदन कैसे करते हैं, आदेश कैसे देते हैं, मना कैसे करते हैं, नम्रता कैसे अभिव्यक्त की जाती है, हास-परिहास कैसे किया जाता है, सांत्वना कैसे दी जाती है आदि। पाठ के वार्तालाप और वाचन अनुच्छेद की विषय वस्तु में भी यथासंभव साम्य रखने का प्रयास किया गया है। वाचन अनुच्छेदों के लिए लेखन की विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया गया है। जैसे कोई अनुच्छेद वृत्तांत रूप में है तो कोई विवरणात्मक, कोई संवेदनात्मक, कोई आत्मकथा के रूप में। कहीं निबंध शैली को अपनाया गया है तो कहीं संस्मरण का सहारा लिया गया है। कहीं कहानी जैसा सरस माध्यम लिया गया है कहीं पत्र जैसा उपयोगी माध्यम।

पाठमाला में 24 पाठ हैं। इन पाठों में से 20 शिक्षण-पाठ हैं और 4 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षण पाठ 4 इकाइयों में बाँटे गए हैं। प्रत्येक इकाई में 5-5 शिक्षण पाठ हैं और एक-एक पुनर्भ्यास पाठ है। इस प्रकार इस पुस्तक में पाठ 6, 12, 18 और 24 पुनर्भ्यास पाठ हैं। शिक्षणार्थ पाठों को व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दों की संख्या व प्रकार के आधार पर स्तरीकृत किया गया है। स्तरीकरण के मूलतत्व इस प्रकार हैं।

1. परिचित से अपरिचित की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. प्रत्येक से सामान्य की ओर
4. सामान्य से तकनीकी की ओर

भाषाई संरचनाओं पर आधारित वार्तालापों का स्तरीकरण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि पाठ्य-सामग्री की स्वाभाविकता बनी रहे। अतः बाद के पाठों में सिखाए जानेवाले शिक्षण बिंदुओं से संबंध कुछ संरचनाएँ आरंभ के पाठों में आ गई हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस पाठ विशेष की विषय-वस्तु के संदर्भ में उनका उल्लेख आवश्यक था। ऐसी संरचनाओं को उस पाठ की शब्द सूची के हिस्से के रूप में दर्शाया गया है।

शिक्षण पाठों में आई हुई संरचनाएँ

प्रत्येक पाठ में आए हुए वाक्य साँचो को निम्न प्रकार से सूची-बद्ध किया जा सकता है।

पाठ नं.

1. i) अस्तिवाचक (योजक क्रियावाले) वाक्य
   माझं नाव शांता प्रकाश जोशी आहे. — मेरा नाम शांता प्रकाश जोशी है।
   ii) विधिवाचक वाक्य
   आई, तू बस. — माँ, तू (तुम) बैठ (बैठो)।

2. i) योजक क्रियावाले वाक्यों के निषेधवाचक रूप
   तो आंबेमोहोर तांदूळ नाही. — वह आंबेमोहेर चावल नहीं है।
   ii) विधिरूप के निषेधवाचक वाक्य
   तू उठ नकोस. — तू उठ मत।

3. योजक क्रियावाले वाक्यों में 'कशासाठी, कशाला' जैसे प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग
   तुला सही कशासाठी हवी आहे? — तुम्हें हस्ताक्षर किसलिए चाहिए?

4. इच्छार्थक क्रियावाले वाक्य

सर्वांची मतं घेऊया.	सब की राय लें।

5. इच्छा/बाध्यता/अनिवार्यता सूचक वाक्य

आज आपल्याला रामुकाकांच्या बागेत जायला हवं.	आज हमें रामुकाका के बगीचे में जाना चाहिए।
खूप पानं आणि फुलं गोळा करायला पाहिजेत.	बहुत सारे पत्ते और फूल इकट्ठे करना चाहिए।

6. 1 से 5 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

7. सामान्य वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य

मी बाळूचा अभ्यास घेते.	मैं बाळू को पढ़ाती हूँ।
त्याला गृहपाठ जमत नाही.	वह (स्वयं) गृहकार्य नहीं करता है।

8. अपूर्ण वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य

मी सिनेमा बघते आहे.	मैं सिनेमा देख रही हूँ।

9. 'अस' के प्रयोग, अभ्यासिक वर्तमानकाल

ती साताऱ्याला असते.	वह सातारा में (रहती) है।
मी जात असतो.	मैं जाता रहता हूँ।

10. क्रिया के साथ '-ऊन', '-ऊन-ऊन', तथा '-ता-ता' प्रत्यय लगाकर बननेवाले पूर्वकालिक कृदंतों (असमापिका क्रियारूप) का प्रयोग

तो बसून म्हणाला.	वह बैठकर बोला.
ती वाचून वाचून थकून जाते.	वह पढ़ते पढ़ते थक जाती है।
याची सगळी कामं रेडिओ ऐकता ऐकता होतात.	उसके सब काम रेडिओ सुनते सुनते होते हैं।

11. i) क्रिया के साथ '-आय + ला/साठी/पुरता/चा' और '-ताना' प्रत्यय लगाकर बननेवाले कृदंतों का प्रयोग

ती मला बसायला आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने का आग्रह करती है।
ती मला बसायसाठी आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने हेतु आग्रह करती है।
ती मला बसायपुरता आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने भर का आग्रह करती है।
तो काम करताना गाणं म्हणतो.	वह काम करते हुए गाना गाता है।

ii) प्रेरणार्थक क्रिया वाले वाक्य

(मी) आत्याकडून कविता दुरुस्त करवून घेते. (मैं) बुआ से कविता ठीक करवा लेती हूँ।

12. 7 से 11 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

13. i) सामान्य भविष्यत्कालिक क्रियावाले वाक्य
(मी) तासाभरात परत येईन. (मैं) एक घंटे में वापस आऊँगा।

ii) भविष्यत् काल के क्रियाओं के वैकल्पिक रूप
(मी) तासाभरात परत येणार आहे. (मैं) एक घंटे में वापस आनेवाला हूँ।

iii) 'अस' क्रिया के रूप के साथ '-णार' लगाकर बननेवाले संभाव्य भविष्यत् काल के रूप
मी गावाला जाणार असेन. मैं गाँव जानेवाला होऊँगा।

14. i) सामान्य भूतकालिक (अकर्मक) क्रियावाले वाक्य
काल (मी) मंडईत गेले. कल (मैं) बाजार गई।

ii) पूर्ण वर्तमानकालिक क्रियावाले वाक्य
(तो) थोडा मलूल झाला आहे. (वह) थोडा कुम्हला गया है।

15. सामान्य भूतकालिक (सकर्मक) क्रियावाले वाक्य
त्यांनी मुलांना मदत केली. उन्होंने बच्चों की मदद की।

16. i) पूर्ण भूतकालिक क्रियावाले वाक्य
परीक्षा संपली होती. परीक्षा खतम हुई थी।

ii) पूर्ण भविष्यत्कालिक क्रियावाले वाक्य
मी परत येईपर्यंत तू निघून गेला असशील. मैं वापस आने तक तुम निकल गए होंगे।

17. i) अपूर्ण भूतकालिक क्रियावाले वाक्य
वारली वेठबिगारीने काम करत होते. वारली बेगारी पर काम करते थे।

ii) अपूर्ण भविष्यत् कालिक क्रियावाले वाक्य

यापुढेही मी हेच काम करत असेन.	इसके बाद भी मैं यही काम करती रहूँगी।

18. 13 से 17 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओं का पुनरावलोकन

19. i) शर्तवाले (हेतुमद्) वाक्य

जर तू महाराष्ट्रात गेलास तर तुला खूप काही बघायला मिळेल.	यदि तुम महाराष्ट्र गए तो तुम्हें काफी कुछ देखने को मिलेगा।

ii) 'हेतुहेतुमद् भूतकालिक क्रियावाले वाक्य

अजून काही दिवस आसामात घालविता आले असते तर आणखी छान वाटलं असतं.	यदि कुछ और दिन असम में बिताता तो और भी अच्छा लगता होता।

iii) शक्यता बोधक (शक्-'सक' क्रिया वाले) वाक्य

मी जाऊ शकतो.	मैं जा सकता हूँ।

iv) चुक क्रियावाले वाक्य

मी मुंबई आणि पुण्याला जाऊन चुकलो आहे.	अरे, मैं मुंबई और पुणे जा चुका हूँ।

20. वर्तमान, भूत तथा भविष्यत् काल के अभ्यासिक क्रियावाले वाक्य

i) वर्तमान - हल्ली तुम्ही काय करत असता?
(आजकल आप क्या कर रहे हो?)

ii) भूत - आम्ही जंगलातल्या वस्तीमध्ये जायचो.
(हम जंगल की वस्तियों में जाया करते थे।)
भूत वैकल्पिक 1 - कुणी गावकऱ्यांशी गप्पा मारत असे.
(कुछ (लोग) गाँववालों के साथ बातें किया करते थे।)
भूत वैकल्पिक 2- मी जाई.
(मैं जाता था।)

iii) भविष्यत् - मी ही येत जाईन तुमच्याबरोबर.
(मैं भी तुम्हारे साथ आया करूँगा।)

21. सहायक क्रियाओं के प्रयोगवाले वाक्य

मी खूप दमून जातो.	मैं बहुत थक जाता हूँ।
मी कुठे येऊन पडलो!	मैं कहाँ आ पडा!

22. संयुक्त वाक्य

i)	मी मराठी शिकलो आणि ठरवलं की महाराष्ट्र पाहायचाच.	मैं मराठी सीखा और तय किया कि महाराष्ट्र देखना ही है।
ii)	मिश्र वाक्य यांना जितकी होतील तितकी ठिकाणं दाखविणार आहे.	इन्हें जितनी जगह दिखा सकता हूँ उतनी दिखाऊँगा।

23. कर्मवाच्य प्रयोगवाले वाक्य

आपल्याकडून हा कारभार चालवला जात आहे असे प्रत्येकाला वाटेल.	हर एक को लगेगा कि सारा राजकाज उसके द्वारा चलाया जा रहा है।

24. 19 से 23 तक के पाठों में आए हुए शिक्षण बिंदुओ का पुनरावलोकन।

पहले ही कहा जा चुका है कि हर पाठ के वार्तालाप के बाद उस वार्तालाप में आए नए शब्दों को दिया गया है। ऐसे बहुत से शब्द हैं जो मराठी भाषा में संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से आए हैं। इनमें से बहुत से शब्दों का प्रयोग हिंदी में भी होता है। इस संदर्भ में उन शब्दों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है जो रूप की दृष्टि से तो दोनों भाषाओं में समान हैं पर उनके अर्थ मराठी और हिंदी में बहुत भिन्न हैं। शब्दों के वे अर्थ पहले दिए गए हैं जो उस पाठ के संदर्भ के लिए उपयुक्त हैं। इसके पश्चात् यदि आवश्यक हुआ तो वे अर्थ भी दिए गए हैं जो सर्वाधिक प्रचलित हैं।

पाठों के अभ्यास, उन में सिखाए गए पाठ्य-बिंदुओं को ध्यान में रख कर तैयार किए गए हैं। इन अभ्यासों का उपयोग सीखे हुए बिंदुओं को दोहराने तथा परीक्षा के लिए भी किया जाएगा। नियम के अनुसार छात्र की परीक्षा उन्हीं बिंदुओं में ली जाएगी जो सिखाए जा चुके हैं। लेकिन प्रत्येक पाठ में नए वाक्य अवश्य देखने को मिल जाएँगे। सीखी हुई संरचनाओं और शब्दों की सहायता से विद्यार्थी स्वयं ऐसे वाक्य गढ़ सकता है जिनका प्रयोग सीखे गए पाठों में नहीं आया है। प्रत्येक अभ्यास में परीक्षा के लिए एक समय पर एक ही बिंदु को रखा गया है।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न भाषा संरचना और शब्दों से संबंधित हैं। कुछ प्रमुख अभ्यास इस प्रकार हैं - शब्दों का क्रम ठीक करके वाक्य बनाना, वाक्य विस्तार करना, वाक्य रूपों में परिवर्तन करना, एक ही वाक्य को विभिन्न रूपों में कहना, वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना, उचित शब्दों का चयन करना, वाक्य पूरे करना, कर्ता या कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया में उचित प्रत्यय लगाना, प्रश्नों के उत्तर देना आदि। प्रत्येक पाठ में कम से कम पाँच-छह अभ्यासों का समावेश किया गया है।

वाचन अनुच्छेद का उद्देश्य छात्र के बोधन और शब्द भण्डार को विकसित करना है। इन अनुच्छेदों के विषय में दो प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं - वस्तुनिष्ठ एवं विस्तारनिष्ठ। इन प्रश्नों से छात्र के बोधन तथा अभिव्यक्ति दोनों की ही परीक्षा हो सकेगी।

व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियों में अवश्य व्याख्या के लिए सरल और साधारण भाषा का प्रयोग किया गया है। प्रयास यही रहा है कि क्लिष्ट तकनीकी शब्दावली का कम से कम प्रयोग किया जाए। छात्र को चाहिए कि वह व्याकरणिक संरचनाओं का अच्छी तरह अभ्यास कर उन्हें पूरी तरह हृदयंगम कर ले। इससे व्याकरण के नियमों को समझना सरल हो जाएगा।

पुस्तक का अंतिम खंड है - शब्दसूची। पाठों में प्रयुक्त शब्दों की सूची वर्णमाला के क्रम में दी गई है। ध्यान देने की बात यह है कि इसमें शब्दों के मूल रूप अर्थात् कोशीय रूप को ही स्थान दिया गया है। संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों का मूल रूप ही दिया गया है, न कि उनके रूपांतरित रूप। जैसे 'घराचं' (घर का), 'घरात' (घर में) 'घरापासून' (घर से) आदि रूप न देकर केवल 'घर' शब्द को ही सूची में दिया गया है। इसी तरह क्रियाओं के भी मूल रूपों को ही सूची में स्थान दिया गया है, काल और वृत्ति के अनुसार क्रिया के विभिन्न रूपों को नहीं। जैसे- यहाँ केवल 'करणें' (करना) रूप को ही रखा गया है। इससे बने करतो (करता हूँ, करते हैं) करतोस, करतेस (करते हो, करती हो), करता (करते हैं), करतो (कर रहा है), करते (कर रही है), करतात (कर रहे हैं, कर रहीं हैं) आदि रूपों को नहीं दिया है।

शब्दसूची में मराठी शब्दों के दाहिनी तरफ उन शब्दों के हिंदी अर्थ दिए गए हैं। दोनों के बीच में उन पाठों की क्रम संख्याएँ भी दी गई हैं, जिनमें वे शब्द प्रयुक्त हुए हैं। चूंकि प्रत्येक पाठ में दो दो शब्द सूचियाँ हैं; अतः पाठ के वार्तालाप में आए हुए शब्दों को संख्या के बाद 'क' और वाचन अनुच्छेद के शब्दों को 'ख' रूप में दिखाया गया है। उदाहरण के लिए 'आई' शब्द के सामने 1(क) लिखा हुआ है। इसका अर्थ है यह शब्द प्रथम पाठ के वार्तालाप में प्रयुक्त हुआ है। 'आजार' (बीमारी) शब्द की दाहिनी तरफ 14 (ख) दिया गया है। इसका अर्थ है यह शब्द चौदहवे पाठ के वाचन अनुच्छेद में है। इनके अलावा प्रत्येक शब्द की व्याकरणिक कोटी तथा उसका लिंग भी दिखाया गया है।

शब्दसूची के बाद मराठी गिनती 'एक' से 'सौ' तक और आगे सौ से परार्धतक संख्या में तथा शब्दों में दी गई है।

इस पुस्तक को कक्षा में पढ़ानेवाले अध्यापकों से दो तीन बातें कहना ज़रूरी है। किसी भी भाषा को पढ़ाने के लिए कोई भी एक तरीका ऐसा नहीं है जो पूरी तरह समर्थ हो या अपने आप में पूर्ण हो। विशेष रूप से द्वितीय भाषा पढाने के संदर्भ में यह बात शत प्रतिशत सत्य है। द्वितीय भाषा सीखने के लिए विद्यार्थी को कक्षा के भीतर और बाहर एक-जैसा ही प्रयास करना होगा। विद्यार्थी सीखी गई संरचनाओं और शब्दों को जितना अधिक दोहराएगा, उनका जितना अधिक प्रयोग करेगा, उतना ही उसके उच्चारण और बोधन में सुधार होगा। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सिखाई गई संरचनाओं तथा मराठी शब्दों के अभ्यास के लिए कक्षा में उचित वातावरण तैयार करें। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा को उसके परिवेश में रखकर ही सीखना और सीखना चाहिए। इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सरल भी होगी और स्वाभाविक भी।

सिखाई गई संरचनाओं और शब्दों का पर्याप्त अभ्यास करवा लेने के बाद शिक्षक को चाहिए कि वह पूरे पाठ को ऊँचे स्वर में पढ़ें। शिक्षक का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए। अभिव्यक्ति के अनुसार उसके स्वर में उचित उतार-चढ़ाव भी होना चाहिए। पाठ का पहला वाचन धीमी गति से किया जाए जिससे विद्यार्थी प्रत्येक ध्वनि, शब्द और वाक्य को स्पष्ट रूप से सुन सकें। इसके पश्चात् पाठ को भाषा की स्वाभाविक गति के अनुसार पढ़ना चाहिए। फिर अपने साथ विद्यार्थियों को भी सामूहिक रूप में पाठ को दोहराने के लिए कहना चाहिए। तत्पश्चात् बोधन संबंधी प्रश्न पूछे जाएँ। यदि विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर देने में कठिनाई हो तो शिक्षक उनकी मदद करें। इतने अभ्यास के बाद विद्यार्थी स्वतः उस पाठ का वाचन कर पाएगा और समझ सकेगा। यदि छात्र के उच्चारण में कोई त्रुटि हो तो शिक्षक उस त्रुटि को दोहराए बिना सही रूप का परिचय दें। इस अभ्यास के पश्चात् भी विद्यार्थियों के मन में यदि कोई संदेह या प्रश्न रह जाए तो शिक्षक उसका निवारण करें। हमारे विद्यार्थी वयस्क भी हो सकते हैं, अतः बार बार दोहराने में उन्हें हिचक भी हो सकती है और उनके लिए यह अभ्यास अरुचिकर भी हो सकता है। ऐसी अवस्था में शिक्षक अपनी सुविधानुसार व्यक्तिगत रूप से उनकी सहायता करें। सांस्कृतिक और व्याकरणिक टिप्पणियों को कक्षा में न पढ़वा कर, घर में पढ़ने के लिए कहें। उस के बाद विद्यार्थियों के संशयों का निवारण कक्षा में कर सकते हैं।

छात्रों से वाचन अनुच्छेदों को मौन रूप से पढ़ने के लिए भी कहें। अनुच्छेद के विषय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वतः देने का प्रयास करें। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक की मदद लें। शिक्षक छात्र को इतना समय अवश्य दें कि वह पूरे अनुच्छेद को मौन रूप से 2-3 बार पढ़ सकें। इसके पश्चात् यदि समय रहे तो प्रत्येक छात्र से बारी बारी से उस अनुच्छेद को ऊँचे स्तर में पढ़ने के लिए कहें। ध्यान रहे कि कक्षा समाप्त होने से पहले अंतिम वाचन शिक्षक द्वारा ही किया जाए जिससे छात्र के कानों में सही उच्चारण दर्ज होता रहे।

अनुवाद और लेखन का अभ्यास छात्र को गृहकार्य के रूप में दिया जाए। शिक्षक सावधानी पूर्वक जाँच करें और छात्र के संदेह और समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा कर उनका निदान करें।

कुछ पाठों में मराठी भाषा के प्रचलित मुहावरों व कहावतों का प्रयोग हुआ है। यदि हिंदी में भी उसी तरह के मुहावरे हों तो शिक्षक उनका सहारा लेते हुए अर्थ स्पष्ट करें। यदि हिंदी में ऐसे मुहावरे न हों तो शिक्षक विभिन्न वाक्यों में उनका प्रयोग करके उन के अर्थ स्पष्ट करें।

प्रत्येक पाठ के वार्तालाप में सभी वाक्यों का हिंदी अनुवाद दिया गया है। अनुवाद करते समय इस बाद का ध्यान रखा गया है कि हिंदी भाषा की अपनी प्रकृति बनी रहे। पर कहीं कहीं हिंदी में कुछ वाक्य बनावटी या अस्वाभाविक लग सकते हैं। मराठी भाषा की कुछ विशेष संरचनाओं के प्रयोग देने के प्रयत्न में ऐसा हो गया है। अनुवाद केवल इसलिए दिया गया है जिससे छात्र अर्थ समझ सकें। अनुवाद का प्रयोग मराठी भाषा सीखने के लिए न किया जाए। भाषा केवल संरचनाओं व शब्दों के अभ्यास द्वारा ही सीखी जा सकती है। हिंदी अनुच्छेद का मराठी भाषा में अनुवाद करते समय छात्र यही प्रयास करें कि उसका अनुवाद मराठी भाषा की संरचना में हो, हिंदी की संरचना में नहीं। वाचन अनुच्छेदों के हिंदी अनुवाद नहीं दिए गए हैं।

ऐसा इसलिए किया गया है जिससे छात्र मराठी भाषा को उसी भाषा के माध्यम से ही समझने का प्रयास करें और स्वयं उसका हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास करें।

भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए मराठी भाषा के परिवेश का अनुभव तथा मराठी भाषा भाषियों से संपर्क स्थापित करना महत्त्वपूर्ण है। ऐसा प्रयास किया जाए कि छात्रों को मराठी भाषा-भाषियों के संपर्क में आने तथा संबंधित भाषा के गीत, कविताएँ, वार्तालाप, भाषण आदि सुनने का अवसर मिल सकें। साथ ही छात्रों को महाराष्ट्र के महान साहित्यकारों, नेताओं तथा अन्य विभूतियों के चित्र भी दिखाए जाएँ। यदि उपलब्ध हो सकें तो महाराष्ट्र के हस्तशिल्प के नमूनों से कक्षा को सजाया जाए। संभव हो तो कक्षा में महाराष्ट्र के प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व के चित्र लगाए जाएँ तथा वहाँ की विभिन्न ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का ऑडियो-वीडियो माध्यम से भी परिचय कराया जाए।

वार्तालाप, वाचन अनुच्छेद तथा अनुवादों के लिए अनुच्छेदों का लेखन करते हुए भी यह प्रयास किया गया है कि इनके द्वारा महाराष्ट्र के जीवन, कला, संस्कृति तथा इतिहास का परिचय छात्रों को हो।

इस पाठ्यक्रम के पश्चात् छात्रों से जो भाषिक निपुणतओं की अपेक्षाएँ की गई हैं उनका विवरण पहले ही दिया जा चुका है। वास्तव में शिक्षार्थियोंने इस पुस्तक से कितना सीखा है वह इस पुस्तक की कसौटी भी है और मूल्यांकन भी। यह प्रयास प्रायोगिक है। इसमें शिक्षकों एवं छात्रों की व्यावहारिक समस्याओं के आधार पर सुधार की बहुत सी संभावनाएँ हैं। इस दिशा में सकारात्मक सुझावों का स्वागत है।

मेरी बात अधूरी रह जाएगी यदि मैं भारतीय भाषा संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. (डॉ.) ई. अण्णामलै तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के पूर्व भाषा-परामर्शी प्रो. (डॉ.) गाविंद शर्मा रजनीश के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट न करूँ क्योंकि भारती भाषा ज्योति शृंखला की पुस्तकों का संकल्पन, रूपांकन तथा संपादन करने तथा कार्यशालाओं के संचालन का चुनौती पूर्ण उत्तरदायित्व इन्हीं महानुभावों द्वारा मुझे सौंपा गया था। भारतीय भाषा ज्योति शृंखला की पुस्तकों का निर्माण काफ़ी पहले हो गया था; पर यह बहुमूल्य सामग्री बरसों तक प्रकाशन की प्रतीक्षा करती रही। संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. (डॉ.) ओंकार नाथ कौल तथा संस्थान के वर्तमान निदेशक प्रो.(डॉ.) उदय नारायण सिंह के प्रयासों से ही इन पुस्तकों को प्रकाश की किरण देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। इन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ। विशेष रूप से प्रो. सिंह ने हिंदी के माध्यम से तैयार की गई 'भारतीय भाषा ज्योति' की शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन में बहुत दिलचस्पी ली है। इस शृंखला को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

पुस्तक निर्माण कार्यशाला में प्रो.(डॉ.)के.एस. राज्यश्री, डॉ. मधुसूदन गोखले, तथा श्रीमती. शालिनी लोनसाने का अत्यंत रचनात्मक योगदान रहा। इनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। कार्यशाला में हिंदी विशेषज्ञ के रूप में डॉ. वीरभद्र मिश्र तथा कुमारी. रेखा शर्मा की प्रतिभागिता के लिए मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

उक्त कार्यशाला के उपरांत आयोजित पुनरीक्षण-कार्यशाला में संशोधन, परिवर्धन, पुनर्लेखन आदि का कार्य तत्परता से संपन्न कर सामग्री को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए

डॉ.एच.एल. बछोतिया, श्रीमती. अपर्णा मोहिले तथा श्री. गौतम केदार ब्रह्मे के अमूल्य योगदान के लिए उनके प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रथम कार्यशाला के बाद पुस्तक की पांडुलिपि पढ़ कर रचनात्मक सुझाव देने के लिए मैं डॉ.आई.एस. बोरकर का भी आभारी हूँ।

मैं श्रीमती अनिता बदरिनाथ को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने अतीव ध्यान तथा लगन से इस पुस्तक के डी.टी.पी. का काम किया है। हमारे संस्थान के पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ.सी.आर. सुलोचना, तथा उपाध्यक्ष डॉ.बी.ए. शारदा, डॉ.आर. सुमनकुमारी और कॉटलोगर मीर निस्सार हुसैन, कंप्यूटर केंद्र के प्रो.(ड़ॉ). साम् मोहन लाल तथा उन के सहकर्मी, कलाकार श्री.ह. मनोहर, हमारे मुद्रणालय के प्रबंधक श्री.एस.बी. बिश्वास तथा उनके सहयोगी तथा प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष प्रो.(डॉ). रामसामी तथा उन के सहयोगी श्री.आर. नंदीश, इन सब का भी मैं यहाँ कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करती हूँ। संस्थान के पाठ्य सामग्री निर्माण केंद्र के मेरे सहकर्मी श्री.एस्.एस. यदुराजन, डॉ.बी. मल्लिकार्जुन, श्रीमती. टी.वी. वाणी तथा कुमारी सुधा फाटक की सहकारिता भी अविस्मरणीय है। उसी प्रकार हमारे लेखा विभाग के मुख्य श्री.बी.जी. मंजुनाथ, और उन के सहकर्मी श्री.एन. यतिराजु तथा श्री.एस. राजु भी कार्यशालाओं के संचालन में मेरी बहुत मदद की है और मेरे धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं अपने पति प्रो.के.वी. श्रीनिवासन के प्रति मेरी अपार कृतज्ञता यहाँ प्रकट करती हूँ जिन्होंने महीनों तक चलनेवाली मेरी कार्यशालाओं के संचालन में महत्वपूर्ण शैक्षणिक तथा सामयिक सहकारिता दी है। छुट्टि के दिनों तथा ऑफिस समय के बाहर भी घंटों तक घर की चिंता न कर के *'भारतीय भाषा ज्योति'* शृंखला की पुस्तकों के निर्माण में मग्न होना मुझे उन की ही मदद से कार्यसाध्य हुआ है।

उन सभी छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति मैं अग्रिम रूप से अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जो इस सामग्री का उपयोग करेंगे एवं इस के विषय में अपने विचार तथा प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएँगे।

मैसूर
15/5/2005

बी. श्यामला कुमारी
प्रो. एवं उपनिदेशक
भारतीय भाषा संस्थान

प्राक्कथन

सदियों से भारत में बहुभाषिकता का प्रचलन रहा है -- यह बात अब सर्वजनविदित है। वाणिज्य और अर्थ-व्यवस्था की दृष्टि से जो देश बहुत आगे बढ़ गए हैं ऐसे देशों के निवासियों के लिए भारत की बहुभाषिकता अभी भी पहेली जैसी ही है। उनके देशों में अनेक नस्ल के लोग अपने गीत-संगीत, खाना-खजाना, वेश-आभूषण तथा रहन-सहन को लेकर आते रहे हैं, पर कुछ ही समय में उनका अपनत्व विलीन हो जाता है। अतः उनके लिए भारत में एक साथ अनेक भाषाओं का इस क़दर सदियों से कथित, पठित, प्रस्फुटित रह पाना एक अजीबो-ग़रीब मिसाल जैसा है जिसकी व्याख्या दे पाना मुश्किल काम है। पर किसी भारतीय की रोज़मर्रे की ज़िन्दगी की ओर अगर हम ग़ौर करें तो यह देखेंगे कि वह एक ही साथ प्रतिदिन अलग अलग काम में पृथक् पृथक् परिस्थितियों में भिन्न भिन्न भाषा का प्रयोग करता है। अगर हम देखते हैं कि कोई चाय के बगीचे में मज़दूरों के साथ बिहारी बोलियों में, उनके संचालकों के साथ असमिया में, दफ्तर में अंग्रेज़ी में और मनोरंजन के लिए फिल्म तथा टी.वी. में हिंदी का व्यवहार करता है और घर में अपने लोगों के साथ बंगला में बात करता है तो हमें ऐसी स्थिति में कोई अस्वाभाविकता नज़र नहीं आती है। यहाँ न केवल व्यक्ति बहुभाषी है, भाषिक स्थितियों में भी बहुभाषिकता ग्रथित है। वह तभी संभव हो सकता है जब किसी मुल्क में भाषाएँ जोड़ने का काम करती हैं, तोड़ने का नहीं। लोग अक्सर यह भूल जाते हैं कि भारत में आए, बसे और जन्मे हज़ारों क्षेत्र के लोगों के लिए उनकी भाषाएँ ही वह साधन रही हैं जो एक दूसरे को आपस में जोड़ती रही हैं।

भारतीय भाषा संस्थान इसी भाषिक संयोग को, आदान-प्रदान को बर्क़रार रखने में और इसमें और इज़ाफा करने के काम में अपने को समर्पित करता आया है। आधुनिक भारतीय भाषाओं के शिक्षण-प्रशिक्षण का क्षेत्र इस संस्थान के लिए सब से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। यहाँ से प्रकाशित पाँच सौ पचास के क़रीब किताबों में से आधी से ज़्यादा भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में ही हो रही हैं।

जैसा कि भारतीय भाषा के अध्ययन-अध्यापन से जुड़े लोगों को पता ही है, 1969 में स्थापित होने के बाद से *भारतीय भाषा संस्थान* का मुख्य उद्देश्य रहा है सभी भारतीय भाषाओं का विकास करना एवं उनमें आवश्यकतानुसार पाठ्य-सामग्री तैयार करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुख्य भारतीय भाषाओं के अलावा बहुत सी जनजातीय भाषाओं पर भी शोध हो रहा है और उनमें पाठ्य-सामग्री तैयार की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत भारतीय भाषा संस्थान के मैसूर, पूणे, भुवनेश्वर, पाटियाला, सोलन, लखनऊ एवं गुवाहाटी में स्थित क्षेत्रीय भाषा केंद्रों के माध्यम से प्रति वर्ष जुलाई से अप्रैल तक भारत के विभिन्न राज्यों के अध्यापकों को उनकी इच्छानुसार अथवा संबंधित राज्य की भाषा प्रणाली के अंतर्गत वांछित भाषाओं में दस मास का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण के उपरांत ये अध्यापक सीखी गई भाषा को संबंधित राज्यों के विद्यालयों में पाठ्यक्रम के अंतर्गत अथवा ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाते हैं।

पर अब तक द्वितीय भाषा शिक्षण की जितनी अच्छी किताबें आती रही हैं -- खास तौर पर भारतीय भाषाओं के सीखने सिखाने की किताबें -- वे सभी अंग्रेज़ी के माध्यम से ही रची-बनी छपी-छपाई गई हैं। उनके रचयिता और प्रकाशक शायद सोचते हैं कि अंग्रेज़ी के माध्यम को अपनाने से द्वितीय भाषा शिक्षण और विदेशी भाषा शिक्षण दोनों के लिए उनकी किताबें प्रयोग में आ सकती हैं। सोचा होगा कि इस तरह से ऐसी किताबें बाज़ार में खरी उतरेंगी। लेकिन दक्षिण एशियाई देशों में बसे और यहाँ के किसी न किसी भाषा को मातृभाषा के रूप में बोलने वालों के लिए किसी भारतीय भाषा को सीखना और इसके दायरे के बाहर के लोगों के लिए हमारी भाषाओं पर अधिकार प्राप्त करना दो बिलकुल अलग शिक्षण-प्रक्रियाएँ हैं। अतः इन दोनों लक्ष्य-गोष्ठियों के लिए दो अलग तरह की सामग्री की आवश्यकता है। एक

और कदम आगे जा कर अपने लंबे तजुर्बे से मैं यह भी कह सकता हूँ कि अगर किसी भारतीय को एक अन्य भारतीय भाषा सीखनी-सिखानी है तो वह काम अगर एक भारतीय भाषा के ज़रिये ही अच्छी तरह की जा सकती है। उस लिहाज़ से माध्यम भाषा के रूप में हिंदी का नाम आना स्वाभाविक है कारण इसको मातृ-भाषा तथा अन्य-भाषा के रूप में बोलने-जाननेवाले भारतीय लोगों की संख्या इतनी बड़ी है कि भारतीय संदर्भ में हिंदी के माध्यम से अन्य अनुसूचित भाषाओं को सिखाने की वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत सामग्री अब तक क्यों नहीं आयी थी, यही एक आश्चर्य-जनक बात है। इस कमी की आपूर्ति के लिए और इन ज़रूरतों को देखते हुए भारतीय भाषा संस्थान ने 'भारतीय भाषा ज्योति' की एक पुस्तक-शृंखला की संकल्पना की है। यह मराठी पुस्तक उस शृंखला की एक कड़ी है।

त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत हिंदी भाषी राज्यों में अन्य भारतीय भाषाओं का तीसरी भाषा के रूप में प्रचलन तो अवश्य हुआ है परंतु भाषा अध्यापकों एवं पुस्तकों की कमी होने के कारण वांछित सफलता नहीं मिल पाई। अन्य भारतीय भाषाओं एवं विशेष रूप से दक्षिण भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार एवं कुछ स्वायत्त संस्थाओं ने एक अभियान कुछ वर्ष पहले प्रारंभ किया था। चयनित भाषाओं की वांछित पुस्तक एवं भाषा अध्यापकों के विशिष्ट प्रशिक्षण एवं नियुक्ति हेतु राज्य सरकार ने *भारतीय भाषा संस्थान* का सहयोग आवश्यक समझा। इसी सहयोग की कड़ी में उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार के अनुरोध पर *भारतीय भाषा संस्थान* ने राज्य के भाषा विभाग के साथ मिलकर असमिया, बंगला, ओड़िया, मराठी, गुजराती, सिंधी, कश्मीरी, पंजाबी, कन्नड़, मलयाळम, तमिल एवं तेलुगु भाषाओं की पाठ्यसामग्री के निर्माण हेतु कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं के माध्यम से इन सभी भाषाओं की पाठ्य पुस्तकें तैयार की गई थीं। ये पुस्तकें 'भारतीय भाषा ज्योति' पुस्तक-श्रृंखला के अंतर्गत आ रही हैं। हरिद्वार के ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के अनुरोध पर उन के ही सहयोग में *कन्नड़, मलयाळम, तमिल* तथा *तेलुगु* पुस्तकों का मुद्रण तथा प्रकाशन हुआ है। इतिमध्य जम्मू के डोग्री संस्था की प्रार्थना के अनुसार उन के सहयोग में *डोग्री* पुस्तक का निर्माण तथा प्रकाशन भी हुआ है और कश्मीर के बाहर रहनेवाले कश्मीरिओं के अनुरोध पर *कश्मीरी* पुस्तक का प्रकाशन हमारे संस्थान ने किया है। *भारतीय भाषा ज्योति सिंधी* पुस्तक का प्रकाशन भी गुजरात के कच्छ के इंडियन इनस्टिट्यूट ऑफ सिंधोलजी के साथ हमारा संस्थान करनेवाला है। बाकी छह पुसतकों *असमिया, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी* तथा *ओड़िआ* का प्रकाशन अब हो रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि *भारतीय भाषा ज्योति* शृंखला की यह मराठी पुस्तक समस्त हिंदी भाषा-भाषियों के लिए उपयोगी होगी। इसके माध्यम से वे न केवल संबंधित भाषा के अध्ययन में रुचि का परिचय लेंगे, अपितु उसके प्रचार एवं प्रसार में भी अपना अमूल्य योगदान देंगे।

मैसूर — उदय नारायण सिंह

15/5/2005 — निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान

मराठी लिपि तथा उच्चारण

मराठी तथा हिंदी भाषाओं की लिपि एकही है और वह है 'देवनागरी'। लेकिन मराठी वर्णमाला में एक विशेष अक्षर है 'ळ' जो हिंदी में नहीं है। मराठी में 'ळ' का उच्चारण मूर्धन्य पार्श्विक होता है। हिंदी के 'ड़, ढ़, फ़' जैसे अक्षरों का प्रयोग मराठी में नहीं है। 'मराठी वर्णमाला' नीचे दी गई है।

स्वर	-	अ	आ	इ	ई	
		उ	ऊ	(ऋ)	(लृ)	
		ए	ऐ	ओ	औ	
		अं	अः			
व्यंजन	-	क	ख	ग	घ	ङ
		च	छ	ज	झ	ञ
		ट	ठ	ड	ढ	ण
		त	थ	द	ध	न
		प	फ	ब	भ	म
		य	र	ल	व	श
		ष	स	ह	ळ	
			(क्ष)	(ज्ञ)		

ध्यान दीजिए कि, परंपरागत मराठी वर्णमाला में 14 स्वर गिने जाते हैं। लेकिन उच्चारण के अनुसार '(ऋ)', '(लृ)', '(अं)', '(अः)' स्वर नहीं हैं। मराठी में 'ऋ' का उच्चारण 'रु' होता है उदाहरण: ऋतु-रुतु, कृष्ण-क्रुष्ण आदि और 'लृ' का उच्चारण 'लु' होता है। 'लृ' मराठी में केवल 'क्लृप्त' शब्द में प्रयुक्त होता है और उसका उच्चारण 'क्लिप्त' होता है।

मराठी में हिंदी के समान ही जब शब्दों के अंतमें व्यंजन अंतर्निहित ऱ्हस्व 'अ' से लिखे जाते हैं तब उन ध्वनियों के उच्चारण स्वतंत्र व्यंजन जैसे ही होते हैं और उनके साथ शुद्ध व्यंजन का चिह्न-हलंत के चिह्न (्) का प्रयोग नहीं होता है। उदाहरण: घर, कपाट, पान, जवळ, पाऊस आदि।

लेकिन मराठी में कुछ संदर्भों में अंतर्निहित स्वर का उच्चारण होता है। उसे दिखाने के लिए उस अक्षर पर शिरोबिंदु लगाते हैं। इसे अनुस्वार नहीं समझना चाहिए। इसका उच्चारण ऱ्हस्व 'अ' का है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	घरं	घरऽ
	डोकं	डोकऽ

पानं	पानऽ
गावं	गावऽ
फुलं	फुलऽ

अकारांत शब्दों के सिवाय अन्य शब्दों में उपांत्य अक्षर यदि अंतर्निहित 'अ' युक्त होता है तो भी उसका उच्चारण अपूर्ण और शुद्ध व्यंजन जैसा ही होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	नकटा	नक्टा
	पोचले	पोच्ले
	बोलणी	बोल्णी

चार अक्षरी शब्दों के दूसरे अक्षर में होनेवाले अंतर्निहित 'अ' का उच्चारण भी अपूर्ण और शुद्ध व्यंजन जैसा ही होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	करवत	कर्वत
	सरकार	सर्कार
	चालवत	चाल्वत

संयुक्ताक्षर, अनुस्वार और विसर्ग के बाद आनेवाले 'अ' का उच्चारण मराठी में होता है लेकिन उन व्यंजनों पर शिरोबिंदु नहीं देते हैं।

उदाहरण: डिंक, चिंच, दुःख

अनुस्वार के बाद यदि पहले पाँच वर्गों में से एक व्यंजन आता है तो उसका उच्चारण मराठी में उस व्यंजन के वर्ग के अंत में आनेवाले नासिक्य ध्वनि जैसा (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) - पंचम वर्ण जैसा होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	शंकर	शङ्कर
	चंचल	चञ्चल
	कुंज	कुञ्ज
	घंटा	घण्टा
	भिंत	भिन्त
	शिंप	शिम्प

अनुस्वार के बाद 'य' आता है तो उसके पूर्व का स्वर अनुनासिक बन जाता है और 'य' का द्वित्व होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	संयम	सँय्यम

अनुस्वार के बाद 'ल' आता है तो उसके पूर्व का स्वर अनुनासिक बन जाता है और 'ल' का द्वित्व होता है अथवा 'ल' के साथ 'व' का उच्चारण होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	संलग्न	सँल्लग्न या सँव्लग्न

अनुस्वार के बाद 'र', 'श', 'स', 'ह' और '(ज्ञ)' (संयुक्त व्यंजन ध्वनि) इनमें से कोई अक्षर आता है तो उसके पूर्व का स्वर अनुनासिक बन जाता है और व्यंजन 'व' भी जोडा जाता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	संरक्षण	सँव्रक्षण
	संरचना	सँव्रचना
	संशय	सँव्शय
	संसार	सँव्सार
	संस्कृत	सँव्स्कृत
	हंस	हँव्स
	सिंह	सिँव्ह
	संज्ञा	सँव्ज्ञा

मराठी में विसर्ग (:) का उच्चारण उसके पहले आनेवाले स्वर के साथ 'ह्' कार युक्त होता है और कहीं यह विसर्ग पूर्ववर्ति व्यंजन ध्वनि के द्वित्व का द्योतक भी होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	अंतःकरण	अंतह्करण
	मनःचक्षू	मनह्चक्षू
	पुनः	पुनह्
	दुःख	दख्ख

वर्तमान काल के मराठी में अंग्रेजी से 'ॲ' और 'ऑ' इन दो स्वरों को भी स्वीकृत किया है और उन्हें 'ॅ' और 'ॉ' चिह्नों से दिखाते है। इन स्वरों के साथ मराठी में आनेवाले शब्द केवल अंग्रेजी के ही हैं। उदाहरण: कॅप, बॅट, कॉल, बॉल, डॉक्टर, टॉवेल आदि।

मराठी के 'च, छ, ज, झ' के दो-दो उच्चारण होते हैं। एक उच्चारण में तालव्य ध्वनियाँ हैं और दूसरे उच्चारण में दंत्यतालव्य ध्वनियाँ हैं।

तालव्य			**दंत्यतालव्य**		
शब्द	*उच्चारण*	*अर्थ*	*शब्द*	*उच्चारण*	*अर्थ*
चार	चार	गिनती	चार	त्सार	चराना
चाट	चाट	चाँटा	चाट	त्साट	चाटना
जड	जड	अचेतन	जड	द्सड	भारी वजन
जळ	जळ	पानी	जळ	द्सळ	जल जाना
जप	जप	भगवान का नामस्मरण	जप	द्सप	संभालना

वैसे 'इ, ए, ऐ' के ठीक पूर्व आने पर 'च, छ, ज, झ' का उच्चारण हिंदी के समान ही होता है लेकिन 'उ, ओ, औ' के पूर्व वे सदा दंत्यतालव्य होते हैं।

मराठी में संयुक्ताक्षर पढते समय पूर्व व्यंजन पर जोर नहीं दिया जाता है। केवल जो शब्द संस्कृत से आए हैं और उसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं (तत्सम) ऐसे शब्दों में पूर्व व्यंजन पर जोर देते हैं।

उदाहरण: पुणे + या चा = पुण्याचा = पुण्य का (इस शब्द में 'ण्य' संयुक्त ध्वनि के उच्चारण में 'ण्' पर जोर दिया जाता है।)
काावा + आ = काव्या (इस शब्द में 'व्य' संयुक्त ध्वनि के उच्चारण में 'व्' पर जोर नहीं दिया जाता है।)
काव्य (कविता) (काव्य) + आ = काव्या (इस शब्द में 'व्य' संयुक्त ध्वनि के उच्चारण में 'व' पर जोर दिया जाता है।)

मराठी में 'र' जब संयुक्ताक्षर में आता है तब हिंदी के तीन रूपों के अतिरिक्त उसका और एक रूप भी होता है।

उदाहरण:
1) सूर्य = र + य = ʿ
2) ट्रक = ट + र = ^
3) ग्रह = ग + र = ⸝
4) तऱ्हा = र + ह = ˉ

सुऱ्याचा = छुरे का
सूर्याचा = सूरज का

ऊपर दिए गए उदाहरण 1, 2, 3 में 'र' के तीन रूप हिंदी और मराठी में यथावत लिखे जाते हैं। जब कि उदाहरण 4 में व्यवहृत रूप मराठी की निजी विशेषता है।

'ज्ञ' का उच्चारण मराठी में हिंदी से अलग होता है। मराठी में यह 'द् + न् + य = ज्ञ' होता है मगर हिंदी में यह 'ग्य' रूप में उच्चारित होता है।

उदाहरण:	*शब्द*	*उच्चारण*
	ज्ञान	दन्यान
	ज्ञानविज्ञान	द्न्यानविद्न्यान

ज्ञानेश्वर	द्न्यानेश्वर
अज्ञान	अद्न्यान

मराठी में पूर्ण विराम खडी पाई न होकर एक बिंदू (.) के रूप में होता है।

धडा 1
पाठ

ओळख

प्रकाश : आई, जरा इकडे ये.
आई : काय बाळ?
प्रकाश : हे बघ, हे माझे मित्र उमेश शर्मा आहेत.
उमेश : नमस्कार मावशी.
आई : नमस्कार. बसा, अहो, हे बघा प्रकाशचे मित्र उमेश शर्मा.
प्रकाश : आई तू बस न.
बाबा : बसा, बसा. नमस्कार, तुम्ही शर्मा म्हणजे दिल्लीचे का?
उमेश : नाही, मी अलाहाबादचा.
बाबा : वा! वा! तीर्थक्षेत्र आहे ते! त्रिवेणी संगम!
उमेश : तुमचं मूळ गाव कोणतं? पुणंच का?
आई : नाही, आम्ही कोल्हापूरचे. तेही तीर्थक्षेत्र आहे.
शांता : आजोबा, आजोबा, ही पहा, माझ ी नवी बाहुली!
उमेश : ही कोण छोटुकली?
बाबा : ही माझी नात. वा! छान आहे तुझ ी बाहुली.
उमेश : तुझं नाव काय बाळ?
शांता : शांता
बाबा : अगं पूर्ण नाव सांग.
शांता : माझं नाव शांता प्रकाश जोशी आहे.
उमेश : आणि तुझ्या बाहुलीचं नाव काय?
शांता : गीता, अं हं! माझ्या बाहुलीचं नाव गीता आहे.
उमेश : शाब्बास, हा घे खाऊ.

परिचय

प्रकाश : माँ. जरा यहाँ आओ।
माँ : क्या (है) बेटा?
प्रकाश : ये देखो, ये मेरे मित्र उमेश शर्मा हैं।
उमेश : नमस्ते मौसी।
माँ : नमस्कार। बैठिए अजी देखिए, ये हैं प्रकाश के मित्र उमेश शर्मा।
प्रकाश : माँ, तुम बैठो न!
बाबा : बैठिए, बैठिए। नमस्कार, आप शर्मा! मतलब दिल्ली के हैं क्या?
उमेश : नहीं, मैं इलाहाबाद का हूँ।
बाबा : बहुत खूब! तीर्थस्थान है वह तो! त्रिवेणी संगम है।
उमेश : आपका जन्म स्थान कौन सा है? पुणे ही क्या?
माँ : नहीं, हम कोल्हापूर के हैं। वह भी तीर्थस्थान है।
शांता : दादाजी, दादाजी, यह देखिए, मेरी नई गुड़िया!
उमेश : यह छुटकी कौन है?
बाबा : यह मेरी पोती है। वाह! तुम्हारी गुड़िया बहुत अच्छी है।
उमेश : तुम्हारा नाम क्या है बिटिया?
शांता : शांता।
बाबा : अरे, अपना पूरा नाम बताओ।
शांता : मेरा नाम शांता प्रकाश जोशी है।
उमेश : और तुम्हारी गुड़िया का नाम क्या है?
शांता : गीता, अं हं! मेरी गुड़िया का नाम गीता है।

प्रकाश : उमेश, ही माझी बायको रेखा.
उमेश : नमस्कार रेखावहिनी. वहिनी कुठल्या आहेत?
प्रकाश : ही पुण्याचीच आहे.
रेखा : नमस्कार! हे घ्या पाणी.
बाबा : हे काय फक्त पाणीच? पाण्याबरोबर काही चहाबिहा?
रेखा : वा,वा आहे ना! चहा, बटाटेवडे आणि चिवडा आहे. बाबा, तुम्ही दूध घ्या.
बाबा : बरं. ठीक आहे. आण. दूधच दे. बाळ, हे महाराष्ट्राचे प्रसिद्ध खाद्यपदार्थ आहेत. अरे प्रकाश, तू ही घे न।
प्रकाशः हो, हो बाबा.
उमेश : बटाटेवडे आणि चिवडा खूप छान आहे.

उमेश : शाबाश, यह लो मिठाई।
प्रकाश : उमेश, यह मेरी पत्नी रेखा है।
उमेश : नमस्ते रेखाभाभी। भाभीजी कहाँ की हैं?
प्रकाश : ये पुणे की ही हैं।
रेखा : नमस्ते! ये पानी लीजिए।
बाबा : ये क्या सिर्फ पानी ही? पानी के साथ कुछ चायवाय?
रेखा : हाँ, हाँ, है न! चाय, बटाटेबड़े और चिवड़ा है। आप दूध लीजिए बाबा।
बाबा : अच्छा। ठीक है। लाओ। दूध ही दे दो। बेटे, ये महाराष्ट्र के प्रसिद्ध खाद्य पदार्थ हैं। अरे प्रकाश, तुम भी लो न!
प्रकाश : हाँ, हाँ बाबा.
उमेश : बटाटेबडे और चिवड़ा बहुत बढ़िया हैं।

शब्दार्थः

ओळख	परिचय	आई	माँ
जरा	थोड़ा, ज़रा	इकडे	इधर, यहाँ
ये	आओ	काय	क्या
बाळ	बेटा	हे	यह
बघ	देखो	हे	ये
माझे	मेरे	मित्र	दोस्त
नमस्कार	नमस्कार, नमस्ते	मावशी	मौसी
बसा	बैठिए	अहो	अजी
तुम्ही	आप	म्हणजे	मतलब, यानि
का	क्या	नाही	नहीं
मी	मैं	तीर्थक्षेत्र	तीर्थक्षेत्र, तीर्थस्थान
आहे	है	ते	वह
त्रिवेणीसंगम	तीन नदियोंका संगम	तुमचं	आप का
मूळ गाव	जन्म स्थान	कोणतं	कौनसा
आजोबा	दादाजी/नानाजी	ही	यह

पहा	देखिए	माझी	मेरी
नवी	नई	बाहुली	गुड़िया
कोण	कौन	छोटुकली	छुटकी
नात	पोती/नातिन	वा	वाह
छान	खुबसूरत, सुंदर	तुझी	तुम्हारी
तुझं	तुम्हारा	नाव	नाम
अगं	अरे	पूर्ण	पूर्ण, पूरा
सांग	बताओ	माझे/माझं	मेरा
आणि	और	तुझ्या	तुम्हारी,तुम्हारा
माझ्या	मेरी	शाब्बास	शाबाश
हा	यह	घे	लो
खाऊ	मिठाई	बायको	पत्नी
वहिनी	भाभी	कुठल्या	कहाँ की
पाणीच	पानीही	घ्या	लीजिए
फक्त	सिर्फ	पाणी	पानी
चहाबिहा	चाय-वाय	वा, वा	हाँ, हाँ
बाबा	पिताजी के लिए संबोधन	दूध	दूध
बरं	अच्छा	ठीक आहे	ठीक है
दे	दो	तू ही	तुम भी
हो, हो	हाँ, हाँ	खूप	बहुत
छान	अच्छा		

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) प्रकाशचे मित्र कोण आहेत?
2) उमेश शर्मा कुठले आहेत?
3) शांताच्या बाहुलीचं नाव काय आहे?
4) रेखावहिनी कुठल्या आहेत?
5) महाराष्ट्राचे प्रसिद्ध खाद्यपदार्थ कोणते आहेत?

II नीचे दिए गए वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

1) माझं नाव उमेश आहे.
आहे.
उमेश आहे.
नाव उमेश आहे.

2) हे प्रकाशचे मित्र उमेश शर्मा आहेत.
आहेत.
उमेश शर्मा आहेत.
मित्र उमेश शर्मा आहेत.

माझं नाव उमेश आहे.

प्रकाशचे मित्र उमेश शर्मा आहेत.
हे प्रकाशचे मित्र उमेश शर्मा आहेत.

3) तुझ्या बाहुलीचं नाव काय?
काय?
नाव काय?
बाहुलीचं नाव काय?
तुझ्या बाहुलीचं नाव काय?

4) तुमचं मूळ गाव कोणतं?
कोणतं?
गाव कोणतं?
मूळ गाव कोणतं?
तुमचं मूळ गाव कोणतं?

5) अगं, पूर्ण नाव सांग.
सांग.
नाव सांग.
पूर्ण नाव सांग.
अगं, पूर्ण नाव सांग.

III उदाहरण के अनुसार वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर नए वाक्य बनाइए।

उदाहरण: ही/ती <u>आई</u> आहे.
(शांता, बाहुली, सून, नात, बायको)

ही शांता आहे.	ती शांता आहे.
ही बाहुली आहे.	ती बाहुली आहे.
ही सून आहे.	ती सून आहे.
ही नात आहे.	ती नात आहे.
ही बायको आहे.	ती बायको आहे.

1) हा/तो <u>मित्र</u> आहे.
(भाऊ, खाऊ, वडा, चिवडा, चहा, पदार्थ)

2) हे/ते <u>गाव</u> आहे.
(तीर्थक्षेत्र, घर)

3) हे/ते <u>बाबा</u> आहेत.
(आजोबा, मित्र, खाद्यपदार्थ)

IV कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

1) हा माझा ……… आहे. (आजोबा, मित्र, आई)
2) ही माझी ……… आहे. (मित्र, आई, आजोबा)
3) ही माझी ……… आहे. (मित्र, बाहुली, आजोबा)
4) ही माझी ……… आहे. (आजोबा, बायको, मित्र)

V कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

[पूर्ण, मूळ, नवी]

1) तुझी बाहुली .... आहे. 2) तुझं .... नाव काय आहे?

3) तुमचं .... गाव कोणतं?

VI उदाहरण के अनुसार वाक्य पूरे कीजिए।

1. *उदाहरण:* ही बाहुली .... ही बाहुली आहे.

1) ही आई .... 2) हा खाऊ ....

3) हा बटाटेवडा ....

2. *उदाहरण:* ही माझी नात .... ही माझी नात आहे.

1) ही माझी आई .... 2) ही माझी बायको ....

VII उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों के प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

1. *उदाहरण:* हा खाऊ आहे. हे काय आहे?

1) हा वडा आहे. 2) हा चहा आहे. 3) हा चिवडा आहे.

2. *उदाहरण:* ही रेखावहिनी आहे. ही कोण आहे?

1) ही नात आहे. 2) ही बाहुली आहे. 3) ही बायको आहे.

3. उदाहण: हे गाव आहे. हे काय आहे?

1) हे तीर्थक्षेत्र आहे. 2) हे घर आहे.

VIII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: माझं नाव प्रकाश आहे. तुमचं नाव काय?

1) माझं नाव उमेश आहे. 2) माझं नाव रेखा आहे.

3) माझं नाव शांता आहे.

IX उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: मी उमेश शर्मा. माझं नाव उमेश शर्मा आहे.

1) मी शांता जोशी. 2) मी सचिन तेंडुलकर.

3) मी प्रकाश जोशी.

X उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए प्रत्येक वाक्य से दो-दो वाक्य बनाइए।

उदाहरण: ही माझी नात शांता. ही माझी नात आहे.
तिचं नाव शांता आहे.

1) ही माझी बायको रेखा. 2) ही माझी आई रमा.

XI नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर से मिलान कीजिए।

ही कोण? कोल्हापूर

ह्या कोण? दिल्लीचे.
हे कोण आहेत? माझं नाव उमेश आहे.
तुमचं नाव काय? हे माझे बाबा आहेत.
तुमचं गाव कोणतं? ह्या मावशी आहेत.
तुम्ही कुठले? ही माझी नात.

XII उदाहरण के अनुसार दिए गए प्रत्येक जोड़ी वाक्यों के दूसरे वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: शांता, तू बस. आजोबा, तुम्ही बसा.
उमेश, तू चहा घे. बाबा, तुम्ही चहा ....
शांता, तुझं पूर्ण नाव सांग. मावशी, तुमचं पूर्ण नाव ....
शांता, पाणी आण. मावशी, पाणी ....
आई, ये. बाबा, ...

XIII कोष्ठक में से उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

[आहे, बाहुली, कोण, माझी]

1) ही .... आहे? 2) ही माझी .... आहे.
3) ही माझी बायको .... 4) ही .... नात आहे.

XIV प्रत्येक कॉलम से उपयुक्त शब्द चुनकर जितने हो सकें उतने वाक्य बनाइए।

हा ही हे	माझा माझी माझे	बाबा नात बाहुली आई वहिनी खाऊ मित्र	आहे. आहेत.

XV नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न के तीन-तीन उत्तर कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर पूर्ण वाक्यों में दीजिए।

1) ही कोण आहे? [माझी नात, माझे बाबा, माझी आई, माझी मावशी, माझा खाऊ]
2) हे काय आहे? [तीर्थक्षेत्र, गाव, बाहुली, वहिनी, दूध]
3) तुमचं गाव कोणतं? [पुणे, अलाहाबाद, दिल्ली, बाहुली, चिवडा]
4) तुम्ही कुठले? [कोल्हापूरचे, मित्राचे, नाशिकचे, चहाचे, म्हैसूरचे]

XVI कोष्ठक में से उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1. [बाहुली, बायको, खाऊ, नात, चिवडा, आई] 2. [आई, मुलगा, मित्र, बाबा, गाव, तीर्थक्षेत्र]

1)	ही माझी .... आहे.	1)	हे माझे .... आहेत.
2)	ही माझी .... आहे.	2)	हे माझे .... आहेत.
3)	ही माझी .... आहे.	3)	हे .... आहे.
4)	ही माझी .... आहे.	4)	हे .... आहे.

XVII कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: माझ्या .... नाव रेखा आहे. (बायको)

माझ्या बायकोचं नाव रेखा आहे.

1) माझ्या .... नाव गीता आहे. (बाहुली)
2) माझ्या .... नाव शांता आहे. (नात)
3) माझ्या .... नाव उमेश आहे. (मित्र)

पढ़िए और समझिए

माझा मित्र

माझं नाव गीता आहे. माझ्या वर्गात एक मुलगा आहे. त्या मुलाचं नाव आहे विनोद. तो माझा इथला एकुलता एक मित्र आहे. आमची शाळा त्याच्या घराजवळच आहे. त्याला एक बहीण आहे. बहिणीचं नाव आहे निशा. निशा कन्याशाळेत जाते. त्याचे वडील डॉक्टर आहेत आणि कवीही आहेत. आई शिक्षिका आहे.

त्यांच्या घरी एक कुत्र्याचं पिल्लू आहे. पिल्लाचं नाव आहे मोती. मोती अगदी आपल्या राजाकुत्र्यासारखाच आहे. त्यांच्या घरी मोतीचा, माझा आणि विनोदचा फोटोही आहे.

शब्दार्थ:

माझ्या	मेरा/मेरी	वर्गात	क्लास में
मुलगा	लड़का	इथला	यहाँ का
एकुलता	इकलौता	शाळा	स्कूल
त्याच्या	उसके	घराजवळ	घर के पास
त्याला	उसकी	बहीण	बहन
त्याचे	उसके	वडील	पिता
त्याची	उसकी	त्यांच्या	उनके
कुत्र्याचं	कुत्ते का	पिल्लू	पिल्ला
अगदी	बिल्कुल	आपल्या	हमारे
राजाकुत्र्यासारखाच	राजा कुत्ते जैसा ही	मोतीचा	मोती का

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) गीताच्या एकुलत्या एका मित्राचं नाव काय आहे?
2) गीता आणि विनोद यांची शाळा कुठे आहे?
3) विनोदच्या बहिणीचं नाव काय आहे?
4) विनोदची आई कोण आहे?
5) विनोदच्या घरच्या कुत्र्याच्या पिल्लाचं नाव काय?

II उपयुक्त अक्षर जोड़कर शब्द पूरे कीजिए।

1) को .... पू .... चा
2) ती .... त्र
3) ब .... टे .... डा
4) रे .... व .... नी
5) पा .... ब .... ब ....

III प्रत्येक शब्द समूह में जो शब्द उस वर्ग का न हो उसे पहचानिए और बताइए।

1) नवी, छान, चहा, पूर्ण, मूळ
2) दूध, चहा, चिवडा, नवी, बटाटेवडा, पाणी
3) बाबा, आई, मावशी, नात, बहीण
4) बाबा, मित्र, आई
5) अलाहाबाद, कोल्हापूर, तीर्थक्षेत्र, पुणे, दिल्ली

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए दो शब्द-समूहों में से जितने हो सके उतने वाक्यांश बनाइए।

उदाहरण: मूळ गाव, नवी बाहुली

1) छान, पूर्ण, छोटुकली, गरम, मूळ, नवी, ग्लासभर, एकुलता
2) एक, नात, चहा, शाळा, चिवडा, पाणी, बाहुली, दूध, नाव, कुत्रा, फोटो, गाव, बटाटेवडा

V हिंदी में अनुवाद कीजिए

निलेश माझा मित्र आहे. निलेशचं मूळ गाव नाशिक आहे. अंजली निलेशची बायको आहे. अंजलीही नाशिकचीच आहे. निलेशचे घर माझ्या घराजवळच आहे. माझे आणि निलेशचे वडील एकाच शाळेत शिक्षक आहेत. निलेशचे पूर्ण नाव निलेश शांताराम कुलकर्णी आहे.

VI मराठी में अनुवाद कीजिए

ये मेरे मित्र मोहन हैं। ये उत्तर प्रदेश के रहनेवाले हैं। मोहन एक शिक्षक हैं। ये मोहन की पत्नी सीता हैं। ये शिक्षिका हैं। ये भी उत्तर प्रदेश की हैं।

VII अपने बारे में मराठी में एक छोटा सा अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में मराठी भाषा के दो प्रकार के वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1. *उदाहरण:*

कोल्हापूर तीर्थस्थान आहे.	कोल्हापूर तीर्थस्थान है।
माझं नाव शांता प्रकाश जोशी आहे.	मेरा नाम शांता प्रकाश जोशी है।
माझ्या बाहुलीचं नाव गीता आहे.	मेरी गुड़िया का नाम गीता है।
बाळ, हे महाराष्ट्रचे प्रसिद्ध खाद्यपदार्थ आहेत.	बेटे, ये महाराष्ट्र के प्रसिद्ध खाद्य पदार्थ है।
वहिनी कुठल्या आहेत?	भाभीजी कहाँ की हैं ?

2. *उदाहरण:*

आई तू बस न.	माँ, तू (तुम) बैठ (बैठो) ना।
आई, जरा इकडे ये.	माँ, जरा यहाँ आओ।
बसा, बसा.	बैठो, बैठो/बैठिए, बैठिए।
बाबा, तुम्ही दूध घ्या.	बाबा, आप दूध लीजिए।

II उपर्युक्त उदाहरण (1) के वाक्य हिन्दी के 'हूँ, हो, है, तथा हैं' जैसे अस्तिवाचक (योजक क्रियावाले) वाक्यों के समान हैं और उदाहरण (2) के वाक्य हिन्दी के 'आ, आओ, आईए' विधि रूप (आज्ञार्थक) क्रियावाले वाक्यों के समान हैं।

III मराठी की योजक क्रियाएँ 'आहे, आहोत, आहात, आहेत' तथा आहेत' हैं जिन में सिर्फ 'आहे (हूँ/है) तथा 'आहेत' (हैं) का प्रयोग इस पाठ में हुआ है।

IV ध्यान दें कि मराठी में योजक क्रियाएँ होते हुए भी एक उद्देश्य और एक विधेय वाले सब वाक्यों में इन योजक क्रियाओं का प्रयोग अनिवार्य नहीं है। अर्थात योजक क्रियाओं का प्रयोग ऐच्छिक रूप से शैली के अनुसार होता है।

उदाहरण:

1)	हे कोण आहे?	यह कौन है?
2)	हे कोण?	यहा कौन (है)?
3)	हे माझे मूल आहे.	यह मेरा बच्चा है।
4)	हे माझे मूल.	यह मेरा बच्चा (है)।
5)	ही कोण छोटुकली?	यह छुटकी कौन (है)?
6)	ही माझी नात.	यह मेरी पोती (है)।

7) सगळीकडे फुलंच फुलं. सब तरफ फूल ही फूल (हैं)।

V 1(2) के उदाहरण वाक्यों में आज्ञार्थक वाक्यों के एकवचन तथा आदरसूचक एकवचन का परिचय दिया गया है। ध्यान दें कि हिंदी की ही तरह एकवचन में क्रिया का मूलरूप ही आज्ञार्थक क्रिया के रूप में प्रयोग में आता है। आदरसूचक एकवचन तथा सब बहुवचनों में मराठी में प्रत्यय - 'आ'/ 'आवं' जोड़ा जाता है।

तू बस. - तू बैठ।
तुम्ही बसा. - तुम बैठो/आप बैठिए।
आपण बसा.
आपण बसावं. } आप बैठिए।

ध्यान दें कि आज्ञार्थक प्रत्यय 'आ' जोडने के पहले ए-कारांत तथा ई-कारांत क्रियाओं के रूप 'या' कारांत होते हैं और ऊ-कारांत क्रियाओं के रूप 'उवा' कारांत हो जाते हैं। अर्थात 'ए' से अंत होनेवाली क्रियाओं में 'ए' का लोप हो जाता है और 'आ' के पहले 'या' जुड़ जाता है।

उदाहरण:

तू दे - दे
तुम्ही द्या- दो
आपण द्या - आप दीजिए
तू पी - तू पी
तुम्ही प्या - तुम पीओ
आपण प्या - आप पीजिए
तू धू - तू धो
तुम्ही धुवा - धोओ
आपण धुवा - आप धोइए

'आहे' क्रिया एक वचन के लिए प्रयुक्त होता है और 'आहेत' बहुवचन के लिए। आदर सूचक एकवचन के लिए भी 'आहेत' का प्रयोग होता है।

VI मराठी के सर्वनाम निम्न प्रकार के हैं।

	एकवचन	*बहुवचन*	
उत्तम पुरुष	मी (मैं)	आम्ही आपण	(हम)
मध्यम पुरुष	तू (तू)	तुम्ही आपण	(तुम) (आप)
अन्य पुरुष	हा/तो *(पु.)* ही/ती *(स्त्री.)* हे/ते *(नपुं.)*	हे/ते ह्या/त्या ही/ती	(ये/वे)

देखिए कि उत्तम पुरूष के प्रयोग मे 'आपण' में वक्ता और श्रोता दोनों सम्मिलित रहते हैं और ध्यान दें कि मध्यम पुरूष के रूप में 'आपण' आदरार्थक है। अन्यपुरुषवाचक हिंदी के

यह, वह, जैसे सर्वनामों में लिंग भेद नहीं होता किंतु मराठी में होता है। अतः सर्वनाम के लिंग से भी संज्ञा का लिंग स्पष्ट हो जाता है।

उदाहरण:

	एकवचन	*बहुवचन*
(पु.)	हा बटाटेवडा आहे.	हे बटाटेवडे आहेत.
	यह बटाटेवड़ा है।	ये बटाटेवड़े हैं।
(स्त्री.)	ही बाहुली आहे.	ह्या बाहुल्या आहेत.
	यह गुड़िया है।	ये गुड़ियाँ हैं।
(नपुं.)	हे घर आहे.	ही घरं आहेत.
	यह घर है।	ये घर हैं।

VII हिंदी के समान ही मराठी में भी विभक्ति लगने से पहले सर्वनामों के रूपों में कुछ परिवर्तन हो जाता है। जैसे 'मी' (मैं) - 'माझा' (मेरा). मराठी के सब सर्वनामों के साथ संबंधकारक दिखानेवाले षष्ठी विभक्ति 'चा, ची, चे (का, की, के) रूप जोड़े जाते हैं।

सार्वनामिक संबंधसूचक रूप परिवर्तनीय हैं। उनमें संबंधित संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार परिवर्तन होता है। ध्यान दें की, अन्यपुरुष पुल्लिंग और नपुंसक लिंग सर्वनाम के सभी रूप एक ही होते हैं।

सार्वनामिक संबधसूचक विशेषण

			एकवचन				*बहुवचन*
उत्तमपुरुष (पु. और स्त्री.)		*(पु.)*	*(स्त्री.)*	*(नपुं.)*	*(पु.)*	*(स्त्री.)*	*(नपुं.)*
सर्वनाम (ए.व.)	मी	माझा	माझी	माझं (माझे)	माझे	माझ्या	माझी
	(मैं)	(मेरा)	(मेरी)	-	(मेरे)	(मेरी)	-
(ब.व.)	आम्ही	आमचा	आमची	आमचे (आमचं)	आमचे	आमच्या	आमची
	(हम)	(हमारा)	(हमारी)	-	(हमारे)	(हमारी)	-
	आपण	आपला	आपली	आपले (आपलं)	आपले	आपल्या	आपली
	(हम)	(हमारा)	(हमारी)	-	(हमारे)	(हमारी)	

			एकवचन				*बहुवचन*
मध्यमपुरुष (पु. और स्त्री.)		*(पु.)*	*(स्त्री.)*	*(नपुं.)*	*(पु.)*	*(स्त्री.)*	*(नपुं.)*
सर्वनाम (ए.व.)	तू	तुझा	तुझी	तुझे (तुझं)	तुझे	तुझ्या	तुझी
	(तू)	(तेरा)	(तेरी)	-	(तेरे)	(तेरी)	-
(ब.व.)	तुम्ही	तुमचा	तुमची	तुमचे (तुमचं)	तुमचे	तुमच्या	तुमची
	(तुम)	(तुम्हारा)		(तुम्हारी)	-		(तुम्हारे)
(तुम्हारी)		-					
	आपण	आपला	आपली	आपले (आपलं)	आपले	आपल्या	आपली
	-	(आपका)		(आपकी)	-		(आपके)
(आपकी) -							

ध्यान दें मराठी के उत्तमपुरूष बहुवचन तथा मध्यम पुरुष आदरसूचक एकवचन तथा बहुवचन सर्वनाम 'आपण' के संबंधकारक रूप दिखाने के लिए 'ला' जोड़ा जाता है 'चा' नहीं।

		एकवचन			*बहुवचन*		
अन्य पुरूष (पु.)		*(पु.)*	*(स्त्री.)*	*(नपुं.)*	*(पु.)*	*(स्त्री.)*	*(नपुं.)*
सर्वनाम (ए.व.)	हा	ह्याचा	ह्याची	ह्याचे (ह्याचं)	ह्याचे	ह्याच्या	ह्याची
	(यह)	(इसका)	(इसकी)	-		(इसके)	(इसकी) -
	तो	त्याचा	त्याची	त्याचे (त्याचं)	त्याचे	त्याच्या	त्याची
	(वह)	(उसका)	(उसकी)	-	(उसके)	(उसकी)	-
(ब.व.)	हे	ह्यांचा	ह्यांची	ह्यांचे (ह्यांचं)	ह्यांचे	ह्यांच्या	ह्यांची
	(ये)	(इनका)	(इनकी)	-	(इनके)	(इनकी)	-
	ते	त्यांचा	त्यांची	त्यांचे (त्यांचं)	त्यांचे	त्यांच्या	त्यांची
		(उनका)	(उनकी)	-	(उनके)	(उनकी)	-
(स्त्री.ए.व.)	ही	हिचा	हिची	हिचे (हिचं)	हिचे	हिच्या	हिची
	(यह)	(इसका)	(इसकी)	-	(इसके)	(इसकी)	-
	ती	तिचा	तिची	तिचे (तिचं)	तिचे	तिच्या	तिची
	(वह)	(उसका)		(उसकी)	-		(उसके)
(उसकी)	-						
(स्त्री.ब.व.)	ह्या	ह्यांचा	ह्यांची	ह्यांचे (ह्यांचं)	ह्यांचे	ह्यांच्या	ह्यांची
	(ये)	इनका	(इनकी)	-	(इनके)	(इनकी)	-
	त्या	त्यांचा	त्यांची	त्यांचे (त्याचं)	त्यांचे	त्यांच्या	त्यांची
	(वे)	(उनका)	(उनकी)	-	(उनके)	(उनकी)	-
(नपुंसकलिंग)							
(ए.व.)	हे (यह)	ह्याचा	ह्याची	ह्याचे (ह्याचं)	ह्याचे	ह्याच्या	ह्याची
	ते (वह)	त्याचा	त्याची	त्याचे (त्याचे)	त्याचे	त्याच्या	त्याची
(ब.व.)	ही	ह्यांचा	ह्यांची	ह्यांचे (ह्यांचं)	ह्यांचे	ह्यांच्या	ह्यांची
	ती	त्यांचा	त्यांची	त्यांचे (त्यांचं)	त्यांचे	त्यांच्या	त्यांची

समझिए की मराठी में नपुंसकलिंग एकवचन के लिए पुल्लिंग बहुवचन सर्वनाम का ही प्रयोग होता है। नपुंसकलिंग बहुवचन के लिए स्त्रीलिंग एकवचन सर्वनाम का ही प्रयोग होता है।

IX उपर्युक्त टिप्पणियों से आपने यह समझ लिया होगा कि मराठी में तीन लिंग होते हैं - पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग। व्याकरणिक लिंगों और वास्तविक लिंगों यानी पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के बीच हिन्दी के समान ही मराठी में भी कोई तार्किक संबंध नहीं होता है।

ध्यान दें कि मराठी में समानार्थक संज्ञाओंका लिंग भी भिन्न हो सकता है।

उदाहरण:

हा अंगठा आहे. *(पु.)*	यह अँगूठा है।
ही करंगळी आहे. *(स्त्री.)*	यह कनिष्ठा (छोटी उँगली) है।
हे बोट आहे. *(नपुं.)*	यह उँगली है।

उत्तम और मध्यम पुरुषों में लिंगानुसार कोई भेद नहीं होता। अन्य पुरुष में ही होता है।

X हिंदी के समान ही मराठी में भी अन्य पुरूष सर्वनाम संकेतात्मक रूप से विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता हैं। लेकिन मराठी में लिंगों के आधारपर इनमें भिन्नता होती है।

उदाहरण:

पु.ए.व.	1)	हा मुलगा माझा नातू आहे.	- यह लड़का मेरा पोता है।
पु.ब.व.	2)	हे मुलगे माझे नातू आहेत.	- ये लड़के मेरे पोते हैं।
स्त्री.ए.व.	3)	ही मुलगी माझी नात आहे.	- यह लड़की मेरी पोती है।
स्त्री.ब.व.	4)	ह्या मुली माझ्या नाती आहेत.	- य लडकियाँ मेरी पोति याँ हैं।
नपुं.ए.व.	5)	हे पुस्तक माझे आहे.	- यह पुस्तक मेरी है।
नपुं.ब.व.	6)	ही पुस्तकं माझी आहेत.	- ये पुस्तकें मेरी हैं।

XI इस पाठ के वाक्यों में मराठी के तीन प्रश्नवाचक शब्दों का परिचय भी दिया गया है।

उदाहरण:

1)	ही कोण छोटुकली?	- यह छुटकी कौन है?
2)	तुझं नाव काय बाळ?	- तुम्हारा नाम क्या है बिटिया?
3)	तुमचं मूळ गाव कोणतं?	- आपका जन्मस्थान कौनसा है।

हिंदी के समान ही मराठी में मनुष्यों के लिए 'कोण' (कौन) और मनुष्येतर के लिए 'काय' (क्या) का प्रयोग होता है। लेकिन कभी-कभी व्यक्ति के पद या व्यवसाय पूछने के लिए 'काय' (क्या) का प्रयोग होता है।

उदाहरण:

1)	हा कोण आहे?	- यह कौन है? (पुल्लिंग एकवचन)
2)	हा उमेश आहे.	- यह उमेश है। (पुल्लिंग एकवचन)
3)	हे कोण आहेत?	- ये कौन हैं? (पुल्लिंग आदरसूचक)
4)	हे बाबा आहेत.	- ये पिताजी हैं।
5)	हे कोण आहेत?	- ये कौन हैं? (पुल्लिंग बहुवचन)
6)	हे मित्र आहेत.	- ये मित्र हैं।
7)	ही कोण आहे?	- यह कौन है? (स्त्रीलिंग एकवचन)
8)	ही माझी आई आहे.	- यह मेरी माँ है।
9)	ह्या कोण आहेत?	- ये कौन हैं? (स्त्रीलिंग आदरसूचक)

10) ह्या मावशी आहेत. - ये मौसी हैं।
11) ह्या कोण आहेत? - ये कौन है? (स्त्रीलिंग बहुवचन)
12) ह्या शिक्षिका आहेत. - ये शिक्षिकाएँ हैं।
13) हे काय आहे? - यह क्या है? (नपुंसकलिंग एकवचन)
14) हे पुस्तक आहे. - यह पुस्तक है।
15) ही काय आहेत? - ये क्या हैं? (नपुंसकलिंग बहुवचन)
16) ही पुस्तकं आहेत. - ये पुस्तकें हैं।
17) हे काय आहेत? - ये क्या हैं? (पद-व्यवसाय)
18) हे डॉक्टर आहेत. - ये डॉक्टर हैं।
19) हे कोणतं पुस्तक आहे? - यह कौनसी पुस्तक है?
20) हे मराठी पुस्तक आहे. - यह मराठी की पुस्तक है।

XII उपर्युक्त प्रश्नवाचक वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि ऐसे वाक्यों में भी मराठी भाषा में शब्दों के अनुसार सर्वनाम के लिंग भी परिवर्तित होते है।

समझिए कि मराठी का प्रश्नवाचक शब्द 'कोणतं' (कौनसा) हिंदी की तरह लिंगवचन के अनुसार 'कोणता - कोणती - कोणते' (कौनसा - कौनसी - कौनसे) बन जाता है।

ध्यान दें कि मराठी में प्राणिवाचक नपुंसक शब्द जैसे मूल (बच्चा), कुटुंब (पत्नी) आदि के संबंध में भी 'कोण' का प्रयोग होता है।

उदाहरण: हे कोण आहे? (नपुंसकलिंग) - यह कौन है?
हे माझं मूल आहे. (नपुंसकलिंग) - यह मेरा बच्चा है।

XIII पाठ में आए हुए निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए।
तुमचं मूळ गाव कोणतं? - आप का जन्मस्थान कौनसा है?
पुणंच का? - पुणे ही (है) क्या?

हिंदी में वाक्यों के अंत में 'क्या' शब्द जोड़ने से वे प्रश्नवाचक वाक्य बनते हैं। मराठी में उपर्युक्त वाक्य को प्रश्नवाचक बनाने के लिए 'का' का प्रयोग हुआ है।

धडा / पाठ 2

किराणामालाच्या दुकानात

मुथाशेट : नमस्कार. या ताई. कसं काय? काय पहिजे?

सुधाताई : नमस्कार मुथाशेट. अहो, नेहमीचंच महिन्याचं सामान. द्या बघू लवकर. ही घ्या यादी.

मुथाशेट : अरे रामू, आधी हे सामान दे बरं. उशीर करू नकोस. अर्धा किलो शेंगदाणे, पाव किलो मोहरी, दीड पाव जिरे, सव्वा किलो उडदाची डाळ, पावणेदोन किलो हरभऱ्याची डाळ, अडीच किलो तुरीची डाळ, दहा ग्रॅम लवंगा, पाच ग्रॅम वेलदोडे. आणि एक गुळाची ढेप.

रामू: हळू, हळू शेटजी. हळू वाचा. एकेक वस्तू देतो.

सुधाताई : गहू कुठला आहे? काय भाव आहे?

मुथाशेट : त्या पोत्यात पंजाब बोट आहे पंधरा रु. किलो.

सुधाताई : बन्सी गहू नाही का?

मुथाशेट : सध्या तर नाही.

रामू : ताई, तुरीची डाळ, कोणती देऊ? अडतीस रूपये किलोवाली की बेचाळीस रूपये किलोवाली?

सुधाताई : बघू बरं! हं, बेचाळीस रूपये किलोवाली दे. ती स्वच्छ आहे. हा तांदूळ आंबेमोहोर आहे का?

मुथाशेट : नाही, हा सोनामसूरी आहे.

सुधाताई : कसा दिला?

मुथाशेट : वीस रु. किलो. फार छान आहे.

सुधाताई : आणि लाल मिरची कोणती आहे?

किराने की दुकान में

मुथासेठ : नमस्ते. आइए बहनजी। क्या हाल है? क्या चाहिए?

सुधाताई : नमस्ते मुथासेठ। और क्या, बस महीने भर का सामान। ज़रा जल्दी दीजिए। यह लीजिए पर्ची।

मुथाशेट : अरे रामू, पहले यह सामान दे। देर मत कर। आधा किलो मूंगफली दाना, पाव भर सरसों, डेढ़ पाव जीरा, सवा किलो उड़द की दाल, पौने दो किलो चने की दाल, ढ़ाई किलो अरहर की दाल, दस ग्राम लौंग, पाँच ग्राम इलायची और एक गुड़ की भेली।

रामू : धीरे धीरे सेठ जी! धीरे पढ़िए। एक-एक चीज देता हूँ।

सुधाताई : गेहूँ कौन सा है? क्या भाव है?

मुथासेठ : उस बोरी में पंजाब बोट गेहूँ है। पंद्रह रु.किलो।

सुधाताई : बंसी गेहूँ नहीं है क्या?

मुथासेठ : फिलहाल तो नहीं है।

रामू : बहनजी, अरहर की दाल कौनसी दूँ? अड़तीस रूपये किलोवाली या बयालिस रूपये किलोवाली?

सुधाताई : दिखाओ तो! हं, बयालिस रुपये किलोवाली दो। वह साफ है। यह चावल आंबेमोहोर है क्या?

मुथासेठ : नहीं, यह सोनामसूरी है।

सुधाताई : क्या भाव है?

मुथासेठ : बीस रुपये किलो। बहुत बढ़िया है।

सुधाताई : और लाल मिर्च कौन सी है?

मुथाशेट : गुंटूर मिरची आहे. अगदी लालभडक! नवा माल आणि फक्त साठ रु. किलो. देऊ का?
सुधाताई : बापरे! फारच महाग आहे.
मुथाशेट : नाही ताई, महाग नाही. सगळीकडे हाच भाव आहे.
सुधाताई : मला गुंटूर मिरची नको. ती फारच तिखट आहे. मला पटना मिरची हवी आहे. लालभडक, पण तिखट कमी.
मुथाशेट : एकदा गुंटूर मिरचीही वापरा. देऊ का?
सुधाताई : द्या दोन किलो.
मुथाशेट : अरे रामू, ताईंना दोन किलो गुंटूर मिरची दे.
सुधाताई : सगळ्या वस्तू स्वच्छ आहेत ना?
मुथाशेट : हो ताई, तुम्ही अगदी निश्चिंत रहा. माल अजिबात खराब नाही. तुम्ही तर आमच्या नेहमीच्याच ग्राहक आहात.
सुधाताई : बरं, द्या लवकर.
मुथाशेट : रामू, आण बरं सगळं सामान, ताई, ही घ्या तुमची यादी!
सुधाताई : हे घ्या पैसे!
मुथाशेट : बरंय.

मुथासेठ : गुंटूर मिर्च है। एकदम लालसुर्ख! नया माल है और सिर्फ साठ रु. किलो। दूँ क्या?
सुधाताई : बापरे! बहुत ही महँगी है।
मुथासेठ : नहीं बहनजी, महँगी नहीं है। सब जगह यही भाव है।
सुधाताई : मुझे गुंटूर मिर्च नहीं चाहिए। वह बहुत ही तीखी है। मुझे पटना मिर्च चाहिए। लाल सुर्ख, लेकिन कम तीखी।
मुथासेठ : एक बार गुंटूर मिर्च भी आजमाइए। दूँ, क्या?
सुधाताई : दीजिए दो किलो।
मुथासेठ : अरे रामू, बहनजी को दो किलो गुंटूर मिर्च दे।
सुधाताई : सभी चीजें साफ हैं, न?
मुथासेठ : बहन जी आप बिल्कुल निश्चिंत रहें। माल जरा भी खराब नहीं है। आप तो हमारी हमेशा की ग्राहक हैं।
सुधाताई : ठीक है। जल्दी दीजिए।
मुथासेठ : रामू, जल्दी ला सब सामान। बहनजी, यह लीजिए आपकी पर्ची।
सुधाची : यह लीजिए पैसे।
मुथाशेट : ठीक है।

शब्दार्थ

किराणा माल (नपुं.)	किराणा-सामान माल (नपुं.)
दुकानात (नपुं.)	दुकान में
ताई	बहन के लिए संबोधन
कसं काय?	कैसी हो/हैं?
काय पाहिजे	क्या चाहिए
नेहमीचंच	हमेशा का
महिन्याचं (पु.)	महीने का
द्या (क्रि.)	दीजिए
बघू	दिखाइए
लवकर	जल्दी

यादी	पर्ची
आधी	पहले
उशीर	देर
करू	करना
नकोस	नहीं/निषेध
अर्धा किलो	आधा किलो
शेंगदाणा (पु.)	मूंगफली दाना
पाव किलो	पाव भर
मोहरी (स्त्री.)	सरसों
दीडपाव	डेढ़ पाव
जिरे (नपुं.)	जीरा
सव्वा किलो	सवा किलो
उडीद (पु.)	उड़द
पावणे दोन किलो	पौने दो किलो
हरभऱ्याची डाळ	चने की दाल
अडीच किलो	ढ़ाई किलो
तुरीची डाळ (स्त्री.)	अरहर की दाल
गुळ	गुड़
ढेप	भेली
हळूहळू	धीरे-धीरे
वाचा	पढ़ो
एकेक	हर एक, एक-एक
वस्तू	चीज़
कुठला	कौनसा
पोतं (नपुं.)	बोरी
नाही का	नहीं क्या?
सध्या	फिलहाल
कोणती	कौनसी
देऊ (क्रि.)	दूँ
बेचाळीस	बयालीस
दे (क्रि.)	दो
स्वच्छ	साफ
तांदूळ (पु.)	चावल
कसा दिला?	कैसा दिया? (क्या भाव है?)
महाग	महँगी
सगळीकडे	सबतरफ
हाच	यही

भाव	कीमत, भाव
नको	नहीं
फार	ज्यादा, बहुत
तिखट	तीखी
हवी आहे	चाहिए
कमी	कम
सगळ्या	सारी/सब
वस्तू (स्त्री.)	चीजें
अजिबात	ज़रा भी
नेहमीच्या	हमेशा की
ग्राहक (पु.)	ग्राहक
आहात	हैं

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) सुधाताईंना किती रूपये किलोवाली तुरीची डाळ हवी आहे?
2) सुधाताईंना किती शेंगदाणे हवे आहेत?
3) दुकानात बन्सी गहू आहे का?
4) सोनामसुरी तांदुळ कसा आहे?

II वाक्य में रेखांकित शब्द के स्थानपर दिए गए शब्दों का प्रयोग कर नये वाक्य बनाइए।

उदाहरण: ही मिरची तिखट आहे.

कमी तिखट
लालभडक
नवी
महाग
जुनी
खराब

III उदाहरण के अनुसार वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

1. *उदाहरण:* मला चहा हवा आहे. (वडा)
मला वडा हवा आहे.
(गहू, कुत्रा, तांदूळ)

2. *उदाहरण:* मला बाहुली हवी आहे. (डाळ)
मला डाळ हवी आहे.
(बहीण, यादी, वस्तू)

3. *उदाहरण:* मला दूध हवं आहे. (सामान)
मला सामान हवं आहे.
(पिल्लू, घर, नाव)

4. *उदाहरण:* मला मित्र हवे आहेत. (दाणे)
मला दाणे हवे आहेत.
(पैसे, डॉक्टर, हरभरे, वेलदोडे)

5. *उदाहरण:* मला बाहुल्या हव्या आहेत. (बहिणी)
मला बहिणी हव्या आहेत.
(याद्या, मिरच्या)

6. *उदाहरण:* मला पिल्लं हवी आहेत. (गावं)
मला गावं हवी आहेत.
(घरं, नावं)

IV उदाहरण के अनुसार निम्न प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में दिए गए शब्दों की सहायता से दीजिए।
उदाहरण: तुम्हाला किती दाणे हवे? (अर्धा किलो)
मला अर्धा किलो दाणे हवे.

1) तुम्हाला किती उडीद हवे? (दीड किलो)
2) तुम्हाला किती तूरडाळ हवी? (अडीच किलो)
3) तुम्हाला किती वेलदोडे हवेत? (पाच ग्रॅम)
4) तुम्हाला किती मोहरी हवी? (पाव किलो)
5) तुम्हाला किती हरभऱ्याची डाळ हवी? (सव्वा किलो)
6) तुम्हाला किती गहू हवे ? (दहा किलो)

V उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यांश पूरे कीजिए।
1. *उदाहरण:* एक बाहुली - दोन बाहुल्या
1) एक छोटुकली - दोन .... 2) एक मिरची - तीन ....
3) एक यादी - दोन .... 4) एक मावशी - चार ....
2. *उदाहरण:* एक वेलदोडा - पाच वेलदोडे
1) एक शेंगदाणा - सहा .... 2) एक नया पैसा - पंचवीस ......
3) एक बटाटेवडा - तीन ....
3. *उदाहरण:* एक किलो गहू - चार किलो गहू
1) एक किलो तांदूळ - दहा किलो .... 2) एक मित्र - पाच ....
3) एक किलो उडीद - तीन किलो ....
4. *उदाहरण:* एक घर - पाच घरं
1) एक गाव- दोन .... 2) एक पुस्तक - तीन ....

VI उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए प्रश्नों के दो-दो उत्तर दीजिए।
उदाहरण: मावशी, तुम्हाला बटाटेवडा हवा आहे का?
नाही, मला ....
नाही, मला बटाटेवडा नको.
मला .... (चहा)
मला फक्त चहा हवा आहे.
1) तुम्हाला पंजाब बोट गहू हवा आहे का?
नाही, मला ....
मला .... (बन्सी गहू)

2) तुला खाऊ हवा आहे का?
   नाही, मला ....
   मला .... (बाहुली)

3) सुधाताई, तुम्हाला सोनामसूरी तांदूळ हवा आहे का?
   नाही मला ....
   मला .... (आंबेमोहोर)

VII उदाहरण के अनुसार दिए गए शब्दों का लिंगानुसार सार्वनामिक विशेषण जोड़कर वर्गीकरण कीजिए।

उदाहरण: हा मित्र, ही बहीण, हे दूध

मित्र, गाव, पदार्थ,घर, नाव, बहीण, सामान, दूध, पाणी, यादी, दाणा, मोहरी, मिरची, जिरं, डाळ, लवंग, वेलदोडा, गहू, तांदूळ, डॉक्टर, छोटुकली, बाहुली, वहिनी, शाळा, शिक्षिका, शिक्षक, वडा, कुत्रा, कवी, पिल्लू, फोटो, बायको, वस्तू माल, पैसा.

VIII बाईं ओर दिए गए शब्दों के साथ दाहिनी ओर दिए गए शब्दों से सही प्रकार मिलान कर जितने हो सकें उतने वाक्यांश बनाइए।

कोणता	गहू
कोणती	डाळ
कोणते	मिरची
कुठला	तांदूळ
कुठली	मित्र
कुठले	यादी
	बाहुली

IX ठीक प्रकारसे वाक्यांशों का मिलान कर वाक्य बनाइए।

मला दूध	हवी आहे.
मला फोटो	हव्या आहेत.
मला कॉफी	हवं आहे.
मला डाळी	हवा आहे.
मला बहीण	हवी आहेत.
मला पिल्लं	हवे आहेत.

पढिए और समझिए

महागाईचे युग

आजकाल सगळीकडेच महागाई आहे. प्रत्येक वस्तूचा भाव भरमसाठ आहे. बाजारात गर्दीही अचाट आहे. भाजीमंडईत गर्दी आणि सोनाराच्या दुकानातही गर्दी! बाजारात वस्तू आहेत. मनात इच्छा आहे फक्त खिशात पैसे नाहीत. तरीही प्रत्येकाला प्रत्येक वस्तू पाहिजे आहे.

काही वस्तू बाजारात आहेत तरी महाग आहेत, पण आहेत. काही वस्तू बाजारात नाहीतच. त्या फक्त काळ्याबाजारातच आहेत. काळ्याबाजाराचा कायदा आहे - कोणताही भाव! एकच सत्य आहे- पैसा आहे तर सारं आहे. म्हणून सर्वांना पैसा हवा आहे.

हे युग स्वस्ताईचं नाही. इथे काहीच स्वस्त नाही. पण हे ही खरं नाही. आजकाल माणूस फारच स्वस्त आहे. तरीही प्रत्येकाला हवी आहे माणुसकी!

शब्दार्थ

आजकाल	आजकल
सगळीकडे	सबतरफ
महागाई	महँगाई
भाव	भाव
भरमसाठ	बहुत
बाजार	मंडी, बाजार
मंडई	बाजार
सोनार	सुनार
फक्त	सिर्फ
खिसा	जेब
तरीही	फिर भी
प्रत्येकाला	हर एक को
काळाबाजार	काला बाजार
कायदा	कायदा, नियम
सत्य	सत्य, सच्चाई
म्हणून	इसलिए
युग	युग
स्वस्ताई	सस्ती, सस्तापन
स्वस्त	सस्ता
फारच	ज्यादा
माणुसकी	इन्सानियत

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) हे कोणते युग आहे?
2) काही वस्तू बाजारात नाहीत, त्या कुठे आहेत?
3) ह्या महागाईच्या युगात एकच गोष्ट सत्य आहे, ती कोणती?
4) परिच्छेदानुसार या युगात सर्वात स्वस्त वस्तू कोणती आहे?

II उपयुक्त अक्षर जोड़कर दिए गए शब्द पूरे कीजिए।

1) ह __ भ __ ची
2) ने __ मी __ च
3) सो __ म __ री
4) ला __ भ __ क
5) भा __ मं __ ई
6) स्व __ __ चं
7) भ __ म __ ठ
8) स __ ळी __ __ च

III प्रत्येक शब्द समूह में जो शब्द उस वर्ग का न हो उसे पहचानिए और बताइए।

1) तूर, लवंग, चहा, डाळ
2) पाव, अर्धा, पाऊण, वेलदोडे, अडीच
3) लालभडक, नवी, वस्तू, तिखट, स्वस्त

IV उदाहरण के अनुसार, दिए गए शब्दों में से विलोम शब्दों की तीन जोड़ियाँ बनाइए।

उदाहरण: महाग x स्वस्त

देणे, लवकर, महागाई, उशीर, स्वस्ताई, घेणे.

V दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थक मराठी शब्द लिखिए।

आधा, सवा, देढ़ पाव, पावभर, पौने दो, पाँच ग्राम, ढ़ाई

VI कोष्ठक में दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थक मराठी शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) मला पटना मिरची .... (चाहिए)
2) मला .... पाहिजे आहे. (अरहर दाल)
3) सगळ्या .... स्वच्छ आहेत ना? (चीजें)
4) ही घ्या तुमची .... (पर्ची)
5) तुम्ही आमच्या .... ग्राहक आहात. (हमेशा की)
6) मला एक पाव .... पाहिजे. (सरसों)

VII हिंदी में अनुवाद कीजिए।

मी आता बाजारात आहे. बाजारात खूप दुकाने आहेत. किराणा मालाच्या दुकानात खूपच गर्दी आहे. कारण दसरा दिवाळीचा उत्सव जवळच आहे. मला मिठाई पाहिजे आहे. माझ्या बहिणीला, कमलला, नवे कपडे हवे आहेत. परंतु मी किती घेऊ? कारण खूप महागाई आहे.

VIII मराठी में अनुवाद कीजिए

यह बाजार है। यहाँ सब तरह की चीजें उपलब्ध हैं। दैनिक जीवन में इस्तेमाल होनेवाली सारी चीजें यहाँ मिलती हैं। हर तरफ भीड़ ही भीड़ है और हर तरह के खरीदार यहाँ हैं।

IX आपके गाँव में लगने वाले साप्ताहिक बाजार के बारे में एक छोटा सा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I आज्ञावाचक रूपों को निषेधवाचक बनाने के लिए क्रिया में 'ऊ' जोड़कर एकवचन में 'नकोस' और बहुवचन में 'नका' लगाते हैं।

एकवचन		*बहुवचन*	
तू उठू नकोस.	तू उठ मत।	तुम्ही उठू नका.	तुम उठो मत।
तू बसू नकोस.	तू बैठ मत।	तुम्ही बसू नका.	तुम बैठो मत।
तू पिऊ नकोस.	तू पी मत।	तुम्ही पिऊ नका.	तुम पीना मत।
तू (धू) धुवू नकोस.	तू धो मत।	तुम्ही धुवू नका.	तुम धोना मत।

II हिन्दी के समान ही 'जरा' (थोड़ा) लगाकर मराठी में भी आज्ञा को विनम्र बनाते हैं। जैसे, तुम्ही जरा बसा.

III आप जाएँगे क्या? जैसे प्रश्न वाक्य विनम्रता सूचक आज्ञार्थक के रूप में मराठी में वर्तमान काल का ही प्रयोग होता है।

उदाहरण: 'तुम्ही जाता का?
'तुम्ही उठता का?'

IV अनुमतिबोधक वाक्य

इसके लिए क्रिया के मूल रूप के साथ 'ऊ' जोड़ देते हैं। बहुधा वाक्य के अन्त में 'का' का प्रयोग करते हैं। मराठी में खा, पी, दे, घे, ये, ने आदि एकाक्षरी क्रियाशब्द 'ऊ' प्रत्यय लगाने के बाद खाऊ, पिऊ, देऊ, घेऊ, येऊ, नेऊ जैसे लिखे जाते हैं। परंतु जेव, धाव, पाव, चाव आदि क्रियाशब्द को 'ऊ' प्रत्यय लगाने के बाद वे जेवू, धावू, पावू, चावू जैसे ही लिखे जाते हैं।

उदाहरण:	मी जाऊ का?	मैं जाऊँ क्या?
	मी खाऊ का?	मैं खाऊँ क्या?
	मी घेऊ का?	मैं लूँ क्या?
	मी जेवू का?	मैं (खाना) खाइँ क्या?

अथवा -

उदाहरण:	मी जाऊ?	मैं जाऊँ?
	मी खाऊ?	मैं खाऊँ?
	मी घेऊ?	मैं लूँ?
	मी जेवूं?	मैं (खाना) खाइँ?

V बहुवचन में क्रियाशब्द मराठी में यथावत रहता है।

उदाहरण:	आम्ही जाऊ का?	हम जाएँ क्या?
	आम्ही खाऊ का?	हम खाएँ क्या?

लेकिन 'आपण' उत्तम पुरुष के साथ इन प्रयोगों में 'या' लगाया जाता है।

उदाहरण:	आपण जाऊ<u>या</u> का?	हम जाएँ क्या?
	आपण खाऊ<u>या</u> का?	हम खाएँ क्या?

उक्त प्रयोगों में 'का' का लोप कर देने पर ऐसे प्रयोग सुझाव का अर्थ देते हैं।

उदाहरण:	आपण जाऊया -	(आओ) हम चलें।
	आपण खाऊया -	(आओ) हम खाएँ।

VI पिछले पाठ में प्रश्नवाचक 'क्या' के संबंध में बताया जा चुका है। ऐसे प्रश्नों के उत्तर मराठी में 'हाँ' या 'नहीं' से किस प्रकार दिए जाते हैं, उस के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

उदाहरण:	तो आंबेमोहोर तांदूळ आहे का?	क्या वह आंबेमोहोर चावल है?
	हो, तो आंबेमोहोर तांदूळ आहे.	हाँ, वह आंबेमोहोर चावल है।
	नाही, तो आंबेमोहोर तांदूळ नाही.	नहीं, वह आंबेमोहोर चावल नहीं है।

VII योजक क्रिया "आहे" के भिन्न रूप सर्वनामों से कैसे बनते हैं नीचे दिए गए हैं।

	एकवचन		*बहुवचन*	
उत्तम पुरुष	मी आहे.	मै हूँ।	आम्ही/आपण आहोत.	हम हैं।
मध्यम पुरुष	तू आहेस.	तू है।	तुम्ही/आपण आहात.	तुम हो।/आप हो।
अन्य पुरुष	हा/तो, ही/ती, हे/ते } आहे.	यह/वह है।	हे/ते, ह्या/त्या, ही/ती } आहेत.	ये/वे हैं।

VIII योजक क्रियावाले वाक्यों के निषेधवाचक रूप मराठी में क्रिया में 'न' जुड़ जाने से बनते हैं।
उदाहरण: न + आहे = नाही

	एकवचन		*बहुवचन*	
उत्तम पुरुष	मी नाही.	मैं नहीं हूँ।	आम्ही/आपण नाही.	हम नही हैं।
मध्यम पुरुष	तू नाहीस	तू नहीं है।	तुम्ही/आपण नाही.	तुम नहीं हो।/ आप नहीं हैं।
अन्यपुरुष	हा/ही/हे- तो/ती/ते नाही.	यह/वह नहीं है।	हे/ह्या/ही -ते/त्या/ती नाहीत.	ये/वे नहीं हैं।

IX इस पाठ में मराठी के निम्न प्रकार के वाक्यों का भी परिचय दिया गया है।

1. *उदाहरण:*

तुम्हाला काय पाहिजे?	आपको क्या चाहिए?
मला चहा पाहिजे.	मुझे चाय चाहिए।
तिला कॉफी पाहिजे.	उसे काफी चाहिए।
त्यांना दूध पाहिजे.	उन्हें दूध चाहिए।
मला मिरच्या पाहिजेत.	मुझे मिर्ची चाहिए।
तिला बाहुल्या पाहिजेत.	उसे गुडियाँ चाहिए।
त्यांना वेलदोडे पाहिजेत.	उन्हें इलायची चाहिए।

2.

मला चहा हवा.	मुझे चाय चाहिए।
तिला कॉफी हवी.	उसे काफी चाहिए।
त्यांना दूध हवे.	उन्हें दूध चाहिए।
तुम्हाला काय पाहिजे आहे?	आपको क्या चाहिए?
मला चहा पाहिजे आहे.	मुझे चाय चाहिए।
मला मिरच्या पाहिजे आहेत.	मुझे मिर्ची चाहिए।
त्यांना वेलदोडे पाहिजे आहेत.	उन्हें इलायची चाहिए।

मराठी की 'पाहिजे' क्रिया हिंदी 'चाहिए' के समान ही प्रयुक्त होती है। केवल कर्म के बहुवचन होने पर 'पाहिजेत' हो जाता है। इसके कर्ता में हिंदी के समान ही कर्म का रूप प्रयुक्त होता है। 'काय हवे' इस में 'हवे' के रूप कर्म के लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं। 'हवं' के बहुवचन रूपों में 'हवेत' या 'हवे आहेत' 'हव्यात' या 'हव्या आहेत' और 'हवीत' या हवी आहेत' के प्रयोग भी होते हैं। उपर्युक वाक्यों में रेखांकित किए गए क्रिया रूप हिंदी के 'चाहिए' की तरह आवश्यकता, इच्छा आदि प्रकट करते हैं। ध्यान दें कि मराठी में इस के लिए दो क्रिया रूप हैं। जैसे 'पाहिजे' और 'हवं आहे'।

X हिंदी के समान ही मराठी में भी व्यंजनांत संज्ञाएँ होती हैं। वे अकारांत ही लिखी जाती हैं। स्वर उसमें अंतर्निहित होता है।

उदाहरण:	राम	-	राम
	मोहन	-	मोहन
	घर	-	घर
	पुस्तक	-	पुस्तक

लेकिन मराठी में ऐसे भी बहुत से शब्द हैं जिनमें अंतर्निहित स्वर का उच्चारण होता है। यह दिखाने के लिए अंतिम व्यंजन पर एक बिंदी लगाई जाती है।

उदाहरण:	डोकं	-	सिर
	मडकं	-	मटका
	घरटं	-	घोसला

ध्यान दीजिए कि ऐसे शब्दों में बिंदी लगाने पर भी उसका उच्चारण अनुनासिक नहीं होता। लेकिन ऐसे उच्चारणवाले शब्द लिखित भाषा में डोके, मडके, घरटे जैसे भी लिखे जाते है।

XI मराठी के शब्दों संज्ञाओं के कुछ सामान्य (मूल) और तिर्यक् दोनों रूपों की सूची नीचे दी जा रही है। इस सूची में दो से लेकर छह तक के पाठों में आए संज्ञा शब्द शामिल हैं।

पुल्लिंग

		मूल रूप		*तिर्यक् रूप*	
अंत्य वर्ण		*ए.व.*	*ब.व*	*ए.व*	*ब.व*
व्यंजन	1)	हात	हात	हाता	हातां
	2)	तान्दुळ	तान्दुळ	तान्दुळा	तान्दुळां
(आ)	1)	कॅमेरा	कॅमेरे	कॅमेऱ्या	कॅमेऱ्यां
	2)	काका	काका	काका	काकां
(ई)	1)	कर्मचारी	कर्मचारी	कर्मचाऱ्या	कर्मचाऱ्यां
	2)	कवी	कवी	कवी	कवीं
(ऊ)	1)	भाऊ	भाऊ	भावा	भावां
	2)	पेरु	पेरु	पेरु	पेरुं
(ओ)	1)	रेडिओ	रेडिओ	रेडिओ	रेडिओं

स्त्रीलिंग

		मूल रूप		*तिर्यक् रूप*	
		ए.व.	*ब.व*	*ए.व*	*ब.व*
त्यंजन	1)	ढेप	ढेपा	ढेपे	ढेपां
	2)	पेन्सिल	पेन्सिली	पेन्सिली	पेन्सिलीं
(आ)	1)	शाळा	शाळा	शाळे	शाळां
(ई)	1)	खोली	खोल्या	खोली	खोल्यां
	2)	मूर्ती	मूर्ती	मूर्ती	मूर्ती
(ऊ)	1)	सासू	सासवा	सासू	सासवां
	2)	बाजू	बाजू	बाजू	बाजूं
(ओ)	1)	बायको	बायका	बायको	बायकां

नपुंसक लिंग

		मूळ रूप		*तिर्यक् रूप*	
		ए.व.	*ब.व*	*ए.व*	*ब.व*
व्यंजन		घर	घरं	घरा	घरां
(अ)		गाव	गावं	गावा	गावां
(ई)		पाणी	---	पाण्या	---
(ऊ)	1)	लिंबू	लिंबं	लिंबा	लिंबां
	2)	कुंकू	कुंकू	कुंकवा	कुंकवां

X हिंदी के प्रश्नवाचक शब्द 'कितना, कितने, कितनी' के लिए मराठी में सिर्फ 'किती' का प्रयोग होता है। जो वस्तुएँ गिनी नहीं जा सकती बल्कि नापी जाती हैं जैसे दूध, पानी आदि के लिए 'किती' के साथ एक-वचन क्रिया प्रयुक्त होती है। गिनी जानेवाली वस्तुओं के लिए बहुवचन क्रिया प्रयुक्त होती है।

1.	*उदाहरण:*	हे किती दूध आहे?		यह कितना दूध है?
		हे किती पाणी आहे?		यह कितना पानी है?
2.		हे किती मुलगे आहेत ?	*(पु.)*	ये कितने लड़के हैं?
		ह्या किती मुली आहेत?	*(स्त्री.)*	ये कितनी लड़कियाँ हैं?
		ही किती मुलं आहेत?	*(नपुं.)*	ये कितने बच्चे हैं?

XI जिस प्रकार वज़न बताने के लिए 'सव्वा किलो, दीड किलो, पावणे दोन किलो, अडीच किलो, साडे तीन किलो' आदि का प्रयोग करते हैं, उसी तरह समय बताने के लिए निम्नलिखित वाक्यांशों का प्रयोग किया जाता है।

"एक वाजून तीस मिनिटे" याने कि "सव्वा वाजला." "एक बजकर पंद्रह मिनट" अर्थात् सवा बजे।
"दोन वाजून तीस मिनिटे" याने कि "अडीच वाजले." "दोन बजकर तीस मिनिट" अर्थात ढ़ाई बजे।
"तीन वाजून तीस मिनिटे" याने कि "साडेतीन वाजले." "तीन बजकर तीस मिनट" अर्थात् साढ़ेतीन बजे।

धडा पाठ 3

पेल्यातील वादळ	बिना बातका झगड़ा
शामला - सुचेता, अगं माझी पुस्तकं कुठं आहेत? एक गोष्ट जागेवर नाही. काय हा पसारा!	शामला - सुचेता, भई मेरी किताबें कहाँ हैं? कोई चीज अपनी जगह नहीं है। क्या पसारा है यह।
सुचेता - नीट बघ. न बघता आरडाओरडा करु नकोस. तिथंच टेबलावर सगळी पुस्तकं, पेनं, पेन्सिली, वह्या सगळं काही आहे.	सुचेता - ठीक से देखो। बिना देखे शोर मत मचाओ। तुम्हारी सारी किताबें, पैन, पेंसिल, कॉपियाँ वहीं टेबल पर तो हैं।
शामला - अगं, पण त्यात माझं भूगोलाचं पुस्तक नाही.	शामला - लेकिन उनमें मेरी भूगोल की पुस्तक नहीं है।
सुचेता - तिथंच आहे. नीट बघ. हे बघ समोरच आहे तुझ्या! न शोधता नुसता गोंधळ करू नकोस.	सुचेता - वहीं है। ठीक से देखो। वह देखो तुम्हारे सामने ही तो है! बिना ढूँढे सिर्फ शोर नहीं मचाओ।
शामला - ए, बाबा कुठं आहेत?	शामला - अरे! पिताजी कहाँ हैं?
सुचेता - का? कशासाठी?	सुचेता - क्यों? किसलिए?
शामला - मला माझ्या प्रगतिपुस्तकावर सही हवी आहे.	शामला - मुझे अपने प्रगति पत्र पर उनके हस्ताक्षर चाहिए।
सुचेता - ते पाठीमागं अंगणात आहेत. आईला दाखव की!	सुचेता - वे पीछे आँगन में हैं। माँ को दिखा दो न!
शामला - आईला आधीच माहीत आहे. अहो बाबा, जरा आत या ना!	शामला - माँ को पहले ही मालूम है। पिताजी! जरा अंदर आइए न!
बाबा - कशाला?	पिताजी - किसलिए?
शामला - प्रगतिपुस्तकावर सही हवीय.	शामला - प्रगति पत्र पर हस्ताक्षर चाहिए।
बाबा - हं, आण तुझे प्रगतिपुस्तक. वा छान! असाच पहिला नंबर ठेव. असाच अभ्यास कर. पण खेळही हवा हं. न खेळता नुसताच अभ्यास नको. अभ्यासाबरोबर खेळही पाहिजे.	पिताजी - हाँ लाओ तुम्हारा प्रगतिपत्र! शाबाश! बहुत बढ़िया! इसी तरह अव्वल रहो। इसी तरह पढ़ाई करो। लेकिन खेल भी चाहिए। बिना खेले सिर्फ पढ़ाई नहीं चाहिए। पढ़ाई के साथ साथ खेलकूद भी चाहिए।
शामला - माझा खो-खो आहेच की.	शामला - मेरा तो खो-खो है।

आई - अगं, आत या बरं. उशीर करु नका. जेवण तयार आहे.	माँ - आओ, तुम दोनों अंदर आओ। देर मत करो। खाना तैयार है।
सुचेता - आधी पसारा आवर. मग जेव. नुसता भाव खाऊ नकोस.	सुचेता - पहले पसारा समेटो! फिर खाना। अपने आप को ज्यादा मत समझो।
शामला - बरं बरं, ओरडू नकोस.	शामला - ठीक है, ठीक है, चिल्लाओ मत।
आई - बस करा गं, सारखी भांडणं, भांडणं आणि भांडणं! थोडा वेळ तरी न भांडता बसा.	माँ - अच्छा अब बस भी करो। हर समय झगड़ा, झगडा और झगड़ा। थोड़ी देर तो बिना झगड़े रहो।

शब्दार्थ

पुस्तक	पुस्तक
गोष्ट	वस्तु/पदार्थ/बात
जागा	जगह
पसारा	बिखरा हुआ सामान
आरडाओरडा	हल्लागुल्ला, शोर
टेबल	मेज़, टेबल
सगळी	सारे, सब
वही	कापी, पुस्तिका
नीट	ठीक से
समोरच	सामने ही
शोध	खोज
गोंधळ	हड़बड़ी
कशासाठी	किसलिए
प्रगतिपुस्तक	प्रगतिपत्र
सही	हस्ताक्षर
पाठीमागे	पीछे की तरफ
अंगण	आँगन
दाखव	दिखाओ
आईला	माँ को
आधीच	पहले ही
माहीत असणे	मालूम होना
आत	अंदर
असाच	ऐसे ही
अभ्यास	पढ़ाई, अध्ययन
खेळ	खेल

नुसताच	सिर्फ
अभ्यासाबरोबर	पढ़ाई के साथ-साथ
खो खो	खो-खो का खेल
उशीर	देर
जेवण	खाना, भोजन
आवरणे	समेटना
भाव खाऊ नकोस	ज्यादा मत समझना
ओरडू नकोस	चिल्लाओ मत
न भांडता	बिना झगड़े

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) शामला काय शोधते आहे?
2) शामला बाबांना का शोधते आहे?
3) शामलाचे प्रगतिपुस्तक पाहून तिचे बाबा तिला काय म्हणतात?
4) शामला कोणता खेळ खेळते?
5) पाठाच्या शेवटी सुचेता शामलाला काय सांगते आहे?
6) शामला व सुचेताला आई का बोलावते आहे?

II उदाहरण के अनुसार रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

1\. 1) *उदाहरण:* हा शांताचा मित्र आहे.
(रेखा, वहिनी, उमेश, प्रकाश)

2) *उदाहरण:* ही शांताची बहीण आहे.
(रेखा, वहिनी, उमेश, प्रकाश)

3) *उदाहरण:* हे शांताचं घर आहे.
(रेखा, वहिनी, उमेश, प्रकाश)

2\. 1) *उदाहरण:* पुस्तक टेबलावर आहे. (टेबल + वर)
(कपाट, दप्तर)

2) *उदाहरण:* रमेश दुकानात आहे. (दुकान + आत)
(घर, गाव, अंगण, बाजार)

3) *उदाहरण:* पुस्तक वहीजवळ आहे. (वही + जवळ)
(यादी, वहिनी, बाहुली)

4) *उदाहरण:* माझ्या बहिणीचं नाव रमा आहे. (बहिण + चं)
(आई, मावशी)

5) *उदाहरण:* दाण्याचा भाव काय? (दाणा + चा)
(वेलदोडा, हरभरा)

6) *उदाहरण:* या जागेचं नाव काय? (जागा + च)
(शिक्षिका, शाळा)

III कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयुक्त रूप प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

पुस्तक .... आहे. (टेबल + वर)
पुस्तक .... आहे. (बहिण + जवळ)
पुस्तक .... आहे. (पसारा + आत)
पुस्तक .... आहे. (वही + मागे)
पुस्तक .... आहे. (टेबल + खाली)
पुस्तक .... आहे. (पेन्सिल + शेजारी)
पुस्तक .... आहे. (वही + समोर)

IV उदाहरण के अनुसार निषेधवाचक वाक्य बनाइए।

1. *उदाहरण:* सुचेता, पुस्तक शोध. सुचेता, पुस्तक शोधू नकोस.
1) आई, चहा कर. आई, चहा ....
2) शांता, इथे बस. शांता, इथे ....
3) शांता, सामान आण. शांता, सामान ....
4) रामू, सामान दे. रामू, सामान ....
5) उमेश, चहा घे. उमेश, चहा ....
6) शामला, आत जा. शामला, आत ....

2. *उदाहरण:* शांता आणि सुचेता, जा. शांता आणि सुचेता, जाऊ नका.
1) उमेश आणि प्रकाश, आता खेळा. उमेश आणि प्रकाश, आता ....
2) बहिणींनो, पुस्तक दाखवा. बहिणींनो, पुस्तक ....
3) राहुल आणि विजय, इकडे या. राहुल आणि विजय, इकडे ....
4) सुमन आणि लता, अभ्यास करा. सुमन आणि लता, अभ्यास ....

3. *उदाहरण:* रामभाऊ, चहा घ्या. रामभाऊ, चहा घेऊ नका.
1) शांताबाई, इथे बसा. शांताबाई, इथे ....
2) शंकरराव, आता जा. शंकरराव, आता ....
3) कुसुमताई, चहापाणी घ्या.कुसुमताई, चहापाणी ....

V उदाहरण के अनुसार 'क' भाग में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर 'ख' भाग के अनुसार उनके उपयुक्त रूप बनाकर वाक्य बनाइए।

	क	*ख*
1) *उदाहरण:*	हा मित्र आहे. (पदार्थ, गहू, तांदूळ, ग्राहक, शिक्षक)	हे मित्र आहेत.

2) *उदाहरण:* हा <u>वडा</u> आहे. हे <u>वडे</u> आहेत.
(दाणा, वेलदोडा, पैसा, कुत्रा, मुलगा)
3) *उदाहरण:* ही <u>मोहरी</u> आहे. ह्या <u>मोहऱ्या</u> आहेत.
(मिरची, छोटुकली, यादी, बाहुली, पिशवी)
4) *उदाहरण:* हे <u>घर</u> आहे. ही <u>घरं</u> आहेत.
(पुस्तक, नाव, गाव, दुकान, मूल)

VI कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।
[दाणे, घर, लवंगा, खिसा, बहीण, पुस्तकं]
1) हा .... आहे. 2) ही .... आहे.
3) हे .... आहे. 4) हे .... आहेत.
5) ह्या .... आहेत. 6) ही .... आहेत.

VII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए प्रश्नवाचक शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।
[कुठली, कोण, कशासाठी, कुणासाठी, कुणाला, काय, कोणती, कुणाजवळ, कुणाचं, कुठे]
उदाहरण: मी पुण्याचा आहे. = तुम्ही <u>कुठले</u>?
1) शामलाला पटना मिरची हवी आहे. = शामलाला .... मिरची हवी आहे?
2) सुचेताला वही हवी आहे. = सुचेताला .... हवं आहे?
3) हा मुलगा आहे. = हा .... आहे?
4) हा खाऊ शांतासाठी आहे. = हा खाऊ .... आहे?
5) मला बाबा हवे आहेत. = बाबा .... हवे आहेत?
6) सुचेताचं पुस्तक इथे नाही = सुचेताचं पुस्तक .... आहे?
7) हे पेन माझं नाही. = हे पेन .... आहे?
8) ही बाहुली माझ्याजवळ आहे. = ही बाहुली .... आहे?
9) तू प्रियाला खेळायला बोलव. = मी प्रियाला .... बोलावू?
10) ही तुरीची डाळ आहे. = ही .... डाळ आहे?

VIII नीचे दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर सही जोड़ी बनाइए।

मिरच्या	बाहुली
बाबांची	गाव
शांताची	दृश्य
उमेशचे	फाईल
घरामागे	लालभडक
करुण	सभा
पत्रव्यवहाराची	सही
कर्मचाऱ्यांची	विभाग

नवीन	चेहरा
भाषेचा	अंगण

पढ़िए और समझिए।

अभ्यासाची खोली

ही मुलांची अभ्यासाची खोली. हा एक रंगमंचच आहे. इथे रामायणही आहे आणि महाभारतही आहे. इथे क्षणात कुरुक्षेत्र तर क्षणात रामलक्ष्मणांच बंधुप्रेम! या नाटकामध्ये दणादण मारामारी आहे, करुण किंकाळ्या आहेत. आरडाओरडा आहे. तसंच खळखळून हसणं आणि प्रेमाची कुजबुजही आहे. इथल्या भिंती धन्य आहेत. त्यांचे कान, डोळे तृप्त आहेत. इथे आहेत अर्वाच्य शिव्या, आणि गीतेचे श्लोक, सुभाषितं आणि पाढेही!

कधी हे न्यायालयही आहे. आई इथली न्यायाधीश आहे. या न्यायालयात छोट्या छोट्या शिक्षा आहेत आणि गौरव व शाबासकीही आहे.

शब्दार्थ

अभ्यासाची खोली	पढ़ने का कमरा
रंगमंच	रंगमंच
बंधुप्रेम	भाई का प्रेम
दणादण	दनादन
किंकाळी	चीख
आरडाओरडा	शोरगुल
खळखळून	खिलाखिलाकर
कुजबुजही	फुसफुसाहट
भिंत	दीवार
धन्य	धन्य
डोळे	आँखे
तृप्त	संतुष्ट
अर्वाच्य	जो बोलना नहीं चाहिए
सुभाषिते	सुभाषित (शिक्षाप्रद कथन)
पाढे	पहाड़े
कधी	कभी
छोट्या	छोटी
शिक्षा	सज़ा
गौरव	गौरव
शाबासकी	शाबाशी

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) मुलांच्या अभ्यासाच्या खोलीचे वर्णन कोणत्या एका शब्दाने केले आहे?
2) इथल्या भिंतींना काय काय ऐकू येते?
3) इथल्या न्यायालयात न्यायाधीश कोण आहेत?
4) न्यायालयात कोणते बक्षीस मिळते?

II उपयुक्त अक्षर जोड़कर नीचे दिए गए शब्द पूरे कीजिए।

1) आ .... डा .... रडा
2) टे .... ला .... र
3) प्र .... ति .... स्त .... र
4) रं .... मं .... च
5) रा .... ल .... च

III प्रत्येक शब्द समूह में जो शब्द उस वर्ग का न हो उसे पहचानिए और बताइए।

1) वही, सही, खोली, किंकाळी, श्लोक, शिवी
2) रंगमंच, खेळ, कान, खोली, अभ्यास, न्यायाधीश
3) टेबल, प्रगतिपुस्तक, पेन, भांडण, भिंत, जेवण
4) नात, पेन्सिल, भिंत, कुजबुज, बहीण, कान
5) पाढा, पसारा, डोळा, महिना, शिक्षा
6) इकडे, तिकडे, पाठीमागे, समोर, भांडण, आत, बाहेर

IV पाठ पर आधारित निम्नलिखित शब्दों में से उन शब्दों की जोड़ियाँ बनाइए जिनका आपस में कुछ संबंध हो।

(क) प्रगतिपुस्तक, टेबल, अंगण, बहिणी, न्यायालय, कुरुक्षेत्र, गीता, प्रेम
(ख) कुजबुज, बाबा, भांडण, न्यायाधीश, महाभारत, श्लोक, पुस्तक, सही

V निम्नलिखित शब्द समूह में उन शब्दों को बताइए जो अभी तक पढ़े हुए वार्तालाप/पाठ्यसामग्री में आए हैं।

अभ्यास, खेळ, करुण, खळखळून, टेबल, अंधार, शिवी, खोली, सही, वही, शांतता, पेन, भांडण, पान, श्लोक, किंकाळी, भूकंप, पसारा, न्यायाधीश, न्यायालय, मुलाखत, कुजबुज, कुरुक्षेत्र, वार्ताहर

VI कोष्ठक में दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थी मराठी शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) भूगोलाचं पुस्तक .... आहे. (सामने ही)
2) .... करु नकोस. (शोर)

3) प्रगतिपुस्तकावर बाबांची .... हवी आहे. (हस्ताक्षर)
4) आधी सर्व पसारा .... (समेटो)
5) बाबा .... हवे आहेत? (किसलिए)
6) नाटकात .... हसणं आहे. (खिलखिलाकर)
7) इथल्या .... धन्य आहेत. (दीवारें)

VII नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।
कुरुक्षेत्र, कुजबुज, किंकाळी, श्लोक, न्यायालय

VIII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए शब्दों में से चार शब्द समूहों का निर्माण कीजिए।
उदा. पुस्तक, वही, पेन, पेन्सिल.
मारामारी, दुकान, किंकाळी, बाबा, मिरच्या, खाद्यपदार्थ, गहू, आई, चिवडा, आरडाओरडा, भांडण, तांदूळ, बहीण, बटाटेवडा, नात

IX हिंदी में अनुवाद कीजिए
हे लोकमान्य टिळकांचे घर आहे. त्यांचे पूर्ण नाव बाळ गंगाधर टिळक आहे. रत्नागिरी जिल्ह्यातील चिखली हे त्यांचे जन्मगाव आहे. लोकमान्य टिळक देशाचे फार मोठे नेते आहेत. त्यांचे विचार क्रांतिकारक आहेत. "स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे" ही त्यांची प्रसिद्ध घोषणा आहे.

X मराठी में अनुवाद कीजिए
बच्चो! इधर देखो। ये किस का चित्र है? यह बापू का चित्र है। इन्हें बापू क्यों कहते हैं? बापू याने कि पिता। यह हमारे राष्ट्र-पिता हैं। सब इन्हें बापू कहते हैं।

XI आपकी बड़ी/छोटी बहन के बारे में एक छोटा सा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में पूर्व पाठों में आए 'आहे', 'आहेत', 'पाहिजे' (चाहिए) आदि क्रियावाले वाक्यों में 'कशासाठी', 'कशाला' (किसलिए), 'किसे (वहाँ)' जैसे प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग किया गया है।

उदाहरण:

1) तुला सही कशासाठी हवी आहे? - तुम्हें हस्ताक्षर किसलिए चाहिए?
2) तुला पेन्सिल कशासाठी हवी आहे? - तुम्हें पेंसिल किसलिए चाहिए?
3) तुला सही कशाला हवी आहे? - तुम्हें हस्ताक्षर किसलिए चाहिए?
4) तुला पेन्सिल कशाला हवी आहे? - तुम्हें पेंसिल किसलिए चाहिए?
5) तुझं घर कुठे आहे? - तुम्हारा घर कहाँ है?

6) पुस्तकं कुठे आहेत? - पुस्तकें कहाँ हैं?
7) तुझे सगळे मित्र कुठे आहेत? - तुम्हारे सारे मित्र कहाँ हैं?

'साठी' का अर्थ है 'के लिए' और 'ला' का अर्थ है 'को'। 'कशासाठी' और 'कशाला' दोनों का अर्थ 'किस लिए' है। प्रायः 'कशासाठी' और 'कशाला' दोनों का प्रयोग समान रूप से किया जाता है।

II इस पाठ में मराठी के 'न बोलता' (बिना बोले), 'न भांडता (बिना झगड़ा किए) जैसे निषेधवाचक पूर्वकालिक कृदंत क्रिया विशेषण का परिचय दिया गया है।

उदाहरण: 1) न बोलता काम कर. - बिना बोले काम करो।
2) थोडा वेळ तरी न भांडता बसा. - थोड़ी देर तो बिना झगड़ा किए रहो।
3) न शोधता नुसता गोंधळ कर. - बिना ढूँढे सिर्फ शोर मचाना।

मराठी में ऐसे प्रयोग में क्रिया के पहले 'न' लगाते हैं और क्रिया-धातु में 'ता' लगाते हैं।

III अब तक मराठी की 'ला' विभक्ति के विभिन्न प्रयोग सीखे हैं जो नीचे दिए गए हैं।

मला एक भाऊ आहे. मेरा एक भाई है।
या खोलीला तीन खिडक्या आहेत. इस कमरे में तीन खिडकियाँ हैं।
मला दोन डोळे आहेत. मेरी दो आँखें हैं।
तुम्हाला थोडा वेळ आहे ना? क्या आपके पास थोड़ा समय है?
मला भरपूर काम आहे. मेरे पास बहुत काम है।

IV मराठी में स्थानवाची अव्यय से दिशावाची अव्यय का निर्माण किस प्रकार होता है, यह नीचे दिखाया गया है।

इथे (यहाँ)	इथून (यहाँ से)
तिथे (वहाँ)	तिथून (वहाँ से)
इकडे (इधर)	इकडून (इधर से)
तिकडे (उधर)	तिकडून (उधर से)
मधे (बीच)	मधून (बीच का)
आत (अंदर)	आतून (अंदर से)
बाहेर (बाहर)	बाहेरून (बाहर से)
वर (ऊपर)	वरून (ऊपर से)
खाली (नीचे)	खालून (नीचे से)
मागे (पीछे)	मागून (पीछे से)
पुढे (आगे)	पुढून (आगे से)
समोर (सामने)	समोरून (सामने से)
जवळ (पास)	जवळून (पास से)

कुठे (कहाँ)	कुठून (कहाँ से)
-कडे (पास)	-कडून (पास से)
-त (में, पर)	-तून (में से)

V स्थानवाची अव्यय में संबध सूचक अव्यय लगाकर शब्द निर्माण किस प्रकार होता है यह नीचे दिखाया गया है।

इथे (यहाँ)	इथला (यहाँ का)
तिथे (वहाँ)	तिथला (वहाँ का)
इकडे (इधर)	इकडचा (इधर का)
तिकडे (उधर)	तिकडचा (उधर का)
मधे (बीच)	मधला (बीचका/मझला)
आत (अंदर)	आतला (अंदर का)
बाहेर (बाहर)	बाहेरचा (बाहर का)
वर (ऊपर)	वरचा (ऊपर का)
खाली (नीचे)	खालचा (नीचे का)
मागे (पीछे)	मागचा (पीछे का)
पुढे (आगे)	पुढचा (आगे का)
समोर (सामने)	समोरचा (सामने का)
जवळ (पास)	जवळचा (पास का)
कुठे (कहाँ)	कुठला (कहाँ का)
-कडे (पास)	-कडचा/कडला (पास का)
-त (में, पर)	-तला (में, का)

VI मराठी में हिंदी के समान ही पहले चार संख्यावाचक विशेषण निम्न प्रकार से बनते हैं।

मराठी	*हिंदी*	*मराठी*	*हिंदी*
एक	एक	पहिला	पहला
दोन	दो	दुसरा	दूसरा
तीन	तीन	तिसरा	तीसरा
चार	चार	चौथा	चौथा

इसके बाद, संख्या के आगे 'वा' लगाकर विशेषण रूप बनाए जाते हैं।

पाच	पाँच	पाचवा	पाँचवाँ
सहा	छह	सहावा	छठा
दहा	दस	दहावा	दसवाँ
पंधरा	पंद्रह	पंधरावा	पंद्रहवाँ

धडा पाठ 4

सभेची तयारी

बोराडे : नमस्कार बाईसाहेब.

बंसल : नमस्कार बोराडे साहेब. या बसा. तो अहवाल तयार आहे का? मला तो आजच हवा आहे.

बोराडे : बाईसाहेब, हा भाषेबद्दलचा अहवाल. तुम्हाला हाच हवा आहे ना?

बंसल : हो. हाच हवा आहे मला. आता जरा तो अहवाल त्या बाजूला ठेवा.

बोराडे : तुम्हाला आणखी काही हवं आहे का? मी आता काय करु?

बंसल : तुम्ही वीस तारखेला नेहमीची त्रैमासिक सभा बोलवा. सर्व कर्मचाऱ्यांना एकत्र जमवा. तिथं आपण या अहवालावर चर्चा करुया. सर्वांची मतं घेऊया. त्याप्रमाणं अहवालात आवश्यक बदल करूया.

बोराडे : ठीक आहे बाईसाहेब. मी आता जाऊ का?

बंसल : हो!

बोराडे : शिंदे!

शिंदे : काय साहेब?

बोराडे : ती फाईल आणा बरं!

शिंदे : कोणती फाईल?

बोराडे : उत्तर प्रदेश सरकारची. भारतीय भाषा शिक्षणाबाबतची.

शिंदे : ती माझ्याजवळ नाही.

बोराडे : मग कोणाकडं आहे?

शिंदे : कुळकर्णीजवळ.

बोराडे : ठीक आहे. तुम्ही जरा माझ्या खोलीत या. इकडे तिकडे जाऊ नका.

बैठक की तैयारी

बोराडे : नमस्कार बहनजी.

बंसल : नमस्कार बोराडे साहब। आइए, बैठिए। क्या वह रिपोर्ट तैयार है? मुझे वह आज ही चाहिए।

बोरडे : बहनजी, यह रही भाषा संबधी रिपोर्ट। आपको यही चाहिए न?

बंसल : हाँ! यही चाहिए मुझे। अभी तो वह रिपोर्ट उस तरफ रखो।

बोराडे : आप को कुछ और चाहिए क्या? अब मैं क्या करूँ?

बंसल : आप बीस तारीख को नियमित बैठक बुलाइए। सारे कर्मचारियों को इकट्ठा कीजिए। वहाँ हम सब इस रिपोर्ट पर चर्चा करें। सबकी राय लें। उसके अनुसार रिपोर्ट में आवश्यक परिवर्तन करें।

बोराडे : ठीक है बहनजी! क्या अब मैं जाऊँ?

बंसल : हाँ!

बोराडे : शिंदे!

शिंदे : क्या साहब?

बोराडे : वह फाइल लाइए तो जरा।

शिंदे : कौनसी फाइल?

बोराडे : उत्तर प्रदेश सरकार की भारतीय भाषा शिक्षण संबंधी (फाइल)।

शिंदे : वह मेरे पास नहीं है।

बोराडे : फिर किसके पास है?

शिंदे : कुलकर्णी के पास है।

बोराडे : ठीक है। आप जरा मेरे कमरे में आइए। इधर उधर मत जाइए।

शिंदे : काय साहेब?	शिंदे : क्या है साहब?
बोराडे : बरं, तर शिंदे वीस तारखेला एक सभा बोलवा. आजच तुम्ही परिपत्रक पाठवा. विसरू नका.	बोराडे : शिंदे। बीस तारीख को एक बैठक बुलाओ। आज ही तुम परिपत्र भेजो। भूलो मत।
शिंदे : कसली सभा? कुणाकुणाला बोलवू?	शिंदे : कैसी बैठक? किस-किस को बुलाना है?
बोराडे : नेहमीचीच त्रैमासिक सभा. प्रशासनिक विभागातल्या सगळ्या कर्मचाऱ्यांना बोलवा.	बोराडे : नियमित त्रैमासिक बैठक। प्रशासनिक विभाग के सभी कर्मचारियों को बुलाइए।
शिंदे : कुठे ठरवू सभा? सभागृहात की सचिवांच्या खोलीत?	शिंदे : बैठक का आयोजन कहाँ करें? समिति-कक्ष में या सचिव महोदय के कमरे में?
बोराडे : सभागृहात. तसंच सगळ्या कर्मचाऱ्यांच्या तक्रारी, अडचणी आणि काही सूचनाही मागवा.	बोराडे : समिति-कक्ष में। साथ ही सभी कर्मचारियों से शिकायतें, कठिनाइयाँ और कुछ सुझाव भी आमंत्रित कीजिए।
शिंदे : ठीक आहे साहेब.	शिंदे : ठीक हैं साहब।
बोराडे : त्यांच्या तक्रारी ऐकूया. अडचणींचा विचार करूया. त्यांच्या सूचनांचा पण विचार करूया. आता तुम्ही कुळकर्णींना पाठवा.	बोराडे : उनकी शिकायतें सुनें। कठिनाइयों पर विचार करें। उनके सुझावों पर भी विचार करें। अब तुम कुलकर्णी को भेजो।

शब्दार्थ

अहवाल	रिपोर्ट
बाजू	बाजू
नेहमीची	नियमित
त्रैमासिक	त्रैमासिक
सभा	बैठक
सर्व	सब, सारे
कर्मचारी	कर्मचारी
एकत्र	इकट्ठा
चर्चा	चर्चा
बदल	बदलाव/परिवर्तन
आता	अब
फाईल	फाइल
शिक्षणाबाबतची	शिक्षण संबंधी

माझ्याजवळ	मेरे पास
कोणाकडे	किसके पास
परिपत्रक	परिपत्र
पाठवा	भेजिए
कसली	कौनसी
कुणाकुणाला	किस-किस को
विभाग	भाग, विभाग
सगळ्या	सभी
तक्रारी	शिकायतें
अडचणी	कठिनाइयाँ
सूचना	सुझाव
मागवा	प्राप्त करना/ आमंत्रित करना
विचार	सोच, विचार
विचार करणे	विचार करना

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) बंसलना कुठला अहवाळ हवा आहे?
2) वीस तारखेला कुठली सभा आहे?
3) उत्तरप्रदेश सरकारची भारतीय भाषा शिक्षणा बाबतची फाईल कुणाकडे आहे?
4) त्रैमासिक सभा कुठे आहे?

II उदाहरण के अनुसार प्रत्येक प्रश्न के एक-एक उत्तर दीजिए।

उदाहरण: तुम्हाला फक्त हेच पेन हवं आहे ना?
होय, मला फक्त हेच पेन हवं आहे.

1) तुम्हाला एकच बाहुली हवी आहे ना?
2) तुम्हाला हेच पुस्तक हवं आहे ना?
3) तुम्हाला हेच खाद्यपदार्थ हवे आहेत ना?

III उदाहरण के अनुसार प्रत्येक प्रश्न के दो-दो उत्तर दीजिए।

उदाहरण: तुम्हाला हेच अहवाल हवे आहेत का?
होय, मला हेच अहवाल हवे आहेत.
नाही, मला हे अहवाल नको आहेत.

1) तुम्हाला हेच तांदूळ हवे आहेत का?
2) तुम्हाला हेच पुस्तक हवे आहे का?

3) तुम्हाला हेच गहू हवे आहेत का?
4) तुम्हाला हेच फूल हवं आहे का?

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* ही वही आहे. हया वह्या आहेत.
   1) ही खोली आहे. 2) ही बाहुली आहे.
   3) ही मिरची आहे. 4) ही मोहरी आहे.
2. *उदाहरण:* ती बहीण आहे. त्या बहिणी आहेत.
   1) ती पेन्सिल आहे. 2) ती फाईल आहे.
   3) ती भिंत आहे. 4) ती डाळ आहे.
3. *उदाहरण:* ती भाषा आहे. त्या भाषा आहेत.
   1) ती सभा आहे. 2) ती जागा आहे.
   3) ती शाळा आहे. 4) ती शिक्षिका आहे.
4. *उदाहरण:* तो खाद्यपदार्थ आहे. ते खाद्यपदार्थ आहेत.
   1) तो अहवाल आहे. 2) तो मित्र आहे.
   3) तो ग्राहक आहे. 4) तो शिक्षक आहे.
5. *उदाहरण:* ते घर आहे. ती घरं आहेत.
   1) ते सभागृह आहे. 2) ते टेबल आहे.
   3) ते गाव आहे. 4) ते पुस्तक आहे.

V उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थक मराठी शब्दों का प्रयोग कर वाक्यों की जोड़ियाँ बनाइए।

उदाहरण: पुस्तक वहीखाली आहे. वही .... आहे. (पुस्तक के ऊपर)
वही पुस्तकावर आहे.

1) शाळा घरामागे आहे. घर .... आहे. (स्कूल के सामने)
2) दुकान शाळेसमोर आहे. शाळा .... आहे. (दुकान के पीछे)
3) पेन पुस्तकावर आहे. पुस्तक .... आहे. (पेन के नीचे)
4) माझ्यापुढे गीता आहे. मी .... आहे. (गीता के पीछे)
5) सभेपूर्वी चहापान आहे. चहापाना .... सभा आहे. (के बाद)

VI उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: तू त्या मुलाला बोलव. तुम्ही त्या मुलाला बोलवा.

1) तू त्या कमचाऱ्याला बोलव. 2) तू बहिणीला बोलव.
3) तू परिपत्रक पाठव. 4) तू इकडे ये.
5) तू चहा घे.

VII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर नीचे दिए गए वाक्यों का विस्तार कीजिए।

उदाहरण: तुम्ही सभा बोलवा. (त्रैमासिक)
(नेहमीची)
(उद्या)

1) तुम्ही त्रैमासिक सभा बोलवा.
2) तुम्ही नेहमीची त्रैमासिक सभा बोलवा.
3) तुम्ही उद्या नेहमीची त्रैमासिक सभा बोलवा.

1) तुम्ही जमवा.
(एकत्र)
(कर्मचाऱ्यांना)
(सर्व)

2) आपण करूया.
(बदल)
(आवश्यक)
(अहवालात)

3) बोलवा.
(कर्मचाऱ्यांना)
(सगळ्या)
(विभागातल्या)
(आपल्या)

4) पाठवा.
(परिपत्रक)
(एक)
(आजच)

VIII उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों में उपयुक्त शब्द का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: तो कर्मचारी आहे.
त्या कर्मचाऱ्याला बोलवा.

1) तो भाषेचा अहवाल आहे.
.... अहवालावर चर्चा आहे.
2) ते आपले सगळे कर्मचारी आहे.
.... कर्मचाऱ्यांना बोलवा.
3) हा माझा मित्र आहे.
.... मित्राचं नाव उमेश आहे.
4) ही मुलांची अभ्यासाची खोली आहे.
.... खोलीत पसारा आहे.
5) हे सुचेताचं अभ्यासाचं टेबल आहे.
.... टेबलावर पुस्तकं आहेत.

IX उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में से उपयुक्त शब्द चुनकर दिए गए वाक्यों के प्रश्नवाचक वाक्य कीजिए।

(कोणती, कोणते, कोणतं, कोणाजवळ, कुणाला, कुणाकुणाला)

उदाहरण: ते पुस्तक सुचेताकडे आहे. ते पुस्तक कोणाकडे आहे?

1) हे पुस्तक भूगोलाचे आहे. 2) ही पटना मिरची आहे.
3) जोसेफला बोलवा. 4) सर्व कर्मचाऱ्यांना बोलवा.
5) ती बाहुली शांताजवळ आहे. 6) हे भाषेचे अहवाल आहेत.

X उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के प्रश्न वाचक रूप बनाइए।

उदाहरण: बाईंना सामान दे. बाईंना सामान देऊ का?

1) उमेशला चहा दे. 2) ही मिठाई घे.
3) भूगोलाचं पुस्तक शोध. 4) आत या.

XI उदाहरण के अनुसार दिए गए जोड़ियों के दूसरे वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: रामू, ताईंना हे सामान दे.
आपण ताईंना हे सामान देऊया.

1) मावशी, तू चहा घे. मावशी, आपण चहा ....
2) उमेश, तू बस. उमेश, आपण ....
3) सुचेता, तू जेवण कर. सुचेता, आपण जेवण ....
4) बोराडे, तुम्ही चर्चा करा. बोराडे, आपण चर्चा ....
5) पुढील वर्षाच्या कार्यक्रमांवर विचार करा. आपण ....
6) सुधा, तू बाजारात जा. सुधा, आपण बाजारात ....
7) तुम्ही बटाटेवडे खा. आपण, बटाटेवडे ....

पढ़िए और समझिए।

सगळ्या सभा नेहमीसारख्याच! चेहरेही तेच, कामकाजही तेच, विषयपत्रिकाही तीच, गुळगुळीत झालेले शब्दही तेच आणि सभेचा विषयही तोच! 'प्रशासनात भारतीय भाषांच्या उपयोगाची प्रगती'. पण आजची सभा निराळी आहे. सचिवांना उत्साह आहे. भाषेमध्ये रस आहे. त्यांच्याजवळ कर्मचाऱ्यांच्या तक्रारींवर उपाय आहेत. पुढच्या वर्षासाठी योजना आहेत. त्यांचे एकच ध्येय आहे 'भारतीय भाषांतच प्रशासन हवे'. त्यासाठी त्यांच्याजवळ अनेक कार्यक्रम आहेत. सर्वांनाच उत्साह आहे. प्रयत्न करा. प्रगती शक्य आहे. "भारतीय भाषा जिंदाबाद!"

शब्दार्थ:

सगळ्या	सब
नेहमीसारख्याच	हमेशा की तरह
कामकाज	कामकाज
गुळगुळीत	गोलमोल, अस्पष्ट
झालेले	हुए

प्रगती	प्रगति
पण	पर, लेकिन
आजची	आज की
निराळी	निराली, अनोखी
सचिवांना	सचिव को
उत्साह	उत्साह
रस	रुचि
त्यांच्याजवळ	उनके पास
तक्रारींवर	शिकायतों पर
पुढच्या	अगले
योजना	योजना
एकच	एकही
ध्येय	लक्ष्य
भाषांतच	भाषाओं में
त्यासाठी	इसके बारे में
प्रयत्न	प्रयत्न
शक्य	संभव

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) आजची सभा कशासाठी आहे?
2) वारंवार वापरल्याने शब्द कसे झाले आहेत असे म्हटले आहे?
3) सचिव कसे आहेत?
4) सचिवांचे ध्येय काय आहे?
5) लेखकाने शेवटी कोणती घोषणा दिली आहे?

II वार्तालाप और अनुच्छेद के आधारपर नीचे दिए गए वाक्य पूरे कीजिए।

1) हे भाषेबद्दलचे .... आहेत.
2) अहवालात आवश्यक तो .... करु.
3) प्रशासनिक .... सगळ्या .... बोलवा.
4) सगळ्या कर्मचाऱ्यांच्या ...., ..., ... मागवा.
5) गळगुळीत झालेले .... तेच आणि सभेचा .... तोच!

III पाठ में किन शब्दों के साथ नीचे दिए गए विशेषणों का प्रयोग किया गया है, बताइए।
त्रैमासिक, नवा, गुळगुळीत

IV नीचे दिए गए प्रत्येक शब्द समूह से उस शब्द को चुनकर बताइए जो उस वर्ग का न हो।

1) सूचना, सभा, भाषा, विभाग, योजना, स्पर्धा
2) उपाय, अहवाल, प्रगती, विषय, कार्यक्रम
3) मत, परिपत्र, उपदेश, कामकाज, रूप, राज्य
4) फाईल, शब्द, अडचण, तक्रार, बाग
5) ठेवा, घ्या, कर्मचारी, पाठवा, बोलवा, या

V प्रत्येक शब्दसमूह के कोष्ठक में दिए गए शब्दों से संबंध रखनेवाले शब्द/शब्दों को पहचानिए और बताइए।

1) मुलगा, गुळगुळीत, काळा, भुरभुरीत, पांढरा - (शब्द)
2) कर्मचारी, निळी, अडचणी, खेळ, त्रैमासिक, स्वस्त - (सभा)
3) गहू, फुले, योजना, बाग, अडचण - (भाषा)
4) मागणी, गहू, फूल, चिवडा, पिवळा - (कर्मचारी)

VI कोष्ठक में दिए गए हिंदी शब्दों के मराठी समानार्थी शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) तुम्हाला .... काही हवं आहे का? (और)
2) आपण अहवालात आवश्यक तो .... करूया. (बदलाव)
3) तीस .... एक सभा बोलवा. (तारीख को)
4) प्रशासनिक विभागातल्या .... कर्मचाऱ्यांना बोलवा. (सब)
5) ती फाईल .... आहे? (किसके पास)

VII हिंदी में अनुवाद कीजिए।

आज शाळेत शिक्षक आणि पालकांची एक सभा आहे. ही सभा शाळेच्या सभागृहात आहे. सभेचा विषय आहे 'पालकांच्या व विद्यार्थ्यांच्या अडचणी समजून घेणे.' या सभेत विद्यार्थ्यांना प्रवेश नाही. सभेला सगळे शिक्षक आणि पालक उपस्थित आहेत. पालकांच्या काही अडचणी, तक्रारी आणि सूचनाही आहेत. तरीही या सभेत गोंधळ व आरडाओरडा मात्र नाही. ही या वर्षातील शेवटचीच सभा आहे. सभेनंतर गरमागरम चहा, स्वादिष्ट बर्फी, चिवडा आणि पेढे आहेत.

VIII मराठी में अनुवाद कीजिए

आज दोपहर को कार्यालय में बैठक का आयोजन कीजिए। आज कर्मचारियों की बैठक है। अपनी माँगें, कठिनाइयाँ और सुझाव सचिव महोदय के सामने रखिए। सभा के बाद चाय का प्रबंध कीजिए। चाय के साथ मिठाई देना न भूलिए।

IX नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

अहवाल, फाईल, सभा, कर्मचारी, त्रैमासिक

X "कार्यालय में वार्तालाप" के बारे में एक छोटा सा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्न प्रकार के वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1. *उदाहरण:*
   1) तिथं आपण या अहवालावर चर्चा करुया.
      (वहाँ हम सब इस रिपोर्ट पर चर्चा करें।)
   2) सर्वांची मतं घेऊया.
      (सब की राय लें।)
   3) त्याप्रमाणे अहवालात आवश्यक बदल करुया.
      (उसके अनुसार रिपोर्ट में आवश्यक परिवर्तन करें।)
2. *उदाहरण:*
   1) मला तो आजच हवा आहे. (मुझे वह आजही चाहिए।)
   2) तुम्हाला हाच हवा आहे ना? (आपको यही चाहिए न?)
   3) हाच हवा आहे मला. (यही चाहिए मुझे।)
   4) तुम्हाला आणखी काही हवं आहे का? (आपको कुछ और चाहिए क्या?)

उपर्युक्त उदाहरण (1.) के वाक्यों में रेखांकित क्रियारूप वक्ता और श्रोता दोनों मिलकर एक क्रिया करने का प्रस्ताव वक्ता करता है। मूल क्रियारूप से 'ऊ' प्रत्यय जोड़कर 'या' का प्रयोग कर ऐसे इच्छार्थक क्रियारूप बनते हैं।
मूल क्रिया + 'ऊ' प्रत्यय + 'या'
कर + ऊ + या = करुया (करें)
घे + ऊ + या = घेऊया (लें)

उदाहरण (2.) के वाक्यों में 'हवा आहे' 'चाहिए' वाले वाक्यों में सर्वनामों के साथ कर्मकारक 'ला' का प्रयोग दिखाया गया है।
विविध सर्वनामों के साथ 'ला' का प्रयोग निम्न प्रकार से होता है।

	एकवचन	*बहुवचन*
उत्तम पुरुष	मला (मुझे)	आम्हाला/आपल्याला (हमको)
मध्यम पुरुष	तुला (तुमको)	तुम्हाला/आपल्याला (आपको)
अन्य पुरुष	ह्याला/त्याला (इसको/ हिला/तिला उसको)	ह्यांना/त्यांना (इनको/उनको)

ह्याला/त्याला

ध्यान दें कि 'ला' का बहुवचन रूप 'ना' केवल अन्यपुरुष में प्रयुक्त होता है।

II मराठी में आकारान्त विशेषण के रूप हिंदी की ही तरह संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार बदलते हैं।

1. *उदाहरण:*

	एकवचन	*बहुवचन*
पु.	गोरा मुलगा (गोरा लड़का)	गोरे मुलगे (गोरे लड़के)
स्त्री.	गोरी मुलगी (गोरी लड़की)	गोऱ्या मुली (गोरी लड़कियाँ)
नपुं.	गोरं मूल	गोरी मुलं

2. यदि संज्ञा में कोई विभक्ति लगे और उसका तिर्यक् रूप प्रयुक्त हो तो विशेषण के अन्त में सभी लिंग वचनों में 'या' लगता है।
उदाहरण:

	एकवचन	*बहुवचन*
पु.	गोऱ्या मुलाचा (गोरे लडके का)	गोऱ्या मुलांचा (गोरे लड़कों का)
स्त्री.	काळ्या मुलीचा (काली लड़की का)	काळ्या मुलींचा (काली लड़कियों का)
नपुं.	मोठ्या झाडाचा (बड़े पेड़ का)	मोठ्या झाडांचा (बड़े पेड़ों का)

3. उपर्युक्त नियम संकेतवाचक विशेषणों के लिए भी लागू होता है।
उदाहरण:

	एकवचन	*बहुवचन*
पु.	हा/तो	हे/ते
स्त्री.	ही/ती	ह्या/त्या
नपुं.	हे/ते	ही/ती

तिर्यक् रूप - ह्या/त्या

उदाहरण: हा मुलगा आहे. - यह लडका है।
ह्या मुलाजवळ वह्या आहेत. - इस लड़के के पास कापियाँ हैं।

4. शेष विशेषण शब्दों में लिंगवचन के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता।
उदाहरण:

	एकवचन	*बहुवचन*
पु.	सुंदर मुलगा	सुंदर मुलगे
स्त्री.	सुंदर मुलगी	सुंदर मुली
नपुं.	सुंदर मूल	सुंदर मुलं

III किसी वस्तु या बात के विषय में सुनिश्चितता प्रकट करने के लिए हिंदी के समान मराठी में भी वाक्य के अन्त में 'न' या 'ना' लगाकर प्रश्न करते हैं।
उदाहरण: हा आंबेमोहोर तांदूळच आहे ना?/नं?
यह आंबेमोहोर चावल ही है ना?/न?

IV हिंदी 'के बारे में' 'बाबत' प्रयोगों के लिए मराठी में 'बाबत, बद्दल' 'साठी' ऐसे अव्ययों का प्रयोग होता है। ये अव्यय रूप संज्ञाओं तथा सर्वनामों के तिर्यक् रूपों से जोड़े जाते हैं।
उदाहरण:

1. शिकण्या + बाबत = शिकण्याबाबत - शिक्षण के बाबत
विद्यार्थ्यांना शिकण्याबाबात उत्साह हवा.
(विद्यार्थिओं में शिक्षण के बाबत उत्साह चाहिए।)
2. शिकण्या + बद्दल = शिकण्याबद्दल - शिक्षण के बाबत
प्रत्येकाला शिकण्याबद्दल उत्साह पाहिजे.
(हर एक में शिक्षण के बाबत उत्साह चाहिए।)
3. शिकण्या + साठी = शिकण्यासाठी - शिक्षण के लिए।
सर्वांना शिकण्यासाठी शाळा पाहिजे. (सब को शिक्षण के लिए स्कूल चाहिए।)
4. माझ्या + बाबत = माझ्याबाबत - मेरे बारे में
माझ्याबाबत तुला माहिती आहे का? (मेरे बारे में तुम्हें जानकारी है क्या?)
5. सभे + बद्दल = सभेबद्दल - सभा के बारे में/सभा के बाबत
सभेबद्दल विचार कर. (सभा के बारे में सोचो।) (सभा के बाबत सोचो.)

V प्रश्न वाचक सर्वनामों के तिर्यक रूपों की द्विरुक्ति में हिंदी के समान मराठी में भी विभक्ति प्रायः बाद वाले शब्द में लगती है।
उदाहरण: कुणाला -किसको
कुणाकुणाला - किस किसको
कुणा कुणाला - किस, किस का

धडा
पाठ 5

मंगळागौरीची तयारी

निशा : प्रिया, आज आमच्या सुमनताईची मंगळागौर आहे. आज आपल्याला रामूकाकांच्या बागेत जायला हवं. चल, आपण रामूकाकांच्या बागेतून खूप खूप फुलं आणूया.

प्रिया : हो सोळा प्रकारची पानं पण आणायला हवीत ना?

निशा : हो तर! पानं आणि फुलं दोन्ही आणायला हवीत. आंबा, पेरू, वड, लिंबू, पिंपळ आणि चिंच!

प्रिया : फक्त सहाच! इतर पानं आणायला नकोत का? चल, कुसुम आणि कुमुदला ही बोलव. त्यांनाही बरोबर घेऊन जायला पाहिजे.

निशा : कुसुम, कुमुद चला ग लवकर. खूप पानं आणि फुलं गोळा करायला पाहिजेत.

कुसुम : अय्या! बागेत किती फुलंच फुलं आहेत नाही?

कुमुद : जुई, चमेली, मोगरा गुलाब.... अगं बाई ... फुलंच फुलं! फुलंच फुलं! हे तर सर्वात सुंदर दृश्य आहे.

प्रिया : हो तर. आणि हा बघ झेंडू, हा तेरडा आणि हा केवडा! झेंडूपेक्षा के-वड्याचा सुगंध जास्त मादक आहे.

निशा : प्रिया, तू फक्त पानं गोळा कर.

प्रिया : का? मी फुलं तोडायला नको?

मंगळागौरी की तैयारी

निशा : प्रिया, आज अपनी सुमन दीदी की 'मंगळागौरी' है। आज हमें रामूकाका के बगीचे में जाना चाहिए। चलो रामूकाका के बगीचे से ढेर सारे फूल ले आएँ।

प्रिया : हाँ सोलह तरह के पत्ते भी तो लाना चाहिए न?

निशा : हाँ तो, पत्ते और फूल दोनों ही चाहिए। आम, अमरूद, बरगद, नीबू, पीपल और इमली (के)।

प्रिया : सिर्फ छह ही! अन्य पत्ते नहीं लाना चाहिए क्या? चलो, कुसुम और कुमुद को भी बुलाओ। उन्हें भी साथ ले जाना चाहिए।

निशा : कुसुम, कुमुद जल्दी चलो न! बहुत सारे पत्ते और फूल इकट्ठे करना चाहिए।

कुसुम : वाह वाह! बगीचे में फूल ही फूल हैं, ना?

कुमुद : जूही, चमेली, मोगरा, गुलाब - उई माँ - फूल ही फूल! फूल ही फूल! यह तो सबसे सुंदर दृश्य है।

प्रिया : हाँ, और यह देखो गेंदा, यह गुल मेहँदी और यह केवड़ा। गेंदे की अपेक्षा केवड़े की सुगंध अधिक मादक है।

निशा : प्रिया, तुम सिर्फ पत्ते इकट्ठे करो।

प्रिया : क्यों? मुझे फूल नहीं तोडना चाहिए?

निशा : ऐसा नहीं है प्रिया। फूल तो तोड़ना ही चाहिए। लेकिन वह काम तो कुमुद

निशा : तसं नाही गं प्रिया! फुलं तर तोडायला पाहिजेतच. पण ते काम तर कुमुदकडे आहे.
कुमुद : वा वा! गुलाब कित्ती रंगांचे आहेत! हा पिवळाधमक, तो पांढराशुभ्र, पिवळसर, आणि गुलाबी रंगच रंग. पण तो लालभडक कुंकवासारखा गुलाब सर्वात सुंदर आहे.
निशा : ए, ही परडी कुणाची आहे?
कुमुद : माझी नाही. कुसुमची आहे का?

कुसुम : नाही. प्रियाच्या सासूबाईंची आहे.
प्रिया : हो, खूप छान आहे न? अगं हे छोटं पांढरं फूल कसलं आहे?
कुमुद : हा पारिजातक आहे याचा सुगंध इतर फुलांपेक्षा अधिक मोहक आहे. अग पण निशा कुठं आहे?
कुसुम : ती काय त्या लाल गुलाबाच्या झ ाडाजवळ आहे.
निशा : ए, लवकर चला गं सगळ्याजणी! उशीर करु नका. आपल्याला भराभर कामं करायला हवीत.

का है।
कुमुद : वाह वाह। गुलाब कितने रंगों के हैं। गहरा पीला, शुभ्र सफेद, हल्का पीला और गुलाबी। रंग ही रंग। लेकिन वह सिंदूर जैसा सुर्ख लाल गुलाब सबसे सुंदर है।
निशा : ऐ, यह डलिया किसकी है?
कुमुद : मेरी तो नहीं है। कुसुम की है क्या?
कुसुम : नहीं, प्रिया की सास की है।
प्रिया : हाँ, बहुत बढ़िया है न? अरे, यह छोटा सफेद फूल कौनसा है?
कुमुद : यह हरसिंगार है। इसकी सुगंध अन्य फूलों की अपेक्षा अधिक मोहक है। अरे, पर निशा कहाँ है?
कुसुम : वह देखो उस लाल गुलाब के पौधे के पास है!
निशा : अरे! सब जल्दी चलो! देर मत करो। हमें जल्दी-जल्दी काम निबटाने चाहिए।

शब्दार्थ

आमच्या	हमारे
आपल्याला	हमें
बागेत	बगीचे में
जायला हवं	जाना चाहिए
चल	चलो
खूप	बहुत
आणूया	ले आएँ
प्रकारची	प्रकार की
पानं	पत्ते
आणायला हवीत	लाना चाहिए
दोन्ही	दोनों

आंबा	आम
पेरु	अमरूद
वड	बरगद, वट
लिंबू	नीबू
पिंपळ	पीपल
चिंच	इमली
बरोबर	साथ
गोळा करायला पाहिजेत	इकट्ठे करना चाहिए
जुई	जूही
अगं बाई	उई माँ
सर्वात	सबसे
हो तर	हाँ तो
झेंडू	गेंदा
तेरडा	गुल मेहँदी
सुगंध	सुगंध
गोळा कर	इकट्ठा कर
तोडायला नको	नहीं तोड़ना चाहिए
पिवळाधमक	गहरा पीला
पांढराशुभ्र	शुभ्र सफेद
पिवळसर	हल्का पीला
लालभडक	सुर्ख लाल
कुंकवासारखा	सिंदूर जैसा
परडी	डलिया
कुणाची	किस की
सासूबाईंची	सास की
छान	बढ़िया
पांढरं	सफेद
कसलं	कौनसा
पारिजातक	हरसिंगार
इतर	अन्य
झाडाजवळ	पेड़ के पास
सगळ्या जणी	सब लोग
भराभर	जल्दी-जल्दी
करायला हवीत	निबटाने चाहिए

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) आज कुणाची मंगळागौर आहे?
2) मंगळागौरीसाठी किती प्रकारची पानं आणायला पाहिजेत?
3) बागेत कुठली कुठली फुलं आहेत?
4) छोटं पांढरं फूल कसलं आहे?
5) निशा कुठे आहे?

II नीचे दिए गए विशेषण शब्द के साथ दी गई संज्ञा शब्दों को जोड़कर वाक्यांश बनाइए।

थंडगार	वारा सावली खोली झुळूक पाणी दूध

III कोष्ठक में दिए गए विशेषणों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) रमा बगीच्यात गुलाबाची .... फुलं तोडते. (पिवळाधमक)
2) रमेश दोन .... पिशव्यांमधे सामान घेतो. (मोठी)
3) तो तुझा .... एक भाऊ आहे. (एकुलती)
4) तू तुझ्या .... बहिणीबरोबर ये. (छोटी)
5) जोसेफ त्या .... फाईली आण. (नवी)
6) सुचेता .... पुस्तकाजवळ पेन शोधतेय. (पांढरं)
7) दोन .... कुत्र्यांच्या पिल्लांबरोबर शांता खेळते. (छोटा)
8) हो .... पानं पण आणायला हवीत ना? (सोळा प्रकार)

IV कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) हा गुलाब .... आहे.
हे फूल .... आहे.
ही साडी .... आहे.
[पिवळा]

2) सुधाताईंकडे .... पिल्लू आहे.
उमेश प्रियाचा .... भाऊ आहे.
प्रिया शामलाची ..... बहीण आहे.
[लहान]

3) माझ्याकडे एक .... चित्र आहे.
आमच्या वर्गात एक .... मुलगा आहे.
आमच्या वर्गात एक .... मुलगी आहे.
[सुंदर]

V वाक्य में रेखांकित संज्ञा शब्द के स्थानपर कोष्ठक में दी गई संज्ञाओं का लिंग वचन के अनुसार सही प्रयोग कर नए वाक्य बनाइए।
ही बाहुली नवी आहे.
(तांदूळ, मिरच्या, पुस्तक, पेन, कार्यक्रम, घर, चेहरा, माल)

VI उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।
उदाहरण: ती बाहुली छान आहे. त्या बाहुल्या छान आहेत.
1) मिरची लालभडक आहे.
2) पटना मिरची तिखट असते.
3) ती मुलगी सुंदर आहे.
4) पुस्तकाचे पान गुळगुळीत आहे.
5) ते फूल पिवळसर आहे.
6) ते झाड डेरेदार आहे.
7) ती डाळ खराब आहे.
8) तू ते गुलाबी फूल आण.

VII दोनों विभागों में दिए गए वाक्यांशों का सही मिलान कर वाक्य बनाइए।

बाजारात अचाट	नाव काय?
तुमचं मूळ	किंकाळ्या आहेत.
तुझं पूर्ण	शिव्या आहेत.
इथे करुण	मारामारी आहे.
इथे अर्वाच्य	गाव कोणतं?
सिनेमात दणादण	गर्दी आहे.

VIII कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य बनाइए।
1) गुलाब .... आहे. [फार, पांढराशुभ्र, तृप्त]
2) बाजारात .... गर्दी आहे. [हिरवी, नीट, खूप]
3) तुमच्याकडे .... मिरची आहे का? [गुलाबी, लालभडक, करुण]
4) शेवंती .... आहे. [पिवळाधमक, पिवळंधमक, पिवळीधमक]
5) तुमचं .... नाव काय? [महाग, अर्वाच्य, पूर्ण]

IX कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।
उदाहरण: (हे) (तांबडा) (गुलाब) (फूल) (मोठा) (आहे)
ह्या तांबड्या गुलाबाचं फूल मोठं आहे.
1) (हे) (मी) (बाग) (मोठा) (पिवळा) (गुलाब) (फूल) (आहे)
2) (आम्ही) (गाव) (बाहेर) (एक) (मोठा) (बाग) (आहे)
3) (चल) (मंगळागौर) (साठी) (फूल) (तोड)
4) (उद्या) (सगळे) (कर्मचारी) (एक) (मिटींग) (बोलव)
5) (इथे) (भिंत) (कान) (तृप्त) (आहे)

X वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थानपर, दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर प्रत्येक प्रश्न के तीन-तीन उत्तर दीजिए।

1) हे फूल ताबडं आहे.
लाल
छोटा
मोठा
हे फूल कसं आहे?

2) हा गुलाब तांबडा आहे.
लाल
छोटा
मोठा
हा गुलाब कसा आहे?

3) ही शेवंती पिवळी आहे.
पांढरा
छोटा
मोठा
ही शेवंती कशी आहे?

XI 'कसा' शब्द के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर निम्नलिखित वाक्यों के प्रश्न वाचक रूप बनाइए।

1) हे गुलाब महाग आहेत.
2) ही फुलं सुंदर आहेत.
3) हे फुल छोटसं आहे.
4) ही शेवंती पिवळी आहे.
5) ह्या मुली लहान आहेत.
6) हा मुलगा मोठा आहे.

XII दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर अनुच्छेद पूरा कीजिए।
(छान, सगळी, सर्व, पांढरी, पांढरीशुभ्र, पिवळाधमक, पिवळीधमक, छोटी-छोटी, नाजूक, हिरवीगार, नवी, लालसर, सुंदर)
हा गुलाब .... आहे. ती शेवंतीही .... आहे. आणि ही पारिजातकाची .... फुलं! किती .... आहेत! बागेत .... झाडं आहेत. झाडाची .... पानं .... आहेत. जुई, चमेली, मोगरा, यांची फुलं .... आहेत, ... फुलं .... आहेत. .... बागच .... आहे.

पढ़िए और समझिए

सुंदर बाग

आमच्या गावाबाहेर एक मोठी बाग आहे. आपल्याला त्या बागेत जायला पाहिजे. बागेत तऱ्हेतऱ्हेची झाडं आहेत. काही प्रचंड वृक्ष तर काही छोटी झुडुपं! काही डेरेदार झाडं तर काही उघडी बोडकी, काही उंच निमुळती तर काही ठेंगणी ठुसकी! आपल्याला सगळी झाडं पाहायला पाहिजेत. काही फक्त फळांची! काही झाडांवर पाने नाहीतच, फक्त फुलेच फुले! काही झाडांवर पानेच पाने! फक्त हिरवागार रंग! थंडगार! मनाला सुख, डोळ्यांना थंडाई!

निरनिराळी फुलं आहेत. रंगीबेरंगी. रंगांच्या अनेक छटा, रंगच रंग, वेगवेगळे सुवास! अगदी घमघमाट! आपण सर्व फुलांचा सुगंध घ्यायला हवा. एकापेक्षा एक सुंदर फूल.

गुलाबाचे तर विविध प्रकार आहेत. काही गावठी तर काही कलमी! काही नखाएवढी छोटी तर काही मुठीएवढी मोठी! काही गुलाब आपण घरी न्यायला हवेत. शेवंतीचेही खूप प्रकार आहेत. पण शेवंतीचे प्रकार गुलाबापेक्षा कमी आहेत. सर्वात जास्त फुलं आहेत गुलाबाची! या बागेचं नाव आहे "गुलाब कुंज".

शब्दार्थ

गावाबाहेर	गाँव के बाहर
तऱ्हेतऱ्हेची	अलग-अलग प्रकार की, तरह तरह की
प्रचंड	प्रचंड, विशाल
झुडूप	झाड़ी
डेरेदार	घनी छायावाला
उघडी बोडकी	नंगी, ठूँठ
उंच	उँचे
निमुळते	नुकीले
ठेंगणी	ठिगनी, नाटी
ठेंगणी ठुसकी	ठिगनी, नाटी
पाहायला पाहिजेत	देखना चाहिए
फळ	फल
थंडगार	ठंडी-ठंडी
छटा	छटा
सुवास	खुशबू
घमघमाट	महक
घ्यायला हवा	लेना चाहिए
गावठी	देशी
कलमी	कलमी
नख	नाखून
मूठ	मुट्ठी
न्यायला हवेत	ले जाना चाहिए
शेवंती	सेवंती
कमी	कम

अभ्यास

I अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) बाग कोठे आहे?
2) बागेत कोणकोणत्या प्रकारची झाडं आहेत?
3) बागेत गुलाबाचे कोणकोणते प्रकार आहेत?
4) बागेचं नाव काय आहे?
5) 'सर्वत्र वास पसरतो' या अर्थी कोणता शब्द वापरला आहे?

II वार्तालाप तथा अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए गए वाक्यांशो का सही मिलान कर वाक्य बनाइए।

हे छोटं पांढरं फूल	सुंदर फुलं!
काही झाडांवर	कित्ती रंगाचे आहेत.
इतर पानं	कमी आहेत.
एकापेक्षा एक	'गुलाब कुंज' आहे.
गुलाब तर बघ	रामुकाकांच्या बागेत जायला हवं
शेवंतीचे प्रकार गुलाबापेक्षा	झाडाजवळ उभी आहे.
या बागेचं नाव	पानंच पानं आहेत.
प्रिया त्या लाल गुलाबाच्या	कसलं आहे?
आज आपल्याला	आणायला नकोत का?

III उदाहरण के अनुसार बाईं ओर दिए गए शब्दों के साथ दाहिने ओर दिए गए शब्दों से सही प्रकार मिलान कर संयुक्त शब्द बनाइए।

उदाहरण:	हिरवा + गार = हिरवागार
लाल	भोर
पिवळा	शुभ्र
पांढरा	धमक
काळा	भडक

IV नीचे दिए गए शब्दों में से विलोम शब्दों के जोड़े बनाइए।

1) छोटी, उंच, डेरेदार, आत, एक, सुंदर, जास्त
2) कमी, अनेक, उघडंबोडकं, ठेंगणी, कुरुप, बाहेर, मोठी

V नीचे कुछ विशेषण और संज्ञा शब्द दिए गए हैं। पाठ के आधारपर उनकी उचित जोड़ी बनाइए।

1) गुलाब, झाड, वृक्ष, झुडूप, फुले, रंग
2) विविध, प्रचंड, रंगीबेरंगी, डेरेदार, लहान, पिवळा.

VI उदाहरण के अनुसार दिए गए शब्दों से वाक्यांश बनाइए।

उदाहरण: फुलंच फुलं

1) पाणी 2) झाडे 3) आंबे 4) घर 5) मुली.

VII नीचे दिए गए प्रश्नवाचक वाक्य और उनके उत्तर पढ़िए। उसके आधार पर दिए गए प्रत्येक वाक्य के प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: ते घर किती छान आहे, नाही? - ते घर फार छान आहे.

उदाहरण: तो मुलगा किती हुशार आहे, नाही? - तो मुलगा फार हुशार आहे.

1) हे फूल खूप छान आहे. 2) आज हवा फार गार आहे.

3) हे झाड फार उंच आहे. 4) अभ्यासाच्या खोलीत पसारा फार आहे.

VIII हिंदी में अनुवाद कीजिए

हा भव्य राजमहाल आहे. राजमहालात सुंदर चित्रं आहेत. आकर्षक फुलं आहेत. प्राण्यांच्या प्रतिकृती आहेत. हत्ती-घोड्यांच्या मिरवणूकीची रंगीबेरंगी चित्रं आहेत. लालभडक गुलाबाची फुलं आहेत. पिवळ्याधमक झेंडूच्या माळा आहेत. सुंदर झुडपंही आहेत. अत्यंत मऊ रेशमी गालिचे आहेत. आकर्षक टेबलखुर्च्या आहेत. विविधरंगी हंड्याझुंबरं आहेत. फुलांपेक्षा चित्रं जास्त सुंदर आहेत. चित्रांपेक्षा फुलांचा सुगंध अधिक मोहक आहे. परंतु राजाचं सिंहासन सर्वात सुंदर आहे.

(मिरवणूक = जुलूस, हंड्या = हँडियाँ, झुंबरं = झाड़-फानूस)

IX मराठी में अनुवाद कीजिए

मुंबई में हैंगिंग गार्डन नामक एक प्रसिद्ध उद्यान है। 'हैंगिंग' का अर्थ होता है झूलता हुआ। यह उद्यान झूलता हुआ तो नहीं है पर जमीन से काफी ऊँचा जरूर है। यह उद्यान पानी की बहुत बड़ी टंकी के ऊपर है। इस में तरह-तरह के पेड़-पौधे हैं।

हैंगिग गार्डन के आसपास शहर की बड़े-बड़े लोगों के विशाल भवन हैं। प्रसिद्ध बालकेश्वर मंदिर भी इसके पास ही है। खूबसूरत चौपाटी भी यहाँ से दूर नहीं है।

X अपने देखे हुए किसी उद्यान या बाग के विषय में एक छोटा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में 'जायला हवं' (जाना चाहिए), 'आणायला हवीत' (लानी चाहिए) 'करायला पाहिजेत' (करनी चाहिए) जैसे क्रियावाले वाक्यों का परिचय दिया गया है।

उदाहरण:

1) आज आपल्याला रामुकाकांच्या बागेत <u>जायला हवं.</u>
(आज हमें रामुकाका के बगीचे में <u>जाना चाहिए</u>।)
2) खूप पानं आणि फुलं गोळा <u>करायला पाहिजेत</u>.
(बहुत सारे पत्ते और फूल इकट्ठे <u>करना चाहिए</u>।)
3) इतर पानं <u>आणायला नकोत</u> का?
(और पत्ते <u>नहीं लाना चाहिए</u> क्या?)
4) फुलं तर <u>तोडायला पाहिजेतच</u>.
(फूल तो <u>तोडना ही चाहिए</u>।)
5) त्यांनाही बरोबर घेऊन <u>जायला पाहिजे</u>.
(उन्हें भी साथ ले <u>जाना चाहिए</u>।)

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित क्रियारूप क्रिया करने की इच्छा/बाध्यता तथा अनिवार्यता दिखाते हैं। मराठी में ऐसी क्रियाएँ मूल क्रिया में 'आयला' जोड़कर 'पाहिजे' या 'हवं आहे' (चाहिए) इच्छार्थक क्रिया लिंगवचन के अनुसार प्रयुक्त होती है।

II इस पाठ में तुलना बोधक विशेषणों का परिचय भी दिया गया है।

1. *उदाहरण:*
1) झेंडूपेक्षा केवड्याचा सुगंध जास्त मादक आहे.
(गेंदे की अपेक्षा केवडे की गंध अधिक मादक है।)
2) याचा सुगंध इतर फुलांपेक्षा अधिक मोहक आहे.
(इसकी सुगंध अन्य फुलों की अपेक्षा अधिक मोहक है।)
3) एकापेक्षा एक सुंदर फुल.
(एक की अपेक्षा एक सुंदर फूल।)

ध्यान दें कि मराठी में दो वस्तुओं, स्थानों या प्राणियों की तुलना करते समय 'की अपेक्षा' के स्थान पर केवल 'पेक्षा' शब्द प्रयुक्त होता है। 'पेक्षा' के पूर्व संज्ञा या सर्वनाम का तिर्यक रूप आता है।

2. *उदाहरण:*
1) हे तर सर्वात सुंदर दृश्य आहे.
यह तो सबसे सुंदर दृश्य है।
2) पण तो लालभडक कुंकवासारखा गुलाब सर्वात सुंदर आहे.
लेकिन वह सुर्ख लाल गुलाब सबसे सुंदर है।
सबसे सर्वश्रेष्ठ बताने के लिए मराठी में 'सर्वात' का प्रयोग करते हैं।

III प्रश्नार्थक विशेषण 'कसा' (कैसा) के भी रूप मराठी में हिंदी की तरह लिंग वचन के अनुसार बदलते हैं। वे नीचे दिए गए हैं।

<u>कसा (कैसा)</u>

	एकवचन	*बहुवचन*
पुल्लिंग	कसा (कैसा)	कसे (कैसे)
स्त्रीलिंग	कशी (कैसी)	कशा (कैसी)
नपुंसकलिंग	कसं	कशी

उदाहरण:

1) हा गुलाब कसा आहे? *(पु.ए.व.)* - यह गुलाब कैसा है?
2) ही मुलगी कशी आहे? *(स्त्री.ए.व.)* - यह लडकी कैसी है?
3) हे फूल कसं आहे? *(नपुं.ए.व.)*
4) हे गुलाब कसे आहेत? *(पु.ब.व.)* - ये गुलाब कैसे हैं?
5) ह्या मुली कशा आहेत? *(स्त्री.ब.व.)*- ये लडकियाँ कैसी हैं?
6) ही फुलं कशी आहेत? *(नपुं.ब.व)*

IV कुछ विशेषण शब्दों के साथ और एक शब्द जोड़ने से उस शब्द के अर्थ में गहनता आ जाती है।

उदाहरण:

1)	हिरवा	+ गार	=	हिरवागार (गहरा हरा)
2)	लाल	+ भडक	=	लालभडक (सुर्ख लाल)
3)	पिवळा	+ धमक	=	पिवळाधमक (गहरा पीला)
4)	पांढरा	+ शुभ्र	=	पांढराशुभ्र (शुभ्र सफेद)
5)	काळा	+ भोर	=	काळाभोर (स्याह काला)

V मंगळागौरी: महाराष्ट्र में प्रत्येक विवाहित महिला विवाह के बाद पाँच वर्षो तक श्रावण मास के मंगलवारों को देवी की पूजा करती है। अपने अखंड सौभाग्य की और अपने पति की दीर्घायु की कामना करती है। अनेक नवविवाहित स्त्रियाँ एक घर में इकट्ठी होकर रात-भर जागती हैं। अनेक प्रकार के सामूहिक खेल खेलती हैं। परंपरागत गाने गाती हैं। मंगलागौरी मराठी संस्कृति का एक अविभाज्य अंग है। इस पूजा में सोलह प्रकार की पत्तियाँ और सोलह प्रकार के फूलों का प्रयोग किया जाता है। नीचे उनके नाम दिए गए हैं।

पत्ते - चमेली, माका, बेल, बेर, धतुरा, तुलसी शमी, आघाडा, डोरली, कणेरी, रुई, अर्जुनसादडा, विष्णुक्रांता, जाई, सेवंती और डाळिंबी

फूल - चमेली, कणेर, रूई, जाई, सेवंती, जुई, बकुल, चंपक, मोगरा, गुलाब, हरसिंगार, जास्वंद, मालती, मंदार, केवडा और गोकर्ण

धडा पाठ 6

सहलीची तयारी

उमा : उद्या सहलीला जाऊया का?

उमेश : वा! छान कल्पना आहे. पण कुठे?

उमा : लोणावळा-खंडाळा

उमेश : वा! फारच उत्तम! मुसळधार पाऊस आहे. खूप भिजूया.

मंजू : सध्या तो घाट हिरवागार आहे. सगळीकडे धबधबेच धबधबे आहेत.

उमेश : एखाद्या डेरेदार झाडाखाली बसूया. डबे खाऊया.

मंजू : पावसात? नको बाबा!

उमेश : खरंच की! तिथं पुलाखाली छान जागा आहे. एका बाजूला विशाल डोंगर आणि दुसऱ्या बाजूला खोल दरी!

उमा : तिथंच एक देऊळही आहे ना?

उमेश : हो हो, बरोबर!

मंजू : कुणाचं?

उमा : शिवाचं, तिथं एक गणपतीची सुंदर मूर्ती आहे.

मंजू : पण तिथं भरपूर जागा आहे का?

उमा : हो, आहे की।

मंजू : पाण्याची सोय आहे का?

उमा : मोठं कुंड आहे. त्यात मासे आहेत. शिवाय नळही आहे.

मंजू : कोणाकोणाला बोलावूया?

उमेश : नितीन, शेखर आणि राजीवला.

मंजू : निशा, उषा आणि विजयाला पण.

सैर की तैयारी

उमा : कल हम सैर को चलें क्या?

उमेश : वाह! सुझाव तो बढ़िया है। लेकिन कहाँ?

उमा : लोनावळा-खंडाळा

उमेश : वाह! बहुत ही बढ़िया। मूसलाधार वर्षा है।

मंजू : आजकल तो वह घाटी खूब हरीभरी है। सब ओर जलप्रपात ही जलप्रपात हैं।

उमेश : किसी घने वृक्ष के नीचे बैठें और खाना खाएं।

मंजू : बारिश में? ना बाबा।

उमेश : यह तो सच है। वहाँ पुल के नीचे बढ़िया जगह है। एक तरफ विशाल पहाड़ी और दूसरी तरफ गहरी खाई है।

उमा : वहीं एक मंदिर भी है?

उमेश : हाँ-हाँ, बिल्कुल।

मंजू : किसका?

उमा : शिवजी का, वहाँ गणेशजी की सुंदर मूर्ति भी है।

मंजू : लेकिन वहाँ काफी जगह है क्या?

उमा : हाँ। है।

मंजू : पानी की सुविधा है क्या?

उमा : बड़ा कुंड है। उस में मछलियाँ हैं। इसके अलावा नल भी है।

मंजू : किसे किसे बुलाएँ?

उमेश : नितिन, शेखर और राजीव को।

मंजू : निशा, उषा और विजया को भी।

उमेश : मंजू, तू सबसे कहना "ढेर सारी

उमेश : मंजू, तू सगळ्यांना सांग. "खूप खाद्य-पदार्थ आणा."
उमा : नको, जास्त पदार्थ नकोत. फार ओझं घ्यायला नको.
उमेश : उमा, माझा कॅमेरा कुठं आहे?
उमा : कुठला? तो भारतीय बनावटीचा?
उमेश : नाही. तो फार किमती आणि चांगला कॅमेरा आहे. तो पिकनिकसाठी नको. साधाच कॅमेरा घ्यायला पाहिजे.

उमा : ठीक आहे.
मंजू : कुणाकडे टेपरेकॉर्डर आहे का? टेपरेकॉर्डर हवाच.
उमा : हो. विजयाजवळ आहे.
मंजू : तिच्याजवळ चांगल्या कॅसेट्स आहेत ना?
उमा : हो. आहेत ना। त्याची काळजी नको. आणि हो, कुसुमाग्रजांच्या आणि करंदीकरांच्या कवितांची पुस्तकंही घ्यायला हवीत ना?
उमेश : वा! ती तर घ्यायला पाहिजेतच. झाडाची दाट सावली! थंडगार वाऱ्याच्या झुळका, लता-आशाची जुनी मराठी-हिंदी गाणी, आणि कुसुमाग्रज- करंदीकरांच्या कवितांचं वाचन. वा! वा!
उमा : महाराज! हा पावसाळा आहे. उन्हाळा नाही.
उमेश : ठीक आहे. जुनं-पडकं शिवालय, समोर नितळ पाण्याचं कुंड, मुसळधार पाऊस, आजूबाजूला हिरवीगार झाडी, जुन्या चित्रपटांचं मधुर संगीत या सर्वांचाच आपल्याला आनंद घ्यायला हवा. मजाच मजा!

खानेकी चीजें लाना"।
उमा : नहीं, बहुत पदार्थ नहीं चाहिए। ज्यादा बोझ नहीं चाहिए।
उमेश : उमा, मेरा कैमरा कहाँ है?
उमा : कौनसा? वह भारत निर्मित?
उमेश : नहीं, वह बहुत कीमती और बढ़िया कैमरा है। वह पिकनिक के लिए नहीं चाहिए। साधारण सा कैमरा ही लेना चाहिए।
उमा : ठीक है।
मंजू : किसीके पास टेप-रिकॉर्डर है क्या? टेप रिकार्डर अवश्य ही चाहिए।
उमा : हाँ। विजया के पास है।
मंजू : उसके पास अच्छे कैसेट्स हैं न?

उमा : हाँ है ना। उस की चिंता मत करो और हाँ, कुसुमाग्रज और करंदीकर की कविताओं की पुस्तकें भी लेनी चाहिए न?
उमेश : वाह! वह तो लेनी ही चाहिए। पेड़की घनी छाँव, ठंडी हवाओं के झोंके, लता-आशा के पुराने मराठी-हिंदी गाने और कुसुमाग्रज-करंदीकरजी की कविताओं का वाचन, वाह!
उमा : महाराज! यह बारिश का मौसम है। गरमी का नहीं!
उमेश : ठीक है। पुराना जीर्णशीर्ण शिवालय, सामने निर्मल जल से भरा कुंड, मूसलाधार बारिश, आसपास गहरी हरी भरी झाडियाँ, पुरानी फिल्मों का मधुर संगीत! इन सबका हमें आनंद लेना चाहिए। मजा ही मजा!

शब्दार्थ

उद्या	कल
सहल	सैर, पिकनिक
उत्तम	बहुत अच्छा, उत्तम
मुसळधार पाऊस	मूसलाधार वर्षा
भिजणे	भीगना, गीला होना
सध्या	हाल ही में
घाट	घाटी
सगळीकडे	सब तरफ
धबधबे	जलप्रपात
डेरेदार	घना
पाऊस	बारिश, वर्षा
पुलाखाली	पुलिया के नीचे
जागा	जगह
एका बाजूला	एक तरफ
डोंगर	पहाड़
खोल दरी	गहरी खाई
देऊळ	मंदिर
शिवाचे	शिवजी का
गणपतीची	गणेशजी की
मूर्ती	मूर्ति
भरपूर	काफी
सोय	इंतजाम
कुंड	कुंड, जलाशय
शिवाय	अलावा, के सिवाय
खाद्यपदार्थ	खाने-पीने की चीजें
ओझं	बोझ
किमती	कीमती
साधा	सादा
काळजी	चिंता
दाट	घनी
सावली	छाँव
थंडगार	बहुत ठंडी
वारा	हवा
झुळका	झोंके
पावसाळा	बारिश का मौसम

उन्हाळा	गरमी का मौसम
जुनं-पडकं	जीर्ण-शीर्ण
नितळ पाणी	निर्मल पानी
आजूबाजूला	आसपास
हिरवीगार	हरीभरी
झाडी	झाडियाँ
मधुर	मधुर, मीठा

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) छान जागा कुठे आहे?
2) देऊळात पाण्याच्या सोयीसाठी काय काय आहे?
3) जास्त पदार्थ का नकोत?
4) कुंडाचं पाणी कसं आहे?
5) टेपरेकॉर्डर कुणाकडे आहे?

II उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1. *उदाहरण:* त्या .... खाली एक देऊळ आहे. (डोंगर)
त्या डोंगराखाली एक देऊळ आहे.
1) त्या .... खाली छान जागा आहे. (पुल)
2) त्या .... हिरवीगार झाडी आहे. (घाट)
3) त्या .... करुण दृश्य आहे. (चित्रपट)
4) तो त्या .... कर्मचारी आहे. (विभाग)

2. *उदाहरण:* आपण .... जाऊ या. (सहल)
आपण सहलीला जाऊ या.
1) तू .... वडे कर. (डाळ)
2) ती त्या .... फुलं आहेत. (बाग)
3) ती .... झाडाची पानं आहेत. (चिंच)

3. *उदाहरण:* त्या .... दाट झाडी आहे. (दरी)
त्या दरीमध्ये दाट झाडी आहे.
1) हे थंडगार .... झाड आहे. (सावली)
2) ते पुस्तक त्या .... आहे. (खोली)
3) ती फुले त्या .... ठेव. (परडी)

4. *उदाहरण:* तू त्या मधुर .... कल्पना कर. (संगीत)
तू त्या मधुर संगीताची कल्पना कर.

1) त्या .... पाणी थंडगार आहे. (कुंड)
2) त्या .... एक सुंदर बाग आहे. (देऊळ)
3) महाराष्ट्र .... राजभाषा मराठी आहे. (राज्य)
4) वाऱ्यामुळे .... सळसळ होते. (पान)

III उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए जोड़ी वाक्यों के दूसरे वाक्य पूरे कीजिए।

1. *उदाहरण:* ते डेरेदार .... आहे — ती डेरेदार झाडे आहेत.
   1) त्या ठिकाणी एक सुंदर धबधबा आहे — त्या ठिकाणी अनेक .... आहेत.
   2) तो बघ मोठा मासा! — ते बघ मोठे ....
   3) माझ्याजवळ एक कॅमेरा आहे. — माझ्याजवळ दोन .... आहेत.
   4) ते पुस्तक इकडे आण. — ती .... इकडे आणा.
   5) ते वडाचं झाड आहे. — ती वडाची .... आहेत.
   6) ते देऊळ बघ. — ती .... बघ.
2. *उदाहरण:* ती खोली स्वच्छ कर. — त्या खोल्या स्वच्छ कर.
   1) कर्मचाऱ्यांची एकच मागणी आहे. — कर्मचाऱ्यांच्या अनेक ...... आहेत.
   2) ती परडी इकडे आण. — त्या .... इकडे आण.
   3) थंडगार झाडाची सावली! — थंडगार झाडांच्या .... !
3. *उदाहरण:* तू तो चित्रपट पाहा. — तू ते चित्रपट पाहा.
   1) तो नवीन पदार्थ आहे. — ते नवीन .... आहेत.
   2) हा माझा मित्र आहे. — हे माझे .... आहेत.
   3) 'खो-खो' हा भारतीय खेळ आहे. — कबड्डी व खो खो हे भारतीय .... आहेत.

IV उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों में शब्दों के विलोम शब्दों का प्रयोग कर दूसरे वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: ही बाहुली नवी आहे. — ही बाहुली जुनी आहे.
1) सुचेता उंच मुलगी आहे. — सुचेता .... मुलगी आहे.
2) ते एक डेरेदार झाड आहे. — ते एक .... झाड आहे.
3) ती मिरची स्वस्त आहे. — ती मिरची .... आहे.
4) रामू, तू आज उशिरा ये. — रामू तू आज .... ये.

V सही जोड़ियाँ बनाइए।

	झुळुक
	सावली
तो	शिवालय
	झाडी
	संगीत
ती	गाणी
	घाट
ते	दरी
	टेपरेकॉर्डर
	पाणी
	फूल
	पूल
	देऊळ
	नळ
	बाग
	धबधबा

VI नीचे दिए गए खंडों में से एक-एक शब्द चुनकर जितने हो सकें उतने वाक्य बनाइए।

धबधबा	वस्तू	तिला दे.
वाऱ्याच्या	महिना	कोणता?
पावसाळ्यातील	पदार्थ	मी उभा आहे.
माशांचे	पुस्तक	थंड आहेत.
फुलांचे	सुळसुळाट	कर
पसाऱ्यातील	खाली	पाऊस
नाऱ्यांचा	मुसळधार	इकडे आण
उन्हाळ्याचा	झुळुका	बघ
डब्यातल्या	अनेक रंग	आहे

VII कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्यों का विस्तार कीजिए।

ही बाग आहे. (एक)

.... (मोठी)

.... (समोरची)

.... (सुंदर)

.... (खूप)

.... (फुलांची)

.... (रंगीबेरंगी)

VIII उपयुक्त प्रश्न वाचक शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1)	खंडाळा पुण्याजवळ आहे.	खंडाळा .... आहे?
2)	खंडाळा सहलीचं ठिकाण आहे.	खंडाळा .... आहे?
3)	सहलीला उमालाही बोलव.	सहलीला .... बोलावू?
4)	सहलीसाठी प्रिया, उषा, प्रमोदला बोलव.	सहलीला .... बोलावू?
5)	बागेत गुलाब, मोगरा, जाई, जुई, अशी तऱ्हेतऱ्हेची झाडं आहेत.	बागेत .... झाडं आहेत?
6)	बागेत गुलाबाची झाडं आहेत.	बागेत .... झाडं आहेत?
7)	उमेश अलाहाबादचा आहे.	उमेश .... आहे?
8)	बाबांचं मूळ गाव कोल्हापूर.	बाबांचं मूळ गाव .... ?
9)	शांताची बाहुली छान आहे.	शांताची बाहुली .... आहे?
10)	सुचेताला बाबांची सही हवी.	सुचेताला .... हवं?
11)	माझ्याकडे तो अहवाल नाही.	तुमच्याकडे .... नाही?
12)	आम्हाला चहा दे.	तुम्हाला .... देऊ?
13)	ही परडी प्रियाची आहे.	ही परडी .... आहे?

IX कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर अनुच्छेद पूरा कीजिए।
(तोडूया, आणूया, तोडू, नकोस, घालूया का? कुठे, बागेतून, जवळच, मागे, तिथून, आण, घाल, काय करू? पाणी, जा, कुठून)

आपण .... फुलं .... मीना तू फुलं .... तू फक्त पानं गोळा कर. आपण झाडांना पाणी ....? पाणी .... आणूया? इथे .... एक कुंड आहे. तिथून .... आहे कुंड? या देवळाच्या .... तुम्ही .... झारी आणा. पण मी ....? तू ही .... पाणी .... झाडांना .... घाल. पाणी घालूया आणि फुलं ....

पढिए और समझिए

सिंहगड

पुण्याच्या आसपास खूप टेकाडं, टेकडया आणि डोंगर आहेत. पर्वती, हनुमान टेकडी, वेताळ टेकडी एक ना दोन! पण गड मात्र एकच आहे, "सिंहगड". हा नावाचाच सिंह आहे. इथे सिंह नाहीत. याचं मूळ नाव 'कोंडाणा'. हा कुठल्या काळातला आहे माहिती आहे का? हा आहे शिवाजीच्या काळातला. या गडाशी निगडीत एक प्रसिद्ध गोष्ट आहे. "गड आला पण सिंह गेला."

तानाजी म्हणजे शिवाजी महाराजांचा उजवा हात. याची समाधी इथे आहे. हाच त्या गोष्टीतला सिंह! इथे थोडा वेळ न बोलता उभे राहुया.

या गडाच्या चोहीकडे हिरव्यागार दऱ्या आहेत. पण या गडावर विशेष झाडी नाही. हा अगदी उघडाबोडका आहे. वर नुसतंच मोकळं मैदान आहे. सभोवती उंच कडे आहेत.

इथे पाण्याची काही कुंडही आहेत. सर्वात मोठं कुंड आहे 'देवटाकं'. देवटाक्यातलं पाणी सर्वात गोड आणि थंड आहे. याशिवाय या गडावर काहीही नाही. तरीही हा गड मराठी लोकांचा, विशेषतः पुणेकरांचा, प्राण आहे. प्रत्येकाने सिंहगड एकदा तरी पाहायलाच पाहिजे.

शब्दार्थ

खूप	खूब
टेकाड	टीला
टेकडी	पहाड़ी
डोंगर	पहाड़, पर्वत
गड	गढ़
सिंह	शेर
निगडीत	जुड़ी हुई
प्रसिद्ध	प्रसिद्ध
उजवा हात	दाहिना हाथ
समाधी	समाधि
चोहीकडे	चारों तरफ
नुसतं	केवल, सिर्फ
मोकळं मैदान	खुला मैदान
सभोवती	आसपास
उंच कडे	ऊँची चट्टानें
एका बाजूला	एक तरफ
गोड	मीठा
याशिवाय	इसके अलावा
प्राण	जान, प्राण

टिप्पणियाँ

I कुसुमाग्रज (जन्म 27-02-1912, पुणे. मृत्यू 10-03-1999, नाशिक)

इनका पूरा नाम विष्णु वामन शिरवाडकर, उपनाम 'कुसुमाग्रज' है। इन्हें 'ज्ञान पीठ पुरस्कार' से भी सम्मानित किया जा चुका है। 'विशाखा' इनका प्रसिद्ध काव्य संग्रह है। 'जीवनलहरी' 'किनारा' 'समिधा' आदि उनके प्रसिद्ध काव्यसंग्रह हैं। 'नटसम्राट', 'दुसरा पेशवा', 'कौंतेय' इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। शेक्सपीयर के 'किंग लियर' पर

आधारित इनके नाटक 'नटसम्राट' की बड़ी चर्चा हुई है। कविता में नाटकीयता तथा नाटक में काव्यात्मकता इनकी अपनी विशेषता है। कुसुमाग्रज की कविताओं में बड़ी तेजस्विता है। वे 1964 में मडगाव में हुए अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन के अध्यक्ष रह चुके है।

II विंदा करंदीकर (जन्म 1918)

गोविंद विनायक करंदीकर का कवि नाम विंदा करंदीकर है। 'स्वेदगंगा', 'मृदगंध', 'ध्रुपद' इनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं। 'ॲरिस्टॉलचे काव्यशास्त्र' और 'परंपरा आणि नवता' उनकी प्रसिद्ध समीक्षा कृतियाँ है। 'स्पर्शाची पालवी' और 'आकाशाचा अर्थ' ये उनकी अन्य कृतियाँ हैं।

चिंतनशीलता और गेयता उनकी कविता की विशेषता है। उन्हें अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें म.प्र. सरकार का 'कबीर सम्मान' और कुसुमाग्रज प्रतिष्ठान का 'जनस्थान पुरस्कार' भी मिला है।

III "गड आला पण सिंह गेला."

छत्रपति शिवाजी महाराज कोंड़ाना को जीतना चाहते थे। उन्होंने यह कार्य अपने विश्वस्त सेनानी तानाजी को सौंपा। उस समय तानाजी अपने लड़के की शादी की तैयारी कर रहे थे। वे शादी छोड़कर सिंहगढ़ के लिए रवाना हो गए। उन्होंने बड़ी चतुराई से किले पर आक्रमण किया और किला जीत लिया। इस अभियान में उन्हें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। इस पर शिवाजी महाराज ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा - "गढ़ आया लेकिन सिंह चला गया। ("गड आला पण सिंह गेला.") उसके बाद उन्होंने 'कोंड़ाना' का नाम सेनानी तानाजी की याद में 'सिंहगढ़' रख दिया।

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) पुण्याजवळील काही टेकड्यांची नावे सांगा.
2) पुण्याजवळच्या एकमात्र गडाचे नाव काय?
3) हा गड कुणाच्या काळातला आहे?
4) सिंहगडावर काय काय आहे?
5) सिंहगडावरील सर्वात मोठ्या पाण्याच्या कुंडाला काय नाव आहे?

II प्रत्येक शब्द समूह में से कोष्ठक में दिए गए शब्द से संबंधित शब्दों को पहचानिए।

1) फूल, डोंगर, दरी, जागा, कॅसेट, धबधबा - (घाट)
2) पदार्थ, निळा, खेळ, कॅमेरा, पाणी, मजा - (सहल)
3) झाड, सावली, लालभडक, स्वच्छ, मोठी, पाणी - (जागा)

III नीचे दिए गए शब्दों के लिए इस पाठ में आए विशेषण शब्द कोष्ठक में दिए गए हैं। उन्हें उपयुक्त शब्द के साथ जोड़कर वाक्यांश बनाइए।
[मधुर, खोल, मुसळधार, विशाल, लालभडक, पडकं, जुना, नितळ]
पाऊस, संगीत, डोंगर, दरी, देऊळ, साडी, पाणी, चित्रपट.

IV नीचे दिए गए दो शब्द समूहों में से संबंधित शब्दों को चुनकर जोड़ी बनाइए।
1) रेडिओ, सहल, झुळुक, कुंड, सावली, टेपरेकॉर्डर.
2) वारा, पाणी, झाड, कॅसेट, तयारी, गाणी.

V कोष्ठक में दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थी मराठी शब्द का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।
1) आज .... पाऊस पडतो आहे. (मूसलाधार)
2) तिथे ....छान जागा आहे. (पुल के नीचे)
3) टेकडीवर .... आहे. (मंदिर)
4) एका बाजूला विशाल .... आहेत. (पहाड)
5) खूप .... होईल. (बोझ)
6) थंडगार वाऱ्यांच्या .... छान आहेत. (झोंके)
7) समोरच .... पाण्याचं कुंड आहे. (निर्मल)
8) पाण्याची .... आहे ना? (सुविधा)

VI हिंदी में अनुवाद कीजिए

सातपुडा पर्वतावर मनुदेवीचे मंदिर आहे. हे एक प्रसिद्ध प्रेक्षणीय स्थळ आहे. पर्वतावर घनदाट जंगल आहे इथे आदिवासी-पावरा लोकांची वस्ती आहे. मनुदेवीचं देऊळ खूप उंच डोंगरांमध्ये आहे. येथे एक मोठा आणि अनेक लहान लहान धबधबे आहेत. हा प्रवास रमणीय आहे आणि प्रवासाचा अनुभव आनंददायक आहे.

VII मराठी में अनुवाद कीजिए

लोनावला और खंडाला दो पहाड़ी स्थान हैं। ये पुणे और मुंबई के बीच में स्थित हैं। यहाँ उँचे-उँचे पहाड़ हैं। खूब घने जंगल हैं। जीर्णशीर्ण मंदिर और कुंड हैं। सुंदर बगीचे हैं। यहाँ बड़े बड़े होटल हैं। सैर के लिए यह बहुत अच्छी जगह है। गर्मी के मौसम के लिए भी यह जगह बहुत अच्छी है।

VIII नीचे दिए शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।
कॅमरा, देऊळ, धबधबा, हिरवीगार, झुळुका

IX 'किसी दर्शनीय स्थल की सैर' विषय पर एक छोटा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

धडा पाठ 7

बाळूचा अभ्यास

प्रतिभा : शांताबाई, मी बाजारात जाते, तुम्ही येता का?
शांता : नाही गं. मला थोडं काम आहे.
प्रतिभा : कसलं एवढं काम?
शांता : अगं, मी बाळूचा अभ्यास घेते. मी त्याला मदत करायला पाहिजे.
प्रतिभा : त्याचा तो गृहपाठ करत नाही?
शांता : नाही गं. तो अभ्यासात जरा मागे आहे. त्याला गृहपाठ जमत नाही. शिवाय तो एकटा कंटाळतो.
प्रतिभा : पण मग हे काम तू संध्याकाळी का नाही करत?
शांता : संध्याकाळी तो खेळतो. दुपारी एक वाजता येतो. जेवतो. तास दोन तास विश्रांती घेतो. मग आम्ही अभ्यास करतो.
प्रतिभा : तुम्हाला कंटाळा येत नाही?
शांता : नाही. मी कंटाळा करत नाही. यात माझा फायदाच आहे. बाळूला काय येतं, काय नाही हे मला कळतं. त्याला काही गोष्टी अवघड वाटतात. त्या मी त्याला शिकवते. चार चार वेळा घेते. मग तो आपोआप शिकतो, आपल्या आपण करतो.
प्रतिभा : फार वेळ जातो ना?

बाळू की पढ़ाई

प्रतिभा : शांता बहन जी, मैं बाजार जाती हूँ। तुम आती हो क्या?
शांता : नहीं रे। मुझे थोड़ा काम है।
प्रतिभा : ऐसा क्या काम है?
शांता : मैं बाळू को पढ़ाती हूँ। मुझे उसकी मदद करनी चाहिए।
प्रतिभा : (क्या) वह अपने आप गृह कार्य नहीं करता?
शांता : नहीं। वह पढ़ाई में जरा कमजोर है। वह गृहकार्य नहीं कर पाता। फिर वह अकेले ऊब जाता है।
प्रतिभा : लेकिन फिर यह काम तुम शाम के समय क्यों नहीं करती हो?
शांता : शाम के वक्त वह खेलने जाता है। दोपहर एक बजे (वह) आता है। खाना खाता है। दो घंटे आराम करता है। फिर हम पढ़ाई करते हैं।
प्रतिभा : (क्या) तुम्हें ऊब नहीं होती?
शांता : नहीं ऊब जाने के कारण मैं काम नहीं टालती। इस सें मेरा फायदा भी है। बाळू को क्या आता है और क्या नहीं इस की मुझे जानकारी मिलती है। कुछ बातें उसे कठिन लगती हैं, वे मैं उसे पढ़ाती हूँ। बार-बार समझाती हूँ। फिर वह अपने आप सीखता है। अपने आप करता है।
प्रतिभा : (इस में तो) काफी समय लगता है न?

शांता : त्याला एकट्याला फार वेळ लागतो. म्हणून आम्ही दोघं बसतो. मग झटपट गृहपाठ होतात.
प्रतिभा : संध्याकाळी बाळू खेळतो. तेव्हा तुम्ही काय करता?
शांता : तोवर त्याचे बाबा घरी येतात. चहापाणी करते. मग जरा दिवसभराच्या गप्पा मारतो.
प्रतिभा : ठीक आहे. मग मी जाते. तुम्ही बाळूचे गृहपाठ पूर्ण करा. तुम्हाला काही हवं आहे का?
शांता : नको गं, घरात भरपूर भाजी आहे. मी येत नाही म्हणून रागावू मात्र नकोस.
प्रतिभा : छे, छे! येते हं.

शांता : अकेले तो उसे बहुत समय लगता है। इसलिए हम दोनों बैठते हैं। फिर गृहकार्य फटाफट निबटाते हैं।
प्रतिभा : शाम को बाळू खेलता है। तब आप क्या करती हैं?
शांता : तब तक उस के पिताजी घर आते हैं। चाय नाश्ता बनाती हूँ फिर दिन भर की बातें करते हैं।
प्रतिभा : ठीक है। फिर मैं जाती हूँ। तुम बाळू का गृहकार्य पूरा करो। आपको कुछ चाहिए क्या?
शांता : नहीं। घर में बहुत सब्जियाँ हैं। मैं तुम्हारे साथ नहीं चलती हूँ, इसलिए नाराज मत होना।
प्रतिभा : बिल्कुल नहीं। (अच्छा, तो) चलती हूँ।

शब्दार्थ

अभ्यास	पढ़ाई
बाजार	बाज़ार
काम	काम
एवढं	ऐसा, ऐसा भी
मदत	मदद
गृहपाठ	गृहकार्य
मागे	पीछे, कमजोर
जमणे	कर पाना
एकटा	अकेला
कंटाळा	ऊब
संध्याकाळ	शाम का वक्त
खेळणे	खेलना
विश्रांती	आराम
फायदा	फायदा
कळणे	समझना
अवघड	कठिन
शिकवणे	सिखाना

आपोआप	अपने आप
वेळ जाणे	समय लगना, समय बीतना, वक्त कटना
झटपट	झटपट, फटाफट
चहापाणी	चाय पानी
दिवसभर	दिनभर
भरपूर	काफी, भरपूर
भाजी	सब्ज़ी
रागावणे	नाराज होना, बुरा मानना

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) शांता काय करते आहे? का?
2) बाळूची दिनचर्या थोडक्यात सांगा.
3) बाळूचा अभ्यास घेण्याचा शांताला काय फायदा होतो?
4) संध्याकाळी शांता काय करते?
5) प्रतिभा कुठे जाते आहे?

II वाक्यों में रेखांकित किए गए शब्दों के स्थानपर कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर तीन-तीन वाक्य बनाइए।

1.

मी शाळेत जातो.	(खेळ) (शिक) (वाच)
मी बागेत खेळते.	(जा) (ये) (बस)
तू शाळेत येतोस.	(खेळ) (जा) (रड)
तू शाळेत येतेस.	(जा) (बस) (वाच)
आम्ही/आपण शाळेत जातो.	(खेळ) (वाच) (बोल)
तुम्ही/आपण शाळेत जाता.	(खेळ) (ये) (लिही)
बाळू शाळेत येतो.	(खेळ) (पड) (रड)
रमा शाळेत येते.	(वाच) (लिही) (शिक)
कुत्रं शाळेत येतं.	(जा) (झोप) (बस)
मुली शाळेत येतात.	(जा) (वाच) (बस)
मुलगे शाळेत येतात.	(खेळ) (शिक) (हस)

2. वाक्यों में रेखांकित निषेध वाचक क्रिया शब्दों के स्थानपर दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर तीन-तीन वाक्य बनाइए।

मी शाळेत जात नाही.	(खेळ) (भांड) (झोप)
आम्ही/आपण शाळेत जात नाहीत.	(रड) (झोप) (खेळ)
तू शाळेत जात नाहीस.	(ये) (झोप) (बस)

तुम्ही/आपण शाळेत जात नाही.	(रड) (खेळ) (भांड)
तो शाळेत जात नाही.	(भांड) (पड) (खेळ)
ती शाळेत जात नाही.	(ये) (लिही) (पड)
मूल शाळेत जात नाही.	(झोप) (ये) (बोल)
रामभाऊ शाळेत जात नाहीत.	(झोप) (खेळ) (पड)
सीताबाई शाळेत जात नाहीत.	(बोल) (बस) (ये)
मुलं शाळेत जात नाहीत.	(खेळ) (ये) (झोप)

III ठीक प्रकार से वाक्यांशो का मिलान कर वाक्य बनाइए।

उमेश शाळेत	दूध पितं.
आई दुपारी	वाचतात.
बाबा पुस्तक	वाचतेस.
तू	जेवते.
तुम्ही	खेळता.
शांता	अभ्यास करतो.
मावशी	चहा पितात.
मांजर	खाऊ खाते.

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: तू जेव.
तू जेवतोस.

1) तू ये.
2) तुम्ही अभ्यास करा.
3) तू गृहपाठ कर.
4) आपण खेळा.
5) तू विश्रांती घे.
6) तुम्ही दोघं बसा.
7) आपण काम करा.
8) तू चहापाणी कर.
9) तुम्ही दिवसभराच्या गप्पा मारा.

V उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के निषेध वाचक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: तू जेवतोस. तू जेवत नाहीस.

1) तू खेळतोस.
2) तू चहा करतेस.
3) आम्ही बाजारात जातो.
4) मी अभ्यास करतो.
5) मी फुलं तोडते.
6) तुम्ही गप्पा मारता.
7) उमेश बटाटेवडा खातो.
8) शांता चहा घेते.
9) बाबा अंगणात काम करतात.
10) ते पिल्लू झाडाखाली बसतं.
11) प्रकाश आणि उमेश खेळ खेळतात.
12) सुचेता आणि प्रिया अभ्यास करतात.
13) ती कुत्र्यांची पिल्लं विश्रांती घेतात.

VI उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के सकारात्मक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: मी बाजारात जात नाही. मी बाजारात जाते.

1) मी अभ्यास करत नाही.
2) मी खेळत नाही.
3) आम्ही फुलं आणत नाही.
4) तू बाजारात जात नाहीस.
5) तू बटाटेवडे खात नाहीस.
6) तुम्ही पुस्तकं शोधत नाही.
7) प्रिया चिवडा खात नाही.
8) कुत्र्यांची पिल्लं ओरडत नाहीत.
9) बाबा बाजारात जात नाहीत.
10) रामू आणि मुथाशेट सामान लवकर देत नाहीत.
11) प्रिया आणि निशा चहा घेत नाहीत.
12) आपण चहा घेत नाही.

VII उदाहरण के अनुसार उपयुक्त क्रिया रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: शांता शाळेत .... शांता शाळेत जाते.

1) सुधा बाजारातून सामान ....
2) प्रकाश आणि उमेश बटाटेवडे ....
3) सुचेता प्रगतिपुस्तक आईला ....
4) बाबा अंगणात काम ....
5) बोराडे कर्मचाऱ्यांची मीटिंग ....
6) जोसेफ पत्रव्यवहाराची फाईल ....
7) शांता आणि बाळू अभ्यासाला ....
8) प्रतिभा शांताला कशासाठी ....
9) प्रतिभा बाजारात ....
10) प्रिया बगीच्यातून फुलं ....

VIII कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर अनुच्छेद पूरा कीजिए।

मी रोज सकाळी .... (ऊठ) दात .... (घास), तोंड स्वच्छ .... (धू). मग आई मला दूध .... (दे). राम व मी मग अभ्यास .... (कर). सीताही आमच्याबरोबर अभ्यासाला .... (बस). ती .... (रड). मग आई आम्हाला .... (रागाव). आम्ही खूप दंगा .... (कर). पण सीता दंगा .... (कर) नाही. तुम्ही दंगा .... (कर) का? आमचं कुत्रं तिथेच .... (झोप). सकाळी फार मजा .... (ये).

पढ़िए और समझिए

आजचं शिक्षण

आजकाल सगळीकडे शाळांचा सुळसुळाट आहे. कोपऱ्या कोपऱ्यावर एक शाळा आहे. शिक्षण खूप महागही आहे. भरमसाठ फी, भाराभर पुस्तकं, बूट आणि दोनदोन गणवेष-शाळेचा एक आणि खेळाचा एक!

मुलं ओझ्यांनी वाकतात. पालक खर्चानं वाकतात.

मुलं सकाळी शाळेत जातात. भल्या पहाटे उठतात. आई अगोदरच उठते. भरभर सगळं आवरते. डबा तयार करते. बाबाही उठतात. मुलांना पोचवतात. पहाटे सगळाच गोंधळ होतो. सगळीच घाईगर्दी! तिथे कुणाला श्वास घ्यायलाही वेळ नाही.

दिवसभर शाळा चालते. नेहमीचे वर्ग, विशेष वर्ग, नाटक-गाणी आणि वक्तृत्व स्पर्धा यांची तयारी, समाजकार्य, हस्तव्यवसाय, स्काऊट, गाईड आणि खेळ! मुलं अगदी पार दमतात.

या शिक्षणात आईचा हातभार मोठा आहे. ती पहाटे लवकर उठते. मुलांची तयारी करते. संध्याकाळी त्यांना निरनिराळ्या वर्गांना पोचवते. कुणाचा नाचाचा वर्ग, कुणाचा गाण्याचा वर्ग, कुणाचा चित्रकलेचा वर्ग तर कुणाचा खेळ! ती मुलांचा अभ्यासही घेते. तिला अजिबात विश्रांती मिळत नाही. आई शाळेत चकराही मारते. कधी बाबांबरोबर पालक सभेला जाते. कधी त्यांच्याबरोबर शाळेतील समारंभांनाही जाते. आई फार थकते. पण ती कंटाळा करत नाही.

असं हे शिक्षण. मुलांची दगदग होते. पालकांची फरफट होते.

शब्दार्थ

शिक्षण	शिक्षा
आजकाल	आजकल
सगळीकडे	सब जगह, सर्वत्र
सुळसुळाट	प्रचलन में/बडी संख्या में
कोपरा	कोना
महाग	महँगा
भरमसाठ	भरमार
भाराभर	बहुत अधिक
गणवेष	वर्दी
ओझे	बोझा
खर्च	खर्च
वाकणे	झुक जाना
सकाळ	प्रातः काल, सवेरा
भल्यापहाटे	तड़के
अगोदर	पहले
आवरणे	ठीक करना
डबा तयार करणे	डिब्बा तैयार करना
पहाट	उषाकाल
गोंधळ	हड़बडी
घाईगर्दी	जल्दबाजी
नेहमी	सदा

विशेष वर्ग	विशिष्ट वर्ग
नाटक	नाटक
वक्तृत्व स्पर्धा	भाषण प्रतियोगिता
समाजकार्य	समाज कार्य
हस्तव्यवसाय	हस्तउद्योग
दमणे	थकना
हातभार लावणे	हाथ बँटाना
नाच	नाच
गाणे	गाना
चित्रकला	चित्र कला
चकरा मारणे	चक्कर लगाना
सभा	सभा बैठक
समारंभ	समारोह
दगदग	थककर चूर होना
पालक	माता पिता (पालक)

अभ्यास

I अनुच्छेद के अनुसार नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) शाळा सगळीकडे आहेत. सगळीकडे व खूप याऐवजी पाठात कोणता शब्द वापरला आहे?
2) शिक्षण महाग का आहे?
3) आई पहाटे लवकर का उठते?
4) शाळेत मुले कोणकोणत्या गोष्टी करतात?
5) आईबाबा मुलांच्या शाळेत का जातात?

II कोष्ठक में दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थक मराठी शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) .... बाळू खेळतो. (शामको)
2) बाळू दुपारी दोन .... झोपतो. (बजे)
3) त्याला काही गोष्टी .... वाटतात. (कठिन)
4) घरात .... भाजी आहे. (बहुत)
5) मी येत नाही म्हणून .... (गुस्सा मत करो)
6) दुपारी बाळू .... (विश्राम करता हैं)
7) संध्याकाळी तुम्ही .... (क्या करते है?)
8) आम्ही दोघं .... मग गृहपाठ झटपट होतात. (बैठते हैं)

III प्रत्येक शब्द समूह में जो शब्द उस वर्ग का न हो उसे पहचानिए और बताइए।

1) भरभर, झटपट, सुंदर, धाडधाड, पटापट
2) जाणे, येणे, करणे, प्रगती, खेळणे
3) अभ्यास, पालक, नाच, समारंभ, जाणे, वेळ
4) दुपार, रात्र, पहाट, सकाळ, संध्याकाळ, दगदग

IV नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग कर एक-एक वाक्य बनाइए।
भरभर, झटपट, धाडधाड, पटापट

V कोष्ठक में दिए गए मुहावरों का सही प्रयोग कर वाक्य बनाइए।
[सुळसुळाट असणे, फरफट होणे, दगदग होणे, श्वास घ्यायला वेळ नसणे, हातभार लावणे]

1) चार मुलांना शिकवता शिकवता रामभाऊंची .... होत होती.
2) बाबांना ऑफिसच्या कामाची व घरच्या कामाचीही .... होत होती.
3) सुधा घरकामात आईला .... होती.
4) शीलाला इतके काम करावे लागते की तिला .... नसतो.
5) त्या भागात कुत्र्यांचा .... असतो.

VI कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर अनुच्छेद पूरा कीजिए।
मी दुपारी एक वाज़ता घरी .... (ये) जेवण .... (कर) नंतर झोपतो. दोन तास विश्रांती .... (घे) .... (खेळ). मग आई गृहपाठ .... (घे). आई मला समजावून .... (सांग) संध्याकाळी बाबा घरी .... (ये) आई चहापाणी .... (कर). (खेळ) नंतर मी पुन्हा अभ्यासाला ....(बस)

VII हिंदीं में अनुवाद कीजिए

शाळेतील शिक्षण आणि महाविद्यालयातील शिक्षण यांत फरक आहे. शाळेतील शिक्षक अभ्यासाबरोबर संस्कारही करतात. ते विद्यार्थाला आकार देतात. शाळेचे शिक्षकच त्याला घडवतात. शाळेतील मैत्री कायमची टिकते. शाळेनंतर विद्यार्थी महाविद्यालयात प्रवेश करतो. प्रत्येकजण विद्यार्थीजीवनात खूप शिकतो. न शिकणारा विद्यार्थी जीवनात मागे पडतो. शाळेत आणि महाविद्यालयात अभ्यासाबरोबर खेळही शिकवतात. विद्यार्थ्याला खेळामुळे अभ्यासाचा कंटाळा येत नाही आणि त्याचे शरीरही सुदृढ होते. सुदृढ शरीर म्हणजेच सुदृढ मन!

(घडविणे = बनाना, मागे पडणे = पीछे पडना, मैत्री = मित्रता, दोस्ताना, टिकणे = बनी रहना, सुदृढ = सदृढ)

VIII मराठी में अनुवाद कीजिए

तीन बरस के बच्चे को माँ बाप स्कूल भेजते हैं। बच्चा स्कूल में सारे नैतिक मूल्य सीखता है। शिक्षा पर उसका भविष्य निर्भर होता है। शिक्षा के बलपर वह देश का सच्चा नागरिक बनता है।

आजकल स्कूलों में पढ़ाई के साथ-साथ अन्य कार्य कलापों पर भी बल देते हैं। खेल कूद पर भी विशेष जोर देते हैं।

(भेजना = पाठविणे , निर्भर होना = अवलंबून)

IX अपनी पढ़ाई के बारे में एक छोटा सा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में सामान्य वर्तमान काल के अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1)	संध्याकाळी तो खेळतो.	शाम के वक्त वह खेलता है।
2)	दुपारी एक वाजता येतो.	दोपहर एक बजे (वह) आता है।
3)	मग आम्ही अभ्यास करतो.	फिर हम पढ़ाई करते हैं।
4)	त्याचा तो गृहपाठ करत नाही.	वह अपने आप गृहकार्य नहीं करता।
5)	त्याला गृहपाठ जमत नाही.	वह (स्वयं) गृहकार्य नहीं करता है।
6)	तुम्ही येता का?	तुम चलती हो क्या?
7)	मी बाळूचा अभ्यास घेते.	मैं बाळू को पढ़ाती हूँ।
8)	तेव्हा तुम्ही काय करता?	तब तुम क्या करती हो?

मराठी में सामान्य वर्तमान काल में मूल क्रिया के साथ '-त' प्रत्यय जुड़ता है। इसके पश्चात पुरूष, वचन, लिंग द्योतक प्रत्यय लगाए जाते हैं।

उदाहरणार्थ: 'बस' - 'आ' मूल क्रिया के विविध वर्तमान कालिक रूप पुरूष, वचन, लिंगानुसार नीचे दिए गए हैं।

		एकवचन	*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी बसतो (मैं बैठता हूँ)	आम्ही/आपण बसतो
	(स्त्री.)	मी बसते (मैं बैठती हूँ)	(हम बैठते (बैठती) हैं)
म.पु.		तू बसतोस (तू बैठता है) (आप बैठते हैं)	तुम्ही /आपण बसता (तुम/आप बैठते हो)
	(स्त्री.)	तू बसतेस	(तू बैठती है)

अ.पु.	*(पु.)*	हा/तो बसतो (वह बैठता है)	हे/ते बसतात (ये/वे बैठते हैं)
	(स्त्री.)	ही/ती बसते (वह बैठती है)	ह्या/त्या बसतात (ये/वे बैठतीं हैं)
	(नपुं.)	हे/ते बसते/हे/ते बसतं	ही/ती बसतात

ध्यान दीजिए कि केवल अन्य पुरुष में नपुंसक लिंग का प्रयोग होता है।

II वर्तमान कालिक क्रियाओं में निम्न प्रकार के पुरुष प्रत्यय जोडे जाते हैं।

		एकवचन	बहुवचन	
उ.पु.	*(पु.)*	[मी] ओ	आम्ही, आपण	ओ
	(स्त्री.)	[मी] ए		
म.पु.	*(पु.)*	[तू] ओस	तुम्ही, आपण	आ
	(स्त्री.)	[तू] एस		
तृ.पु.	*(पु.)*	[तो] ओ	ते, त्या, ती	आत
	(स्त्री.)	[ती] ए		
	(नपुं.)	[ते] अ/ए		

III *उदाहरण:*

		एकवचन	बहुवचन
उ.पु.	*(पु.)*	मी बसत नाही. मैं बैठता नहीं हूँ।	आम्ही, आपण बसत नाही. हम बैठते नहीं हैं।
म.पु.	*(स्त्री.)*	तू बसत नाहीस. तू बैठता/बैठती नहीं हो।	तुम्ही, आपण बसत नाही. आप बैठते नहीं हैं।
अ.पु.	*(पु.)* हा/तो, *(स्त्री.)* ही/ती, *(नपुं.)* हे/ते	बसत नाही. वह बैठता/बैठती नहीं।	हे/ते, ह्या/त्या, ही/ती बसत नाहीत. ये बैठता/बैठती नहीं हैं।

वर्तमानकाल में निषेधवाचक वाक्य बनाने के लिए क्रिया के बाद 'नाही' लगाते हैं। निषेधवाचक वाक्यों में लिंग का भेद नहीं होता।

IV नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित किए गए क्रिया रूपों पर ध्यान दीजिए।

त्याला गृहपाठ जमत नाही. वह गृहकार्य नहीं कर पाता।

मराठी में क्रियारूप 'जमणे' का अर्थ 'सकना' या 'कर पाना' होता है। जब इस क्रिया रूप का प्रयोग वाक्य में होता है तब कर्ता के साथ कर्म कारक 'ला' = 'को' का प्रयोग करते हैं।

हिंदी की ही तरह शक्यता बोधक क्रिया 'शक' = 'सक' का प्रयोग भी मराठी में करते हैं। इस पर अगले एक पाठ में विचार किया गया है।

V नीचे दिए गए वाक्य पढ़िए।

1) तुम्हाला कंटाळा येत नाही का? क्या तुम्हें ऊब नहीं होती? "क्या तुम ऊब नहीं जाते?"

2) मी कंटाळा करत नाही. मैं ऊब जाने के कारण काम नहीं टालता/टालती।

3) मी कंटाळते. मैं ऊब जाता/जाती हूँ।

ऊपर दिए गए वाक्यों में से पहले वाक्य में 'कंटाळा येणे' = 'ऊब जाना' अर्थ में प्रयोग किया गया है। ध्यान दीजिए कि मराठी में 'ये' = 'आ' क्रिया का प्रयोग 'कंटाळा' के साथ किया जाता है और हिंदी में 'ऊब' के साथ 'जा' का प्रयोग किया जाता है।

दूसरे वाक्य में 'कंटाळा कर' का मतलब है 'ऊब जाने के कारण काम टालना' या 'काम टालना' तीसरे वाक्य में 'कंटाळणे' का अर्थ ऊब जाना है। यहाँ 'कंटाळ' मूल क्रिया रूप ही है।

धडा पाठ 8

असा आहे सिनेमा

भानू : हं! काय चाललं आहे बाईसाहेबांचं?

शालिनी : काही नाही. सिनेमा बघतेय.

भानू : म्हणजे आज चहा-पाण्याला सुट्टी!

शालिनी : बघा, सगळं टेबलावरच आहे. इथंच घेताय का? तुम्हीही पहा की माझ्याबरोबर! मस्त आहे सिनेमा.

भानू : म्हणजे नेहमीचा सगळा मसाला ना? मारामारी, नाचगाणी, रडारड!

शालिनी : गप्प बसा हो. नका पाहू सिनेमा पण, बडबड करू नका. सगळे संवाद जाताहेत.

भानू : बरं बुवा। पण हा हिरो असे वेडेवाकडे झटके का देतोय? अंगात बिंगात येतंय की काय?

शालिनी : तो ब्रेकडान्स आहे हो! किती मस्त नाचतोय तो! तुम्हाला काही कळत नाही. निदान गप्प बसावं. उगीच अज्ञानाचं प्रदर्शन कशाला?

भानू : नाही-नाही. मी अज्ञानाचं प्रदर्शन करत नाहीए. पण शालू, तूच बघ, एकाच गाण्यात बिचाऱ्यानं कुठं कुठं नाचावं! समुद्राच्या काठी, जंगलात, खडकांवर, बागेत! म्हणजे तीन मिनिटांतच संपूर्ण पृथ्वी प्रदक्षिणा!

शालिनी : असू दे हो, तुम्ही निसर्गाचा आनंद घ्या नं!

ऐसी है फिल्म

भानू : हाँ, क्या हो रहा है मेमसाब?

शालिनी : कुछ नहीं। फिल्म देख रही हूँ।

भानू : यानि आज चाय पानी की छुट्टी!

शालिनी : देखो सब कुछ मेज़ पर ही है। यहीं ले रहे हैं क्या? आप भी देखिए न (फिल्म) मेरे साथ। बहुत मज़ेदार है।

भानू : यानि हमेशा की तरह मसाला (फिल्म) न? मार-पीट, नाच-गाने, रोना-धोना (आदि आदि)!

शालिनी : चुप बैठिए न। मत देखिए फिल्म पर बड़-बड़ मत कीजिए। सारे डायलॉग (निकले) जा रहे हैं।

भानू : अच्छा बाबा! लेकिन यह हीरो ऐसे आड़े-तिरछे झटके क्यों दे रहा है? इसे भूत लग गया है क्या?

शालिनी : यह ब्रेकडान्स है जी। क्या बढ़िया नाच रहा है वह। आप तो कुछ समझते नहीं। कम से कम चुप तो रहिए। बिना कारण अपने अज्ञान का प्रदर्शन किस लिए?

भानू : नही-नहीं मैं अज्ञान का प्रदर्शन नहीं कर रहा हूँ। लेकिन शालू, तुम ही देखो। एक ही गाने में उस बेचारे को कहाँ कहाँ नाचना है। समुद्र के किनारे, जंगल में, चट्टानों पर, बगीचे में! यानि तीन मिनटों में ही संपूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा।

शालिनी : रहने भी दीजिए। आप प्रकृति का आनंद लीजिए न!

भानू : अरे। यह अकेली ही कहाँ जा रही है?

भानू : अरेच्या! ही एकटीच कुठे जातेय?

शालिनी : अयाई ग!

भानू : का ग?

शालिनी : अहो, तिकडे नेमका खलनायक आणि त्याची माणसं आहेत. ती तिची वाट बघाताहेत वाटतं! येताहेत बघा ते!

भानू : काळजी करू नकोस. तो नाचणारा हीरो येतोयच बघ आता.

शालिनी : बिचारीला कसे ओढताहेत बघा. ती रडतेय पण किती सुंदर दिसतेय नाही? रडणारी सुंदरी!

भानू : तिचा मेकप कसा जात नाही?

शालिनी : गप्प राहताय की नाही तुम्ही?

भानू : तो बघ आपला हीरो! ढिश्यूम ढिश्यूम! हा एकटाच पुरतोय बघ, त्या दहा जणांना! त्या पठ्ठ्याच्या अंगावर एक पण घाव नाहीय.

शालिनी : तुम्ही जा पाहू इथून, सगळा रंगाचा बेरंग करताहात.

भानू : बरं बाई! माझे आई! बघ तू एकटीच! मी पेपर वाचतो.

शालिनी : म्हणजे राजकारणच ना! तिथेही सिनेमाचाच मसाला! तुम्ही पेपर वाचा. मी सिनेमा बघते. दोन्ही एकच.

शालिनी : उई माँ!

भानू : क्या हुआ?

शालिनी : अजी, वहाँ तो खलनायक और उसके साथी हैं। लगता है वे उसी की ताक में हैं। देखिए वे आ रहे हैं।

भानू : चिंता मत करो। देखो वह नाचनेवाला हीरो अब आ ही रहा है।

शालिनी : बेचारी को कैसे घसीट रहे हैं, देखो। वह रो रही है। कितनी सुंदर दिख रही है, नहीं? रोनेवाली सुंदरी!

भानू : उसका मेकप कैसे जाता नहीं?

शालिनी : आप चुपभी रहते हैं या नहीं?

भानू : वह देखो अपना हीरो! ढिश्यूम-ढिश्यूम। दस आदमियों के लिए वह अकेला ही काफी है। उस पट्ठे के शरीर पर एक घाव भी नहीं है!

शालिनी : आप तो जाइए यहाँसे। सारा मज़ा किरकिरा कर रहे है।

भानू : अच्छा बाबा! श्रीमतीजी! (मेरी माँ) देखो तुम अकेले ही! मैं अखबार पढ़ता हूँ।

शालिनी : यानि राजनीति ही न? वहाँ भी तो फिल्मी मसाला ही (है)। आप अखबार पढ़िए, मैं फिल्म देखती हूँ। दोनों एक बात है।

शब्दार्थ

काय चाललंय	क्या चल रहा है?
बघणे	देखना
सुट्टी	छुट्टी
टेबल	टेबल
घेणे	लेना
पाहणे	देखना
माझ्याबरोबर	हमारे साथ

मस्त	मजेदार
नेहमी	हमेशा
मारामारी	मार-पीट
नाचगाणी	नाच गाना
रडारड	रोना धोना
गप्प बसा	चुप बैठिए
जाणे	निकल जाना
वेडेवाकडे झटके	आड़े-तिरछे झटके
अंगात येणे	भूत लगना
मस्त नाच	अच्छा नाच
तुम्हाला	आप को
काही	कुछ
कळत नाही	समझता नहीं
निदान	कम से कम
बिचारा	बेचारा
समुद्रकाठ	समुद्र के किनारे
जंगल	जंगल
खडकांवर	चट्टानों पर
बागेत	बगीचे में
पृथ्वी प्रदक्षिणा	पृथ्वी की परिक्रमा
निसर्गाचा आनंद	प्रकृति का आनंद
एकटी	अकेली
वाट बघणे	बाट जोहना
येतोय	आ रहा है
ओढणे	घसीटना
पुरणे	काफी होना
पट्टा	पट्टा
रंगाचा बेरंग	रंग में भंग/मजा किरकिरा
बाई	श्रीमतीजी
माझे आई	मेरी माँ
वाचणे	पढ़ना
राजकारण	राजनीति
दोन्ही एकच	दोनों एक ही

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) हिरो एकाच आम्यात कुठे कुठे नाचतो आहे?
2) सिनेमाचा "मसाला" कशाला म्हणतात? त्यात कुठल्या कुठल्या गोष्टींचा समावेश असतो?
3) हीरो काय करतो आहे? तो एकटाच किती जणांना पुरतो आहे?
4) रडणारी नायिका कशी दिसते?
5) पेपरात काय असतं?

II उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: बाळू अभ्यास करतो आहे.
बाळू अभ्यास करतो.

1) मी चहा घेतो आहे.
2) मी बाजारात जातो आहे.
3) आम्ही अभ्यास करतो आहोत.
4) तू पुस्तक आणते आहेस.
5) तुम्ही दोघं बागेतून फुलं आणता आहात.
6) तो सिनेमा बघतो आहे.
7) ती खोली स्वच्छ करते आहे.
8) बाबा अंगणात काम करत आहेत.
9) त्या मुली बागेतून फुलं आणत आहेत.
10) ती पिल्लं झाडाखाली बसत आहेत.
11) कुत्रं दूध पीत आहे.

III उदाहरण के अनुसार निषेधवाचक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: मी सिनेमा बघते आहे.
मी सिनेमा बघत नाही.

1) मी चहा घेतो आहे.
2) आम्ही सामान टेबलावर ठेवतो आहोत.
3) तू अभ्यास करते आहेस.
4) तू खेळतो आहेस.
5) तुम्ही दोघी गाणी ऐकत आहात.
6) जोसेफ फाईल आणतो आहे.
7) प्रिया सिनेमा बघते आहे.
8) बाबा चहा घेत आहेत.
9) त्या मुली आज सहलीला जात आहेत.
10) ती पिल्लं भुंकत आहेत.

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए निषेधवाचक वाक्यों के सकारात्मक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: बाळू अभ्यास करत नाही.
बाळू अभ्यास करतो आहे.

1) मी बाजारात जात नाही आहे.
2) आम्ही सिनेमा बघत नाही आहोत.
3) तू सभेची तयारी करत नाही आहेस.
4) शांता बाहुलीशी खेळत नाही आहे.
5) तुम्ही ती फाईल आणत नाही आहात.
6) ती सहलीला येत नाही आहे.
7) प्रिया पानं गोळा करत नाही आहे.
8) बाबा प्रगतिपुस्तकांवर सही करत नाही आहेत.
9) त्या मुली डबा आणत नाही आहेत.
10) ती पिल्लं झाडाखाली बसत नाही आहेत.

V उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: बाहुलीशी .... मुलगी शांता आहे. (खेळणे)
बाहुलीशी खेळणारी मुलगी शांता आहे.

1) सहलीला .... मुली सकाळी खूप लवकर येतात. (जाणे)
2) ती नाटकात काम .... मुलं आमच्या शाळेत आहेत. (करणे)
3) ती .... मुलं माझ्याबरोबर येताहेत. (खेळणे)
4) ती .... मुलगी इकडे येते आहे. (गाणे)
5) तो .... मुलगा तिचा भाऊ आहे. (पळ)
6) तिथे काम .... कर्मचारी त्या विभागातील आहेत. (करणे)
7) ती त्या .... पिल्लाची आई आहे. (ओरडणे)
8) ती वाट .... माणसे खलनायकाची आहेत. (बघणे)
9) तो .... माणूस हीरो आहे. (य़ेणे)
10) ती .... हिरॉईन किती सुंदर दिसतेय! (रडणे)

VI उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1. *उदाहरण:* एक गाण्यात बिचाऱ्यानं किती .... (नाचणे)
एका गाण्यात बिचाऱ्यानं किती नाचावं!

1) सुधानं सामान आणण्यासाठी बाजारात किती वेळा ....(जाणे)
2) अहवालास अंतिम रूप देण्यासाठी सर्व कर्मचाऱ्यांची किती वेळा मीटिंग .... (बोलावणे)
3) त्रैमासिक मीटिंगबद्दल सर्वांना किती परिपत्रकं .... (पाठविणे).

4) फुलं गोळा करण्यासाठी बागेत किती वेळा .... (जाणे).

2. *उदाहरण:* प्रगतिपुस्तकावर बाबांनी सही .... लागते. (करणे)
प्रगतिपुस्तकावर बाबांनी सही करावी लागते.

1) दुसरी राज्यभाषा शिकविण्यासाठी सरकारला योजना .... लागतात. (आखणे)
2) बाळासाठी दूध .... लागते. (आणणे)
3) तुझ्यासाठी मला सिनेमा .... लागतो. (बघणे)
4) माझ्या बहिणीला खाऊ .... लागतो. (देणे)
5) मंगळागौरीसाठी माझ्या मैत्रिणींना .... लागते. (बोलावणे)

VII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।
उदाहरण: त्याच्या अंगावर एक घाव पण नाही आहे.
त्याच्या अंगावर एकपण घाव नाहीय.

1) हिरो गुंडाना खूप मारतो आहे.
2) ती मघापासून पुस्तक शोधते आहे.
3) ती पानं गोळा करते आहे.

VIII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयुक्त रूप भरकर वाक्य पूरे कीजिए।
उदाहरण: संध्याकाळी मुलांनी खेळावं.
संध्याकाळी मुलांनी .... (झोप-)
संध्याकाळी मुलांनी झोपू नये.

1) मुलांनी लवकर उठावं उशिरापर्यंत .... (झोप-)
2) आजोबांनी मुलांबरोबर खेळावं. आजोबांनी मुलांना .... (रागाव)
3) बाबांनी आईला मदत करावी. नुसताच हुकुम .... (सोड-)
4) मुलांनी हसतमुख असावं. सारखं .... (रड-)
5) खलनायकानं नायिकेला छळावं. नायकानं .... (छळ-)

IX उपयुक्त क्रिया-रूपों का प्रयोग कर अनुच्छेद पूरा कीजिए।
आज सकाळपासून सगळे आपापल्या कामात .... राम अभ्यास .... आई स्वयंपाक .... माधव, राजीव आणि सुधा घर साफ .... बाबा पत्र .... रमा पुस्तक .... प्रत्येकजण कशासाठी तरी आईला हाक .... आईनं काय .... आणि काय ....? कुणाला मदत .... आणि कुणाला ....? काम .... आई एकटी आणि हाका .... अनेक!

पढ़िए और समझिए

भारतीय चित्रपट

हल्ली भारतीय भाषांमध्ये खूप चांगले चित्रपट तयार होत आहेत. मल्याळम्, कन्नड, बंगाली, तेलुगु या भाषांमधले चित्रपट सर्व भारतीय पाहत आहेत. हिंदी चित्रपटांना तर भारतात आणि भारताबाहेरही खूप मागणी येत आहे. नवनवीन कलाकार उदयाला येत आहेत. जुने मावळत आहेत. काही जुन्या नटनट्या अजूनही जोमाने काम करत आहेत.

चित्रपटांची केवळ संख्याच वाढत आहे असे नाही. त्यांचा दर्जाही उंचावतो आहे. काही वेचक कलाकार भारतीय जीवनातील जिवंत समस्यांवर कलात्मक चित्रपट काढत आहेत. दिग्दर्शक नवनवीन विषय हाताळत आहेत. अद्ययावत तंत्र वापरत आहेत.

साऱ्या जगभर भारतीय चित्रपटांचा एक खास प्रेक्षकवर्ग तयार होत आहे. राजकपूरची वाहवा अजूनही परदेशात होत आहे. मंगेशकर भगिनींचा चाहता वर्ग वाढतोच आहे. आपल्यात आज सत्यजित राय यांच्यासारखा विश्वविख्यात विशेष ऑस्करविजेताही आहे.

एकीकडे भारतीय चित्रपट दर्जेदार बनत आहे. दुसरीकडे सर्वसामान्य माणसाला मात्र मसाला चित्रपटाचेच आकर्षण आहे. त्यामुळे मसाला चित्रपट फार मोठ्या संख्येने भारतात तयार होत आहेत.

शब्दार्थ

हल्ली	आजकल
खूप	खूब
चांगले	अच्छे
चित्रपट	चित्रपट, फिल्म
तयार होणे	तैयार होना
भाषांमधले	भाषाओं में
नवनवीन	नई-नई
उदयाला येणे	उदित होना
मावळणे	अस्त होना
जुन्या	पुराने
जोम	जोश
केवळ	केवल
संख्या	संख्या, अंक
दर्जा	दर्जा, श्रेणी
उंचावणे	उठाना
वेचक	चुने हुए
जिवंत समस्या	ज्वलंत समस्या

हाताळणे	निबटाना
अद्ययावत	अद्यतन
तंत्र	तंत्र
वापरणे	प्रयोग करना
जगभर	दुनिया भर
खास	खास
प्रेक्षक	दर्शक
वाहवा	वाह-वाह
चाहता वर्ग	प्रशंसक
वाढणे	बढ़ना
विजेता	विजेता
एकीकडे	एक तरफ़,एक ओर
सर्वसामान्य	जन साधारण
आकर्षण	आकर्षण
फार मोठ्या संख्येने	बहुत अधिक संख्या में

अभ्यास

I अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) भारतात कोणकोणत्या भाषेतील चित्रपट तयार होतात?
2) भारताबाहेर कोणत्या भाषेच्या चित्रपटांना अधिक मागणी आहे?
3) चित्रपट सृष्टीतील विश्वविख्यात व्यक्ती कोण कोण आहेत?
4) भारतात मसाला चित्रपट मोठ्या प्रमाणात निर्माण होण्याचे कारण काय?

II हिंदी में जिस तरह 'वा' का प्रयोग करके 'चाय वाय, पानी वानी' जैसे शब्द युग्म बनते हैं उसी तरह मराठी में 'बि' का प्रयोग होता है जैसे 'चहाबिहा, पाणीबिणी' इत्यादि। इसे ठीक तरह से समझिए और नीचे दिए गए शब्दों से इसी तरह शब्दयुग्म बनाइए।

पानं, फळं, झाडं, सिनेमा, नाच

III 'पुरणे' इस क्रिया के दो अर्थ होते हैं।

उदाहरण: 1) इतके लाडू पाच जणांना पुरतात.
(इतने लड्डू पाँच लोगों के लिए काफ़ी हैं।)
एकटा हिरो दहा जणांना पुरतो.
(अकेला हीरो दस लोगों के लिए काफ़ी है।)

2) खलनायक जमिनीत खजिना पुरतो.
(खल नायक खज़ाने को जमीन में गाड़ देता है।)

इसी तरह दो भिन्न अर्थ देनेवाले और दो-दो वाक्य बनाइए।

V 'जगभर' भारतीय चित्रपटांचा प्रेक्षकवर्ग आहे. इसी तरह घरभर, गावभर, देशभर शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

VI सिनेमाचा दर्जा उंचावत आहे.
सिनेमा दर्जेदार होत आहे.

तिच्या डोळयात पाणी (तेज) आहे.
तिचे डोळे पाणीदार आहेत.

उपर्युक्त वाक्य जोड़ियों के अर्थ में समानता है। 'दार' प्रत्यय लगा कर बने वाक्य का भी यही अर्थ है। इसी तरह 'डेरेदार', 'समजूतदार', 'मजेदार' इन शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

VII हिंदी में अनुवाद कीजिए।

मराठी माणूस आजही संगीत नाटक पाहातो. आजकाल अनेक नवनवे चित्रपट येत आहेत. तरीही तो संगीत नाटकं पाहातो आहे. कारण संगीत नाटक हा मराठी माणसाचा आवडीचा विषय आहे. या संगीत नाटकांत गाणाऱ्या, नाचणाऱ्या नटनट्या आहेत. उत्तम संगीत देणारे संगीतकारही आहेत. या नाटकांतील संवादां-इतकीच गाणीही प्रसिद्ध आहेत. नटनट्यांबरोबरच गायक-वादकही रंगमंचावर येतात. संगीत नाटकाच्या क्षेत्रात अनेक नवे कलाकार उदयाला येत आहेत. नाटककार नाटकांत नवनवीन विषय हाताळत आहेत. म्हणूनच संगीत नाटकाचा विस्तार आणि विकास होतो आहे. प्रत्येकालाच संगीत नाटक आवडत नाही. तरीही, मराठी संगीत नाटक ही महाराष्ट्राची एक विशेषता आहे.

VIII मराठी में अनुवाद कीजिए।

आजकल बैंगलोर में फिल्म समारोह चल रहा है। इस में देश-विदेश की फिल्में दिखाते हैं। सभी जगह इन फिल्मों की चर्चा हो रही है। फिल्में देखने के लिए लोग उमड़ रहे हैं। इस के कारण टिकट की कालाबाजारी हो रही है।

IX आप मित्र के साथ सिनेमा देख रहे हैं। फिल्म देखते हुए उसके बारे में बातें करते हैं। इस बारे में आठ-दस वाक्यों का एक अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में अपूर्ण वर्तमान काल के क्रियावाले वाक्यों का परिचय दिया गया है।

उदाहरण:

1)	मी सिनेमा बघते आहे.	मैं सिनेमा देख रही हूँ।
2)	मी पेपर वाचतो आहे.	मैं अखबार पढ़ रहा हूँ।
3)	आम्ही सिनेमा बघतो आहोत.	हम सिनेमा देख रहे हैं।
4)	आपण सिनेमा बघतो आहोत.	हम सिनेमा देख रहे हैं।
5)	तू सुंदर दिसतो आहेस.	तुम सुंदर दिख रहे हो।
6)	तू सुंदर दिसते आहेस.	तुम सुंदर दिख रही हो।
7)	तुम्ही पेपर वाचता आहात.	आप अखबार पढ़ रहे हैं।
8)	तो मस्त नाचतो आहे.	वह बढ़िया नाचता है।
9)	ती रडते आहे.	वह रो रही है।
10)	ती तिची वाट बघत आहेत.	वे उसकी राह देख रहे हैं।

ध्यान दीजिए कि मराठी में अपूर्ण वर्तमानकाल में वर्तमान कालिक क्रियारूपों के बाद योजक क्रिया के विविध रूपों का प्रयोग पुरुष, लिंग, वचन के अनुसार होता है। उदाहरणार्थ 'बस' मूल क्रिया के विविध अपूर्ण वर्तमान कालिक रूप पुरुष, वचन, लिंगानुसार नीचे दिए गए हैं।

बस

		एकवचन		*बहुवचन*	
उ.पु.	*(पु.)*	मी बसतो आहे.	मैं बैठ रहा हूँ।	आम्ही }	बसत आहोत.
	(स्त्री.)	मी बसते आहे.	मैं बैठ रही हूँ।	आपण }	हम बैठ रहे हैं।
म.पु.	*(पु.)*	तू बसतो आहेस.	तुम बैठ रहे हो।	तुम्ही }	बसत आहात.
	(स्त्री.)	तू बसते आहेस.	तुम बैठ रही हो।	आपण }	आप बैठ रहे/रही हैं।
अ.पु.	*(पु.)*	तो बसतो आहे.	वह बैठ रहा है।	ते बसत आहेत.	वे बैठ रहे हैं।
	(स्त्री.)	ती बसते आहे.	वह बैठ रही है।	त्या बसत आहेत.	वे बैठ रही हैं।
	(नपुं.)	ते बसतं आहे.		ती बसत आहेत.	

II अपूर्ण वर्तमान कालिक क्रियारूपों के निषेधवाचक रूपों का परिचय नीचे दिया गया है।

1)	ती पेपर वाचत नाही आहे.	वह अखबार नहीं पढ़ रही है।
2)	तो सिनेमा बघत नाही आहे.	वह सिनेमा नहीं देख रहा है।

अपूर्ण वर्तमानकालिक वाक्यों को निषेध वाचक बनाने के लिए साधारण वर्तमान कालिक निषेधवाचक रूपों के बाद 'आहे' के उपयुक्त रूप जोड़े जाते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
उ.पु.	मी बसत नाही आहे.	आम्ही/आपण बसत नाही आहोत.
	मैं बैठ नहीं रहा हूँ।	हम बैठ नहीं रहे हैं।
म.पु.	तू बसत नाही आहेस.	तुम्ही/आपण बसत नाही आहात.
	तुम बैठ नहीं रही हो/रहे हो।	आप बैठ नहीं रहे हैं।
अ.पु.	तो/ती/ते बसत नाही आहे.	ते/त्या/ती बसत नाही आहेत.
	वह बैठ नहीं रहा/रही है।	वे बैठ नहीं रहा/रही हैं।

III अपूर्ण वर्तमान कालिक क्रिया रूप संभाषण में प्रायः संक्षिप्त हो जाते हैं।

1) मी सिनेमा बघतेय. मैं सिनेमा देख रही हूँ।
2) ती कुठे जातेय? वह कहाँ जा रही है।

संक्षिप्त अपूर्ण वर्तमान कालिक क्रियारूप में 'आहे' के स्थान पर 'य' जुड़ जाता है।

		एकवचन		बहुवचन	
उ.पु.	*(पु).*	मी बसतोय.	मैं बैठ रहा हूँ।	आम्ही	बसताय.
	(स्त्री.)	मी बसतेय.	मैं बैठ रही हूँ।	आपण	हम बैठ रहे हैं।
म.पु.	*(पु.)*	तू बसतोयस.	तु बैठ रहे हो।	तुम्ही	बसताय.
	(स्त्री.)	तू बसतेयस.	तुम बैठ रही हो।	आपण	बसताहात.
					आप बैठ रही/रहे हैं।

अ.पु.	*(पु.)*	तो बसतोय.	वह बैठ रहा है।	ते बसतायत.	वे बैठ रहे हैं।
	(स्त्री.)	ती बसतेय.	वह बैठ रही है।	त्या बसतायत.	वे बैठ रही हैं।
	(नपुं.)	ते बसतंय.		ती बसतायत.	

IV अपूर्ण वर्तमान कालिक क्रियारूपों के निषेधवाचक रूपों का भी संभाषण में प्रायः संक्षिप्त रूप हो जाता है।

1) ती वाट बघत नाहीए. वह रास्ता नहीं देख रही है।
2) तिचा मेकप जात नाहीए. उसका मेक-अप नहीं जा रहा है।

अपूर्ण वर्तमान कालिक निषेधवाचक क्रिया रूपों के संक्षिप्त रूपों में 'आहे' के स्थान पर 'ए' जुड़ जाता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ.पु.	मी बसत नाहीए/नाईए.	आम्ही/आपण बसत नाहीओत/नाईओत.
	मैं नहीं बैठ रहा/रही हूँ।	हम नहीं बैठ रहे हैं।

म.पु.	तू बसत नाहीएस/नाईएस.	तुम्ही/आपण बसत नाहीआत/नाईआत.
	तुम नहीं बैठ रही/रहे हो। आप नहीं बैठ रहे/रही हैं।	
अ.पु.	तो/ती/ते बसत नाहीए/नाईए.	ते/त्या/ती बसत नाहीएत/नाईएत.
	वह नहीं बैठ रही/रहा है।	वे नहीं बैठ रही/रहे हैं।

V मराठी के "पाहिजे"/"हवा" (चाहिए) क्रियारूप के अर्थ में कभी कभी अन्यपुरुष बहुवचन आज्ञावाचक क्रियारूप का प्रयोग किया जाता हैं।

1) गप्प बसावं. चुप बैठना चाहिए।
2) समोर आहे ते खावं. जो सामने है, वह खाना-चाहिए।

इस प्रकार के क्रियारूप बनाने के लिए अन्यपुरुष बहुवचन के आज्ञावाचक रूप में "आवं" जुड़ जाता है। इस के रूप में लिंग, वचन, पुरुष आदि के कारण कोई परिवर्तन नही होता।

उपर्युक्त क्रियारूपों के निषेधवाचक रूप के लिए मूल क्रियारूप में 'ऊ' लगाकर 'नये' जोड़ते हैं। इस प्रयोग में भी लिंग, वचन, पुरुष आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।

उदहारण:	बसू नये.	न बैठें।
	नाचू नये.	नाचें नहीं।

VI मराठी में क्रिया करनेवालों के अर्थ में क्रिया के मूलरूप के बाद '-णारा' प्रत्यय जोड़कर कृदन्त विशेषण बनता है। नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों की ओर ध्यान दीजिए।

नाचणारा हीरो येतोय. नाचनेवाला नायक आ रहा है।
रडणारी नायिका सुंदर दिसते. रोती हुई नायिका सुंदर दिखती है।

क्रिया के मूल रूप के साथ "-णारा" जोड़ कर संज्ञा शब्द भी बनाए जाते हैं।

VII "पुरणे" इस क्रिया के मराठी में नीचे लिखे गए दो अर्थ होते हैं।

1) एकटा हीरो दहा जणांना पुरतो.
अकेला नायक दस लोगों के लिए काफी है।
2) खलनायक जमिनीत खजिना पुरतो.
खलनायक जमीन में खज़ाना गाड़ता है।

VIII मराठी में "भर" शब्द स्थानवाचक शब्द में जुड़कर "पूरे" का अर्थ प्रकट करता है।

उदाहरण: घरभर, गावभर, देशभर

IX मराठी में "-दार" प्रत्यय शब्दों में जुड़कर "से भरा हुआ" अर्थ व्यक्त करनेवाला विशेषरूप बनाता है।

उदाहरम:	दर्जा + दार	= दर्जेदार
	पाणी (तेज) + दार	= पाणीदार
	मजा + दार	= मजेदार

X निम्न लिखित वाक्य में रेखांकित शब्द पर ध्यान दीजिए।

ती तिची वाट बघताहेत वाटतं.

यहाँ 'वाटतं' का अर्थ "ऐसा लग रहा है" है। ध्यान दीजिए कि "वाटतं" में लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता। 'वाटतं" का प्रयोग संभाव्यता दर्शाने के लिए होता है।

किसी भी वाक्य में "वाटतं" लगा सकते हैं और इस प्रयोग में वक्ता अपने कथन की वास्तविकता की पूरी जिम्मेदारी स्वयं नहीं लेता है।

धडा
पाठ 9

लग्नाची मुलगी

यशवंतराव : काय वसंतराव तुमची सुमन कुठं आहे? अलिकडे दिसत नाही कुठं?

वसंतराव : ती साताऱ्याला असते. सारखी येत जात असते.

यशवंतराव : साताऱ्याला भयंकर उन्हाळा पडत असतो ना?

वसंतराव : अहो, पोटासाठी दाही दिशा!

यशवंतराव : साताऱ्याला कुठेशी असते? स्त्रियांच्या वसतिगृहात की कुणा नातेवाईकाकडे?

वसंतराव : तिच्या मामांकडे राहात असते. तिचे मामा तिथल्या एका बँकेत आहेत. त्यांची दोन्ही मुलं, सुना आणि नातवंडंही त्यांच्याजवळच राहतात. घर खूप मोठं आहे. सुमन तिथंच राहात असते.

यशवंतराव : सुमनचं वय बावीस तेवीस आहे ना?

वसंतराव : छे! ती तर फक्त विशीची आहे.

यशवंतराव : मग तिचे हात पिवळे कधी करताय? लग्नाचा विचार आहे की नाही? माझ्याकडे एक छानसा मुलगा आहे. इथेच कोल्हापुरात असतो. बँकेत नोकरी आहे. स्वतःचं घर आहे. वडील सरकारी नोकरीत आहेत. दोन बहिणी आहेत. त्या आपापल्या संसारात सुखी

आहेत. मुलगा एकटाच! वय आहे

विवाह योग्य कन्या

यशवंतराव : क्यों वसंतराव आपकी सुमन कहाँ है? आजकल दिख नही रही?

वसंतराव : वह सातारा में रहती है। लगातार आती-जाती रहती है।

यशवंतराव : सातारा में तो भयंकर गर्मी पड़ती है न?

वसंतराव : अजी। रोजी-रोटी के लिए भटकना ही पड़ता है।

यशवंतराव : सातारा में कहाँ रहती है? महिलाओं के आवास-गृह में या किसी रिश्तेदार के यहाँ?

वसंतराव : अपने मामाके यहाँ रहती है। उसके मामा वहाँ के एक बैंक में हैं। उनके दोनों बेटे, बहुएँ, और पोते-पोतियाँ भी उनके साथ ही रहते हैं। मकान काफी बड़ा है। सुमन वहीं रहती है।

यशवंतराव : सुमन की उम्र बाईस-तेईस साल तो है न?

वसंतराव : अरे नहीं, वह तो सिर्फ बीस की है।

यशवंतराव : फिर उसके हाथ कब पीले कर रहे हैं? शादी का विचार है कि नहीं? मेरी जानकारी में एक अच्छा सा लड़का है। यहीं कोल्हापूर में रहता है। बैंक की नौकरी है। खुद का अपना मकान है। पिता सरकारी नौकरी में हैं। दो बहनें हैं। अपनी अपनी घर-गृहस्थी

पंचवीस सव्वीस. एम.कॉम. आहे.

वसंतराव : स्थळ तर चांगलंच आहे. तुमच्या माहितीचं आहे. तुम्ही आमचे घनिष्ठ मित्र आहात. माझी मुलगी म्हणजे तुमचीच मुलगी. पण घाईगर्दीत काही करणे ठीक नाही, असं माझं मत आहे.

यशवंतराव : ठीक आहे ते! घाई नकोच.

वसंतराव : तुम्ही इथंच आहात. सुमनही येत असते. मुलगाही इथंच आहे. आजकाल तरुणांना स्वतंत्र विचार असतात. त्यांची मतं ठाम असतात. प्रत्येकाच्या आवडी निवडी असतात. आपलं काम फक्त त्या दोघांना एकत्र आणणं. निर्णय त्यांना घेऊ दे.

यशवंतराव : ते स्वातंत्र्य त्यांना आहेच. ठीक आहे. तसंच करू या. येतो मी. मला थोडं जरुरीचं काम आहे.

में सुखी हैं। लड़का अकेला ही है। उम्र है पच्चीस-छब्बीस! एम्.कॉम. है।

वसंतराव : रिश्ता तो अच्छा ही है। आपकी जान पहचान का (भी) है। आप हमारे घनिष्ठ मित्र हैं। मेरी बेटी यानि आपकी बेटी। पर मेरे विचार में जल्दबाजी करना ठीक नहीं है।

यशवंतराव : वह ठीक है। जल्दबाजी नहीं चाहिए।

वसंतराव : आप यहीं हैं। सुमन भी आती रहती है। लड़का भी यहीं है। आजकल नौजवान स्वतंत्र विचारों के होते हैं। अपने विचारों पर अचल रहते हैं। हरेक की अपनी पसंद-नापसंद होती है। हमारा काम सिर्फ उन दोनों को मिलाना है। निर्णय उन्हें करने दो।

यशवंतराव : उतनी स्वतंत्रता उन्हें है ही। ठीक है। वैसा ही करें। अब मैं चलता हूँ। थोड़ा जरुरी काम है।

शब्दार्थ

दिसणे	दिखाई देना
भयंकर	भयंकर
उन्हाळा	गर्मी
पोटासाठी दाही दिशा	रोजी-रोटी के लिए कहीं भी जाना
कुठे	कहाँ
नातेवाईक	रिश्तेदार
नातवंडे	पोते-पोतियाँ
खूप मोठं	काफी बड़ा
वय	उम्र, आयु
हात पिवळे करणे	हाथ पीले करना
स्वतःचं	खुद का, अपना
बहिणी	बहनें
संसार	घर-गृहस्थी
एकटाच	अकेला

स्थळ	रिश्ता
माहितीचे	पहचान का
मुलगी	बेटी
घाईगर्दी	जल्दबाजी
मत	विचार
तरुण	युवा
स्वतंत्र विचार असणे	सोचने का अपना ही तरीका
ठाम	दृढ़
आवडनिवड	अपनी पसंद
एकत्र आणणे	मिलाना

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) सुमन साताऱ्याला कुठे राहते?
2) सुमनचे मामा कुठे काम करतात? त्यांच्याजवळ कोण कोण राहतं?
3) वसंतरावांचे घनिष्ठ मित्र कोण आहेत?
4) "लग्न करून देणे" या अर्थाच्या कोणत्या वाक्प्रचाराचा उपयोग पाठात केला आहे?
5) आजकालच्या तरुण पिढीबद्दल काय म्हटलं आहे?

II कोष्ठक में दिए गए क्रियारूपों में से उपयुक्त क्रियारूप चुनकर वाक्य पूरे कीजिए। (असतो, असते, असतात)

1. 1) शांता साताऱ्याला वसतिगृहात ....
   2) मी दुपारी घरीच ....
   3) बाबा संध्याकाळी बागेत ....
   4) प्रिया आणि सुचेता सकाळी अभ्यासाच्या खोलीत ....
   5) उमेश सकाळ संध्याकाळ दुकानात ....
2. 1) मुलांना स्वतंत्र विचार ....
   2) मुलांना आपापली आवड निवड ....
   3) शाळांना उन्हाळ्यात सुट्या ....
   4) मंगळागौर श्रावणात ....
   5) पावसाळ्यात घाट हिरवागार ....
3. 1) गुंटूर मिरची तिखट ....
   2) पटना मिरची कमी तिखट ....
   3) गुलाबाची फुले अनेक रंगांची ....
   4) दूध पांढरे ....

5) मिरची लाल ....
6) मोगऱ्याचे फूल पांढरे ....

III उदाहरण के अनुसार अर्थ न बदलते हुए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: मुलांनी सकाळी लवकर उठावं.
मुलांनी सकाळी उशिरा उठू नये.

1) विद्यार्थांनी अभ्यास करावा.
विद्यार्थ्यांनी अभ्यासाकडे .... (दुर्लक्ष)
2) कर्मचाऱ्यांनी काम करावं.
कर्मचाऱ्यांनी कामात .... (आळस)
3) मुलांनी शाळेत खेळ खेळावे.
मुलांनी शाळेत .... (भांडण)
4) वर्गात शांतता पाळावी.
वर्गात .... (दंगा)

IV "आहे" और "अस" का उपयुक्त प्रयोग कर उदाहरण के अनुसार वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: सुमन साताऱ्याला असते.
सुमन सध्या पुण्याला आहे.

1) सभा नेहमी सभागृहातच ....
आजची सभा सचिवांच्या खोलीत ....
2) त्या झाडाला नेहमी भरपूर फुले ....
आज एकच फूल ....
3) ह्या गुलाबाची फुलं मोठी ....
हे फूल छोटं ....
4) गुंटूर मिरच्या तिखट ....
ही मिरची तिखट ....
5) रामू रोज ह्यावेळी दुकानात ....
आज तो घरी ....

V उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर निषेधवाचक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: मिरचीचा रंग लाल असतो. (निळा)
मिरचीचा रंग निळा नसतो.

1) त्या झाडाची फुले गुलाबी असतात / .... (पिवळी)
2) मिरची तिखट असते / .... (गोड)
3) मोगऱ्याची फुले पांढरीशुभ्र असतात. .... (लालभडक)

4) वडाचं झाड डेरेदार असतं. .... (उघडंबोडकं)
5) कावळा काळा असतो. .... (हिरवा)

VI दिए गए वाक्यांशों का सही मिलान कर वाक्य बनाइए।

पारिजातकाचं फूल	पांढरा असतो.
झाडाची सावली	सोपा आहे.
हा खेळ खूप	मारामारी असते.
मोगऱ्याचा रंग	खूप धबधबे आहेत.
सिनेमात खूप	काळं नसतं.
त्या ठिकाणी	थंडगार असते.

VII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: सुधा साताऱ्याला .... (असते, आहेस, असतात, होते)
सुधा साताऱ्याला असते.

1) बाळू दुपारी शाळेत .... (नाहीस, होतास, असतो, नसते)
2) सुधा ह्यावेळी घरी .... (असतो, नसते, आहेस, असतात)
3) बाबा पेपर वाचत .... (नसते, असतो, असतात, नाहीस)
4) आज तू दुपारी घरी .... का? (असतात, नाहीस, होते)
5) तू रोज दुकानात .... ना? (असतात, असतेस, नाहीस, होतो)
6) तुम्ही या वेळी बागेत .... का? (असते, नाहीस, असता, असतो)
7) सकाळी पेपर येतो तेव्हा आम्ही पूजा करत .... (आहेस, असते, नाहीस, असतो)

VIII "जा" या "अस" क्रियाओं के उपयुक्त रूप लगाकर वाक्य पूरे कीजिए।

1) सुधा बाजारात ....
2) उमेश सहलीला ....
3) बाबा पेपर वाचत ....
4) त्या सकाळी बागेत ....
5) तू अभ्यास करत ....
6) तू दुपारी घरी ....
7) तुम्ही रात्री अभ्यास करत ....
8) तुम्ही सकाळी देवळात जात ....
9) आम्ही सकाळी देवळात जात ....
10) आपण ह्यावेळी कुठे ....

IX उदाहरण के अनुसार वाक्यों में रेखांकित किए गए शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर दो-दो वाक्य बनाइए।

उदाहरण: मी दुपारी शाळेत असतो. (घर) (ऑफिस)
मी दुपारी घरात असतो.
मी दुपारी ऑफिसात असतो.

1) आपण/आम्ही दुपारी दुकानात असतो. (शाळा) (घर)
2) तू दुपारी शाळेत असतोस. (घर) (ग्रंथालय)
3) तू दुपारी घरी असतेस. (शाळा) (देऊळ)
4) आपण/तुम्ही दुपारी शाळेत असता. (ऑफिस) (घर)
5) राम दुपारी शाळेत असतो. (घर) (ऑफिस)
6) सीता दुपारी घरी असते. (मंडई) (ऑफिस)
7) रामभाऊ दुपारी घरी असतात. (देऊळ) (दुकान)
8) सीताबाई दुपारी घरी असतात. (देऊळ) (शाळा)

X उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: मी सारखा पुस्तक वाचत असतो.
मी पुस्तक वाचतो.

1) मी सारखी काम करत असते.
2) आम्ही दर सुटीत गावाला जात असतो.
3) तू नेहमी खोटं बोलत असतोस.
4) तू नेहमी उशिरा येत असतेस.
5) सीता सारखी रडत असते.
6) रामभाऊ सारखे वाचत असतात.
7) सीताबाई नेहमी हसत असतात.
8) मुली नेहमी अभ्यास करत असतात.
9) मुलं नेहमी दंगा करत असतात.

XI कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर अनुच्छेद पूरे कीजिए।

1) पुण्यात एक टेकडी .... (आहे). तिला पर्वती .... (म्हण). पर्वतीवर सकाळी खूप गर्दी .... (असणे). काही लोक .... (चढ), काही लोक .... (उतर). मुलं व्यायाम .... (कर + अस), काही मुली फुलपाखरं .... (पकड + अस). काही बायका देवळात .... (जा + अस).
2) घरात लग्नाची मुलगी .... (आहे). पण कुणाचं लक्षच .... (नाही). मला खूप स्थळं माहीत .... (आहे). पण कुणाला उंच मुलगा हवा .... (आहे) तर कुणाला गोरी मुलगी हवी .... (आहे). मला बरेचजण ....

(विचार). पण काय करू? आमच्या अशोकला फक्त हुशार मुलगी हवी .... (आहे). नोकरी करणारी मुलगी हवी .... (आहे).

XII नीचे दिए गए संवादों के प्रश्न या उत्तर लिख कर वार्तालाप पूरा कीजिए।

वसंत - अलिकडे दिसत नाहीस कुठे?
आनंद - ....
वसंत - मग कुठे असतोस?
आनंद - ....
वसंत - मुंबईत तुझं घर कुठे आहे?
आनंद - ....
वसंत - मुलुंडला माझी मावशीही आहे.
आनंद - ....
वसंत - तिच्या घरी ती, तिचे यजमान आणि दोन मुली असतात.
आनंद - ....
वसंत - तुझ्या मुलीं एवढ्याच!
आनंद - ....
वसंत - बालभवनमध्ये शिकत आहेत.
आनंद - ....
वसंत - तर नक्कीच जा तिच्याकडे! तुझ्या मुलींना घेऊन!

पढ़िए और समझिए

पुणे तेथे काय उणे!

पुण्यात नेहमीच गजबज असते. लग्नसराईत तर पुण्यात गर्दीच गर्दी असते. एका पुण्यात मे महिन्यात जितकी लग्ने होतात, तितकी साऱ्या वर्षभरात सगळ्या महाराष्ट्रात होत नाहीत. पुण्यात शेकडो मंगल कार्यालये आहेत. एकेका कार्यालयात रोज दोन दोन, तीन तीन लग्ने होतात. लग्नासाठी जरूर त्या सर्व गोष्टी पुण्यात उपलब्ध असतात. तेथे शेकडो बँड आहेत. हवे तेवढे भटजी आहेत. वधूवर सूचक मंडळे आहेत. वरातीसाठी फुलांनी सुशोभित मोटारी आहेत. दागदागिन्यांनी मढलेले घोडे आहेत. वरातीत गाणारी मंडळीसुद्धा आहेत. मे महिन्यात रात्रीच्या वेळी पुण्याच्या रस्त्यांवर वरातींचा चकचकाट असतो. येथील माणसांना नटण्याची हौस आहे. स्त्रिया विविध प्रकारची उंची वस्त्रे नेसतात. डोक्यात गजरे माळतात. दागिन्यांनी मढतात. पुण्यातील वरात पाहण्यासारखी असते. महाराष्ट्रातील प्रत्येक माणसाला पुण्याचे आकर्षण असते. तो म्हणतो "पुणे तेथे काय उणे!"

शब्दार्थ

नेहमी	सदैव, हमेशा
गजबज	भीड़, शोरगुल
लग्नसराई	शादी का मौसम
गर्दी	भीड़
मंगल कार्यालय	विवाह-भवन
सर्व गोष्टी	सब चीजें
शेकडो	सैकडों
हवे तेवढे	जितने चाहिए
वधूवर सूचक मंडळ	वधूवर जानकारी केंद्र
वरात	बारात
सुशोभित	सुशोभित, सजा हुआ
दागदागिने	गहने, आभूषण
दागदागिन्यांनी मढणे	आभूषणों से लदे
गाणारी मंडळी	गायन-मंडली
रात्रीच्या वेळी	रात को
रस्त्यावर	रास्ते में
चकचकाट	चकाचौंध
नटण्याची हौस	सजने-धजने का शौक
उंची वस्त्रे	कीमती वस्त्र, महँगे कपड़े
नेसणे	पहनना
गजरा	गजरा
पाहण्यासारखी	देखने लायक
आकर्षण	आकर्षण
उणे	कमी

अभ्यास

I अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) लग्नासाठी आवश्यक कोणकोणात्या गोष्टी पुण्यात उपलब्ध आहेत?
2) वरातीसाठी मोटार कशाने सजवतात?
3) वरातीत स्त्रिया कशा नटलेल्या असतात?
4) महाराष्ट्रातील प्रत्येक माणसाला पुण्याची ओढ असते या अर्थी कोणता शब्द वापरला आहे?
5) "पुण्यात काहीच कमी नाही" या अर्थी कोणता वाक्प्रचार वापरला आहे?

II पाठ और वाचन के आधार पर वाक्य पूरे कीजिए।

1) तिचे मामा .... एका .... आहेत.
2) त्यांची .... मुलं, ... आणि .... त्यांच्याजवळच रहातात.
3) दोन .... आहेत, त्या आपापल्या संसारात .... आहेत.
4) वरातीसाठी .... सुशोभित .... आहेत.
5) रात्रीच्या वेळी .... रस्त्यांवर वरातींचा .... असतो.

III तिचे वय तीस आहे के लिए 'ती तिशीची आहे' का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसी तरह नीचे दिए गए अंको का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

उदाहरण: तीस-तिशी

चाळीस, पन्नास, वीस, साठ

IV नीचे दिए गए मुहावरों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

पोटासाठी दाही दिशा - रोजी-रोटी के लिए भटकना

हात पिवळे करणे- हाथ पीले करना

V उदाहरण के अनुसार नेस, माळ, घाल आणि चढव इन क्रियाओं का प्रयोग कर एक-एक वाक्य और बनाइए।

उदाहरण:	साडी नेस.	- ती साडी नेसते.
उदाहरण:	गजरा माळ.	- ती डोक्यात गजरा माळते.
उदाहरण:	सदरा घाल.	- तो अंगात सदरा घालतो/चढवतो.
उदाहरण:	जोडा चढव.	- तो पायात जोडा चढवतो/घालतो.

VI कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

(एकदा, प्रत्येक, एकाकी, एकटा, एकुलता एक, एक, एकेका)

1) काम करणं हे .... माणसाचं कर्तव्य आहे.
2) माझ्याकडे .... मुलाला पाठव.
3) ते .... घर कुणाचं आहे?
4) मी इथे .... बसतो.
5) या .... आमच्या गावाला.
6) हा माझा .... भाऊ आहे.
7) मला .... बाहुली दे.

VII हिंदी में अनुवाद कीजिए

लग्न म्हणजे आनंदाचा उत्सव असतो. लग्नातील धार्मिक विधी खूप अर्थपूर्ण असतात. परंपरा पाळणारे लोक या विधींत जास्त रस घेतात. लग्नात फक्त पारंपरिकता किंवा आधुनिकता असू नये. या दोघांचा संगम असावा. लग्नासाठी जास्त

खर्चाची गरज नसते. जास्त खर्च म्हणजे चांगलं लग्न अशी आज समजूत आहे. पण हे बरोबर नाही. लग्नात पैशाला महत्त्व न देता प्रेमाला महत्त्व द्यायला पाहिजे. कारण लग्न म्हणजे दोन व्यक्तींचं आणि दोन कुंटुंबांचं मीलन असतं. त्याहीपेक्षा ते मनांचं मीलन अधिक असतं.

VIII मराठी में अनुवाद कीजिए

अधिकतर आम मीठे होते हैं। किंतु यह कुछ खट्टा है। खाने से पहले आम को धो लेना चाहिए। देशी आमों की अनेक जातियाँ होती हैं। उन्हें चूस कर खाना चाहिए। काटकर नहीं खाना चाहिए। कुछ लोग कलमी आम को भी चूसकर खाते हैं। आम फलो में सबसे बढ़िया होता है। भारत के आमों की विदेश में भी बडी माँग है। आम गरमियों में पकते हैं। पकने से पहले ही पेटियो में बंद कर विदेश भेजा जाता है। कच्चे आम खट्टे होते हैं। खट्टे आमों से अचार बनाया जाता है। गर्मी का मौसम, आम और शादी का मौसम होता है। महाराष्ट्र में शादियों में आम रस और आम का अचार परोसा जाता है।

IX नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग कर मराठी में वाक्य बनाइए।
वसतिगृह, स्वतंत्रविचार, स्वातंत्र्य, तरुण, नातेवाईक, लग्नसराई, आवडनिवड

X 'मेरे दोस्त की शादी' विषयपर एक छोटा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्नप्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया गया हैं।
उदाहरण:

1)	ती साताऱ्याला <u>असते</u>.	वह सातारा में (रहती) है।
2)	तिच्या मामांकडे <u>असते</u>.	अपने मामा के यहाँ (रहती) है।
3)	साताऱ्याला भयंकर उन्हाळा <u>असतो</u> ना?	सातारा में तो तो भयंकर गर्मी (पडती) है न?
4)	साताऱ्याला कुठेशी <u>असते</u>?	सातारा में कहाँ (रहती) है?

उपर्युक्त वाक्यों में 'अस' (है) क्रिया का प्रयोग किया गया है। 'आहे' (है) योजक क्रिया का प्रयोग आप सीख चुके हैं। ध्यान दें कि, हिंदी में अनुवाद करते समय 'आहे' तथा 'असते' क्रियाओं के लिए सिर्फ 'है' का प्रयोग ही होता है। लेकिन मराठी में 'आहे' और 'अस' क्रियारूप के प्रयोग में अंतर है। 'आहे' का प्रयोग 'इस समय' के अर्थ में होता है जब कि 'असतो' का प्रयोग 'सदा वैसा ही रहना' के अर्थ में होता है।

जिस प्रकार 'आहे' क्रिया के आहे, आहोत, आहेस, आहात, आहेत जैसे विभिन्न रूप होते हैं उसी प्रकार 'अस' क्रिया के भी भिन्न रूप होते हैं।

		एकवचन	*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी असतो.	आम्ही असतो.
		मैं हूँ।	हम हैं।
	(स्त्री.)	मी असते.	आपण असतो.
		मैं हूँ।	हम हैं।
म.पु.	*(पु.)*	तू असतोस	तुम्ही असता.
		तू हैं।	आप हैं।
	(स्त्री.)	तू असतेस.	आपण असता.
		तू हैं।	आप हैं।
अ.पु.	*(पु.)*	तो असतो.	ते असतात.
		वह है।	वे है।
	(स्त्री.)	ती असते.	त्या असतात.
		वह है।	वे है।
	(नपुं.)	ते असते.	ती असतात.

II नीचे दिए गए वाक्यों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1)	साताऱ्याला भयंकर उन्हाळा पडत असतो ना?	सातारा में तो भयंकर गर्मी पडती है ना?
2)	तिच्या मामांकडे राहात असते.	अपने मामा के यहाँ रहती है।
3)	सुमन तिथंच राहात असते.	सुमन वहीं रहती है।
4)	सुमनही येत असते.	सुमन भी आती रहती है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियारूप क्रिया करने की आदत को दिखाता है। माने, ऐसा क्रियारूप आदत का द्योतक हैं। यह इस बात का सूचक है कि हम किसी कार्य को आदतन या स्वभाववश करते हैं। ऐसी क्रियाओं को अभ्यासिक क्रियाएँ कहते हैं। आप पढ चुके हैं कि 'आहे' योजक क्रिया के प्रयोग कर अपूर्ण वर्तमान कालिक क्रियाएँ बनती हैं जो आदतन वाली 'अस' क्रिया रूपों से भिन्न है।

उदाहरण:	मी जाते आहे.	मैं जा रहा हूँ।
	मी जात असतो.	मैं जाता रहता हूँ।

अब 'अस' क्रिया के विविध रूपों पर ध्यान दीजिए।

		एकवचन	*बहुवचन*	
उ.पु.	*(पु.)*	मी जात असतो.	आम्ही }	जात असतो.

		मैं जाया करता हूँ।		
	(स्त्री.)	मी जात असते.	आपण	हम जाया करते हैं।
		मैं जाया करती हूँ।		
म.पु.	*(पु.)*	तू जात असतोस.	तुम्ही	जात असता.
		तुम जाया करते हो।		
	(स्त्री.)	तू जात असतेस.	आपण	आप जाया करते हैं/करती हैं।
		तुम जाया करती हो।		
अ.पु.	*(पु.)*	तो जात असतो.	ते	जात असतात.
		वह जाया करता है।		
	(स्त्री.)	ती जात असते.	त्या	वे जाया करते/करती हैं।
		वह जाया करती है।		
	(नपुं.)	ते जात असतात.	ती	जात असतात.

III 'अस' क्रिया के निषेधवाचक रूप बनाने के लिए 'अस' के स्थान पर 'नस' का प्रयोग किया जाता है।

	एकवचन		बहुवचन
उ.पु. (पु.)	मी जात नसतो.	आम्ही	जात नसतो.
	मैं नहीं जाया करता हूँ।		
(स्त्री.)	मी जात नसते.	आपण	हम नहीं जाया करते।
	मैं नहीं/जाया करती हूँ।		
म.पु. (पु.)	तू जात नसतोस.	तुम्ही	जात नसता.
	तू नहीं जाया करता।		
(स्त्री.)	तू जात नसतेस.	आपण	आप नहीं जाया करते/करती।
	तू नहीं जाया करतीं।		
अ.पु. (पु.)	तो जात नसतो.	ते	जात नसतात.
	वह नहीं जाया करता।		
(स्त्री.)	ती जात नसते.	त्या	वे नहीं जाया करते/करती हैं।
	वह नहीं जाया करती।		
(नपुं.)	ते जात नसतात.	ती	जात नसतात.

धडा पाठ 10

रमाच्या घरात

वैशाली : नमस्ते मावशी, इथे एकट्याच बसून कसला विचार करता आहात?

मावशी : अरे, कोण? वैशाली का? काही नाही गं! ये ना आत ये.

वैशाली : मावशी, रमा कुठं आहे?

मावशी : आत बसून वाचतेय बघ! जा ना आत जा.

वैशाली : मावशी, मी आता आत येत नाही. या वह्या जरा रमाला द्या नं.

मावशी : अगं, तूच आत जाऊन दे नं। ती ही वाचून वाचून कंटाळते.

वैशाली : नको, मावशी. तिच्या अभ्यासात व्यत्यय नको.

रमा : ए वैशू, मी वाचून वाचून थकून जाते. तू ये नं. जरा वेळ गप्पा मारू या.

मावशी : वैशू, एक मिनीट थांब. हा चहा घेऊन जा. अरे हो! पण तुला कॉफी आवडते. चहा आवडत नाही. थांब हं, मी तुझ्यासाठी कॉफी करते.

वैशाली : नको मावशी, ही आत्ताच घेऊन येतेय मी. मुद्दाम नका करू कॉफी. मला चहानं मळमळतं म्हणून मला चहा आवडत नाही. आणि खरं सांगू का? लोकांना त्रास देताना कसं तरी वाटतं. रमाचा चहा द्या. तो घेऊन जाते.

मावशी : अगं त्यात त्रास कसला? तुला दूध चालतं ना? आवडतं ना? मग तू दूधच घे.

रमा के घर में

वैशाली : नमस्ते मौसी, यहाँ अकेले बैठे-बैठे क्या सोच रही हो?

मौसी : अरे कौन! वैशाली? कुछ नहीं। आओ, अंदर आओ।

वैशाली : मौसी, रमा कहाँ है?

मौसी : अंदर बैठकर पढ़ रही है। जाओ अंदर जाओ न।

वैशाली : मौसी अब मै अंदर नहीं आती। ये कॉपियाँ रमा को दे दीजिए।

मौसी : अरे, तुम ही अंदर जाकर दे दो न। वह भी पढ़ते-पढ़ते ऊब जाती है।

वैशाली : नहीं मौसी, उसकी पढ़ाई में बाधा नहीं (डालना) चाहिए।

रमा : अरे वैशू, मैं पढ़ते पढ़ते थक जाती हूँ। तुम आओ न। थोडी देर बातें करें।

मौसी : वैशू, एक मिनट रुको। ये चाय लेकर जाओ। अरे हाँ, पर तुम्हें कॉफी पसंद है। चाय पसंद नहीं है। ठहरो, मैं तुम्हारे लिए कॉफी बनाती हूँ।

वैशाली : नहीं मौसी मैं अभी-अभी पीकर आई हूँ। अकेले मेरे लिए कॉफी मत बनाइए। चाय से मेरा जी मिचलाता है। इसलिए मुझे चाय पसंद नहीं है और सच बताऊँ क्या? दूसरों को कष्ट देना मुझे अच्छा नहीं लगता। रमा के लिए चाय दीजिए। मैं ले जाती हूँ।

मौसी : अरे इसमें कष्ट कैसा? तुम दूध तो पीती हो न? दूध पसंद है न? तुम दूध ही लो।

वैशाली : हो दूध चालतं. फक्त चहानं मळमळतं इतकंच!	वैशाली : हाँ दूध ठीक है। सिर्फ चाय से जी मिचलाता है।
रमा : ए आई, चहाबरोबर चिवडाही पाठव. वाचता वाचता खाऊ.	रमा : ओ माँ, चाय के साथ थोड़ा चिवड़ा भी भेज दो। पढ़ते-पढ़ते खाएँगे।
माधव : वाचता वाचता की गप्पा मारता मारता?	माधव : पढ़ते-पढ़ते या बातें करते करते?
रमा : या, घरात पाय टाकताच रेडिओ सुरु!	रमा : आओ, घर में पैर रखते ही रेडिओ शुरु!
माधव : आणि रेडिओ सुरु होताच तुझं भांडण सुरु!	माधव : और रेडिओ के शुरु होते ही तुम्हारा झगड़ा शुरु!
मावशी : आता पुरे हं। भांडणं ऐकून ऐकून कान किटतात अगदी! तू घरात शिरताच भूकंप होतो नुसता। चल, आधी रेडिओ बंद कर पाहू. तिला अभ्यास करू दे.	मौसी : बस भी करो। झगड़ा सुनते-सुनते मेरे कान पक गए हैं। तुम्हारे घर में घुसते ही भूचाल आ जाता है। चलो पहले रेडिओ बंद करो। उसे पढ़ने दो।
रमा : याची तर सगळी कामंच रेडिओ ऐकता ऐकता होतात.	रमा : इसके तो सारे काम ही रेडिओ सुनते-सुनते होते हैं।
माधव : तूही रेडिओ ऐकता ऐकता अभ्यास कर. पहा किती छान अभ्यास होतो तो।	माधव : तुम भी रेडिओ के चलते पढ़ा करो। देखो कितनी अच्छी पढ़ाई होती है।
रमा : माफ करा भाऊराया।	रमा : माफ करो भाई साहब।
माधव : जशी तुझी मर्जी। आई, मी जातो बाहेरच। करा पोटभर अभ्यास.	माधव : तुम्हारी जैसी मर्जी। माँ मैं तो बाहर चला। कर लो जी भर कर पढ़ाई।
मावशी : जाता जाता एवढं पत्र पोस्टात टाकतोस का?	मौसी : जाते-जाते यह पत्र पोस्ट में डालते जाओगे क्या?
माधव : जरूर। दे इकडे.	माधव : जरूर। दे दो।

शब्दार्थ

एकटी	अकेली
विचार करणे	सोचना
आत ये	अंदर आओ
कुठे आहे	कहाँ है?
आत बसून	अंदर बैठकर
आत येत नाही	अंदर आती नहीं
आत जाऊन	अंदर जाकर
व्यत्यय आणणे	बाधा निर्माण करना

थकणे	थक जाना
जरा वेळ	थोड़ी देर
गप्पा मारणे	गप्प मारना, बातें करना
थांब	रुको
आवडणे	पसंद आना
मळमळणे	जी मिचलाना
त्रास	तकलीफ
वाटणे	लगना
चिवडा	चिवड़ा
घरात पाय टाकताच	घर में आते ही
पाय	पैर
भांडण	झगड़ा
सगळी कामं	सब काम
पोटभर	भरपेट
पत्र	पत्र, चिट्ठी

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) वैशालीला चहा घेतल्याने काय होते?
2) चहाबरोबर खायला काय आहे?
3) माधव कोणाचा भाऊ आहे?
4) माधव घरात येताच काय करतो?
5) आई माधवला काय काम सांगते?

II उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: रमा वाचता वाचता चिवडा खाते.
रमा वाचताना चिवडा खाते.

1) तू गप्पा मारता मारता हसतोस.
2) तू शाळेत जाता जाता हे पत्र पोस्टात टाकतेस का?
3) तुम्ही खाता खाता पेपर वाचताय.
4) मी गाणे गाता गाता वाचतोय.
5) मी टी.व्ही. वर सिनेमा बघता बघता जेवतो.
6) आम्ही फुले गोळा करता करता गाणी म्हणतो.
7) उमेश बोलता बोलता हसतो.
8) प्रिया शाळेत जाता जाता उमाशी भांडते.
9) रामराव खेळता खेळता दमतात.

10) आपण बागेत काम करता करता रेडिओ ऐकतो.
11) मुले रेडिओ ऐकता ऐकता काम करतात.

III उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: सुधा गप्पा मारताना झोपते.
सुधा गप्पा मारता मारता झोपते.

1) मी चहा घेताना शांताची बाहुली बघते.
2) मी बसताना प्रियाशी बोलतो.
3) तू सामान आणताना मैत्रिणीशी बोलतेस.
4) तू खाताना बोलतोस.
5) आम्ही पाने गोळा करताना झाडाखाली बसतो.
6) तुम्ही नाटक बघताना झोपता.
7) रमेश चालताना पेरु खातो.
8) उमा खेळताना थकते.
9) त्या दोघी पसारा आवरताना भांडतात.
10) ते दोघं नाचताना हसतात.
11) आपण घरी येताना देवळात जाऊ या.

IV उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूप बनाकर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: रेडिओ ....कान किटतात. (ऐक)
रेडिओ ऐकून ऐकून कान किटतात.

1) दिवसभर .... माझे पाय दुखतात. (नाच)
2) सारखं काम .... मी थकते. (कर)
3) त्याची वाट .... मी कंटाळते. (बघ)
4) कॉफी .... मला मळमळतं. (पी)
5) तुला पैसे .... माझे पैसे संपले. (दे)

V उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए।

उदाहरण: सुधा चहा पिताना गप्पा मारते.
सुधा चहा पिऊन गप्पा मारते.

1) मी अभ्यास करताना गाणी ऐकते.
2) तू काम करताना पेरु खातोस.
3) आम्ही बाहेर जाताना चिंचा खातो.
4) तो पत्र लिहिताना खाली बसतो.
5) ती वर्गात येताना हसते.
6) त्या दोघी बाहिणी जेवण करताना गप्पा मारतात.

VI उदाहरण के अनुसार वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: तिचे काम पूर्ण .... (हो). ती .... (झोप).

तिचे काम पूर्ण होताच ती झोपते.

1) तुला काही गोष्ट (सांग) .... तू .... (हस).
2) तू घरी पाऊल (टाक) .... उमेश तुझ्याकडे .... (धाव).
3) तुमचा अभ्यास (हो) .... तुम्ही इकडे येऊन सिनेमा .... (बघ).
4) मी अंथरूणावर (पड) .... मला झोप .... (लाग).
5) आम्ही बागेत पाऊल (टाक) .... एक कुत्र्याचं पिलू .... (पाहणे).
6) प्रियाचे लिहून (हो) .... ती गाणे .... (ऐक).
7) प्रकाश घरी (ये) .... अभ्यासाला सुरवात .... (करणे)
8) त्या दोघी घरात (शिर) .... भांडणाला सुरवात .... (होणे)
9) आपण थिएटरमधे पाऊल (टाक) .... सिनेमा सुरु .... (होणे)

VII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूप बनाकर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: सुधाला चहानं (मळमळ). सुधाला चहानं मळमळतं.

1) तुला हिंदी .... (समज-)
2) मला दुपारी घरी .... (करम-)
3) मला इथे .... नाही. (करम-)
4) मला फार .... (उकड-)

VIII उदाहरण के अनुसार निषेध वाचक निषेधात्मक वाक्यों को सकारात्मक बनाइए।

उादरण: मला चहा आवडत नाही.

मला चहा आवडतो.

1) तुला दूध आवडत नाही.
2) तुला ही साडी चालत नाही.
3) मला ते बरोबर वाटत नाही.
4) तुम्हाला वाचताना खाणं लागत नाही.
5) उमेशला बटाटेवडा आवडत नाही.

IX उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए क्रिया शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: उमेश शाळेतून .... वाचतो. (ये)

उमेश शाळेतून येऊन वाचतो.

1) तू आंबा .... काम करतोस. (खा)
2) तू पुस्तक .... पेरू खातेस. (वाच)
3) तुम्ही एकटेच .... विचार करता. (बस)

4) आम्ही आत .... चहा पितो. (ये)
5) मी अभ्यास .... थकते. (कर)
6) मी वाचता वाचता .... जाते. (झोप)
7) आम्ही बागेत .... फुले आणतो. (जा)
8) रामू दुकानात .... लक्ष देतो. (ये)
9) त्या दोघी बहिणी चहा .... घरी येतात. (पी)
10) बाबा स्वयंपाकघरातून चहा .... वैशालीला देतात. (आण)
11) आपण घरात .... गप्पा मारूया. (बस)

X कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वार्तालाप पूरा कीजिए।

प्रिया, तू माझ्याबरोबर .... ? (येणे)
चल बागेत .... गप्पा मारूया. (जाणे)
कॉफी ....? (करणे)
पण थांब. आपण
बागेत गप्पा .... (मारणे) गाणीही ऐकू.
चल ही कॅसेट बागेत .... (घेणे) जाऊ या.
हा घे चिवडा. गाणी .... (ऐकणे) खाऊया.

XI नीचे दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूप बनाकर संवाद पूरा कीजिए।
(ये, पी, फिर, जा, आण, खेळ, डोल, पहा)

उषा: रमा, बाहेर .... का?
रमा: थांब. मी चहा ....
उषा: .... एक पिशवीही ....
रमा: कशासाठी?
उषा: बागेत .... येऊ या. .... मंडईतून भाजीही ....
रमा: मला रोज मंडईत .... कंटाळा येतो.
उषा: बरं बाई, फक्त बागेत ....
रमा: हं. बागेत .... मुलं आणि .... फुलं पाहू या.

XII 'ऐक' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) मी हे गाणं .... येते.
2) मी हे गाणं .... काम करते.
3) मी हे गाणं .... काम करते.
4) हे गाणं .... मी कंटाळते.
5) हे गाणं .... मी खूश होते.

XIII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों को जोड़िए।

उदाहरण: मी बसते. मी अभ्यास करते.
मी बसून अभ्यास करते.

1) मी उठते. मी चहा करते.
2) मी गाणं गाते. मी येते.
3) मी वह्या देतो. मी जातो.
4) तो पत्र टाकतो. तो परत येतो.
5) आजी गोष्ट सांगते. आजी देवाची पूजा करते.

पढिए और समझिए

सावळा गोंधळ

आमच्या घरांत चारच माणसं आहेत. हे म्हणजेच माझे पती. मी म्हणजे गृहिणी, गृहदेवता! आणि आमची दोन मुलं - दोन रत्नं। आम्ही दोन आणि आमची दोन असा सुखी संसार! पण घरात एकच गोंधळ असतो.

ती तिघंच आहेत पण तिघांच्या तीन तऱ्हा. ह्यांना सकाळी गरम चहा लागतो. त्यांना चहाच आवडतो. कॉफी आवडत नाही. रमाला-आमच्या लेकीला कॉफीच लागते. तिला चहा आवडत नाही. माधवला - आमच्या लेकाला थंडगार दूधच हवं. त्याला चहा किंवा कॉफी काहीच आवडत नाही. त्याला फक्त दूध आवडतं. मला मात्र काहीही चालतं.

कामाच्या बाबतीत तोच गोंधळ! हे उठून चहा घेतात. चहा घेताना पेपर वाचतात. तो ही मनातल्या मनात नाही. चांगला जोरजोरात वाचतात. त्याच वेळी माधव रेडिओ लावतो.

रेडिओ ठणाणत असतो. आंघोळ करताना, दाढी करताना, कपडे घालताना, अगदी दूध पितानासुद्धा माधव जोरजोरात गात असतो. त्याला वाटतं आपण मुकेशच आहोत. रमाची निराळीच तऱ्हा. तिचं कॉलेज सकाळचं असतं. ती घाईगर्दीत असते. घाईघाईनं आवरताना हे सांड; ते लवंड असं चालू असतं. तीआपलं आवरताना खरं तर पसाराच जास्त करते. तो मी नंतर आवरते.

घाईघाईनं आवरुन सगळे नऊ वाजता घर सोडतात. मी सुखाचा निश्वास सोडून पुनः कामाला लागते. काम असतंच, पण शांतता तरी असते!

शब्दार्थ

रत्न	रत्न
तीन तऱ्हा	तीन प्रकार
आवड	पसंद
लेक	बेटा, बेटी
काहीही	कुछ भी
कामाच्या बाबत	काम के बारे में
मनातल्या मनात	मन ही मन में

निराळी तऱ्हा	अलग तरीका
आवरणे	समेटना
पसारा करणे	पसारा करना
घर सोडणे	घर से निकलना
सुखाचा निश्वास	चैन की साँस
तऱ्हा	प्रकार, रीति

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) आमचा संसार कसा आहे?
2) रमाला काय आवडते, काय आवडत नाही?
3) रमाचे पती चहा घेता घेता काय करतात?
4) रेडिओ मोठ्या आवाजात ओरडत असतो या अर्थी कोणता शब्द वापरला आहे?
5) माधव केव्हा केव्हा जोरजोरात गात असतो?
6) रमा आवरताना काय करते?

II तू घरात शिरताच भूकंप होतो नुसता।
भूकंप के सामान्य अर्थ का प्रयोग होगा - जपानमध्ये नेहमी भूकंप होतात.
इसी तरह 'भूकंप' शब्द का दोनों अर्थो में प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

III एक ही शब्द के दोहराने से जो शब्द-युग्म बनते हैं उन से अर्थ की गहनता या तीव्रता प्रकट होती है।
उदाहरण: गरमागरम, घाईघाईने, जोरजोरात, हळूहळू, इत्यादि
इसी तरह के कुछ और शब्द लिखिए।

IV नीचे दिए गए शब्द-युग्म पढ़िए। इन में एक ही अर्थ के दो शब्द साथ-साथ आए हैं। इनके साथ में आने से अर्थ की गहनता या तीव्रता प्रकट होती है।
उदाहरण: थंडगार
नीचे कुछ शब्द दिए हैं, उनके साथ कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर जोड़ियाँ बनाइए।

घाई	साधा
भर	काळा
दंगा	लाल
सांड	

(मस्ती, गर्दी, लवंड, भडक, भोळा, गच्च, सावळा)

V कुछ विशेषण शब्द 'ता' प्रत्यय जोड़ने से संज्ञा शब्द बन जाते हैं। नीचे दिए गए शब्दों में 'ता' जोडकर उन्हें संज्ञा बनाइए और वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उदाहरण: शांत - शांतता

उदार -

वीर -

भावुक -

धार्मिक -

VI हिंदी में अनुवाद कीजिए

महाराष्ट्राचे वर्णन करतांना सुप्रसिद्ध कवी गोविंदाग्रज त्याला "कणखर देशा" "दगडांच्या देशा" असे म्हणतात. महाराष्ट्रात सह्याद्रीचे विशाल कडे आहेत. तसेच सातपुडा पर्वत पण आहे. महाराष्ट्रातील लोकांचेया शौर्य आणि साहसी वृत्ती याचे हे पर्वत प्रतीक आहेत. मात्र, याबरोबरच मराठी मन कोमलही आहे. सुप्रसिद्ध संतकवी ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नामदेव हे महाराष्ट्राचेच. वारकरी पंथाचा प्रचार करून आज ते अमर आहेत. दीनदुबळ्यांच्या पायाखाली आपले ह्रदय अंथरावे असं सांगून ते आजही सामाजिक एकतेचा संदेश देतात.

VII मराठी में अनुवाद कीजिए

बंडू, मुझे तुम्हारा शाम के वक्त पढ़ना अच्छा नहीं लगता। तुम जरा बाहर हो आओ। रात को खाकर तुम पढ़ सकते हो। तुम खाते ही सो जाते हो। तुम रात को क्यों नही पढ़ते? बच्चों को सायंकाल जरूर खेलना चाहिए। प्रातःकाल पढ़ना चाहिए। पढ़ते-पढ़ते तुम थक जाते हो। स्कूल से लौटते ही पढ़ने बैठ जाना ठीक नहीं। यह समय टहलने या खेलने का होता है। सायंकाल खेलने की जगह बच्चों को पढ़ते देख मुझे गुस्सा आता है। मुझे यह अच्छा नहीं लगता।

VIII 'मेरी दिनचर्या' इसपर एक छोटा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I नीचे दिए हुए वाक्यों में क्रिया के रेखांकित प्रयोगों पर ध्यान दीजिए।

1) तो <u>बसून</u> म्हणाला. वह <u>बैठकर</u> बोला।

2) तो <u>खाऊन पिऊन</u> झोपला. वह <u>खाकर-पीकर</u> सो गया।

जब कर्ता के लिए दो या अधिक क्रियाओं का प्रयोग होता है, यानि की एक क्रिया खतम कर दूसरी क्रिया का आरंभ सूचित होता है तब पहली क्रिया में '-ऊन' (कर या करके) प्रत्यय लगता है।

II नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया रूप के रेखांकित प्रयोगों पर ध्यान दीजिए।

1)	ती वाचून वाचून थकून जाते.	वह पढते पढते थक जाती है।
2)	मी खाऊन खाऊन लट्ठ होते.	मैं खाते खाते मोटी हो जाती हूँ।

जब कर्ता द्वारा की गई कोई क्रिया अनेक बार या लंबे समयतक की जाती है तब उसे दिखाने के लिए क्रिया के मूल रूप में '-ऊन' लगाकर उस का प्रयोग दो बार किया जाता है।

III नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित क्रिया रूपों प्रयोगों को देखिए।

1)	वाचता वाचता खाऊ.	पढ़ते पढ़ते खाएंगे।
2)	याची सगळी कामंच रेडिओ ऐकता ऐकता होतात.	उस के सब काम रेडिओ सुनते-सुनते होते हैं।
3)	तू ही रेडिओ ऐकता ऐकता अभ्यास कर.	तुम भी रेडिओ सुनते सुनते पढाई करो।
4)	जाता-जाता एवढं पत्र पोस्टात टाक.	जाते जाते इतना खत पोस्ट ऑफिस में डालो।

'पढ़ते पढ़ते', 'बैठते बैठते', 'सुनते सुनते', 'जाते जाते' जैसे 'एककालिक क्रियाओं का होना सूचित करने के लिए मराठी में वाक्य के पहली क्रिया के मूलरूप में '-ता' लगाकर उस की द्विरुक्ति करते हैं।

IV नीचे दिए गए वाक्यों पर ध्यान दीजिए।

तुला कॉफी आवडते.
तुला चहा आवडत नाही.
तुला दूध आवडतं का?

मराठी में कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जिन में वास्तविक कर्ता कर्म के रूप में प्रयुक्त होता है और कर्म ही कर्ता के समान प्रतीत होता है। इस प्रकार के कुछ क्रियारूपों के प्रयोग नीचे दिए गए हैं।

'आवडणे'	'भाना','पसंद आना'	मला चहा आवडतो.	मुझे चाय पसंद है।
'येणे'	'आना'	मला नाच येतो.	मुझे नाच आता है।
'कळणे'	'मालूम होना'/'समझना'	मला गाणं कळतं.	मुझे गाना मालूम है।
'समजणे'	'समझना'	मला धडा समजतो.	मुझे पाठ समझता है।
'आठवणे'	'याद आना'	मला ते दिवस आठवतात.	मुझे वो दिन याद आते हैं।
'वाटणे'	'लगना'	मला भीती वाटली.	मुझे डर लगा।
'भेटणे'	'मिलना'	मला ती भेटली.	वो मुझ से मिली।

IV मराठी में कुछ ऐसी क्रियाएँ भी हैं जिन में कर्म का प्रयोग नहीं होता है, क्योंकि उन में कर्म क्रिया के अर्थ में हि अंतर्भूत रहता है, जैसे की -

चहानं मला मळमळतं.	चाय से मेरा(जी) मिचलाता है।
तिथे मला करमतं.	वहाँ मेरा(जी) लगता है।
मला जाणवतं.	मुझे (ऐसा) लगता है।

धडा पाठ 11

माझी साहित्यिक आत्या

माधवी : अय्या किती पुस्तकं? काय वाचू आणि काय नको, काहीच सुचत नाहीय.

उर्मिला : ही माझ्या आत्याची खोली आहे. ती महाविद्यालयात साहित्य शिकवते.

माधवी : त्या प्रसिद्ध लेखिकाही आहेत ना?

उर्मिला : होय तर आणि कवयित्रीही! तिला खूप पुरस्कार मिळतात. हे सगळे तिचेच पुरस्कार! तिला भेटायसाठी खूप लोक येतात. तिच्या मुलाखती घेण्यासाठी वार्ताहर येतात. तिची स्वाक्षरी घेण्याकरता तिचे चाहते येतात. तिचा सल्ला घ्यायला तरुण मुलं-मुली येतात.

माधवी : मलाही त्यांना भेटायचं आहे.

उर्मिला : जरूर भेटवते तुला! तरुण मुलामुलींशी गप्पा मारणं, त्यांच्या कविता ऐकणं, आपल्या त्यांना ऐकवणं, त्यांच्याबरोबर येणाऱ्या उद्याची स्वप्नं पाहणं, आत्यालाही आवडतं.

माधवी : त्या रेडिओ, टी.व्ही. वर काव्यवाचनही करतात ना? तू त्यांच्या कविता नेहमी ऐकतेस ना?

उर्मिला : नेहमीच नाही. पण तिला कधी कधी वेळ असतो मग मी तिच्याजवळ जाऊन बसते तिच्या कविता ऐकायला. तिची सर्व मित्रमंडळी कविता वाचायकरता जमतात. ते आपापल्या कविता ऐकवतात. कधी कधी तांबे,

मेरी साहित्यकार बुआ

माधवी : हाय राम कितनी पुस्तकें हैं? समझ
ा नही आता क्या पढ़ूँ और क्या न पढ़ूँ।

उर्मिला : यह मेरी बुआ का कमरा है। वह महाविद्यालय में साहित्य पढ़ाती हैं।

माधवी : वह प्रसिद्ध लेखिका भी हैं न?

उर्मिला : हाँ, साथ ही कवियित्री भी। उन्हें बहुत सारे पुरस्कार मिलते हैं। ये सब उन्हीं के पुरस्कार हैं। उन से मिलने के लिए बहुत से लोग आते हैं। पत्रकार उनसे साक्षात्कार लेने आते हैं। उनके प्रशंसक उनके हस्ताक्षर के लिए आते हैं। उनसे सलाह लेने के लिए युवा लडके-लड़कियाँ आती हैं।

माधवी : मैं भी उनसे मिलना चाहती हूँ।

उर्मिला : तुम्हे अवश्य मिलाती हूँ। युवा लड़के लड़कियों के साथ बातें करना, उनकी कविताएँ सुनना, अपनी उनको सुनाना, उनके साथ आनेवाले कल के सपने देखना बुआ को अच्छा लगता है।

माधवी : वे रेडिओ और दूरदर्शन पर भी कविता पाठ करती हैं न? तुम उनकी कविताएँ हमेशा सुनती हो न?

उर्मिला : हमेशा नहीं। पर जब भी उनके पास समय होता है, मैं उनके पास उनकी कविता सुनने जा बैठती हूँ। उनकी मित्रमंडली कविता पाठ के लिए इकट्ठा होती है। सब अपनी अपनी कविताएँ सुनाते हैं। कभी-कभी तांबे,

बालकवि, यशवंत, बोरकर,

बालकवी, यशवंत, बोरकर, पाडगावकर, कुसुमाग्रज अशा अनेक महान कवींच्या कविता वाचतात. वाचताना सगळे रंगून जातात.

माधवी : मलाही एकदा ऐकायच्या आहेत त्यांच्या कविता. पण तुला समजतात कविता? मला तर काहीच समजत नाही.

उर्मिला : आत्या खूप छान समजावून सांगते. आत्या म्हणते कविता समजण्यासाठी त्यात रंगून जाणं महत्त्वाचं आहे. समजणंच काय, मी तर कविता करायचा प्रयत्न करते. आत्याकडून दुरुस्त करवून घेते.

माधवी : आत्या रिकाम्या वेळात काय करतात?

उर्मिला : आम्ही दोघी फिरायला जातो त्या पाठीमागच्या टेकडीवर! मावळता सूर्य, सोनेरी सूर्य प्रकाशात नहाती झाडं, मंद मंद वाऱ्याबरोबर डोलती पानं पाहात बसतो. कधी कधी नुसत्याच सज्जांत उभ्या राहातो. वाहते रस्ते, पळती माणसं, धावती वाहनं, झगमगते दिवे पाहातो. कुठलीही गोष्ट आत्याबरोबर पाहताना मजा येते. मी आत्याला खूप गंमती-जमती दाखवते।

माधवी : खरंच तू भाग्यवान आहेस बघ! आत्यामुळे तुला जगाकडे बघायची नवीनच दृष्टी मिळते आहे.

उर्मिला : तू ही येत जा ना आमच्याकडे! माझ ी आत्या ती तुझीही आत्या नाही का?

पाडगाँवकर, कुसुमाग्रज आदि अनेक महान कवियों की कविताएँ पढ़ते हैं। सब कविता पाठ में मग्न हो जाते हैं।

माधवी : मुझे भी एक बार उनकी कविताएँ सुननी हैं। पर तुझे कविताएँ समझ में आती हैं क्या? मेरे पल्ले तो कुछ नहीं पड़ता।

उर्मिला : बुआ बहुत अच्छी तरह से समझ ाकर बताती हैं। बुआ कहती हैं कि कविता समझने के लिए उस में पूरी तरह डूबना पड़ता है। समझना क्या, मैं तो कविता लिखने का प्रयास करती हूँ। बुआ से मेरी कविताओं में सुधार करवाती हूँ।

माधवी : बुआ खाली समय में क्या करती हैं?

उर्मिला : हम दोनों घूमने जाते हैं। उस पीछे की पहाड़ी पर। अस्त होता सूर्य, सुनहरी आभा में नहाते पेड़, मंद-मंद हवा में झूलते पत्तों को देखते हुए बैठे रहते हैं। कभी-कभी यूं ही छज्जे पर खड़े रहते हैं। चलते हुए रास्तों, दौड़ते हुए लोगों, दौड़ते हुए वाहनों, जगमगाते दियों को देखते हैं। कोई भी बात बुआ के साथ देखते हुए मजा आता है। मैं बुआ को बहुत मज़ेदार चीजें दिखाती हूँ।

माधवी : निश्चय ही तुम भाग्यवान हो! बुआ के कारण तुम्हें दुनिया को देखने की नई ही दृष्टि मिलती है।

उर्मिला : तुम हमारे यहाँ आती रहा करो। मेरी बुआ क्या तुम्हारी भी बुआ नहीं है?

शब्दार्थ

साहित्यिक	साहित्यकार
सुचत नाही	समझ में नहीं आता
भेटायसाठी	मिलने के लिए
मुलाखती	मुलाकातें, साक्षात्कार
वार्ताहर	पत्रकार
घेण्याकरता	लेने के लिए
चाहते	प्रशंसक
सल्ला	सलाह
तरुण	युवा
उद्याची स्वप्नं	कलके सपने
काव्यवाचन	कविता पाठ
तिच्याजवळ	उसके पास
रंगून जातात	मग्न हो जाते हैं
रिकाम्या वेळात	फुर्सत के समय
पाठीमागच्या	पीछे की
टेकडीवर	पहाड़ी पर
मावळता सूर्य	ढलता सूरज
सोनेरी	सुनहरा
नहाती झाडे	नहाते पेड़
डोलती पानं	डोलते पत्ते
सज्जा	छज्जा
धावणे	दौड़ना
झगमगते दिवे	जगमगाते दिये
जगाकडे बघायची	दुनिया की तरफ देखने की
दृष्टी	दृष्टि

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) उर्मिलाची आत्या काय करते?
2) उर्मिलाच्या आत्याला भेटायसाठी कोण कोण येतं?
3) आत्याला काय आवडतं?
4) आत्या व तिची मित्रमंडळी कोणाकोणाच्या कविता वाचतात?
5) कविता समजण्यासाठी काय महत्त्वाचं आहे?
6) आत्या रिकाम्या वेळात काय करते?

II उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

उदाहरण: माधवीला आत्याच्या कविता .... आहेत. (ऐकणे)
माधवीला आत्याच्या कविता ऐकायच्या आहेत.

1) मला तुझ्याशी गप्पा .... आहेत. (मारणे)
2) तुला प्रियाला .... आहे. (भेटणे)
3) तुम्हाला डोंगर .... आहे. (चढणे)
4) आम्हाला हे सर्व आंबे .... आहेत. (खाणे)
5) राकेशला हात स्वच्छ .... आहेत. (धुणे)
6) सुमनला गाणं .... आहे. (गाणे)
7) त्या पिल्लाला दूध .... आहे. (पिणे)
8) आम्हाला चहा .... आहे. (घेणे)
9) तुम्हाला सिनेमाला .... आहे का? (जाणे)
10) आपल्याला कविता .... आहेत. (वाचणे)

III उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

उदाहरण: आत्याचे मित्र कविता .... जमतात. (वाचणे)
आत्याचे मित्र कविता वाचायला जमतात.

1) माझे आर्डवडिल तीर्थक्षेत्र .... जातात. (बघणे)
2) तुझी आई सामान .... जाते. (आणणे)
3) तुम्ही दोघी अभ्यास .... बसा. (करणे)
4) आम्ही धडा .... सुरुवात करतो. (लिहिणे)
5) प्रकाश तुला .... हवं का? (बोलावणे)
6) प्रिया ते परिपत्र .... सांगते. (पाठवणे)
7) ते सर्व भाषा .... इथे येतात. (शिकणे)
8) ती पिल्लं दूध .... लागतात. (पिणे)
9) त्या दोघांना पावसात .... आवडतं. (भिजणे)
10) आपण खेळ .... जाऊया. (खेळणे)

IV उदाहरण के अनुसार उपयुक्त शब्द का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: उर्मिला कविता वाचायला लागते
उर्मिलाला कविता वाचायच्या आहेत.

1) मी साडी आणायला जाते.
2) प्रिया खेळ खेळायला जाते.
3) आम्ही पसारा आवरायला जातो.

4) तुम्ही नाटकात काम करायला लागता.
5) माधव रमाशी बोलायला लागतो.
6) सुचेता पत्र लिहायला जाते.
7) रामभाऊ नवे घर शोधायला जातात.
8) कुत्र्याची पिल्लं दूध प्यायला लागतात.
9) आपण टी.व्ही. वर सिनेमा बघायला जातो.

V उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

उदाहरण: आत्याला .... तिचे प्रशंसक येतात. (भेटणे)
आत्याला भेटण्यासाठी तिचे प्रशंसक येतात.

1) मी सिनेमा .... जाते. (बघणे)
2) तू घरी .... निघतोस. (जाणे)
3) तुम्ही पावसात .... बाहेर जाता. (भिजणे)
4) आम्ही आंबे .... थांबतो. (खाणे)
5) रमेश झाडे .... जातो. (लावणे)
6) सुमन गप्प .... खुणावते. (राहणे)
7) त्या सर्व मुली .... घरी येतात. (नटणे)
8) रामराव टी.व्ही. .... आमच्याकडे येतात. (बघणे)
9) आपण पुस्तक .... त्या खोलीत जातो. (शोधणे)

VI उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

उदाहरण: उर्मिलाला कविता .... आवडतं. (कर)
उर्मिलाला कविता करणं आवडतं.

1) मला गप्पा .... आवडतं. (मार)
2) तुला बाजारात .... आवडतं. (जा)
3) तुम्हाला रेडिओ .... आवडतं. (ऐक)
4) आम्हाला नाटक .... आवडतं. (पहा)
5) रामूला चहा .... आवडतं. (कर)
6) सुचेताला दागिन्यांनी .... आवडतं. (मढ)
7) शामरावांना टेकडीवर .... आवडतं. (चढ)
8) त्या मुलींना फुलं .... आवडतं. (तोड)
9) आपल्याला बागेत .... आवडतं. (फिर)

VII बायीं ओर दिए गए शब्दों के साथ दाहिनी ओर दिए गए शब्दों के सही अर्थ से मिलान कीजिए।

1.

वाहते	झाड
झगमगते	वाहने
धावती	सूर्य
डोलते	रस्ते
डगमगते	दिवे
पळता	पाय
उडता	घोडा
उगवता	पोपट

2. बायीं ओर दिए गए शब्दों के साथ दाहिनी ओर दिए गए शब्दों के सही अर्थ से मिलान कीजिए।

झगमगणारी	सूर्य
धावणारी	घोडा
पळणारा	वरात
उडणारा	नदी
माल वाहणारी	पोपट
रडणारा	मुलगा
मावळणारा	मालगाडी
वाहणारी	मुलगी

VIII कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

'साहित्यकार' हा शब्द .... (म्हणणे) की मला साहित्यकार प्रेमचंद .... (आठवणे). ते आपल्या देशातले एक महान साहित्यकार .... (आहे) त्यांच्या 'गोदान', 'कफन' यासारख्या अनेक कृती प्रसिद्ध .... (आहे) 'गोदान' ह्या रचनेवर एक चित्रपटही आहे.

गरीबी, शोषण, जमीनदारी पद्धती यासारख्या समाजघातक गोष्टींना साहित्यकार त्यांच्या रचनांद्वारे समाजापुढे .... (ठेवणे) आणि या गोष्टींबद्दल विचार .... (करणे) प्रेरित करतात.

IX उदाहरण के अनुसार वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: मी कविता ऐकते. — मी मैत्रिणींना कविता ऐकवते.

1) इथे लग्नं जुळतात. — काका लग्न ....
2) आम्ही पहिल्या रांगेत बसतो. — इतरांना मात्र मागच्या रांगेत ....
3) मुलं आजारपणातून वाचतात. — डॉक्टर मुलांना आजारपणातून ....
4) मी बाजारातून सामान आणते. — मी रामागड्याकडून सामान ....

5) मी बायकोजवळ चहा मागतो. मी ऑफिसात सहकाऱ्यांसाठी चहा ....
6) बाळ एकटाच खेळतो. आईबाबा बाळाला ....
7) सापाला मुले घाबरतात. साप मुलांना ....

X 'खेळणे' क्रिया के उपयुक्त रूप का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) मी .... मी लहान भावाला ....
2) तू .... तू मित्रांना ....
3) तुम्ही .... तुम्ही शाळेतल्या मुलांना ....
4) आम्ही .... आम्ही सगळ्यांनाच ....
5) आपण .... आपण इतरांनाही ....
6) शांता .... शांता लहान बाहिणीला ....
7) रमेश .... रमेश बालवाडीतल्या मुलांना ....
8) राधाबाई मुलांबरोबर .... राधाबाई मुलांना ....
9) मधुकरराव .... मधुकरराव नातवंडाना ....

XI प्रत्येक खण्ड से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य बनाइए।

आहेत	आम्हाला	नवं	कविता	वाचायचं
आहे	तिला	आत्याची	पुस्तक	आणायच्या
आहे	त्यांना	नव्या	कादंबऱ्या	शिवायची
आहेत	तुला	चांगले	पुस्तकं	ऐकायची
आहेत	आपल्याला	जुनी	ग्रंथ	लिहायचा
आहेत	मला	नवा	कथासंग्रह	ठेवायचा

पढ़िए और समझिए

साहित्यिकांच्या सहवासात

माझा खूपसा वेळ या वाचनालयात जातो. खरं तर हे माझं मित्रमंडळच आहे. इथले मित्र आहेत इथली पुस्तकं! प्रत्येकाचे स्वभाव निराळे! कुणी विनोदी कुणी गंभीर! कुणाची कथा दर्दभरी तर कुणाची हलकी फुलकी! प्रश्नांची उत्तरं मिळवण्यासाठी कुठेही जावं लागत नाही. माझ्या सगळ्या प्रश्नांची उत्तरं इथेच मिळतात. प्रवास करण्यासाठीही फक्त इथे येऊन बसावं. सगळं जग फिरता येतं. खळखळते झरे, वाहत्या नद्या, झुलते पूल, समुद्राच्या उसळत्या लाटा, समुद्रातल्या डगमगत्या बोटी, बर्फाचे तट आणि वैराण वाळवंट सारं काही इथे बसून पाहता येतं. साऱ्या जगाचं दर्शन या पुस्तकांतून घडतं. मी तासन् तास इथे वाचत बसते. वाचणं हीच माझी सर्वात मोठी करमणूक! या पुस्तकांचे लेखक हे माझे सगेसोयरे!

शब्दार्थ

वाचनालय	पुस्तकालय
मित्रमंडळ	मित्र मंडली
जग	दुनिया, संसार
झरे	झरने
वाहत्या	बहती
उसळत्या लाटा	उछलती लहरें
बर्फाचे तट	बर्फ की दीवार
वैराण	वीरान
करमणूक	मनोरंजन
सगेसोयरे	सगे-संबंधी

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) लेखिकेचे मित्रमंडळ कोणते आहे?
2) लेखिकेला वाचनालयात बसून कोणकोणत्या गोष्टी बघायला मिळतात?
3) जगाचं दर्शन लेखिकेला कुठून घडतं?
4) लेखिकेची करमणूक कोणती?
5) 'नातेवाईक' हा अर्थ असलेला कोणता शब्द या परिच्छेदात आला आहे?

II नीचे 'रंगणे' इस शब्द के अनेक अर्थ देते हुए चार वाक्य बनाए गए है। इसी प्रकार और चार वाक्य बनाइए।

1) कविता वाचनात सगळे रंगून जातात.
2) कविता वाचन रंगात येतं.
3) कविता वाचन छान रंगतं.
4) होळीत माझे सगळे कपडे रंगतात.

III नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द चुनकर जोड़ियाँ बनाइए।

1) मित्र, बक्षीस, सही, करमणूक, सगेसोयरे
2) स्वाक्षरी, मनोरंजन, दोस्त, नातेवाईक, पुरस्कार

IV नीचे दिए गए शब्दों में से विलोम शब्द चुनकर सही जोड़ियाँ बनाइए।

1) विनोदी, प्रश्न, वैराण, तरुण, उद्या
2) वृद्ध, सुपीक, गंभीर, उत्तर, काल

V कुछ संज्ञाओं में 'वान' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं।
उदाहरण: भाग्य + वान = भाग्यवान
इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में '-वान' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।
धन ...., गुण ...., नशीब ...., कर्तृत्व ....

VI "अय्या! किती पुस्तकं!" का अर्थ है, 'इथे खूप पुस्तकं आहेत." (यहाँ काफी पुस्तकें हैं।)
इसी तरह नीचे दिए हुए वाक्यों के अर्थ लिखिए और दो अन्य वाक्य बनाइए।
1) वा! किती सुंदर देखावा!
2) छान! किती चांगले मार्क मिळवलेस!
3) बापरे! किती कविता लिहिल्या आहेस!

VII 'तासन्तास' याने 'खूप तास' (बहुत देर तक) इसी तरह - दिवस, महिने, वर्ष, युग इन शब्दों से और शब्द बनाइए।

VIII हिंदी में अनुवाद कीजिए।

महाराष्ट्राचे जनजीवन समजण्यासाठी, त्यातल्या नद्यांच्या माहितीची गरज आहे. महाराष्ट्राच्या जनजीवनात नद्यांचे महत्त्वपूर्ण स्थान आहे. गोदावरी, कृष्णा, कोयना, भीमा, तापी, गिरणा, बोरी, नाग इ. त्या नद्या आहेत. महाराष्ट्राचे प्रसिद्ध दैवत 'विठोबा' पंढरपूरला आहे. पंढरपूरला जाता जाताच वाहती भीमानदी दिसते. तिचे वर्णन करताना संतकवी भक्तिरसात मग्न होतात. भीमानदीचे वर्णन करायला त्यांना आवडते. संतकवींशिवाय मराठी काव्याचा विचारच करवत नाही.

IX मराठी में अनुवाद कीजिए।

कविता करना एक ईश्वरीय देन है। कविता करनेवाले बहुत ही भावुक प्रवृत्ति के होते हैं। कवि अपने आसपास के वातावरण, प्रकृति के विविध रूप जैसे पेड़-पौधे, नदियाँ, पर्वत, चाँद-सूरज, समुंदर आदि पर कविताएँ रचते हैं। हास्य-व्यंग्य की भी हल्की-फुल्की कविताएँ लिखी जाती हैं। कविता सुनकर उस में डूबकर उसका आनंद लेना ही कविता की सार्थकता है।

X उपयुक्त शब्द चुनकर अनुच्छेद पूरा कीजिए।
(सांगते, करते, करतात, जमतात, समजून, ऐकतात, करते, महत्त्वाचं, आहे, फिरायला, रस्ते, गर्दी, वाटते, झगमगते, धावती, दिवे, सज्जात)

माझी आत्या छान कविता .... तिच्या कविता ती मला समजावून .... तिचे चाहती मित्रमंडळी तिच्याकडे .... ते कवितावाचन .... आणि कविता .... आत्या म्हणते कविता .... घ्यायला त्यांत गुंग होणं फार .... माझी आत्या दूरदर्शन, रेडिओवर पण कविता वाचन .... माझ्या आत्यामुळे मला जगाकडे बघायची नवीन दृष्टी मिळाली ....

मी माझ्या आत्याबरोबर रोज संध्याकाळी टेकडीवर .... जाते. आम्ही दोघी .... उभ्या राहतो. रस्त्यावरचे .... दिवे, वाहते ...., ... वाहने, रस्त्यावरची .... बघतो. आत्याबरोबर हे सर्व करताना मला फार मजा ....

XI अपनी भाषा के किसी साहित्यकार के बारे में एक अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

ती मला <u>बसायला</u> आग्रह करते.	वह मुझ से बैठने का आग्रह करती है।
ती मला <u>बसायसाठी</u> आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने हेतु आग्रह करती है।
ती मला <u>बसायपुरता</u> आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने-भर का आग्रह करती है।
ती मला <u>बसायचा</u> आग्रह करते.	वह मुझसे बैठने का आग्रह करती है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियारूपों में मूल क्रिया के साथ '-आय' प्रत्यय जोडकर 'ला/चा, साठी/पुरता' विभक्ती प्रत्ययों, परसर्गों का प्रयोग हुआ है। मूल क्रिया से 'आय' प्रत्यय जोडने से वह एक प्रकार का क्रियावाची संज्ञा बनता है जिससे विभक्ती प्रत्यय परसर्ग जोडे जा सकते है। ऐसे प्रयोग क्रिया करने का उद्देश्य/हेतू/चाह विभक्ती प्रत्यय के अनुसार स्पष्ट करते हैं।

II मराठी में '-आयला' का प्रयोग कई प्रकार से किया जा सकता है।

उदाहरण:

मी मराठी बोलायला शिकतो.	मैं मराठी बोलना सीखता हूँ।
मला पुस्तक वाचायला आवडतं.	मुझे पुस्तक पढ़ना अच्छा लगता है।
तो बोलायला सुरुवात करतो.	वह बोलना शुरु करता है।

III '-आयचा' के रूप परिवर्तित भी होते हैं।

1)	आता सगळ्यांनी गप्प बसायचं.	अब सबको चुप रहना है।
2)	मला सगळे बसायचा आग्रह करतात.	सब मुझसे बैठने का आग्रह करते हैं।
3)	त्याला शाळेत जायचं आहे.	उसे स्कूल जाना है।

4) त्याला मराठी शिकायची आहे. उसे मराठी सीखनी है।
5) आपण चहा घ्यायचा का? हमें चाय पीनी है क्या?

IV निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित क्रिया प्रयोगों को देखिए।

उदाहरण:

1) वाचताना सगळे रंगून जातात. सब कविता पाठ में मग्न हो जाते हैं।
2) कुठलीही गोष्ट आत्याबरोबर पाहाताना मजा येते. कोई भी बात बुआ के साथ देखते हुए मजा आता है।
3) तो काम करताना गाणं म्हणतो. वह काम करते हुए गाना गाता है।

जब वाक्य में एक कर्ता दो क्रियाएँ एक साथ करता है तब पहली क्रिया में '-ताना' प्रत्यय लगता है।

V मराठी में वर्तमानकालिक कृदंत विशेषण का प्रयोग निम्नानुसार होता है।

धावती वाहनं (दोडते हुए वाहन)

नहाती झाडं (नहाते पेड़)

डोलती पानं (झूलते पत्तें)

पळती माणसं (दौड़ते हुए लोग)

VI मराठी में प्रेरणार्थक क्रिया रूप बनाने के लिए मूल क्रिया में 'अव' प्रत्यय जोडते हैं। इसके बाद काल वाचक और लिंग - पुरुष सूचक प्रत्यय लगाते हैं।

उदाहरण:

1) आत्याकडून कविता दुरूस्त करवून घेते. बुआ से कविताएँ ठीक करवा लेती हूँ।
2) जरूर भेटवते तुला. तुम्हें अवश्य मिलाती हूँ।
3) ते आपापल्या कविता ऐकवतात. सब अपनी अपनी कविताएँ सुनाते हैं।

VII भा.रा.तांबे - (जन्म 27.10.1873, जन्मगाँव मुंगावली-मध्यभारत, मृत्यू 7.12.1941) इनका पूरा नाम भास्कर रामचंद्र तांबे है। 'प्रणयप्रभा' और 'तांबे यांची समग्र कविता' ये इनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं। इनकी कविताओं में उत्कट गेय भावना का आविष्कार (गेयता) और सौंदर्य भावना के प्रति रुझान हैं। वे मूलतः भावप्रधान गीतों के रचयिता हैं। 'डोळे हे जुलमी गडे', 'नववधू प्रिया मी बावरते', 'कळा या लागल्या जीवा', 'जन पळभर म्हणतील हाय हाय', 'रिकामे मधुघट', 'रूद्रास आवाहन' आदि इनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं। इन की कुछ कविताओं का उदा. 'कळा या लागल्या जीवा' समावेश 'संगीत पाणिग्रहण' (लेखक आचार्य प्रल्हाद केशव अत्रे) जैसे नाटकों में भी किया गया हैं। वे

'आधुनिक मराठी गीतिकाव्य संप्रदाय' के प्रवर्तक भी है। वे 1937 से ग्वाल्हेर संस्थान के राजकवी थे।

VIII बालकवि - (जन्म 13.8.1890, मृत्यु 5.5.1918) इन का पूरा नाम त्र्यंबक बापूजी ठोंबरे 'बालकवि' है। इन का जन्म खान्देश के धरणगाँव में हुआ था और मृत्यु खान्देश में ही भादली रेल्वे स्टेशन के पास रेल की पटरी पार करते हुए रेल्वे अपघात में हुई थी। 'फुलराणी' इन का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। 'औदुंबर', 'फुलराणी', 'निर्झरास', 'श्रावणमास', 'संध्यारजनी', 'खेड्यातील रात्र' आदि इनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं। वे 'निसर्गकवि' के रूप में जाने जाते हैं। गेयता, प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण आदि इनकी कविताओं की विशेषता हैं। इनकी कुछ कविताओं का उदा. 'गर्द सभोती रान साजणी' समावेश 'संगीत मस्त्यगंधा' (लेखक वसंत कानेटकर) जैसे नाटकों में भी किया गया हैं।

IX यशवंत - (जन्म 1.3.1899, जन्म गाँव चाफळ, जि.सातारा, मृत्यु 26.11.1985) इनका पूरा नाम यशवंत दिनकर पेंढारकर 'यशवंत' है। वे बड़ोदा संस्थान के राजकवी थे। इन्हें शासन ने 'महाराष्ट्र कवि' उपाधि से सम्मानित किया था। इन्होंने 'खंडकाव्य, कवितामाला, विलापिका, संगीतिका, दीर्घकाव्य तथा महाकाव्य की रचना की हैं। 'यशोधन', 'यशवंती', 'यशोनिधी', 'यशोगिरी', 'यशोगंध', 'जयमंगला', 'शिवछत्रपती' आदि इनके प्रसिद्ध काव्यसंग्रह हैं। 'न्याहारीचे गाणे', 'घर', 'घात', 'प्रेमाची दौलत' आदि इनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं। इनकी कविताओं में कौटुंबिक, प्रेमविषयक, गैररूढी, अन्याय, समाजवृत्ती, स्वविचार, प्रभुभक्ती, जानपदजीवन आदि विषयों का चित्रण आता हैं। इनकी कुल 14 पुस्तकें प्रसिद्ध हैं। वे प्रसिद्ध 'रविकिरण मंडल' के सदस्य थे। इन्होंने काव्यगायन लोकप्रिय किया। इन्होंने 'तारकानाथ' उपनाम से पहली कविता प्रकाशित की। 1921 में बड़ोदा में हुए अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन में इन्हों ने अपनी कविता पढ़ी और तब से 'यशवंत' नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने 'आई' 'सारंगीवाला', 'चित्रकार', 'कवी', 'बालगंधर्व' आदि व्यक्तिचित्रणात्मक कविताएँ भी लिखी हैं। इनकी कविता गेय और भावोत्कट है। इनके विचार आदर्शवादी थे। वे 1950 में मुंबई में हुए अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन के अध्यक्ष रह चुके हैं।

X बोरकर - (जन्म 30.11.1910, मृत्यु 8.7.1984) इनका पूरा नाम बाळकृष्ण भगवंत बोरकर तथा 'बाकीबा' है। 'जीवन-संगीत', 'दूधसागर', 'चित्रवीणा', 'गितार', 'आनंदभैरवी', 'चांदणवेल', 'चैत्रपुनव' आदि इनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं। 'माझ्या गोव्याच्या भूमीत', 'गड्या नारळ मधाचे', 'गडद निळे गडद निळे, जलद भरुनि आले', 'शांतीचा जयजयकार', 'तव नयनांचे दल हलले ग', 'साबरमतीच्या काठी', 'जीवन त्यांना कळले हो', 'मज लोभस हा इहलोक

हवा', 'सरीवर सरी आल्या ग' आदि इनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं। इन्होंने प्राकृतिक सौंदर्य चित्रण, प्रणय की विभिन्न छटाएँ और मंगलभावनाओं से ओतप्रोत कविताएँ रची हैं। इनकी कविताओं में अधिकतर गोवा और आसपास के प्रकृति का चित्रण आता हैं।

XI पाडगावकर- (जन्म 10.3.1929) इनका पूरा नाम मंगेश केशव पाडगावकर है। इनके 'धारानृत्य', 'जिप्सी', 'विदूषक', 'बोलगाणी', 'सलाम', 'उदासबोध' आदि प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं। 'सांग सांग भोलानाथ पाऊस पडेल काय?', 'या जन्मावर या जगण्यावर शतदा प्रेम करावे', 'अखेरचे येतील माझ्या, हेच शब्द ओठी', हात तुझा हातात धुंद ही हवा रोज तोच चंद्र आज भासतो नवा' आदि इनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं। गेयता, व्यंग और विडंबना इनकी कविताओं की विशेषता हैं। इनकी कई कविताओं का समावेश मराठी फिल्मों में किया गया है। वे भावगीतकार के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने काव्यगायन लोकप्रिय किया।

धडा पाठ 12

चला खेड्याकडे!

शेखर : या या मंडळी! खूप दिवसांनी दिसत आहात. काय विशेष?

सुषमा : खरं तर सगळ्यांनाच भेटायचं आहे. विशेषतः शेखर भावजींना!

सुधीर : शेखर, तुझ्याकडे एका खास कामासाठी आलो आहे. खरं तर तुला एक विनंती करायची आहे.

शेखर : विनंती? अरे आज्ञा कर आज्ञा!

सुधीर : मी आणि सुषमा रामपूरला दवाखाना काढत आहोत. तू ही आमच्याबरोबर असावंस अशी आमची इच्छा आहे. ही स्त्रीरोगतज्ज्ञ आहे. तू मुलांचा डॉक्टर आहेस. मी जनरल प्रॅक्टीशनर! आपण तिघं खूप काम करू.

शेखर : धर्मसंकटच की रे! खेडं! ते देखील इतक्या लांब जंगलात?

सुधीर : का रे बाबा? तू तर पहिल्यापासून ध्येयवादी आहेस. खेड्यात जायची स्वप्न रंगवतोस. तूच तर प्रेरणादाता आहेस.

शेखर : स्वप्न रंगवणं निराळं आणि प्रत्यक्षात करणं निराळं!

सुधीर : कारे बाबा? असं का म्हणतोस?

शेखर : तुझ्या वहिनीलाच विचार. त्या बाबतीत तिची संमती सर्वात महत्त्वाची! काय लता?

लता : भावजी, खेड्यातील आयुष्य फार कंटाळवाणं आहे. इथे माझं महिलामंडळ आहे. रोज काहीतरी नवीन घडत असतं.

आओ चलें गाँव की ओर!

शेखर : आओ, आओ। बड़े दिनों के बाद दिखे हो। क्या कोई खास बात हैं?

सुषमा : असल में मिलना तो सभी से है। विशेषकर शेखर भाईसाहब से।

सुधीर : शेखर, तुम्हारे पास एक खास काम से आया हूँ। सच कहूँ तो तुमसे एक विनती करनी है।

शेखर : विनती? अरे भई आज्ञा दो आज्ञा!

सुधीर : मैं और सुषमा रामपुर में एक दवाखाना खोल रहे हैं। हमारी इच्छा है तुम भी हमारा साथ दो। ये स्त्रीरोग विषेशज्ञ हैं, तुम बच्चों के डॉक्टर हो। मैं जनरल प्रॅक्टीशनर! हम तीनों मिलकर खूब काम करें।

शेखर : अरे। यह तो धर्मसंकट ही है। एक तो गाँव और वह भी इतनी दूर जंगल में?

सुधीर : क्यों भाई! तुम तो पहले से ही बड़ें आदर्शवादी हो। गाँव में जाने के सपने संजोया करते हो। तुम्हीं प्रेरणा दाता हो।

शेखर : सपने देखना एक बात है और वास्तविकता में करना दूसरी!

सुधीर : क्यों भई? ऐसा क्यों कहते हो?

शेखर : तुम अपनी भाभी से ही पूछो। क्योंकि इस बाबत इनकी सहमति सबसे महत्त्वपूर्ण है। क्यों लता?

लता : भाई साहब गाँव की जिंदगी बहुत उबाऊ है। यहाँ मेरा महिला मंडल है।

रोज काहीतरी नवीन शिकायला मिळतं. मला स्वयंपाकात, शिवणकामांत रस आहे. इथे त्यांचे खूप वर्ग चालू असतात. त्यामुळे मी कामात गर्क राहते. हे तर दिवस दिवस भेटत नाहीत. त्यामुळे मला स्वतःचे कार्यक्रम आखावेच लागतात. संध्याकाळ मुलांसाठी असते. आता तुम्हीच सांगा मी त्या गावात जाऊन काय करू?

सुषमा : वहिनी, खेड्यात तर खूप करता येण्यासारखं आहे. इथे तुम्ही शिकता तिथे गावातल्या बायकांना शिकवा.

लता : छे ग! आमच्या क्लबनी दत्तक घेतलेलं एक खेडं आहे. तिथे एकही बाई शिकायला तयार नसते. रोज उठून त्यांचे नवे व्याप असतात. शेतात काम, कारखान्यात काम! आम्ही तर पार कंटाळतो त्यांच्याबरोबर!

आई : अरे सुधीर, आणि मुलांच्या शाळांचं काय? मुलं या शहरातल्या सगळ्यांत उत्कृष्ट शाळेत शिकताहेत. त्यांचे खेळ, नृत्य, संगीत व नाटकं या सगळ्याला खेड्यात कुठे वाव आहे?

सुधीर : मावशी, पण खेड्यातूनही आज खूप मोठी मोठी प्रतिभावान माणसं तयार होतच आहेत की!

आई : अरे खेड्यातच जन्मणं आणि तिथेच शिकणं निराळं! शहरात इतकी वर्ष राहून मग खेड्यात जाणं निराळं.

लता : आणि भावजी, खेड्यात दिवसेंदिवस वीज नसते, रस्ते धड नसतात. मैलन् मैल पायी चालावं लागतं. पाण्याचे हाल असतात. खाण्यात रोज ताज्या भाज्याही

यहाँ रोज कुछ न कुछ नया होता रहता है। हर रोज कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता है। मेरी पाक विद्या और सिलाई में रुचि है। यहाँ इनके बहुत से कोर्स चलते हैं। इसलिए मैं हर समय व्यस्त रहती हूँ। इनसे मिले कई कई दिन बीत जाते हैं। इसलिए मुझे अपने स्वयं के कार्यक्रम बनाने पड़ते हैं। शाम तो बच्चों के लिए होती है। अब तुम्हीं कहो उस गाँव में जाकर भला मैं क्या करूँगी?

सुषमा : भाभीजी, गाँव में तो करने के लिए बहुत कुछ है। यहाँ आप सीखती हैं। वहाँ जाकर गाँव की स्त्रियों को सिखाइए।

लता : अरे छोड़ो! हमारे क्लब ने एक गाँव गोद लिया है। वहाँ एक भी औरत सीखने के लिए तैयार नहीं है। हर रोज उठो तो नये-नये काम। खेत का काम, कारखाने का काम! हम तो उनके साथ तंग आ जाते हैं।

माँ : अरे सुधीर, वहाँ बच्चों के स्कूल का क्या होगा? यहाँ तो बच्चे शहर के सब से अच्छे स्कूल में पढ़ रहे हैं। उनके खेल-कूद, नृत्य, संगीत और नाटक आदि का क्या होगा?

सुधीर : पर मौसी गाँव में भी तो आजकल बड़े-बड़े प्रतिभावान लोग उभर रहे हैं।

माँ : अरे गाँव में जन्म लेकर वहीं पढ़ना-लिखना अलग बात है पर शहर में इतने साल रहने के बाद गाँव में जा बसना अलग बात है।

लता : और भाईसाहब गाँव में कई-कई दिनों तक बिजली गायब रहती है। रास्ते ठीक नहीं हैं। कई-कई मील पैदल चलना

मिळणं शक्य नसतं फळांचं तर विचारूच नका. या सगळ्या सुखसोयींची मुलांना सवय आहे. एखादा दिवससुद्धा ती खेड्यात रमत नाहीत.

आई : आणि अलीकडे यांची आणि माझीही तब्येत ठीक नसते. अशावेळी कुठे तरी जंगलात जाऊन पडायचं त्यापेक्षा इथेच राहणं चांगलं नाही का?

बाबा : आणि सुधीर, हा डॉक्टर होण्यासाठीचा खर्च! तो खर्च भरून यायला नको का?

लता : अहो, आदर्शवाद ठीक आहे. पण वास्तवाशी जुळवून घ्यायला हवं ना. तुमचं दोघांचं ठीक आहे. दोघंही डॉक्टर आहात. कसलेही व्याप नाहीत. जबाबदाऱ्या नाहीत. तुम्हाला मी अडवत नाही. पण यांना मात्र मी मोडता घालते.

शेखर : पाहिलंस सुधीर, मी एवढ्याचसाठी म्हणत होतो स्वप्न पाहणं निराळं आणि प्रत्यक्षात आणणं निराळं. मी एक उपाय सुचवतो. जवळचं एखादं खेडं बघ. मी तिथे आठवड्यातून एक दिवस नक्की येतो. आणि शहरात राहूनही, तुझी मदत करतो बघ.

सुषमा : पण भावजी ...

लता : नंतर खूप वेळ आहे गप्पा मारायला. आधी हा चहा घ्या. आणि माझ्या ह्या नवीन पाककृतीची चव होऊन पहा बरं!

पड़ता है। पानी की तकलीफ रहती है। खाने के लिए रोज़ ताज़ी सब्जी भी नहीं मिलती। फलों के बारे में तो सोचिए ही मत। बच्चे इन सभी सुख सुविधाओं के आदी हो चुके हैं। गाँव में उनका मन एक दिन भी नहीं लगेगा।

माँ : और आजकल इन की और मेरी भी तबीयत ठीक नहीं रहती। इस हालत में किसी दूर जंगल में जा पड़ने से यहीं रहना अच्छा नहीं है क्या?

बाबा : और सुधीर, इसके डॉक्टर बनने पर जो इतना खर्च हुआ उसे भी तो वसूलना है न?

लता : अजी, आदर्शवाद तो ठीक है। पर हमें वास्तविकता से भी समझौता करना पड़ता है न। तुम दोनों के लिए तो ठीक है। दोनों ही डॉक्टर हो। कोई दिक्कत नहीं, कोई जबाबदारी नहीं। तुम्हारे जाने का तो मैं विरोध नहीं करती, इन्हें रोकती हूँ।

शेखर : देख सुधीर, इसीलिए कहता हूँ कि सपने देखना एक बात है और उन्हें यथार्थ में ढालना अलग। मैं एक सुझाव देता हूँ। पास में ही एक गाँव देखो। मैं वहाँ सप्ताह में एक बार आ सकता हूँ। और सुनो, शहर में रहते हुए तुम्हारी मदद करूँगा।

सुषमा : पर भाई साहब -

लता : बातें बाद में होती रहेंगी, पहले यह चाय लीजिए। लीजिए मेरी पाक विद्या के इस नये नमूने का स्वाद चखिए।

शब्दार्थ

खेड्याकडे	गाँव की ओर
मंडळी	मंडली
काय विशेष	कोई खास बात
भेटणे	मिलना
विशेषतः	विशेष कर
भावजी	भाई साहब, देवर
विनंती	विनती
आज्ञा	आज्ञा
लांब	दूर
ध्येयवादी	आदर्शवादी
स्वप्ने रंगवणे	सपने सँजोना
असं का करतोस	ऐसा क्यों करते हो
वहिनी	भाभी
संमती	सहमति
महत्त्वाची	महत्त्वपूर्ण
कंटाळवाणं	उबाऊ, तंग करनेवाला
घडणे	होना
स्वयंपाक	पाक कला
शिवणकाम	सिलाई
वर्ग	कोर्स
कामात गर्क राहते	काम में लगी रहती हूँ
दिवस-दिवस	कई कई दिन
आखणे	बनाना
शिकणे	सीखना
शिकवणे	सिखाना
व्याप	झमेला, कामों का ढेर
वाव	अवसर
ताजी भाजी	ताजी सब्जी
सुखसोयी	सुख सुविधाएँ
सवय होणे	आदी होना
तब्येत	तबीयत
भरून काढणे	वसूलना
वास्तव	वास्तविकता, यथार्थ
जुळवून घेणे	निभाना
प्रत्यक्षात आणणे	वास्तव में ढालना
उपाय सुचवणे	उपाय सुझाना

खूप वेळ आहे	बहुत समय पड़ा है
काढणे	खोलना
आयुष्य	जीवन
बरोबर	साथ में, ठीक
निराळे	अलग
वीज	बिजली
धड	ठीक तरह के
मैलन् मैल	कई मीलों तक
हाल	तकलीफ
रमणे	जी लगना, मन लगना
अशावेळी	ऐसे वक्त, ऐसे समय
अडवणे	विरोध करना
नक्की	अवश्य, जरूर

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) सुधीरची काय इच्छा आहे?
2) शहरातील आयुष्य कसे असते?
3) लतावहिनी खेड्यात जाऊन काय करू शकता त?
4) मुलं शहरातल्या शाळेत कायकाय करतात?
5) खेड्यातील आयुष्य कसे असते?
6) शेखरने सुधीरला कोणता उपाय सुचविला?

II वार्तालाप के आधार पर नीचे दिए गए खंडों में से वाक्यांशों का ठीक प्रकार से मिलान कर वाक्य बनाइए।

1)	आपण तिघं	फार कंटाळवाणं आहे.
2)	तुझ्या वहिनीलाच	दत्तक खेडं आहे.
3)	खेड्यात आयुष्य	खेड्यात कुठे वाव आहे?
4)	आमच्या क्लबचं एक	आखावेच लागतात.
5)	नृत्य, संगीत, नाटकाला	विचार.
6)	त्यामुळे मला स्वतःचे कार्यक्रम	खूप काम करू.

III कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

1. (वाचत आहोत, काढत आहेत, शिकवता, कंटाळतो, करत नाही, जात आहेस, मळमळतं, घालतोस, करत नाहीत)
   1) तू बागेला पाणी ....?
   2) सुचेताला चहानं ....
   3) तू गावाला ....
   4) मी कॉफी ....
   5) तुम्ही बाळूला .... का?
   6) सुधीर आणि सुषमा रामपूरला दवाखाना ....
   7) त्या अजिबात काम ....
   8) आम्ही फार ....
   9) आम्ही सर्वजण पुस्तके ....

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।
   1) इथे रोज काहीतरी नवीन .... (घडतो. घडत असतं, घडतं)
   2) तू मुलांचा डॉक्टर .... (असतोस, आहेस, आहे)
   3) संध्याकाळी सूर्य .... (बुडत असतो, बुडत आहे, बुडतात)
   4) मला स्वयंपाकात रस .... (आहे, असतो, आहेत)
   5) खेड्यातल्या बायकांचे रोज नवे व्याप .... (आहेत, असतात, असतो)

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूप बनाकर अनुच्छेद पूरा कीजिए।

   एक तळं .... (अस). त्या तळ्यात बदकाची खूप पिल्लं .... (अस). त्यातलं एक पिल्लू खूप कुरूप .... (अस). सगळी पिल्लं त्याला .... (म्हण), "दूर हो आमच्यात .... (ये) नकोस". सगळी त्याच्यापासून .... (जाणे). म्हणून ते फार दुःखी .... (अस). हळूहळू सगळी पिल्लं मोठी .... (हो). ते कुरूप पिल्लूही मोठं .... (हो). एक दिवस ते आपलं प्रतिबिंब पाण्यात .... (पहा). आणि ते .... (म्हण), अरे मी राजहंस .... (आहे)! ही इतर बदकं .... (आहे)! आता ते पिल्लू, तो राजहंस दुःखी .... (नस) तो मजेत .... (अस).

4. रेखांकित शब्दों की जगह कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूप बनाकर वाक्य बनाइए।
   1) तो गाणारा <u>माणूस</u> मला माहीत आहे. (मुलगी)
   2) मी त्या गाणाऱ्या <u>मुलीचा</u> काका! (मुलगा)
   3) हे <u>गणित शिकवणाऱ्या आजींचं</u> घर! (भरभर चाल-डॉक्टर)
   4) हे <u>कविता लिहिणाऱ्या कवींचं घर!</u> (गाणं म्हण-गायिका)
   5) मी उडते <u>पक्षी</u> पाहिले. (तबकडी)
   6) मी वाहत्या <u>नदीत</u> डुंबतो. (झरा)
   7) आईनी बाळाचे वाहते <u>डोळे</u> पुसले. (नाक)

8) आपण <u>उगवत्या</u> सूर्याला नमस्कार करतो. (मावळ-)
9) तो <u>उसळणाऱ्या</u> पाण्यात उडी टाकतो. (वाह)

5. कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।
(करून, करताना, करायला, करून करून, करायची, करत, करू, करता करता, करताच, करणं, करावं, करू नये, करायसाठी)
1) माधव आंघोळ .... गाणं म्हणतो.
2) बाळू अभ्यास .... शाळेत जातो.
3) आई सकाळी चहा .... लागते.
4) आम्हाला खूप कामं .... आहेत.
5) सुचेता आणि शामला अभ्यास .... नाहीत.
6) मुलांनी तरी काय ....?
7) मुलांनी दंगा .... शांत बसावं.
8) बाबा काम .... आईशी बोलतात.
9) राम आईला मदत .... लागतो.
10) सगळ्यांची कामं .... आई थकते.
11) सगळ्यांनी काम .... आवश्यक आहे.
12) अभ्यास .... तो ग्रंथालयात जातो.
13) चहा .... कॉफीही कर.

पढ़िए और समझिए

झोपडपट्टीतील दवाखाना

इथल्या एका झोपडपट्टीत माझा दवाखाना आहे. माझ्या श्रीमंत रूग्णांपेक्षा इथला अनुभव फारच वेगळा आहे. जुजबी आजारांसाठी इथे कोणी डॉक्टरकडे जात नाही. अगदी अत्यवस्थ रोगीच डॉक्टरकडे येतो. पैसे नसतात, माहिती नसते! अशा रोग्यांचे हाल कुत्रा खात नाही.

इथले जादातर रूग्ण असतात लहान मुले!

इथे डोळ्यांना चिपाडे, हातापायांच्या काड्या आणि वाढते ढेरपोट, सदा गळणारे नाक अशा स्थितीत राष्ट्राची उगवती पिढी धुळीत खेळत असते. आईबापांना बिनदुधाचा चहा घ्यावा लागतो. मुलांना तर दुधाचा थेंबही नसतो. कित्येकांना लिटरभर दुधाच्या किंमतीएवढे पैसे सबंध दिवसाची रोजी म्हणून सुध्दा मिळत नाहीत. दुधासारखा पोषक आहार मुलांना द्या, असं म्हणणं, म्हणजे त्यांच्या जखमेवर मीठ चोळणंच आहे.

स्वच्छतेच्या बाबतीत तर सगळा आनंदच असतो. पाण्याची सोय अपुरी असते. पाण्याच्या कमतरतेमुळे अस्वच्छता कमालीच्या बाहेर! त्यामुळे कातडीचे रोग झोपडपट्ट्यातून फार मोठ्या प्रमाणावर आढळतात. लहान मुलांचे साथीचे रोग वारंवार

हमखास येतात. औषधोपचारांची अपुरी सोय आणि अडाणीपणा यामुळे मुलं पटापट मरतात. गोवर, कांजिण्या, हगवण, गालगुंड यांचे झोपडपट्ट्यांमधे आगरच असते. झ ाोपडपट्ट्यांमधे आजारांबद्दल अंधश्रद्धा व गैरसमजुती असतात. हे आजार औषधाने बरे होणारे आहेत याची जाणीवही त्यांना नसते. बरे, नुसते औषध देऊनही भागत नाही. प्रचंड अडाणीपणा आहे. प्रत्येक लहानसहान गोष्ट दहा दहा वेळा समजावून सांगावी लागते. ती समजतेच याची खात्री नसते.

या सगळ्याचमुळे खूप वेळा पदरी निराशा येते. मन सुन्न होते.

शब्दार्थ

इथल्या	यहाँ के
जुजबी आजार	छोटी-मोटी बीमारियाँ
अत्यवस्थ	गंभीर रूप से बीमार
हाल कुत्रा खात नाही	कुत्ते से भी बदतर
जादातर	ज़्यादातर
चिपाडे	आँख का कीचड़
ढेरपोट	बड़ा पेट
उगवती पिढी	उभरती पीढ़ी
धुळीत खेळणे	धूल में खेलना
थेंब	बूँद
रोजी	रोजगार
जखमेवर मीठ चोळणे	घाव पर नमक छिड़कना
गोवर	चेचक
रूग्ण	रोगी
वेगळा	अलग, निराला
वाढते	बढ़ा हुआ
कांजिण्या	बड़ी चेचक
हगवण	दस्त
गालगुंड	गलसुआ
जाणीव	ज्ञान
अडाणीपण	अनाड़ी पन
समजावून सांगणे	समझाना
पदरी निराशा येणे	झोली में निराशा आना
गळणारे	बहने वाला
कातडी	त्वचा
मोठ्या प्रमाणावर	बड़ी मात्रा में
वारंवार	बार-बार

गैर समजूत	भूल
आजार	बीमारी
नुसते	सिर्फ

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) माझा दवाखाना कोठे आहे?
2) येथील मुले कशी असतात?
3) अपुऱ्या पाण्यामुळे येथे कोणकोणते रोग आढळतात?
4) मुले पटापट मरण्याची कारणे कोणती?
5) लहानसहान गोष्टदेखील "वारंवार समजावून सांगावी लागते". या अर्थी कोणता शब्द वापरला आहे?

II कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।
(सकाळ, आशा, अपाय, शिळ्या, आज्ञा, ताज्या प्रत्यक्ष, विनंती, उपाय, निराशा, संध्याकाळ, अप्रत्यक्ष, आज्ञा)

1) अरे .... कसली करतोस .... कर ....!
2) खेडेगावात .... भाज्या मिळत नाहीत. .... सुकलेल्या भाज्या आठवडाभर वापराव्या लागतात.
3) फक्त औषधानं .... होत नाही बरोबर योग्य आहार नसेल तर .... होण्याची भीती!
4) शेखर शहरात राहून सुधीरला .... सगळी मदत करेल.
5) आयुष्य हा .... खेळ आहे.
6) .... खेड्यातल्या बायकांना काम असतं.

III नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1) कुत्रा हाल खात नाही. 2) जखमेवर मीठ चोळणे.

IV नीचे कुछ शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ दिए गए हैं। उनका प्रयोग कर नए वाक्य बनाइए।

धड तिला एक गोष्ट धड करता येत नाही.
त्याचं डोकं धडापासून तुटलं होतं.

लांब तिचे केस खूप लांब आहेत.
माझं घर इथून खूप लांब आहे.

साथ तू आमच्या कामात आम्हाला साथ दे.
गावात रोगाची साथ आली आहे.

रस मला शिवणकामात रस आहे.

उसाचा रस गोड असतो.

V कोष्ठक में दिए गए शब्दों में नीचे दिए हुए शब्दों के समानार्थी शब्द बताइए।
धड, तब्येत, लांब, खास, उत्कृष्ट, सदा
(दूर, विशेष, प्रकृति, व्यवस्थित, नीट, नेहमी, उत्तम, सतत, सारखा, आरोग्य)

VI हिंदी में अनुवाद कीजिए

महात्मा गांधीजी आणि विनोबा भाव्यांची "गावाकडे चला" ही घोषणा आजही अनेकांना गावांकडे परत जाऊन ग्रामवासीयांची सेवा करायला प्रेरित करते आहे.

गांधी-विनोबांकडून प्रेरणा घेऊन ग्रामीण विभागात काम करणारे बाबासाहेब आमटे हे असेच एक थोर पुरुष आहेत. त्यांच्या आश्रमांत हजारो कुष्ठरोगपिडितांवर उपचार होत आहेत. त्यांना नवीन जन्म मिळतो आहे. त्यांच्या आश्रमाला भेट देताना मन आदराने भरून येते. असे कार्य करणारा एखादाच असतो. ही सगळ्यांना जमणारी गोष्ट नसते.

VII मराठी में अनुवाद कीजिए

गाँवों की उन्नति के लिए हमारी सरकार काफी प्रयास कर रही है। गाँवो में स्कूल खोले जा रहे हैं। किसानों को उत्पादन बढ़ाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। परिवार कल्याण, परिवारिक स्वास्थ्य के लिए अस्पताल खोले जा रहे हैं। सहकारी बैंक खोले जा रहे हैं। दूरदर्शन पर गाँव के लोगों को इन सभी बातों की जानकारी देने के लिए विज्ञापन दिए जाते हैं। आजकल के युवा-युवतियों को चाहिए कि वे गाँवों में जाकर काम करें। गाँवो के विकास पर ही हमारे देश की उन्नति निर्भर है।

VIII नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग कर मराठी वाक्य बनाइए।
दवाखाना, जनरल प्रॅक्टीशनर, महिला मंडळ, वर्ग, दत्तक, विनंती, स्त्री रोगतज्ज्ञ, धर्मसंकट, ध्येयवादी, प्रेरणादाता, संमती, आयुष्य, कंटाळवाणं

IX किसी गाँव की संध्या वेला के बारें में एक अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

धडा पाठ 13

घराच्या शोधात

पांडे : इथं जवळपास कुठं भाड्यानं घर मिळेल का हो?

रामराव : हो, मिळेल की! सध्या या भागात खूप घरं आहेत. नवीन वस्ती आहे ना! पण कसं घर हवं आहे तुम्हाला? स्वतंत्रच घर शोधणार असाल नं तुम्ही?

पांडे : बघूया कस जमतंय ते! घर तर हवंय छोटसंच, एक खोली, एक बैठकीची खोली, स्वयंपाकघर, संडास-न्हाणीघर.

रामराव : स्वतंत्र घर म्हणजे, बंगला हवाय? आजूबाजूला बाग वगैरे? की फ्लॅट हवा आहे?

पांडे : स्वतंत्र घरच चांगलं असतं. पण भाडं फार पडेल ना?

रामराव : कमीत कमी पाच हजार तरी पडतील.

पांडे : बापरे! मला परवडणार नाही. माझी कुवत फक्त रोन-अडीच हजार रुपयांपर्यंतच आहे.

रामराव : मग एखादा फ्लॅट मिळेल. स्वतंत्र घरासाठी मात्र गावापासून थोडं दूर जावं लागेल. ते तुम्हाला चालणार का?

पाडे : चालेल.

रामराव : अहो, पण गावातच घर घेणं चांगलं तुमचे जाण्यायेण्याचे पैसे वाचतील ना!

पांडे : तरीही पाच हजार फार होतील.

मकान की खोज में

पांडे : यहाँ आसपास में कहीं किराये का मकान मिलेगा क्या?

रामराव : हाँ, मिलेगा न। आजकल इस इलाके में बहुत से मकान खाली हैं। नई बस्ती है न! पर तुम्हें कैसा घर चाहिए?

पांडे : छोटा सा ही। एक कमरा, एक बैठक, रसोई-घर, शौचालय और स्नान घर।

रामराव : आपको अलग मकान, बंगला चाहिए? आस पास बाग बगीचे वाला? या फ्लैट चाहिए?

पांडे : अलग मकान ही अच्छा है। पर उसका तो किराया बहुत ज़्यादा होगा न?

रामराव : कम से कम पाँच हजार तो होगा ही।

पांडे : बाप रे! मेरी क्षमता सिर्फ दो-ढ़ाई हजार रुपयों तक ही है।

रामराव : तब तो एकाछ फ्लैट मिलेगा। अलग मकान के लिए तो बस्ती से दूर जाना पड़ेगा। वह आप चलेगा क्या?

पांडे : चलेगा।

रामराव : लेकिन बस्ती में ही मकान तेना अच्छा। आप के आने जाने के पैसे बचेंगे।

पांडे : फिर भी पाँच हज़ार तो बहुत होंगे।

शमराव : मी तुम्हाला इथं जवळच एक घर दाखवीन. पहा पटतंय का? शाम, तू जरा दुकानात बसशील का? मी जरा यांच्याबरोबर बाहेर जाणार आहे. आम्ही तासाभरात परत येणार असू. सगळीकडे नीट लक्ष ठेवशील ना?

शाम : ठेवीन हो.

रामराव : चला तर, आपण आता चांगलं घर शोधणार आहेत.

पांडे : हो, तुमची एवढी मदत आहे. मग आपण चांगलं घर नक्की शोधणार.

रामराव : हो हो. आम्ही तुमच्यासारख्या घनिष्ठ मित्रासाठी चांगलं घर शोधणारच. कमी भाडं आणि सगळ्या सुखसोयींचं घर. "आखूड शिंगी बहुगुणी गाय."

रामराव : मैं तुम्हें यहीं पास में एक मकान दिखाऊँगा। देखो पसंद आएगा क्या? पसंद श्याम तुम जरा दुकान पर बैठोगे क्या? मैं इन के साथ जरा बाहर जानेवाला हूँ। एक घंटे में वापस आऊँगा। अच्छी तरह ध्यान रखोगे न?

शाम : जी हाँ, रखूँगा।

रामराव : चलो चलें। हम अब अच्छा घर ढूँढनेवाले है।

पांडे : हाँ, तुम्हारी इतनी मदद है। फिर हम अच्छा मकान जरूर ढूँढेंगे।

रामराव : हाँ, हाँ. हम तुम्हारे जैसे घनिष्ठ मित्र के लिए अच्छा मकान ढूँढेंगेही। कम किराया और सभी सुविधाओं वाला मकान। हींग लगे न फिटकरी, रंग भी चोखा आए।

शब्दार्थ

जवळपास	नजदीक
भाड्याचे घर	किराये का मकान
नवीन वस्ती	नई बस्ती
स्वतंत्र घर	अलग मकान
कुवत	क्षमता
छोटसं	छोटा सा
बैठकीची खोली	बैठक, बैठक का कमरा
स्वयंपाकघर	रसोई-घर
संडास	शौचालय
न्हाणीघर	स्नान घर
भाडं	किराया
फार	ज़्यादा
कमीतकमी	कम से कम
मला परवडणार नाही	मेरे बस का नहीं
दोन अडीच हजार	दो-ढाई हजार
गावापासून दूर	बस्ती से दूर
जाण्यायेण्याचे	आने-जाने के

वाचतील	बचेंगे
तरीही	फिर भी
जवळच	पास ही
दाखवीन	दिखाऊँगा
पटणे	पसंद आना, अच्छा लगना
यांच्याबरोबर	इन के साथ
बाहेर	बाहर
तासाभरात	एक घंटे में
लक्ष ठेव	ध्यान दो
चला घर शोधणारआहोत	चलो मकान ढूँढनेवाले है
आखूड	लंबाई में छोटा
शिंग	सींग
बहुगुणी	बहुत गुणोंवाली
काल	कल

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) रामराव राहतात त्या भागात खूप घरं रिकामी का आहेत?
2) पांडेना घर कसं हवं आहे?
3) पांडे घरभाड्यासाठी दर महिन्याला किती पैसे खर्च करू शकतात?
4) गावातच घर घेतल्याने पांडेना काय फायदा होतो?
5) 'आखूड शिंगी बहुगुणी गाय' ह्या म्हणीचा अर्थ स्पष्ट करा.

II उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए।

1. *उदाहरण:* मी आज बाजारात जाणार आहे.

1) मी सकाळी शाळेत .... (ये)
2) तू प्रियाकडे चहा .... (पी)
3) मी आज दुपारी पुस्तक .... (वाच)
4) मी परवा सिनेमा .... (पहा)
5) आम्ही आता आंबे .... (खा)
6) तुम्ही नाटकासाठी बाहुल्या .... (आण)
7) तो आज मीटिंगला .... (जा)
8) आपण खेळ .... (खेळ)

2. *उदाहरण:* मी अभ्यास करीन.

1) मी खोली स्वच्छ .... (कर)

2) तू सहलीला .... (जा)
3) आम्ही फुलं तोडायला .... (जा)
4) तुम्ही संध्याकाळी सिनेमा .... (दाखव)
5) उमेश आज गुलाबाची फुले .... (आण)
6) प्रिया स्पर्धेत भाग .... (घे)
7) त्या दोघी धबधब्याखाली उभ्या .... (राह)
8) बाबा टी.व्ही. वर सिनेमा .... (बघ)
9) ती पिल्लं बाहेर .... (ओरड)
10) आपण सर्व गाणी .... (ऐक)

III उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के निषेध वाचक रूप बनाइए।

उदाहरण: उमेश अहमदाबादला जाणार आहे.
उमेश अहमदाबादला जाणार नाही.

1) मी बाळाला डॉक्टरकडे घेऊन जाणार आहे.
2) मला खाऊ मिळणार आहे.
3) तू बटाटेवडे आणणार आहेस.
4) तुम्ही खंडाळ्याला जाणार आहात.
5) आम्ही नाटकात काम करणार आहोत.
6) खलनायक येऊन नायिकेला पळवणार आहे.
7) सुमन वसतिगृहात राहणार आहे.
8) त्या दोघी रंगीबेरंगी फुले तोडणार आहेत.
9) ती दोन्ही पिल्लं घर सोडून जाणार आहेत.
10) आपण आज सिनेमा पाहून हसणार आहोत.

IV उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर अनुच्छेद पूरे कीजिए।

1. सुधा, तू आज कुठे ....? मी तुझ्याबरोबर .... का? आपण दोघी प्रियाकडे पण ...., तिथे आपण खेळ .... खेळताना दमलो की प्रियाची आई चहा ...., चहा घेऊन आपण प्रियाबरोबर बागेत ....

ठीक आहे. तू माझ्याबरोबर .... पण मी सांगेन तसं तुला .... बागेत तू एकाही फुलाला हात ...., नाहीतर मी आईला ....

2. चल, आज आपण यात्रेत ...., आपल्याबरोबर सुधालाही .... यात्रेत खूप दुकाने .... खेळणी, खाण्यापिण्याच्या वस्तू, पाळणे .... आपण खेळण्याच्या दुकानातून खेळणी ...., जिलबी, बटाटेवडे .... पाळण्यात ...., जादूचे खेळ .... तेथे आपण फोटोही ....

V उदाहरण के अनुसार "लागेल" के साथ कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: स्वतंत्र घरासाठी थोडं दूर .... (जाणे)
स्वतंत्र घरासाठी थोडं दूर <u>जावं</u> <u>लागेल</u>.

1) तुला शांताबरोबर तिच्या बाहुलीशी .... (खेळणे)
2) मला उमेशबरोबर चहा .... (पिणे)
3) रमेशसाठी खाऊ .... (आणणे)
4) सुधाला पटना मिरचीच .... (घेणे)
5) प्रियाला सामान घेण्यासाठी .... (जाणे)
6) बाबांना प्रगतिपुस्तक .... (दाखवणे)
7) ते नाटक मला .... (बघणे)
8) प्रकाशला ती फाईल .... (पाठवणे)
9) पिल्लांना उन्हातच .... (खेळणे)
10) त्या मुलींना आज पावसात .... (भिजणे)
11) हीरोला वेडंवाकडं .... (नाचणे)
12) हरवलेले पुस्तक .... (शोधणे)

VI ठीक प्रकार से वाक्यांशों का मिलानकर वाक्य बनाइए।

कोणते खेळ	बघणार आहेस?
कोणता सिनेमा	खेळणार आहेस?
तू आज कुठे	सांगणार आहेस?
कुणाकुणाला	येणार आहेत?
काय गोष्ट	जाणार आहेस?
ते कुठून	देणार आहेस?
तो खाऊ कुणाला	बोलावणार आहेस?
प्रिया काय	शोधणार आहे?

VII उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए।

उदाहरण: राम धडा वाचेल. रामराव धडा वाचतील.

1) उमेश खाऊ आणेल. बाबा ....
2) तू ही साडी वापरशील. तुम्ही ....
3) शांता खंडाळ्याला जाईल. शांताबाई ....
4) मी गावाला जाईन. आम्ही ....
5) तू पत्र लिहिशील. तुम्ही ....

VIII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: तो शाळेत जाईल.
तो शाळेत जाणार असेल.

1) मी नाटकाला जाईन.
2) तो काम करेल.
3) ते सर्व क्रिकेट खेळतील.
4) सहलीला गेल्यावर सर्व विद्यार्थी गाणी म्हणतील.
5) मुलाच्या वाढदिवसाला ती खूप स्वादिष्ट स्वयंपाक करेल.

IX निम्न लिखित संवाद पूरे कीजिए।

1. मी शाळेत जाणार आहे, तू येणार आहेस का?
....
का येणार नाहीस?
....

म्हणजे काय होतंय?
....
डॉक्टरंकडे जाणार आहेस का?
....

2. प्रिया, चल आपण आज सिनेमाला जाऊ.
....
अंग, तो 'तंबोली टॉकीज़' मधला.
....
त्यात अमिताभ, श्रीदेवी आहेत.
....
हो. त्यात गाणीही छान आहेत.
....
आपल्याला घरून दोन वाजता निघावे लागेल.
....
नाही गं, पायी नको. आपण बसने जाऊया.
....

पढ़िए और समझिए

मनासारखे घर-एक स्वप्न!

रामभाऊंना अखेर मनासारखे घर मिळाले आहे. स्वस्त आणि मस्त! भाडं कमी पण सगळ्या सुखसोई आहेत. ते लवकरच त्या घरात जातील. कालच त्यांनी मला सांगितलं, "गोविंदरावांना घेऊन या घरी!" मी आणि आमची ही दर रविवारी जाणार असूं. तुम्हीही याल का? आपण एकदमच जाऊ या. काय म्हणता? वहिनींना जमणार नाही? ठीक आहे. तुम्ही नंतर जा. मी उद्या एखादी चक्कर टाकीन. त्यांना काही मदत लागणार असेल का, ते पाहीन. कदाचित ही देखील बरोबर येईल. नाहीतर ती आणि वहिनी नंतर जातील. जमेल तसं करू. त्यांना मदत करूया त्यांच्या आनंदात सामील होऊया.

आजकाल एकवेळ मनासारखा जावई मिळेल, मनासारखी सून मिळेल, पण भाड्यानं घर? आशाच सोडा. तशात रामभाऊंना हे घर मिळालं मग रामभाऊंचा आनंद काय सांगू? त्यांना स्वर्ग दोन बोटं उरला आहे.

शब्दार्थ

मनासारखे	मनचाहा
अखेर	आखिर
स्वस्त	सस्ता
मस्त	अच्छा, मजेदार
सुखसोई	सुखसुविधा
लवकरच	जल्दीही
सांगितले	बताया, कहा
घेऊन या	ले आओ
दर रविवारी	हर रविवार को
एकदम	एकाएक, अचानक
जमणार नाही	नहीं हो सकेगा
एखादी	कोई एक
मदत	मदद
कदाचित	शायद
नंतर	बाद में
जमेल तसं करु	जैसा होगा वैसा करेंगे
आनंदात सामील होणे	खुशी में शामिल होना
स्वर्ग दोन बोटे उरणे	स्वर्ग दो उंगलियों के दूरी पर होना/स्वर्गिक आनंद होना

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर मराठी मे दीजिए।

1) रामभाऊंचे घर कसे आहे?
2) ते त्यांच्या नव्या घरी केव्हा जातील?
3) रामभाऊंचा आनंद कसा सांगितला आहे?
4) 'स्वर्ग दोन बोटं उरणं' याचा अर्थ काय?
5) हा संवाद कोणाबरोबर चालला आहे?

II पाठ के आधार पर उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) सध्या या भागात .... घरं आहेत, नवीन .... आहे ना!
2) स्वतंत्र .... मात्र गावापासून थोडं .... जावं लागेल.
3) चला तर, घर .... या, आखूड शिंगी ....
4) आजकाल एकवेळ मनासारखा .... मिळेल मनासारखी .... मिळेल. पण भाड्यानं घर? .... सोडा.
5) त्यांना स्वर्ग .... उरला आहे.

III कम से कम दोष और ज्यादा से ज्यादा गुण या कम से कम नुकसान और ज्यादा फायदा दिखाने के लिए कौनसी कहावत इस पाठ में प्रयुक्त की गई है?
'बहुत ज्यादा खुशी होना' इस अर्थ का कौनसा मुहावरा इस पाठ में दिया गया है?

IV यहाँ 'बरोबर' इस शब्द के अलग अलग अर्थ देकर वाक्य दिए गए हैं। आप इसी अर्थों के अन्य तीन वाक्य बनाइए।

1) एक आणि एक बरोबर दोन.
2) माझ्याबरोबर वहिनी येतील.
3) तुम्ही म्हणता ते बरोबर आहे.

V नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्दों की जोड़ियाँ बनाइए।

नंतर, छोटं, फार, अखेर, मस्त, एकदम, शेवटी, छान, अचानक, जास्त, लहान, मग

VI हिंदी में अनुवाद कीजिए।

आम्ही मराठी शिकण्यासाठी पुण्याला 'पश्चिम विभागीय भाषा केंद्रा' त जाणार आहोत. "अजय, तू सुद्धा आमच्याबरोबर चलणार का? मराठीच्या अभ्यासासाठी वर्षभर तिथे राहणे तुला जमणार आहे का? तू आलास म्हणजे मजा येईल." आपण द्वितीय भाषा म्हणून 'मराठी'च शिकणार असू. कारण मराठीत संतसाहित्य खूप आहे. "मराठी शिकणार म्हणजे फक्त भाषाच शिकणार का?" "नाही, आम्ही फक्त भाषाच शिकणार नाही. भाषेबरोबर मराठी साहित्यही शिकणार

असू आणि वाचणार असू," कारण कोणत्याही भाषेबरोबर तिच्यातील साहित्याचा अभ्यास करायला हवाच. म्हणूनच भाषा शिकता शिकता आम्ही ब.पां.किर्लोस्कर, कृ.प्र.खाडिलकर, रा.ग.गडकरी, आचार्य प्र.के.अत्रे, मो.ग.रांगणेकर, पु.ल.देशपांडे इत्यादींची नाटकं वाचू आणि पाहू. पुण्याच्या 'बालगंधर्व रंगमंदिर', 'भरत नाट्य मंदिर', 'टिळक स्मारक मंदिर' आणि 'यशवंतराव चव्हाण नाट्यगृहा' त होणारे प्रत्येक नाटक आम्ही बघू. ना.सी.फडके, वि.स.खांडेकर, गंगाधर गाडगीळ, पु.भा.भावे यांच्या कथा वाचू. बा.सी. मर्ढेकर, वसंत बापट, दया पवार, नामदेव ढसाळ यांच्या कविता वाचू. लक्ष्मण माने, हंसा वाडकर यांची आत्मकथनं अभ्यासू. तसेच ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नामदेव, एकनाथ, रामदास इ.संतांचे लेखन आम्ही वाचणार आहोतच. यांतील काही पुस्तकं आणि मराठीचा शब्दकोश आपण घेऊ. आमच्या आसपास राहणाऱ्या प्रत्येकाशी आम्ही मराठीतच बोलू. त्याचा उपयोग आम्हाला मराठी शिकण्यासाठी होईल. आम्ही मराठीतील सुंदर सुंदर वाक्प्रचार, छोट्या छोट्या अर्थपूर्ण म्हणी, मराठीचे व्याकरण, मराठी भाषेची व साहित्याची वेशिष्ट्ये शिकू. मराठी लेखकांचे छान छान अनुभव वाचू. मराठी शिकताना कोणत्याही भाषेत असणारी लिहीणे, बोलणे, वाचणे, समजणे ही प्राथमिक कौशल्ये शिकू. तसेच निबंधलेखन, पत्रलेखन, संवादलेखन, सारांशलेखन, कल्पनाविस्तार, रसग्रहण, सारग्रहण इ.भाषेची प्रगत वैशिष्ट्येही शिकू. हे करता करता आमच्यातील प्रत्येकजण मराठी भाषेसह मराठी संस्कृतीशीही परिचित होणार असेल. कारण भाषा म्हणजे संस्कृतीचे एक अविभाज्य अंग असते. भाषा संस्कृतीतूनच निर्माण होत असते. संस्कृती भाषेला समृद्ध करीत असते. संस्कृतीशिवाय कोणत्याही भाषेचा विचार पूर्ण होणार नाही. आम्ही मराठी शिकणार म्हणजे महाराष्ट्र, मराठी माणूस जाणून घेऊ. आमची सगळ्यांची मातृभाषा हिंदी आहे. त्यामुळे मराठी शिकणे आम्हाला कठीण जाणार नाही. मराठी शिकून आमचा शब्दसंग्रह वाढेल. त्याचा आम्हाला भविष्यात निश्चितच उपयोग होईल. म्हणूनच आम्ही मराठी शिकणार आहोत. आम्ही मराठी शिकायला पुण्याला जाणार म्हणजे आम्ही चांगलं मराठी नक्की शिकणार. मला विश्वास आहे की, आम्ही 'पश्चिम विभागीय भाषा केंद्रा' त जाणार म्हणजे उत्तम मराठी शिकणारच. मराठी भाषा शिकून आम्ही आमचे ज्ञान व व्यक्तिमत्व अधिक समृद्ध आणि संपन्न करू.

VII मराठी में अनुवाद कीजिए।

जब शहर बढ़ेंगे तो नई समस्याएँ बढ़ेंगी ही। बाहर से आए लोगों को मकान चाहिए होंगे और नौकरी भी होगी। जितनी जनसंख्या बढ़ेगी उतनीही चीजों की माँग बढनेवाली होगी। नई-नई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए व्यवसायों को बढ़ाना होगा। जितना सबको चाहिए उतना देने के लिए योजनाएँ बनानी होंगी। यदि ऐसा नीहं होगा तो समाज सुखशांति से नहीं रह सकेगा।

VIII मकान ढूँढने के विषय में आप के अनुभवों पर मराठी में एक अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्न प्रकार के वाक्यों का परिचय दिया गया हैं।

उदाहरण:

1)	मग एखादा फ्लॅट मिळेल.	तब तो एकाध फ्लैट मिलेगा।
2)	तासाभरात परत येईन.	एक घंटे में वापस आऊँगा।
3)	चला तर, आपण घर शोधू.	चलो चलें, हम घर ढूँढेंगे।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित क्रिया रूपों पर ध्यान दीजिए। उन में सामान्य भविष्यत काल का प्रयोग किया गया है। मराठी में सामान्य भविष्यत काल के क्रिया रूप बनाने के लिए निम्नलिखित प्रत्यय पुरुष और वचन के अनुसार मूल क्रिया में जोडे जाते हैं।

उदाहरण:	*एकवचन*	*बहुवचन*
उत्तमपुरुष	जा + ईन = जाईन (जाऊँगा)	जा+ ऊ = जाऊ (जाएँगे/जाएँगी)
	कर + ईन = करीन (करूँगा/करूँगी)	कर + ऊ = करू (करेंगे/करेंगी)
मध्यमपुरुष	जा + शील = जाशील (जाएगा)	जा + आल = जाल (जाओगे)
	कर + शील = करशील (करेगा)	कर + आल = कराल (करोगे)
अन्य पुरुष (पु.)	जा + ईल = जाईल (जाएगा)	जा + तील = जातील (जाएँगे)
(पु.)	कर + एल = करेल (करेगा)	कर + तील = करतील (करेंगे)
(स्त्री.)	जा + ईल = जाईल (जाएगी)	जा + तील = जातील (जाएँगी)
(स्त्री.)	कर + एल = करेल (करेगी)	कर + तील = करतील (करेंगी)
(नपुं.)	जा + ईल = जाईल	जा + तील = जातील
(नपुं.)	कर + एल = करेल	कर + तील = करतील

क्रिया - जा

	एकवचन	*बहुवचन*	
उत्तमपुरुष	मी जाईन. मैं जाऊँगा/जाऊँगी।	आम्ही आपण	जाऊ. हम जाएँगे।
मध्यमपुरुष	तू जाशील. तुम जाओगे।	तुम्ही आपण	जाल. आप जाओगे ।
अन्यपुरुष	तो ती ते } जाईल. वह जाएगा/जाएगी।	ते त्या ती	जातील. वे जाएँगे/जाएँगी।

क्रिया - बस

	एकवचन		*बहुवचन*	
उत्तमपुरुष	मी बसेन. मैं बैठूँगा।	आम्ही आपण	}	बसू. हम बैठेंगे।
मध्यमपुरुष	तू बसशील. तुम बैठोगे।	तुम्ही आपण	}	बसाल. आप बैठेंगे/बैठेंगी।
अन्यपुरुष	तो / ती / ते } बसेल. वह बैठेगा/बैठेगी।	ते / ती	}	बसतील. त्या वे बैठेंगे/बैठेंगी।

ध्यान दे कि, मराठी में सामान्य भविष्यत् काल में क्रिया पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पडता। अन्य पुरुष एकवचन में स्वरांत धातुओं के ('जा') साथ '-एल' के स्थानपर '-ईल' प्रत्यय जुडता है।

2. मराठी में 'भविष्यत काल' के वैकल्पिक रूप निम्नप्रकार से होते हैं।

	एकवचन		*बहुवचन*	
उत्तमपुरुष	मी जाणार आहे. मैं जाने वाला हूँ। मैं जाने वाली हूँ।	आम्ही आपण	}	जाणार आहोत. हम जानेवाले हैं।
मध्यमपुरुष	तू जाणार आहेस. तुम जानेवाले/वाली हो।	तुम्ही आपण	}	जाणार आहात. आप जाने वाले/वाली हैं।
अन्यपुरुष	तो / ती / ते } जाणार आहे वह जाने वाला/वाली है।	ते त्या ती	}	जाणार आहेत. वे जाने वाले/वाली हैं।

उपर्युक्त वैकल्पिक भविष्यत् कालिक रूप मूल क्रिया में '-णार' प्रत्यय लगाकर उसके बाद योजक क्रिया 'आहे' (है) के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर बनते हैं।

3. मराठी में भविष्यत् काल के निषेधवाचक रूप बनाने के लिए केवल वैकल्पिक रूप 'जाणार आहे' में 'आहे' के स्थान पर 'नाही' का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण: मी यांच्याबरोबर बाहेर जाणार आहे.
मैं इनके जरा बाहर जाऊँगा।
मी यांच्याबरोबर बाहेर जाणार नाही.
मैं इनके साथ बाहर नाहीं जाऊँगा।

'मी जाईन' का भी निषेधवाचक रूप 'मी जाणार नाही' ही होगा।

4. नीचे दिए गए वाक्यों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1) ते तुम्हाला चालणार का? वह आप के लिए ठीक रहेगा क्या?
2) ते तुम्हाला चालणार आहे का? वह आप के लिए ठीक रहेगा क्या?

मराठी में प्रश्न वाचक वाक्यों में 'आहे' योजक क्रिया का प्रयोग ऐच्छिक रूप से होता है। उसका प्रयोग अनिवार्य नही हैं। मराठी में प्रश्न वाचक वाक्यों में 'आहे' योजक क्रिया बहुधा छोड दी जाती है। उपर्युक्त दोनों प्रश्नवाचक वाक्यों का अर्थ एक ही है।

5. निम्नलिखित वाक्यों के क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1) आपण आता चांगलं घर शोधणार आहोत.
   हम अब अच्छा घर ढूँढनेवाले हैं।
2) मग आपण चांगलं घर नक्की शोधणार.
   फिर हम अच्छा मकान जरूर ढूँढेंगे।
3) आम्ही तुमच्यासारख्या घनिष्ठ मित्रासाठी चांगलं घर शोधणारच.
   हम तुम्हारे जैसे घनिष्ठ मित्र के लिए अच्छा मकान ढूँढेंगे ही।

उपर्युक्त उदाहरण (1) में रेखांकित क्रिया शब्दों में सामान्य भविष्यत काल का प्रयोग किया गया है। उदाहरण (2) में 'आहोत' का प्रयोग नहीं किया गया है। मराठी में संकल्प या पूर्ण संभावना व्यक्त करने के लिए 'आहे' (है) योजक क्रिया को छोड दिया जाता है। उदाहरण (3) में क्रिया शब्द के साथ '-च' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। मराठी में संकल्प पर अधिक बल देने के लिए क्रिया शब्द के सामान्य भविष्यत् कालिक रूप के अंत में '-च' प्रत्यय जोडते हैं।

6. मराठी में शब्दों में '-सा', '-शी', '-से' प्रत्यय लगाकर शब्दों में एक प्रकार की मिठास लाई जाती है।

उदाहरण: छोटा + सा = छोटासा - छोटासा बंगला.
छोटा + शी = छोटीशी - छोटीशी झोपडी.
छोट + से = छोटसे - छोटेसे घर.

लहानसा, लहानशी, लहानसे. (छोटासा, छोटीसी)
छानसा, छानशी, छानसे. (अच्छास, अच्छीसी)
गोडसा, गोडशी, गोडसे. (मीठासा, मीठीसी)
थोडासा, थोडीशी, थोडेसे. (थोडासा, थोडीसी)
फारसा, फारशी, फारसे. (बहुतसा, बहुतसी)

7. मराठी में शब्दों की पुनरावृत्ति कर अर्थ की सघनता बढाई जाती है।
उदाहरण: गोड गोड गाणी (मीठे मीठे गाने)
छान छान चित्र (अच्छे अच्छे चित्र)
मंद मंद सुगंध (मंद मंद सुगंध)
सुंदर सुंदर फुलं (सुंदर सुंदर फूल)

8. मराठी में कुछ समानार्थी या विलोम शब्द साथ साथ जोडे जाते हैं।
मराठी में ऐसे शब्द प्रयोगों में 'सर्वसमावेशकता' का अर्थ अंतर्भूत होता है।
उदाहरण: जवळपास (आसपास), आसपास (आसपास), आजूबाजूला (आजूबाजू), फुटकातुटका (टूटाफूटा), ख्यालीखुशाली, असूननसून, मागेपुढे (आगेपीछे), आतबाहेर (अंदरबाहर), इकडेतिकडे (इधरउधर), जिथेतिथे (जहाँवहाँ), जिकडेतिकडे (जिधरउधर), उलटासुलटा (उलटासीधा)

9. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।
   1) स्वतंत्रच घर शोधणार असाल नं तुम्ही?
   2) आम्ही तासाभरात परत येणार असू.

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियारूपों से संभाव्य भविष्यत् काल का बोध कराया गया है। मराठी में ऐसे वाक्यों में मूल क्रिया को '-णार' प्रत्यय लगाकर अंत में 'अस' या 'नस' के उपयुक्त रूपों का प्रयोग होता हैं। इसी प्रकार से बननेवाले 'जा' मूल क्रिया के सभी संभाव्य भविष्यत्कालिक क्रिया रूप नीचे दिए गए हैं।

	एकवचन		*बहुवचन*
उ.पु.	मी गावाला जाणार असेन. मैं गाँव जानेवाला होऊँगा।		आम्ही/आपण गावाला हम गाँव जानेवाले होंगे।
म.पु.	तू गावाला जाणार असशील. तुम गाँव जानेवाले होगे।		तुम्ही/आपण गावाला जाणार असाल.
अ.पु.	तो गावाला जाणारा असेल. वह गाँव जानेवाला होगा।	ते	गावाला जाणार असतील. वे गाँव जानेवाले होंगे। वे गाँव जाने वाली होंगी।
	ती गावाला जाणार असेल. वह गाँव जानेवाली होगी।	त्या	
	ते गावाला जाणारा असेल.	ती	

धडा / पाठ 14

दवाखाना

डॉक्टर : नमस्कार शांताबाई. फार दिवसांनी दिसलात! नाही, म्हणजे डॉक्टर दूर ठेवणं चांगलंच! हं काय होतंय?

शांताबाई : डॉक्टर, मी काल मंडईत गेले. केळीच्या सालीवर पाय पडला. धाडकन पडले. पाय मुरगळला. कालचा दिवस सहन केलं, रात्रभर फार दुखला पाय! अख्खी रात्र झोपले नाही. कालच रक्तचंदनाचा लेप दिला. अजून ठणका थांबला नाही. सूजही उतरली नाही. नीट चालवतही नाही. खाली बसवत नाही. कसाबसा जिना उतरले. विचार केला एकदा दाखवावं.

डॉक्टर : चांगल केलंत. अशा गोष्टींकडे दुर्लक्ष करु नयेच. हं बघू बरं.

शांताबाई : आई गं! फार दुखतंय. अगदी सहन करवत नाही.

डॉक्टर : बरं झालं, हाड दुखावलं नाही. साधा मुकामार आहे. हे मलम लावा आणि गरम पाण्यानं शेका. पायाला विश्रांती द्या.

शांताबाई : चालवतच नाही माझ्याच्यानं! सक्तीची विश्रांती आहेच. ठीक आहे. नमस्ते. येते हं.

डॉक्टर : अच्छा, अरे सुनीता, तू कधी आलीस?

सुनीता : आत्ताच आले डॉक्टर!

डॉक्टर : काय म्हणतायत बाळराजे?

दवाखाने में

डॉक्टर : नमस्ते शांताजी। बहुत दिनों बाद दिखीं। वैसे डॉक्टर को दूर रखना अच्छा ही है। कहिए क्या तकलीफ़ है?

शांताबाई : डॉक्टर, कल मैं सब्ज़ी मंडी गई। केले के छिलके पर पैर पड़ा। धड़ाम से गिर पड़ी। पैर मोचा गया। कल तो सह लिया। रातभर पाँव खूब दुखा। पूरी रात सोई नहीं। लाल चंदनका लेप भी किया। अभी तक दर्द कम नहीं हुआ। सूजन भी नहीं उतरी। ठीक से चला भी नहीं जाता। नीचे बैठा भी नही जाता। जैसे-तैसे सीढियाँ उतरी। सोचा एक बार दिखा लूँ।

डॉक्टर : अच्छा किया। ऐसी बातो में लापरवाही ठीक ही नहीं। देखूँ तो।

शांताबाई : ओ माँ! बहुत दर्द है। सहा नहीं जाता।

डॉक्टर : अच्छा हुआ, हड्डी में चोट नहीं आई। साधारण सी गुम चोट है। यह मरहम लगाइए और गरम पानीसे सेंकिए। पैर को आराम दीजिए।

शाताबाई : मुझ से चला ही नहीं जाता। जबरदस्ती का आराम ही है। अच्छा नमस्ते डॉक्टर साहब चलती हूँ।

डॉक्टर : अरे सुनीता तुम कब आई?

सुनीता : अभी आई डॉक्टर!

डॉक्टर : क्या कहता है राजा बेटा?

सुनीता : ताप आला आहे. अंग तापलं आहे. सकाळी उलटी झाली. रात्रीही खूप ताप होता. एक दोनदा जुलाबही झाले. ह्यानं काही खाल्लं नव्हतं काल. खेळायलाही गेला नव्हता. पोट अगदी खपाटीला गेलंय. अगदी सुकून गेलाय. कालच सासूबाईही गावाला गेल्या. त्यांच्याबरोबर हेही गेले. ती दोघं गेली आणि ह्याला ताप आला.

डॉक्टर : इतकी का घाबरली आहेस? तो ठीक आहे. थोडा मलूल झालाय इतकंच! हं बघू. भरपूर पाणी पाज त्याला. लिंबाचं सरबत, गोड ताकही पाज. हे औषध दिवसातून तीन वेळा दे. काळजी करू नकोस.

सुनीता : बरं डॉक्टर, जीव भांड्यात पडला!

सुनीता : बुखार आ गया है। बदन तप गया है। सबेरे उल्टी हुई। एक दो बार दस्त भी हुए। रात में भी बहुत बुखार था। इसने कल से कुछ नहीं खाया है। पेट एकदम पीठ से लग गया है। एकदम सूख गया है। कल सासूजी भी गाँव गईं। उनके साथ ये भी गए। वे दोनों गए और इसे बुखार आया।

डॉक्टर : इतनी क्यों घबराई हुई हो? वह ठीक है। थोड़ा कुम्हला गया है, बस! हाँ देखूँ। खूब पानी पिलाओ उसे। नीबू की शिकंजी और मीठा छाछभी देना। यह दवाई दिन में तीन बार दो। चिंता न करो।

सुनीता : ठीक है डॉक्टर, मेरी जान में जान आई!

शब्दार्थ

फार दिवसांनी	बहुत दिनों के बाद
दूर ठेवणे	दूर रखना
पाय पडला	पाँव पड़ गया
धाडकन पडणे	धड़ाम से गिरना
पाय मुरगळणे	पाँव में मोच आना/पैर मोचाना
सहन केले	सह लिया
रात्रभर	रातभर
अख्खी रात्र	पूरी रात
रक्तचंदन	लाल चंदन
सूज	सूजन
उतरणे	उतरना
कसाबसा	किसी तरह
जिना	सीढ़ियाँ
विचार केला	सोचा
दुर्लक्ष करणे	अनदेखा करना अपेक्षा करना
दुखावणे	दर्द होना

मुकामार	गुम चोट, अंदरुनी चोट
मलूल होणे	फीका पड़ जाना
गरम पाण्याने शेकणे	गरमपानी से सेंकना
विश्रांती देणे	आराम देना
सक्तीची विश्रांती	जबरदस्ती का आराम
कधी	कब
आत्ताच	अभी, तुरंत
ठणका	तीखा दर्द
ताप	बुखार
जुलाब	दस्त
पोट खपाटीला जाणे	पेट पीठ से लगना
सुकून जाणे	सूख जाना
घाबरणे	घबराना
मलम लावणे	मरहम लगाना
जीव भांड्यात पडणे	जान में जान आना

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) शांताबाई दवाखान्यात का गेल्या?
2) डॉक्टरांनी शांताबाईंना काय सांगितले?
3) सुनीताच्या बाळाला काय झाले आहे?
4) डॉक्टरांनी सुनीताला काय सल्ला दिला?
5) 'जान में जान आना' या अर्थी या पाठात कोणता वाक्प्रचार आला आहे ते सांगा.

II प्रत्येक वाक्य में रेखांकित किए गए क्रिया रूप के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर चार-चार वाक्य बनाइए।

1) मी शाळेत आलो.
(जा, पड, पोच, नीघ)
2) मी शाळेत आले.
(बस, झोप, हस, रड)
3) तू शाळेत आलास.
(जेव, पोच, आहे, रड)
4) तू शाळेत आलीस.
(जा, पोच, हस, आहे)

5) आम्ही शाळेत आलो.
(हस, जा, पोच, बस)
6) तुम्ही शाळेत आलात.
(जा, आहे, नीघ, रड)
7) आपण शाळेत आलो.
(जा, पोच, हस, बस)
8) आपण शाळेत आलात.
(झोप, नीघ, रड, हस)
9) राम शाळेत आला.
(पोच, नीघ, रड, बस)
10) मंजू शाळेत आली.
(नीघ, झोप, रड, जा)
11) मांजर शाळेत आलं.
(पळ, बस, झोप, नीघ)
12) मुलगे शाळेत आले.
(नीघ, झोप, पोच, जेव)
13) मुली शाळेत आल्या.
(रड, हस, बस, पोच)
14) जनावरं ही शाळेत आली.
(घुस, आहे, नीघ, पोच)

III उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: राधाबाई मंडईत .... (पड)
राधाबाई मंडईत पडल्या.

1) आम्ही पहाटे लवकरच .... (ऊठ)
2) आपण पहाटे लवकरच .... (जा)
3) सुनीता, तू कधी .... (ये)
4) राम, तू कधी .... (जेव)
5) त्यांना पाहून आमचं कुत्रं .... (भुंक)
6) तुम्ही किती .... तेव्हा! (हस)
7) आपण किती वाजता ....? (नीज)
8) रमेश सकाळीच .... (ऊठ) आणि गावाला .... (जा)
9) सुनीता .... (जा) आणि शांताबाई .... (ये)
10) दगड मारताच सगळी कुत्री .... (पळ)
13) राधाबाई मंडईत .... (जा)
14) माधवराव निवृत्त .... (हो)

IV कोष्ठक मे दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर अनुच्छेद पूरे कीजिए।

1. तू तेव्हा लहान .... (आहे). मी तुमच्या घरी .... (ये). चार पाच दिवस .... (रहा). तू एक दिवस खूप .... (रड). कुणाचंही .... नाहीस (ऐक). शेवटी सगळी हताश .... (हो).

2. आठवतं का तुला? आपण त्यावेळी पाचवीत .... (आहे). मी नाटकात राजा .... (हो). तू राणी .... (हो). तुझ्या सगळ्या मैत्रिणी दासी .... (हो). दहावीतली मीरा माझी आई .... (हो). आणि शेखर माझे वडील .... (हो) सगळे प्रेक्षक खूश .... (हो). आपणही खूश .... (हो).

V नीचे दिए गए दो वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थानपर कोष्ठक में दिए गए शब्द तथा क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर नए वाक्य बनाइए।

उदाहरण: मी त्यावेळी पाचवीत होते.
मी डॉक्टर झालो.

(तू, आम्ही, तुम्ही, आपण, राम, सीता, रामभाऊ, सीताबाई, मुली, मुलगे, मुलं)

VI उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए सकारात्मक वाक्यों के निषेधवाचक रूप बनाइए।

उदाहरण: मी बाहेरून आले. मी बाहेरून आले नाही.

1) मी काल मंडईत गेले.
2) मी रात्रभर झोपलो.
3) तू धाडकन पडलीस.
4) तू खूप घाबरलास.
5) आम्ही कसाबसा जिना उतरलो.
6) तुम्ही डॉक्टरकडे गेला का?
7) आपण चांगलं केलं.
8) सुनीता घाबरली.
9) रमेश गावाला गेला.
10) सुनीताच्या सासूबाई गावाला गेल्या.
11) सासूबाई आणि यजमान गावाला गेले.

VII उदाहरण के अनुसार उपयुक्त क्रियारूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: मी बसतो. मी बसतो आहे. मी बसलो. मी बसलो आहे.

1) मी .... मी उठतो आहे. मी .... मी ....
2) मी झोपतो मी .... मी झोपले. मी ....
3) मी जातो. मी जातो आहे. मी .... मी ....
4) मी नाचतो. मी .... मी .... मी ....

VIII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दी गई क्रियायों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर नीचे दिए गए वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: मी नाचत नाही. मी नाचलो नाही.

तो .... तो .... (ऊठ)

ती .... ती .... (गा)

ते .... ते .... (ये)

मुलं .... मुलं .... (घाबर)

आम्ही .... आम्ही .... (झोप)

IX कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के उपयुक्त रूपों से अनुच्छेद पूरा कीजिए।

माझं मांजर काल सकाळीच माझ्या खोलीत .... (ये). ते सरळ पलंगाकडे .... (जा). तिथं .... (बस). इतक्यात बाहेर कुत्रा .... (भुंक). मांजर .... (घाबर). त्याची शेपटी .... (फुग). ते गुरगुरायला .... (लाग). कुत्रा खोलीत .... (शिर). मांजर जोरात .... (पळ). कपाटावर .... (चढ). कुत्रा खूप वेळ .... (बस). शेवटी .... (कंटाळ). आणि बाहेर .... (पळ).

X ठीक प्रकार से वाक्यांशों का मिलान कर वाक्य बनाइए।

1)	रमा गावाला	घाबरले.
2)	कुत्रा रमावर	निघालो.
3)	सुनीता सासूबाईंना	गेली.
4)	आम्ही स्टेशनवर	निघालास.
5)	तुम्ही जिन्यावरून	भुंकला.
6)	रामभाऊ कुत्र्याला	म्हणाली.
7)	तू कालच गावाहून	पडलात.

XI उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* माझ्याच्यानं चालवतं. मी चालतो.
   1) मला काम करवतं.
   2) तुला इथे बसवतं का?
   3) तिला सहन करवतं.
   4) त्यांच्याच्यानं राहवतं.

2. *उदाहरण:* मला तितकं चालवलं नाही. मी तितका चाललो नाही.
   1) त्याला ते खाववलं नाही.
   2) त्यांच्याच्यानं जाववलं नाही.
   3) तिला ते नेसवलं नाही.
   4) तुला एवढं करवलं नाही.

पढ़िए और समझिए

माझी फजिती

मी नुकताच डॉक्टर झालो तेव्हाची गोष्ट! एका लहान बाळानं माझी फजिती केली. खेळता खेळता त्याला एक औषधाची बाटली सापडली. ती त्यानं उघडली. दुधासारखं पांढरंशुभ्र औषध! सगळं औषध सांडलं. बहुतेक त्यानं चव पाहिली. बहुधा त्याला चव आवडली नाही. त्यानं भोकाड पसरलं. आई जवळच होती. तिनं पटकन बाळाला उचललं. तोंडाला पांढरं! सगळं औषध सांडलेलं! बाटलीवर लिहिलेलं "विष"! ती घाबरली. बाटली घेतली. बाळाला घेतलं. माझ्याकडे आली. मी नवा डॉक्टर! ती नवी आई!

मला या विषबाधेवरचा उपाय माहीत नव्हता. मी बाटलीबरोबरचं माहितीपत्रक वाचलं. त्यातही उपाय नव्हता. मी घाबरलो.

पण एव्हाना माझा पेशंट, ते लहान बाळ मजेत खेळू लागलं. बाळ मजेत हसलं. पण आई रडायची थांबली नाही. मी क्षणभर विचार केला. तिची समजूत घातली. म्हणालो, याला काहीही झालं नाही. फारसं औषध याच्या पोटात गेलं नाही. माझा निर्णय अचूक ठरला. इतका मोठा निर्णय मी कसा घेतला?

माझे वडीलही मुलांचे डॉक्टर होते. ते मला एकदा म्हणाले, "बाळांजवळ एक बॅरोमीटर असतो, तो म्हणजे त्यांचं हसणं! बाळ हसलं की अचूक समजतं की बाळ आजारी नाही. कुठलाही आजार झाला की प्रथम नाहीसं होतं ते हे हसू!"

शब्दार्थ

फजिती	फजीहत
नुकताच	अभी अभी
तेव्हाची गोष्ट	तब की बात
औषध	दवा
बाटली	बोतल
उघडणे	खोलना
पांढरेशुभ्र	शुभ्र सफेद
औषध सांडणे	दवा का गिरना
चव पाहणे	चखना
बहुधा	शायद/बहुधा
आवडणे	अच्छा लगना
भोकाड पसरणे	धाड़ मार कर रोना,
पटकन उचलणे	झट से उठाना
तोंड	मुँह

विषबाधा	विष का असर
उपाय	उपाय
माहिती पत्रक	सूचना-पत्रक
घाबरलो	घबरा गया
मजेत हसणे	मजे में हँसना
क्षणभर	पलभर, क्षणभर
समजूत घालणे	समझाना, शांत करना
फारसे	ज्यादा नहीं, बहुत अधिक नही
निर्णय	निर्णय
अचूक	अचूक
आजार	बीमारी

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) नवीन डॉक्टरची फजिती कोणी केली?
2) बाळाची आई का घाबरली?
3) बाळाबाबत डॉक्टरनी कोणती निर्णय दिला?
4) बाळाने औषधाची चव घेताच काय केले?
5) बाळांजवळचा बॅरॉमीटर कोणता?

II नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित शब्द का प्रयोग कर और दो वाक्य बनाइए।
मी धाडकन पडले.

III कुछ क्रियाओं से संज्ञाएँ बनती हैं। नीचे ऐसे ही कुछ शब्द दिए गए हैं और उनका वाक्यों में प्रयोग किया गया है। उदाहरण के अनुसार दो वाक्य बनाइए।

उदाहरण:	खेळणे -	खेळ -	तो खेळतो. तो खूप खेळ खेळतो.
	ठणकणे -	ठणका -	माझा पाय ठणकतो. माझ्या पायाला ठणका लागतो.

1) सूजणे - सूज
2) उतरणे - उतार
3) शेकणे - शेक
4) तापणे - ताप
5) उलटणे - उलटी

IV नीचे दिए गए शब्दों में से विलोम शब्द चुनकर जोड़ियाँ बनाइए।
उपाय, काल, लहान, गार, नवा, उद्या, गरम, जुना, अपाय, मोठा, सापडणे, उघडणे, सांडणे, येणे, झोपणे, उठणे, भरणे, झाकणे, हरवणे, जाणे

V 'मन का बोझ हलका होना' का अर्थ देने वाले पाठ में आए मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

VI नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।
मंडई, मुरगळला, लेप, ठणका, मलम, विश्रांती, जुलाब, उलटी, सासूबाई, ताप, औषध, सरबत

VII निम्न लिखित कथनों को घटनानुसार सही क्रम में लिखिए।
पाय मुरगळला.
शांताबाई धाडकन पडल्या.
रात्रभर पाय फार दुखला.
अख्खी रात्र त्या झोपल्या नाहीत.
केळीच्या सालीवर त्यांचा पाय पडला.
काल शांताबाई मंडईत गेल्या.
त्यांनी पायाला रक्तचंदनाचा लेप दिला.
अजून सूज उतरली नाही.

VIII हिंदी में अनुवाद कीजिए और उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

बाबासाहेब आंबेडकरांची गणना केवळ भारतातीलच नव्हे तर पूर्ण जगातील थोर नेत्यांमध्ये होते. ते एक थोर विद्वान होते. त्यांनी विविध विषयांवर माहितीपूर्ण लेखन केले आहे. स्वतंत्र भारताच्या राज्य घटनेची जगभरात अत्यंत पुरोगामी आणि समानतेवर भर देणारी म्हणून प्रशंसा झाली आहे. त्या घटनेचे ते शिल्पकार होते.

अस्पृश्यता आणि इतर सामाजिक अन्यायाविरुद्ध त्यांनी लढा दिला. रुढिवाद्यांनी त्यांचा अनेक तऱ्हांनी छळ केला. पण ते नमले नाहीत. अत्यंत खडतर परिस्थितीचा सामना करुन त्यांनी अत्युच्च शिक्षण प्राप्त केले. ते बॅरिस्टर झाले. सत्य आणि मानवामानवामधली समानता यांचा पुरस्कार करताना त्यांनी कुठल्याही विरोधाची व टीकेची पर्वा केली नाही.

बुद्धधर्मातील सत्य, अहिंसा आणि समानता या तत्त्वांनी प्रेरित होऊन त्यांनी त्या धर्माचा स्वीकार केला. त्यांच्या लक्षावधी अनुयायांनीही त्यांचे अनुकरण करून बुद्धधर्मात प्रवेश केला. अन्यायासमोर ते कधीच झुकले नाहीत.

त्यांचा आदर्श आपण सगळ्यांनी डोळयासमोर ठेवायला हवा. त्यांचे विचार सर्वांनाच मार्गदर्शक ठरतील.

IX मराठी में अनुवाद कीजिए।

मेरे सर में बहुत दर्द हो रहा था। मैं रातभर सोया नहीं। सबेरे उठते ही डॉक्टर के पास गया। मैंने कहा 'डॉक्टर मुझे कुछ दीजिए। बहुत सरदर्द हो रहा है'। डॉक्टर ने मुझे देखा। कुछ गोलियाँ दीं। मैने गोलियाँ लीं। सरदर्द कम हो गया। दूसरे दिन से नियमित रूप से आफिस जाने लगा।

X आप आपके बीमार मित्र से मिलने के लिए अस्पताल गए थे। इस के उपर मराठी में एक अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्नलिखत वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1) काल मंडईत गेले. कल (मैं) बाज़ार गई।
2) केळीच्या सालावर पाय पडला. केले के छिलके के उपर पैर पडा।
3) पाय मुरगळला. पैर मोचा गया।
4) रात्रभर फार दुखला पाय. रातभर पैर बहुत दुखा।
5) सासुबाई गावाला गेल्या. सासूजी गाँव गईं।

इन सब वाक्यों में अकर्मक क्रियाओं के सामान्य भूतकाल का प्रयोग किया गया है। मराठी में ऐसी क्रियाओं में भूतकाल के लिए 'ल' प्रत्यय लगाया जाता है। इस के पश्चात पुरुष, लिंग, वचन सूचक प्रत्यय लगाए जाते हैं। ये प्रत्यय वर्तमानकाल के प्रत्ययों से कुछ भिन्न हैं। मूलक्रियारूप 'बस' को लगनेवाले पूरे भूतकालिन प्रत्ययों की सूची नीचे दी गई है।

		एकवचन	*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी बसलो.	आम्ही/आपण बसलो.
		मैं बैठा।	हम बैठे।
म.पु.	*(स्त्री.)*	तू बसली/बसलीस.	तुम्ही/आपण बसलात.
		तुम बैठी।	आप बैठे/आप बैठी।
अ.पु.	*(पु.)*	हा/तो बसला.	हो/ते बसले.
		यह/वह बैठा।	वे बैठे।
	(स्त्री.)	ही/ती बसली.	ह्या/त्या बसल्या. ये/वे बैठीं।
	(नपुं.)	हे/ते बसले.	ही/ती बसली.

II नीचे दिए गए प्रयोगों पर ध्यान दीजिए।

1) अख्खी रात्र झोपले नाही.
2) सूजही उतरली नाही.
3) अजून ठणका थांबला नाही.

उपयुक्त भूतकालिक क्रिया के रूप के बाद 'नाही' जोड़ कर उपर्युक्त वाक्यों के निषेधवाचक रूप बनाए जाते हैं। ध्यान दीजिए कि ऐसा करते हुए मध्यम पुरुष एकवचन का 'स' और बहुवचन का 'त' हट जाता है।

'बस' क्रिया के लिए सामान्य भूतकाल के निषेधवाचक रूप नीचे दिए गए हैं।

		एकवचन		*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी बसलो नाही. मैं नहीं बैठा।	आम्ही आपण	बसलो नाही. हम नहीं बैठे।
	(स्त्री.)	मी बसले नाही. मैं नहीं बैठी।		
म.पु.	*(पु.)*	तू बसला नाहीस. तुम नहीं बैठे।	तुम्ही	बसला नाहीत. आप नहीं बैठे/बैठीं।
	(स्त्री.)	तू बसली नाहीस. तुम नहीं बैठीं।	आपण	
अन्य पु.	*(पु.)*	तो बसला नाही. वह नही बैठा।	ते बसले नाहीत. वे नहीं बैठे।	
	(स्त्री.)	ती बसली नाही। वह नहीं बैठी।	त्या बसल्या नाहीत. वे नहीं बैठीं।	
	(नपुं.)	ते बसलं नाही.	ती बसली नाहीत.	

III नीचे दिए गए वाक्यों के क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।

1) सुनीता, तू कधी <u>आलीस</u>?सुनीता तुम कब आई?

2) कालच सासुबाई <u>गावाला गेल्या</u>. कल ही सासू जी गाँव गई।

भूतकालवाचक प्रत्यय '-ल' लगने पर कुछ अकर्मक क्रियारूपों का रूप बदल जाता है।

कुछ सामान्यतः प्रयोग में आने वाली क्रियाओं के ऐसे परिवर्तित रूप नीचे दिए गए हैं।

ये	- आ	(मी आलो	- मैं आया)
जा	- गे	(मी गेलो	- मैं गया)
मर	- मे	(मी मेलो	- मैं मर गया)
पळ	- पळा	(मी पळालो	- मैं दौडा)
मिळ	- मिळा	(ती मिळाली	- वह मिल गई)
पहा	- पाहि	(मी पाहिला	- मैं ने देखा)
हो	- झा	(मी झालो	- मैं हो गया)
उड	- उडा	(मी उडालो	- मैं उड गया)

नीचे लिखे वाक्य प्रयोग देखिए।

1) सकाळी उलटी झाली - सबेरे उल्टी हुई।
2) जुलाबही झाले - दस्त भी हुए।
3) रात्रीही खूप ताप होता - रात में भी बहुत बुखार था।

मराठी में 'आहे' क्रियारूप के भूतकालिक रूप तथा 'हो' क्रियारूप के वर्तमानकालिक रूप पूरी तरह समान होते हैं। केवल संदर्भ से उनका भेद स्पष्ट होता है। 'हो' क्रियारूप का भूतकाल में परिवर्तित 'झा' होता है। उस के सामान्य भूतकालिक रूप निम्नप्रकार के होते है।

		एकवचन	*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी डॉक्टर झालो.	आम्ही/आपण डॉक्टर झालो.
		मैं डॉक्टर बना।	हम डॉक्टर बने।
	(स्त्री.)	मी डॉक्टर झाले.	
		मैं डॉक्टर बनी।	
म.पु.	*(पु.)*	तू डॉक्टर झालास.	तुम्ही/आपण डॉक्टर झालात.
		तू डॉक्टर बना।	आप डॉक्टर बने।
	(स्त्री.)	तू डॉक्टर झालीस.	
		तू डॉक्टर बनी।	
अ.पु.	*(पु.)*	तो डॉक्टर झाला.	ते डॉक्टर झाले.
		वह डॉक्टर बना।	वे डॉक्टर बने।
	(स्त्री.)	ती डॉक्टर झाली.	त्या डॉक्टर झाल्या.
		वह डॉक्टर बनी।	वे डॉक्टर बनीं।
	(नपुं.)	ते झाले/झालं.	ती झाली.

'आहे' (है) के सामान्य भूतकालिक रूप निम्नप्रकार के हैं।

		एकवचन	*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी बँकेत होतो.	आम्ही/आपण बँकेत होतो.
		मैं बँक में था।	हम बँक में थे।
	(स्त्री.)	मी बँकेत होते.	
		मैं बँक में थी।	
म.पु.	*(पु.)*	तू बँकेत होतास.	तुम्ही/आपण बँकेत होता/होतात.
		तू बँक में था।	आप बँक में थे।
	(स्त्री.)	तू बँकेत होतीस.	
		तू बँक में थी।	आप बँक में थी।
अ.पु.	*(पु.)*	हा/तो बँकेत होता.	हे/ते बँकेत होते.
		यह/वह बँक में था।	ये/वे बँक में थे।
	(स्त्री.)	ही/ती बँकेत होती.	ह्या/त्या बँकेत होत्या.

		यह/वह बँक में थी।	वे बँक में थी।
	(नपुं.)	हे/ते बँकेत होतं.	ही/ती बँकेत होती.

IV नीचे दिए हुए वाक्यों की ओर ध्यान दीजिए।

1) ह्यानं काही खाल्लं नव्हतं काल.
2) खेळायलाही गेला नव्हता.

'नाही' के भूतकाल के रूप-जो विशेषप्रकार के होते हैं। नीचे दिए गए हैं।

		एकवचन	*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी नव्हतो.	आम्ही/आपण नव्हतो.
		मैं नहीं था।	हम नहीं थे।
	(स्त्री.)	मी नव्हते.	
		मैं नहीं थी।	
म.पु.	*(पु.)*	तू नव्हतास.	तुम्ही/आपण नव्हता.
		तुम नहीं थे।	आप नहीं थे।
	(स्त्री.)	तू नव्हतीस.	
		तुम नहीं थी।	
अ.पु.	*(पु.)*	हा/तो नव्हता.	हे/ते नव्हते.
		यह/वह नहीं था।	ये/वे नहीं थे।
	(स्त्री.)	ही/ती नव्हती.	ह्या/त्या नव्हत्या.
		यह/वह नहीं थी।	ये/वे नहीं थी।
	(नपुं.)	हे/ते नव्हतं.	ही/ती नव्हती.

V निम्नलिखित वाक्यप्रयोगों को देखिए।

1)	पोट अगदी खपाटीला गेलंय. (गेलं आहे)	पेट एकदम पीठ से लग गया है।
2)	थोडा मलूल झालाय. (झाला आहे)	बदन तप गया है।
3)	इतकी का घाबरली आहेस?	इतनी क्यों घबराई हुई हो?

मराठी में पूर्ण वर्तमान काल के रूप बनाने के लिए क्रिया के सामान्य भूतकाल के रूप के आगे 'आहे' क्रिया का उपयुक्त रूप जोड़ दिया जाता है।

		एकवचन	*बहुवचन*	
उत्तमपुरुष	*(पु.)*	मी आलो आहे.	आम्ही/आपण	आलो आहोत.
		मैं आया हूँ।		हम आए हैं।
	(स्त्री.)	मी आले आहे.		

		मैं आई हूँ।	
मध्यमपुरुष	*(पु.)*	तू आला आहेस.	तुम्ही / आपण आला आहात.
		तू आया है।/तुम आएँ हो।	आप आए हैं।
	(स्त्री.)	तू आली आहेस.	
		तुम/तू आयी हो।	
अन्यपुरुष	*(पु.)*	तो आला आहे.	ते आले आहेत.
		वह आया है।	वे आए हैं।
	(स्त्री.)	ती आली आहे.	त्या आल्या आहेत.
		वह आयी है।	वे आयीं हैं।
	(नपुं.)	ते आलं आहे.	ती आली आहेत.

VI मराठी में पूर्ण वर्तमान के निषेधवाचक रूप बनाने के लिए क्रिया के भूतकालिक रूपों और 'आहे' योजक क्रिया के उपयुक्त रूपों के बीच 'नाही' लगाते हैं।

	तो झोपला आहे.	वह सोया है।
निषेधवाचक	तो झोपला नाही आहे.	वह सोया नही है।

VII नीचे दिए हुए वाक्यों में क्रियारूपों के प्रयोग पर ध्यान दीजिए।

1) मला/माझ्याच्यानं चालवतंच नाही.
2) मला/माझ्याच्यानं खाली बसवतंच नाही.

हिंदी की 'मुझ से बैठा जाता है', 'मुझ से चला जाता है' जैसी संरचना के लिए मराठी में 'मला बसवतं', 'मला चालवतं' ऐसे रूप बनते हैं। इस हेतु क्रिया में '-अव' प्रत्यय लगाते हैं, और उस के बाद कालवाचक प्रत्यय लगाते हैं। ऐसे प्रयोग में क्रियारूप हमेशा अन्यपुरुष नपुंसकलिंग एकवचन में होता है।

धडा पाठ 15

राधाबाई साक्षर होतात

सुमन : अगं सीमा, ही कामांची यादी कोणासाठी ठेवली आहेस? तुझे यजमान करतात हे सगळं?

सीमा : झालं! हे आणि काम? अगं ही यादी राधाबाईसाठी आहे.

सुमन : त्या कधी वाचायला शिकल्या? त्या तर अंगठे बहाद्दर होत्या ना?

सीमा : अगं, आमच्या श्रीराम आणि उर्मिलाचं काम आहे ते!

सुमन : म्हणजे?

सीमा : अगं मध्यंतरी सासूबाईंना बरं नव्हतं आणि मला नेमकं त्याच दिवसात ऑफिसचं फार काम होतं, बाहेरगावी दौराही होता. म्हणून, मी राधाबाईंना आमच्याकडेच राहायला सांगितलं.

सुमन : बरं बाई, राहिल्या त्या?

सीमा : अगं तो आहे एकटा जीव सदाशिव. तसंच मुलांवर त्यांचा फार जीव! मुलांनाही त्यांचा फार लळा लागला आहे. त्याच तीन-चार महिन्यांत मुलांनी वाचायला शिकवलं त्यांना.

सुमन : मुलांनी?

सीमा : अगं, त्यावेळी सगळीकडे "एकाला तरी साक्षर करा" या मोहिमेचं वारं होतं ना! त्यामुळे मुलांनी राधाबाईंना शिकवायचं मनावर घेतलं.

सुमन : पण फक्त मुलांनी कसं शिकवलं?

राधाबाई साक्षर होती है

सुमन : अरे सीमा, यह कामों की सूची किस के लिए रखी है? क्या तुम्हारे पति यह सब करते हैं?

सीमा : फिर तो हो चुका। मेरे पति और काम? अरे यह सूची तो राधाबाई के लिए है।

सुमन : उसने पढ़ना कब सीख लिया? वह तो अंगूठा छाप थी न?

सीमा : अरे, यह हमारे श्रीराम और उर्मिला का काम है।

सुमन : मतलब?

सीमा : पिछले दिनों सासूजी की तबीयत ठीक नहीं थी। उन्हीं दिनो मुझे ऑफिस का बहुत काम था। बाहर का दौरा भी था। इसलिए मैंने राधाबाई से अपने यहाँ ही रहने के लिए कहा।

सुमन : अच्छा! रही वह?

सीमा : अरे वह तो है अकेली जान! और फिर बच्चों पर भी वह जान छिडकती (है)। बच्चे भी उससे खूब हिल गए हैं। उन्हीं तीन चार महीनों में बच्चों ने उन्हें पढ़ना सिखाया।

सुमन : बच्चों ने?

सीमा : हाँ। उन दिनों "हर एक पढ़ाए एक" की हवा जोरों पर थी न। इसीलिए बच्चों ने राधाबाई को पढ़ाने की मन में ठान ली।

सुमन : पर सिर्फ बच्चों ने कैसे सिखाया?

सीमा : अगं, सासुबाईंनीही त्यात रस घेतला. पडल्या-पडल्या मदत केली. मुलांच्या शिक्षकांनीही त्यांना मार्गदर्शन केलं.

सुमन : आणि खर्च?

सीमा : मुलांनी जुन्या वह्यांचे पाठकोरे कागद शिवून वह्या केल्या. माळ्यावरून जुनी पुस्तकं, पाट्या शोधून काढल्या.

सुमन : म्हणजे तुला कल्पनाही नव्हती?

सीमा: नाही गं! मुलांचं, सासूबाईचं आणि राधाबाईंचे गुपित होतं ते. मी एक दिवस राधाबाईना वर्तमानपत्र वाचताना पाहिलं आणि मला धक्काच बसला. मी विचारलं तेव्हा त्यांनी लाजत लाजत मला सगळं सांगितलं.

सुमन : म्हणजे 'इच्छा तिथे मार्ग' हे त्यांनी सिद्ध केलं तर!

सीमा : हो ना! आणि माझंही काम सुलभ झालं. आता सगळी कामं राधाबाईच करतात. मी फक्त पैसे आणि यादी टेबलावर ठेवते. सासूबाईंचं औषध पाणी, बँकेची कामं, पोस्टाची कामं राधाबाईच करतात. महिन्याच्या खरेदीचाही नीट हिशोब ठेवतात. म्हणतात ना, 'आंधळा मागतो एक डोळा, देव देतो दोन।

सीमा : सासूजी ने भी इस में रूचि ली। पड़े पड़े ही उन्हों ने बच्चों की मदद की। बच्चों के शिक्षकों ने भी उनका मार्गदर्शन किया।

सुमन : और खर्चा?

सीमा : बच्चों ने पुरानी कॉपीयों के कोरे सिलकर कॉपीयाँ तैयार कीं। ऊपरी पर से पुस्तकें और स्लेट ढूँढ निकाली।

सुमन : यानि कि तुम्हें इसकी कल्पना भी नहीं थी?

सीमा : नहीं थी। यह तो बच्चों, सासूजी और राधाबाई का गुप्त रहस्य था। मैंने एक दिन राधाबाई को समाचारपत्र पढ़ते देखा और मै दंग रह गई। जब मैंने पूछा तो उन्हों ने यह सब शर्माते-शर्माते बताया।

सुमन : यानि कि उन्हों ने 'जहाँ चाह वहाँ राह' कहावत को चरितार्थ कर दिखाया।

सीमा : हाँ तो! और (इससे) मेरा भी काम सरल हो गया। अब सभी काम राधाबाई ही करती हैं। मैं केवल (काम की) सूची और पैसा मेज़ पर रखती हूँ। सासूजी को दवाई देना, बैंकका काम, पोस्ट ऑफिस के काम राधाबाई ही करतीं हैं। महिने कि खरीदारी का भी ठीक से हिसाब रखती है। कहते हैं न कि 'अंधा मांगे एक आँख, भगवान देता है दो'।

शब्दार्थ

साक्षर	साक्षर
काम	काम
यजमान	पति
वाचणे	पढ़ना
शिकणे	सीखना
अंगठे बहाद्दर	अँगूठा छाप

बरे नव्हते	तबीयत ठीक नही थी
नेमके त्या दिवशी	ठीक उसी दिन
दौरा	दौरा
राहणे	रहना
एकटा जीव सदाशिव	अकेली जान
लळा लागणे	से हिल जाना
मोहीम	अभियान
मनावर घेतले	करने की ठान ली
रस घेणे	रुचि लेना
पडल्या पडल्या	पड़े-पड़े
मार्गदर्शन	मार्गदर्शन
जुनी वही	पुरानी कापी
पाठकोरे कागद	एक तरफ कोरा कागज
माळा	ऊपरी
शोधून काढणे	खोज निकालना
कल्पनाही नसणे	कल्पना भी न होना
गुपित	गुप्त बात, राज़
धक्का बसणे	दंग रह जाना
लाजत लाजत	शरमाते हुए
इच्छा	इच्छा
मार्ग	राह
सिद्ध करणे	कर दिखाना
सुलभ	आसान
हिशेब ठेवणे	हिसाब रखना
आंधळा मागतो एक डोळा देव देतो दोन	अंधा माँगे एक आँख भगवान दे दो

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) राधाबाईंना कोणी शिकविले?
2) राधाबाई किती दिवसात साक्षर झाल्या?
3) राधाबाई शिकल्या त्यावेळी कोणती मोहिम सुरू होती?
4) मुलांनी राधाबाईंच्या शिक्षणाचा खर्च कसा भागविला?
5) राधाबाई साक्षर झाल्याचे सीमाला केव्हा व कसे समजले?
6) हल्ली राधाबाई कोणकोणती कामे करतात?
7) या पाठात आलेले वाक्प्रचार व म्हणी सांगून त्यांचे अर्थ सांगा.

II उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए।

1. *उदाहरण:* सुधा येते. सुधा आली.
   1) मी येतो.
   2) मी जाते.
   3) आम्ही बसतो.
   4) तू जेवतेस.
   5) तू खळतोस.
   6) तुम्ही वाचता.
   7) रामू बसतो.
   8) प्रिया पडते.
   9) रामभाऊ येतात.
   10) आपण खेळतो.

III उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* सुधा आंबा खाते. सुधाने आंबा खाल्ला.
   1) आई चहा करते.
   2) उमेश वही आणतो.
   3) उमेश पुस्तक वाचतो.
   4) प्रिया पेन शोधते.
   5) बाबा पेपर वाचतात.
   6) त्या पानं आणतात.

2. *उदाहरण:* तुम्ही पेरु खाता. तुम्ही पेरु खाल्ला.
   1) मी फुलं आणते.
   2) मी गूळ आणतो.
   3) आपण चिंचा खातो.

3. *उदाहरण:* शांताचा पाय दुखतो. शांताचा पाय दुखला.
   1) रामभाऊंचा पाय मुरगळतो.
   2) बाळाला ताप येतो.
   3) शांताला उलटी होते.

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के निषेधवाचक रूप बनाइए।

उदाहरण: त्याने रक्तचंदनाचा लेप दिला.
त्याने रक्तचंदनाचा लेप दिला नाही.

1) मी काल मंडईत गेलो.
2) मी गावात गेलो.
3) आम्ही सामान आणले.

4) तू आंबा खाल्लास.
5) प्रियाने पुस्तक वाचले.
6) तुम्ही खाली पडलात.
7) तो डॉक्टरकडे गेला.
8) सासूबाई गावाला गेल्या.
9) सुचेता आणि प्रिया भांडल्या.
10) आपण घरी गेलो.

V कोष्ठक में दिए गए क्रिया शब्द के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर अनुच्छेद पूरे कीजिए।

1) मी रोज दुपारी काम .... (करणे)
पण आज मी .... (झोपणे), कारण मी कालपासून खूप .... (दमणे) आणि माझं डोकंही .... (दुखणे).
2) मी रोज फुलं .... (आणणे) पण मी आज .... (अभ्यास करणे) आईने अगोदरच फुलं .... (आणणे)
3) मी रोज दुपारी .... (झोप) पण आज मी .... (झोप) कारण मी कालपासून खूप .... (झोप) म्हणून आज मला झोप .... (ये).
4) मी संध्याकाळी रोज .... (खेळणे) पण आज मी आराम .... (करणे) कारण माझा पाय .... (मुरगळणे).
5) रामू आज गावाला .... (निघणे) कारण त्याच्या वडिलांनी त्याला .... (बोलावणे). मागच्या महिन्यातच तो गावाहून इथे .... (येणे).

VI बायीं ओर दिए गए वाक्यांशों के साथ दाहिनी ओर दिए गए वाक्यांशों को ठीक प्रकार से मिलान कर वाक्य बनाइए।

तू घरी	वाचले.
तू बागेतून फुले	खाल्ला.
बाबांनी वर्तमानपत्र	मुरगळला.
उमेशने आंबा	आलास.
शांताबाईचा पाय	आणलीस.
सुचेताने खोली	गेल्यात.
त्या मुली बाजारात	केला.
बाळूने अभ्यास	स्वच्छ केली.

VII नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित शब्द के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर नए वाक्य बनाइए।

सासूबाईंनी मला निरोप पाठवला.
(साडी, फुले, पुस्तकं, तिकिट, डबा, मासे, बांगड्या)

VIII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: मी राधाबाईला यादी देते.
मी राधाबाईला यादी दिली.

1) तू राधाबाईला लिहायला शिकवतेस.
2) तू मित्राला खाऊ देतोस.
3) आम्ही मित्राला पत्र लिहितो.
4) तुम्ही अनिताला साडी देता.
5) तू अमिताला गाणं शिकवतेस.
6) उमेश प्रकाशला सिनेमा दाखवतो.
7) प्रिया बाळाला नवीन कपडे घालते.
8) पिल्लांची आई पिल्लांसाठी अळ्या आणते.
9) राधाबाई मुलांना जेवण वाढतात.
10) ते तुम्हाला पुस्तक देतात.

IX उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: मीना आंबा खात नाही.
मीनाने आंबा खाल्ला नाही.

1) उमेशला चहा आवडत नाही.
2) विद्यार्थी अभ्यास करत नाहीत.
3) आम्ही रेडिओ ऐकत नाही.
4) मी सिनेमा पहात नाही.
5) आपण काम करत नाही.
6) तू भाजी आणत नाहीस.
7) प्रकाश शाळेत येत नाही.
8) उमा फुलं तोडत नाही.

X कोष्ठक में दिए गए सूचना के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1) आजोबा लाडू खातात. (भूतकाळ)
2) झाडांना रंगीत फुले येतील. (भूतकाळ)
3) आईने चहा केला. (वर्तमान)
4) मुलांनी केळी खाल्ली. (भविष्यकाळ)
5) उर्मिला कविता वाचते. (भूतकाळ)
6) आम्ही पत्र लिहिले. (वर्तमान)
7) तुम्ही बाजारात जाता. (भूतकाळ)

8) आपण फिरायला जाऊ. (भूतकाळ)

XI उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: घरात पाय टाकताच रेडिओ सुरू!
घरात पाय टाकल्या टाकल्या रेडिओ सुरू!

1) शोधायला लागताच घर कसं मिळेल?
2) संध्याकाळ होताच प्रकाश अभ्यास करतो.
3) रंगमंदिरात पाऊल टाकताच नाटक सुरू झाले.
4) पाहताच रमेशाला मुलगी आवडली.
5) मी आंबा खाली पडताच उचलला.

XII नीचे दिए गए प्रत्येक वाक्यों में प्रयुक्त द्वित्व का प्रयोग कर तीन-तीन वाक्य और बनाइए।

1) पडल्या पडल्या सासूबाईंनी मुलांना मदत केली.
2) बसल्या बसल्या राधाबाईंनी तांदूळ निवडले.
3) बससाठी थांबल्या थांबल्या मी स्वेटर विणला.
4) झोपल्या झोपल्या तो घोरत होता.
5) उभं राहिल्या राहिल्या तिने भाजी चिरून टाकली.

XIII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजीए।

उदाहरण: शांताबाईचा पाय .... (दुखत, दुखणे, दुखला)
शांताबाईचा पाय दुखला.

1) मी बाजारात .... (गेला, गेले, गेलांत)
2) मी शाळेत .... (आला, आलो, आलात)
3) तू रक्तचंदनाचा लेप .... (दिली, दिलास, दिलो)
4) तू रात्री .... (झोपलो, झोपलास, झोपलात)
5) तुम्ही दोघी डॉक्टरकडे .... (गेला, गेल्यात, गेले)
6) आम्ही दोघी बहिणी .... (भांडले, भांडलो, भांडलात)
7) सालीवर सुधाताईंचा पाय .... (पडले, पडलो, पडला)
8) उमेश त्याच्या मित्राकडे .... (जेवला, जेवलात, जेवले)
9) प्रिया बाहुलीशी .... (खेळलो, खेळली, खेळलात)
10) आपण जिना .... (उतरले, उतरल्या, उतरलो)

XIV नीचे दिए गए संवाद पूरे कीजिए।

मोहन : आई, बघ सरकारने काय नारा काढला आहे.

आई : ....
मोहन : अग तेच, एकाला तरी साक्षर करा.
आई : ....
मोहन : म्हणजे प्रत्येकाने एका तरी व्यक्तीला लिहिणे वाचणे शिकवावे.
आई : ....
मोहन : असे केल्याने आपल्या देशातील सर्व व्यक्तीसाक्षर होतील.
आई : ....
मोहन : हो तू ठीकच वाचलेस. केरळमधे शंभर टक्के लोक साक्षर आहेत.
आई : ....
मोहन : त्यामुळे आपल्या देशाची प्रगती होईल. आपल्या देशात खऱ्या अर्थानं लोकशाही येईल.

पढ़िए और समझिए

निरोप समारंभ

प्रौढसाक्षरता वर्गाच्या शेवटच्या दिवशी फार गंमत झाली. आम्ही आमच्या बाईंना निरोप दिला. रामूने बाईंना भेट देण्यासाठी छान कल्पना सांगितली. आम्ही स्वतः तयार केलेलं एक हस्तलिखित बाईंना भेट दिलं. आम्ही सगळ्यांनी एक एक छोटी गोष्ट लिहिली. कुणी लिहीता न आल्यामुळे झालेल्या फजितीचा प्रसंग लिहिला तर कुणी लिहिता आल्यामुळे झालेल्या फायद्याची गोष्ट लिहिली. कुणी लिहायला वाचायला शिकतानाच्या गंमती लिहिल्या. कुणाचे प्रसंग करुण होते तर कुणाचे विनोदी होते.

शेवटच्या दिवशी आमचे सर्वांचेच डोळे भरून आले. आनंदाश्रूंनी आणि दुःखाश्रूंनीही! खूप जणांनी भाषणंही केली. सर्वात लाजाळू वाटणाऱ्या शांताबाईही छान बोलल्या. त्या म्हणाल्या," या वर्गानं आमचं अपंगत्व घालवलं. आम्हाला कुठेही जाण्याचा व काहीही करण्याचा आत्मविश्वास दिला."

बाईंनी समारोपाचं भाषण फारच सुंदर दिलं. त्या म्हणाल्या, "तुम्ही सगळ्यांनी मला खूप काही दिलंत. मलाही आत्मविश्वास मिळाला, समाधान मिळालं आणि इतके सारे सुशिक्षित नागरिकही मिळाले."

सर्वांनी या दिवसाची आठवण म्हणून रोज वर्तमानपत्र वाचण्याची आणि नीट विचार करून मतदान करण्याची शपथ घेतली.

शब्दार्थ

निरोप	बिदाई संदेश
शेवटचा दिवस	आखरी दिन
गंमत	मज़ाक, मौज-मस्ती
हस्तलिखित	हस्तलिखित
फजिती	फजीहत

विनोदी	मज़ाकिया, विनोदी
डोळे भरुन येणे	आँख भर आना
अश्रू	आँसू
लाजाळू	शर्मिली
अपंगत्व	पंगुता
आत्मविश्वास	आत्मविश्वास
समाधान	समाधान
आठवण	याद, स्मृति
वर्तमानपत्र	अखबार
शपथ	शपथ, कसम

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) बाईंना कोणती भेट दिली?
2) मुलांनी कोणकोणत्या विषयावर लिहिले?
3) शांताबाईंनी काय सांगितले?
4) सर्वांनी कोणती शपथ घेतली?
5) आनंदाश्रूच्या विरुद्धार्थी कोणता शब्द वापरतात?

II वार्तालाप और अनुच्छेद के आधार पर वाक्य पूरे कीजिए।

1) मग मी राधाबाईंना .... राहायला ....
2) अग तो आहे .... जीव ....
3) मुलांच्या .... त्यांना मार्गदर्शन ....
4) शेवटच्या दिवशी आमचे .... डोळे भरून आले .... आणि .... ही.
5) मलाही .... मिळाला .... मिळालं आणि इतके .... नागारिकही मिळाले.

III कुछ संज्ञाओं में 'आळू' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाया जाता है। नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उदाहरण के अनुसार विशेषण बनाइए।

उदाहरण: लाज + आळू = लाजाळू
कृपा, दया, विसर, माया, झोप, पाय, कष्ट

IV मराठी में 'सु' और 'अ' लगने से विलोम शब्द बनते हैं। नीचे दिए गए विलोम शब्दों को पढ़िए और कुछ अन्य शब्द बनाइए।

सुशिक्षित	अशिक्षित
सुविचार	अविचार
सुजाण	अजाण
सज्ञान	अज्ञान

V नीचे कुछ मुहावरे दिए गए हैं और उन से संबंधित वाक्य भी दिए गए है। उपयुक्त मुहावरों को चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।
आंघळा मागतो एक डोळा देव देतो दोन, वारे असणे, रस घेणे, एकटा जीव सदाशिव, मनावर घेणे, लळा लागणे

1) राधाबाई अगदी एकट्या आहेत, त्यांना कोणीही नाही. ....
2) सगळीकडे निवडणूकीचाच विषय आहे. ....
3) मी अभ्यास करण्याचा निश्चय केला आहे. ....
4) सासूबाई मुलांच्या खेळात लक्ष घालतात. ....
5) मुलांचा कुत्र्यावर फार जीव आहे. ....
6) अपेक्षेपेक्षा कितीतरी जास्त मिळणे. ....

VI नीचे दिए गए वाक्यों पर ध्यान दीजिए।

1) झालं! हे आणि काम!
   हे काम करणं शक्यच नाही.
2) झालं! माझा आणि पहिला नंबर!
3) झालं! ती आणि सुंदर!

किसी असंभव बात को व्यक्त करने के लिए उपरोक्तनुसार वाक्य प्रयोग किया जाता है। इसी के समान अन्य वाक्य बनाइए।

VII कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

1) सीमाने कामाची यादी .... साठी ठेवली. (सासूबाई, राधाबाई, यजमान)
2) राधाबाईना .... शिकवले. (सासूबाई, शिक्षक, मुलं)
3) सीमा बाहेरगावी .... साठी गेली. (लग्न, मीटिंग, दौरा)
4) मुलांवर राधाबाईंचा फार .... आहे. (राग, जीव)
5) मुलांना .... मार्गदर्शन केले. (शिक्षक, सासूबाई, वडील)
6) मुलांनी जुन्यावह्या, पाटी, पुस्तक .... वरून शोधून काढले.
   (कपाट, माळा)

VIII हिंदी में अनुवाद कीजिए और उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

साक्षरतेची आणि स्त्रीशिक्षणाची चळवळ यांत महात्मा ज्योतीबा फुले यांचे योगदान फार महत्त्वाचे आहे. ते एकोणिसाव्या शतकातील महाराष्ट्रातील खूप मोठे समाजसुधारक होते. त्यांचा जन्म १८२७ मध्ये आणि मृत्यू २८ नोव्हेंबर १८९० ला इ ाला. ते पुण्यातील गंजपेठेत राहात असत. त्यांनी समाजातील तळागाळातील लोकांच्या उत्कर्षासाठी आणि स्त्रीशिक्षणासाठी अथक परिश्रम केले. स्त्रिया, अस्पृश्य इ. च्या समस्यांकडे त्यांनी समाजाचे लक्ष वेधले. १८५४ मध्ये पुण्यात त्यांनी फक्त मुलींसाठी शाळा सुरू करून स्त्रियांना शिक्षण द्यायला सुरूवात केली, स्त्रीशिक्षणाचा पाया घातला. त्यासाठी, त्यांनी स्वतःची पत्नी सावित्रीबाई फुले यांना शिकविले, शिक्षिका बनविले. आपल्या पत्नीकडून स्त्रीशिक्षणाचे कार्य जोमाने करवून घेतले. महात्मा फुल्यांनी यशवंत नावाच्या अनाथ मुलास दत्तक घेऊन त्यास डॉक्टर बनविले. अस्पृश्यांसाठी स्वतःच्या घरचा पाण्याचा हौद खुला केला. तत्त्वासाठी त्यांनी घरही सोडले. पण तत्त्वाशी तडजोड केली नाही. त्यांनी समाजातील अन्याय, अनिष्ट रूढी-परंपरा, अंधश्रद्धा, अज्ञान इ. वर टीका केली आहे. हे सर्व करताना समाजाने त्यांना खूप त्रास दिला. त्यांचा व सावित्रीबाईंचा छळ केला. जुन्या रूढीवादी लोकांना फुल्यांचे विचार पटले नाहीत. फुल्यांनी समता, स्वातंत्र्य, मानवता आणि विश्वबंधुत्व या जीवन मूल्यांचा स्वीकार व प्रचार करून समाजात जागृती घडविली. अन्यायाविरुद्ध बंड केले. तसेच त्यांनी 'अभंगा' सारखी रचना केली. त्यास ते 'अखंड' म्हणायचे. समाजकार्य करता करता त्यांनी 'गुलामगिरी', 'शेतकऱ्याचा आसूड', 'सार्वजनिक सत्यधर्म' इ. ग्रंथही लिहिले. समाजसुधारणेसाठी विचार व्यक्त करून त्याप्रमाणे कार्य करणारे सुधारक होते ते! त्यांच्या विचारांचे सर्वांनी अनुकरण करायला पाहिजे. त्यांचे विचार व कार्य समाजाला मार्गदर्शक ठरेल. सरकारने त्यांच्या पुण्यातील घराचे 'समताभूमी' या नावाने 'राष्ट्रीय स्मारक' केले आहे. महात्मा फुले समाजातील तळागाळातील लोकांसाठी व स्त्रियांसाठी चंदनासारखे झिजले. म्हणूनच लोकांनी त्यांना 'महात्मा' ही उपाधी दिली. त्यांना 'स्त्रीशिक्षणाचा प्रणेता' म्हणणे योग्य आहे.

IX मराठी में अनुवाद कीजिए।

मेरा गाँव पूर्णतः निरक्षर था। गाँव में कोई स्कूल भी नहीं था। बच्चे पड़ोस के गाँव के स्कूल में पढ़ने जाते थे। छुट्टियों में मैं प्रौढ़ों को साक्षर बनाने के अभियान में जुट गया। पहले अपने ही घरके लोगों को पढ़ाने-लिखाने का निश्चय किया। वे तैयार भी हो गए। लेकिन दादा-दादी तैयार नहीं हुए। मैंने उन्हें समझाने का काफी प्रयास किया। आखिर वे तैयार हुए। अपने काम में मुझे सफलता मिली। इसी प्रकार साक्षरता का प्रचार कार्य मैं ने घर से ही शुरु किया।

X प्रौढसाक्षरता के बारे में मराठी में एक अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

I नीचे दिए गए वाक्यों के क्रिया रूपों पर ध्यान दीजिए।

1)	मी राधाबाईंना आमच्याकडेच राहायला सांगितलं.	मैंने राधाबाई को अपने यहाँ ही रहने को कहा।
2)	तीन चार महिन्यांत मुलांनी वाचायला शिकवलं त्यांना.	तीन चार महिनों में बच्चोंने उन्हें पढ़ना सिखाया।
3)	सासुबाईंनीही त्यात रस घेतला.	सासूजी ने इस में रुचि ली।
4)	त्यांनी मुलांना मदत केली.	उन्होंने बच्चों की मदद की।
5)	शिक्षकांनीही त्यांना मार्गदर्शन केलं.	शिक्षकों ने भी उनका मार्गदर्शन किया।
6)	मी एक दिवस राधाबाईंना वर्तमानपत्र वाचतांना पाहिलं.	(मैंने एक दिन राधाबाई को समाचारपत्र पढते देखा।)
7)	त्यांनी मला सगळं सांगितलं.	(उन्हों ने मुझे सब कुछ बताया।)

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया के (सकर्मक) भूतकालिक रूपों का प्रयोग किया है।

जब कि हिंदी में सकर्मक क्रिया के भूतकालिक रूप के प्रयोग में कर्ता में 'ने' प्रत्यय लगता है, मराठी में 'नी' प्रत्यय, या 'ने', या 'नं' केवल अन्यपुरुष में लगता है। मी (मैं), तू (तू, तुम), आपण (आप) के साथ नहीं लगता है। इन प्रयोगों में क्रिया कर्म की अनुगामिनी होती है, और क्रियारूप में कर्म के पुरुष, वचन, लिंगानुसार प्रत्यय लगते हैं। 'नी' के स्थानपर 'ने' या 'नं' का भी प्रयोग करते हैं।

ध्यान दें कि मराठी में सामान्य भूतकाल में 'तू' के साथ क्रिया रूप के अन्त में 'स' प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण:	तू आंबा खाल्लास.	तुम ने आम खाया।
	तू आंबे खाल्लेस.	तुम ने आम खाए।
	तू पोळी खाल्लीस.	तुम ने रोटी खाई।

II नीचे दिखाए प्रयोगों की ओर ध्यान दीजिए।

सासुबाईंनी रस घेतला.	सासूजी ने रुचि ली।
मुलांनी मदत केली.	बच्चों ने मदद की।
मी राधाबाईंना पाहिले.	मैंने राधाबाई को देखा।

भूतकालिक प्रत्यय लगने से पहिले कुछ क्रियाओं के रूप में परिवर्तन होता है। सामान्यतः प्रयोग में आनेवाली कुछ क्रियाओं के परिवर्तित रूप निम्न प्रकारों के होते हैं।

खा (खाना)	- खाल (खाल्ला - 'खाया')
कर (करना)	- के (केल - 'किया')

धू (धोना)	- धुत (धुतला - 'धोया')
घाल (पहनना)	- घात (घातला - 'पहना')
घे (लेना)	- घेत (घेतला - 'लिया')
दे (देना)	- दि (दिला - 'दिया')
बघ (देखना)	- बघित (बघितला - 'देखा')
सांग (कहना)	- सांगित (सांगितला - 'कहा')
माग (माँगना)	- मागित (मागितला - 'माँगा)
पहा (देखना)	- पाहि (पाहिला - 'देखा')
वहा (चढ़ाना)	- वाहि (वाहिला - 'चढ़ाया')
म्हण (कहना)	- म्हणा/म्हट (म्हटलं - 'कहा') (म्हणाला -'कहा')

III कुछ क्रियाओं के कर्ता में 'ने' ऐच्छिक रूप से लगता है। जब 'ने' नहीं लगता है तो क्रिया कर्ता की अनुगामिनी होती है। ने-लगने पर कर्म की अनुगामिनी होती है।

उदाहरण: नेस - पहनना, पी -पीना, म्हण-कहना

म्हणा	- तो म्हणाला	उसने कहा।
म्हट	- त्याने म्हटले	उसने कहा।
नेस	- तो धोतर नेसला. त्याने धोतर नेसले.	उसने धोती पहनी।
पी	- तो कॉफी प्यायला. त्याने कॉफी प्यायली.	उसने काफी पी।

'ने' लगने पर 'म्हण' धातु का 'म्हट' हो जाता है।

ध्यान दें - 'पी' धातु के साथ कोई कर्म न होनेपर उसका अर्थ शराब पीना होता है। इस स्थिती में 'ने' नहीं लगता।

IV ऐसी भी कुछ क्रियाएँ हैं जिन में सकर्मक होने पर भी उन के कर्ता में 'ने' नहीं लगता और क्रिया कर्ता के अनुसार होती है।

शीक - सीखना
विसर - भूलना
बोल - बोलना
चुक - चुकना

तो (पु.) सायकल शिकला.	उसने(पु.) साइकिल सीखी।
ती (स्त्री.) सायकल शिकली.	उसने (स्त्री.) साइकिल सीखी।
तू सायकल शिकलास.	
आम्ही सायकल शिकलो.	हमने साइकिल सीखी।

V हिंदी के समान ही मराठी में क्रिया रूप को दोबार प्रयुक्त कर कार्य का तत्काल होना सूचित किया जाता हैं।

उदाहरण: तो बसल्या बसल्या खुर्ची मोडली.
(उसके बैठते-बैठते कुर्सी टूट गई।)
तो बसल्या बसल्या घंटा वाजली.
(उसके बैठते-बैठते घंटी बज गई।)

इस रूप का प्रयोग 'बैठे बैठे' इस अर्थ में भी होता है। किंतु इस प्रयोग में आवश्यकतानुसार 'ने' का प्रयोग होता है।

त्याने बसल्याबसल्या एक किलो बर्फी खाल्ली. (उस ने बैठे बैठे एक किलो बरफी खाई।) तिने बसल्या बसल्या सगळे गहू निवडले (उसने बैठे बैठे सारे गेहूँबीने।)

धडा पाठ 16

अपघात

विनोद : अरे शाम, ही बातमी वाचली आहेस? "कात्रज घाटात भीषण अपघात." बापरे! काय भयानक अपघात!

शाम : ती बातमी वाचल्यावर माझ्या अंगावर तर काटाच उभा राहिला.

विनोद : कारे?

शाम : अगदी अशाच अपघातात मी सापडलो होतो.

विनोद : तू? कधी? कुठे?

शाम : फार वर्ष झाली. मी त्यावेळी कॉलेजात शिकत होतो. बहुतेक पहिल्या वर्षाला होतो. परीक्षा संपली होती. आम्हा सगळ्यांना घरी जायची घाई झाली होती. मी ही घरी यायला निघालो होतो.

विनोद : म्हणजे कोल्हापूरलाच ना?

शाम : हो. कोल्हापूरलाच! गाडीचं आरक्षण आधी करुन ठेवलं नव्हतं. पण, रातराणीत जागा मिळायला त्रास झाला नव्हता.

विनोद : त्यावेळी रातराण्या होत्या?

शाम : नुकत्याच सुरू झाल्या होत्या. त्या दिवशी चालक फारच उशिरा आला. गाडी जवळ जवळ अर्धा पाऊण तास उशिरा सुटल्यामुळे वेळ भरून काढायला त्यानं गाडी भरधाव सोडली होती. आम्ही सगळेच जीव मुठीत धरून बसलो होतो. कात्रजचा घाट सुरळीत

ओलांडल्यावर सर्वांनीच सुटकेचा

दुर्घटना

विनोद : अरे श्याम, यह खबर पढ़ी हैं (क्या)? "कात्रज घाटी में भीषण दुर्घटना"। बापरे कितनी भयंकर दुर्घटना!

श्याम : वह खबर पढते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

विनोद : क्यों?

श्याम : बिलकुल ऐसी ही दुर्घटना में मैं फस गया था।

विनोद : तुम कब? कहाँ?

श्याम : बहुत साल बीत गए। तब मैं कॉलेज में पढ़ता था। शायद पहले वर्ष में था। परीक्षा खतम हुई। हम सब घर जाने की जल्दी में थे। मैं अपने घर जाने के लिए निकला था।

विनोद : यानि कोल्हापूर के लिए न?

श्याम : हाँ कोल्हापूर के लिए। बस में सीट का आरक्षण पहले नही कर रखा था। लेकिन रातराणी में सीट मिलने में कोई दिक्कत नही हुई थी।

विनोद : तब रातरानियाँ थीं?

श्याम : तभी शुरु हुई थीं। उस दिन ड्राइवर काफी लेट आया। बस करीब करीब आधा-पौन घंटा देर से छूटी। समय पूरा करने के लिए उसने बहुत तेजी सें गाडी चलाई थी। हम सभी कलेजा थाम कर बैठे थे। कात्रज की घाटी आसानी से पार करने के बाद सभी ने चैन की

निश्वास टाकला होता. सगळे निर्धास्त झाले होते. कुणाकुणाला डुलक्याही लागल्या होत्या. माझा शेजारी तर माझ्या खांद्यावर डोकं ठेवून झोपला होता. तो तसा झोपल्यामुळे माझा खांदा अवघडला होता. मला मात्र झोपच आली नव्हती. कसली तरी भीती वाटत होती. धाकधूक वाटत होती. अस्वस्थता वाटत होती. त्यातच खंबाटकी घाट सुरू झाला.

विनोद : का रे? थांबलास का?

शाम : ती धोक्याची वळणं. मी अगदी सांभाळून बसलो होतो. अशाच एका वळणावर समोरून एक बस आली. दोन्ही गाड्या वेगात होत्या. दोघाही चालकांनी जोरात ब्रेक लावले. पण काहीच उपयोग झाला नाही. बघता बघता ती बस शेजारच्या दरीत कोसळली. मी सुन्न झालो होतो. आमची बसही डावीकडे डोंगराच्या कड्यावर आदळली होती. बस आदळल्यामुळे पुढच्या बाजूचे लोक जखमी झाले होते. जिकडे बघितलं तिकडे जखमी प्रवासी. सुदैवाने कुणीही दगावलं नव्हतं. माझा शेजारी झोपेतच दाणकन समोरच्या दांडीवर आदळला होता. त्याच्या डोक्याला जबर जखम झाली होती. मी उजवीकडे बसलो होतो. खिडकी शेजारी मला खरचटलंसुद्धा नाही.

विनोद : बापरे. खरोखरच जिवावर बेतलं होतं. आजचा अपघातही अगदी तसाच आहे, नाही?

श्याम : तर काय. म्हणूनच तर ती बातमी वाचता वाचता माझा थरकाप झाला.

विनोद : बरं तर. तू आज पुण्याला जाणार

साँस ली थी। सब निश्चिंत हो गए थे। कई लोगों की आँख भी लग गई थी। मेरे बराबर वाला तो आराम से मेरे कंधे पर सिर रख कर सोया था। उसके इस तरह सोने कि वजह से मेरा कंधा अकड़ गया था। पर मुझे नींद नहीं आई थी। मुझ में एक अनजाना डर समाया हुआ था। दिल धक-धक कर रहा था। मैं अस्वस्थ अनुभव कर रहा था। बड़ी बेचैनी हो रही थी। इतने में खंबाटकी घाट शुरु हो गया।

विनोद : क्या हुआ? चुप क्यों हो गए?

श्याम : वे खतरनाक मोड़। मैं सावधानी पूर्व बैठा था। ऐसे ही एक मोड़पर सामने से एक बस आई। दोनों ही गाडियाँ तेज गति में थीं। दोनों चालकों ने तेजी से ब्रेक लगाए। पर कोई फायदा नहीं हुआ। देखते-देखते वह बस पास की खाई में जा गिरी। मैं सुन्न हो गया था। हमारी बस बाईं तरफ की पहाडी से जा टकराई थी। आगे बैठे लोग जख्मी हो गए थे बस के टकरा ने से। जहाँ देखो वहाँ जख्मी यात्री। भाग्य से किसी की जान नहीं गई थी। मेरा पडोसी नींद में था। सामने वाली सीट के डंडे से जा टकराया था। उसके सिर में बहुत चोट आई थी। मैं दाईं तरफ खिडकी वाली सीट पर बैठा था। मुझे खरोंच तक नहीं आई।

विनोद : बापरे यह तो बिल्कुल जान पर ही बन आई थी। आजकी दुर्घटना भी बिल्कुल ऐसी ही है न?

श्याम : हाँ, इसलिए तो वह समाचार पढते पढते मैं काँप उठा।

विनोद : अच्छा। तुम आज पुणे जा रहे हो

आहेस नं? त्यासाठी शुभेच्छा. मी आता ऑफिसात जाईन. मी परत येईपर्यंत तू स्टेशनवर निघून गेला असशील.

श्याम : नाही. मी एवढ्या लवकर निघून गेलो नसेन. आठ वाजेपर्यंत गाडी स्टेशनवर आली असेल. साडेआठ-पर्यंत ती सुटलेली असेल.

न? उस के लिए शुभोच्छाएँ। मैं अभी ऑफिस जाऊँगा। मैं वापस आने तक तुम स्टेशन के लिए निकल चुके होंगे।

श्याम : नही। मैं इतनी जल्दी नही निकलूँगा। आठ बजे तक गाडी स्टेशन आ गई होगी। साढे आठ तक वह छुट भी गई होगी।

शब्दार्थ

अपघात	दुर्घटना
बातमी	समाचार
अंगावर काटा	बदनपर रोंगटे
खडे होना	उभा राहणे
कधी	कब
कुठे	कहाँ
बहुतेक	शायद
आरक्षण	आरक्षण
नुकत्याच	हाल ही में
उशिरा	देर से
जवळ जवळ	करीब करीब
भरधाव	तेज
जीव मुठीत धरणे	जी थामकर रखना
सुरळीत	बिना किसी बाधा के
ओलांडणे	पार करना
सुटका	छुटकारा
निश्वास टाकणे	चैन की सांस लेना
निर्धास्त	निश्चींत
डुलकी	झपकी
शेजारी	पडोसी
खांद्यावर	कंधेपर
झोप	नींद
अवघडणे	अकड़ जाना
धाकधूक	धक-धक करना
अस्वस्थता	बेचैनी
धोक्याची वळणं	खतरनाक मोड़

सांभाळून	सँभल कर
वळण	मोड़
समोरून	सामने से
वेगात	तेज गति से
कोसळली	गिर पडी/टकराई
सुन्न होणे	सन्न हो जाना
कडा	खड़ा, पहाड़
जखमी होणे	जख्मी होना
दगावणं	चल बसना
दांडी	डंडी
आदळणे	जोर से गिरना
उजवीकडे	दाहिनी तरफ
खरचटणे	खरोचें आना
खरोखरच	सचमुच ही
जीवावर बेतणे	जान का संकट आना
थरकाप होणे	काँपना

अभ्यास

I नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) अपघात कोठे झाला?
2) चालक गाडी वेगात का चालवत होता?
3) तो भयंकर अपघात पाहून माझी स्थिती कशी झाली?
4) अपघातात माझ्या शेजाऱ्याला काय झाले?
5) गाडी किती वाजता येईल व केव्हा सुटेल?

II पाठ के आधार पर दो खंडों में दिए गए वाक्यांशों को सही मिलान कर वाक्य पूरे कीजिए।

कात्रज घाटात तो भीषण	फार उशिरा आला.
बातमी वाचल्यावर	त्याने गाडी भरघाव सोडली.
त्या दिवशी चालक	धरुन बसलो होतो.
वेळ भरुन काढायला	माझा खांदा अवघडला होता.
तो तसा झोपल्यामुळे	अंगावर काटा उभा राहिला.
मला मात्र झोपच	अपघात घडला.
जीव मुठीत	येत नव्हती.

III उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* विनोदला अपघाताची बातमी समजली आहे.
विनोदला अपघाताची बातमी समजली होती.

1) तू मैत्रिणीकडे आली आहेस.
2) तू अशाच अपघातात सापडला आहेस ना?
3) तुम्ही कुठे शिकला आहात.
4) आम्ही घरी यायला निघालो आहेत.
5) उमेशला गोव्यात करमलं आहे.
6) प्रिया तिच्या मोठ्या बहिणीकडे आली आहे.
7) शांताबाई अलाहाबादला गेल्या आहेत.
8) बाबासाहेब टेकडीवर फिरायला गेले आहेत.

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के निषेध वाचक रूप बनाइए।
उदाहरण: मी खूप थकलो होतो.
मी खूप थकलो नव्हतो.

1) मी फार दमले होते.
2) आम्ही शाळेत गेलो होतो.
3) तू तिथे गेली होतीस.
4) तू शाळेतून आली होतीस.
5) तुम्ही आधीच जेवला होतात.
6) ट्रक कड्यावरून कोसळला होता.
7) बस कड्यावर आदळली होती.
8) मुलं पावसात भिजली होती.

V उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।
उदाहरण: तू येशील. त्याआधी तो जाईल. तू येशील तेव्हा तो गेला असेल.

1) मार्चमध्ये परीक्षा होईल. त्यापूर्वीच तिचा अभ्यास होईल.
2) ती बगिचा पाहील. त्याआधी फुलांनी बगिचा बहरेल.
3) तो घरी जाईल. त्याआधी पाहुणे परत जातील.
4) मी निवृत्त होईन. त्यापूर्वी भाषांतराचे काम होईल.

VI उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए क्रियाओं के साथ 'मुळे' का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।
उदाहरण: परीक्षा संपल्यामुळे शाम कोल्हापूरला यायला निघाला होता. (संपणे)

1) आज लवकर काम .... मला खूप वेळ मिळाला. (करणे)
2) शाळा उशिरा .... तो उशिरा घरी आला. (सुटणे)
3) दुपारी खूप वेळ .... प्रिया रात्री झोपली नाही. (झोपणे)

4) गाडी वेगात .... खूपच धक्के बसत होते. (असणे)

VII उदाहरण के अनुसार दो दो वाक्यों को जोड़कर एक एक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: पेटी जमिनीवर आदळली. सर्व सामान खोलीत पसरले.
पेटी जमिनीवर आदळल्यामुळे सर्व सामान खोलीत पसरले.

1) बस त्या स्टॉपवरून निघून गेली.
मला पायी जावे लागले.
2) पाणी बरोबर घेतले.
आम्हाला पाण्याचा त्रास झाला नाही.
3) उशीर झाला.
त्याने गाडी वेगात सोडली.

VIII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए क्रियाओं के साथ 'वर' का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: अपघाताची बातमी ऐकल्यावर शामच्या अंगावर काटा उभा राहिला. (ऐकणे)

1) शिक्षिका वर्गातून बाहेर ________ विद्यार्थी दंगा करू लागले. (जाणे)
2) माझ्या मैत्रिणीला रस्त्यात _________ मला खूपच आनंद झाला. (बघणे)
3) ती गोष्ट ________ मला माझ्या जीवनातील प्रसंग आठवला. (वाचणे)

IX उदाहरण के अनुसार दो दो वाक्यों को जोड़कर एक एक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: कात्रजचा घाट सुरक्षितपणे ओलांड़ला.
सर्वांनी सुटकेचा श्वास घेतला.
कात्रजचा घाट सुरक्षितपणे ओलांडल्यावर सर्वांनी सुटकेचा श्वास घेतला.

1) सर्व काम केलं.
मी सिनेमा पाहिला.
2) आई झोपून उठली.
आई कामाला लागली.
3) मी घरातून बाहेर पडले.
पाऊस पडू लागला.

X उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

उदाहरण: अभ्यास करून मी मैत्रिणीकडे गेले होते.
अभ्यास झाल्यावर मी मैत्रिणीकडे गेले होते.

1) श्याम बातमी वाचून घाबरला होता.
2) वृंदावन गार्डनचे दृश्य पाहून प्रिया खूश झाली.

3) बाळ उठून आईजवळ धावत आला.
4) बाबा त्यांच्या जुन्या मित्राला भेटून आनंदित झाले.

XI उदाहरण के अनुसार दो दो वाक्यों को जोड़कर एक एक वाक्य बनाइए।

उदाहरण: मी अभ्यास केला. मी मैत्रिणीकडे गेले.
मी अभ्यास करून मैत्रिणीकडे गेले.

1) बाबा त्यांच्या जुन्या मित्राला भेटले.
बाबांना आनंद झाला.
2) कर्मचारी सचिवांकडे गेले.
कर्मचाऱ्यांनी सचिवांना तक्रारी सांगितल्या.
3) उमेश भल्या पहाटे उठला.
उमेश फिरायला गेला.

XII नीचे दिए गए संवाद पूरे कीजिए।

प्रिया - सुमन, बघ ती गर्दी कसली तिथे?
सुमन - ....
प्रिया - चल तर मग, जाऊनच बघू या तिथे!
सुमन - ....
प्रिया - हो, बघ ना केवढं लागलंय त्याला डोक्याला.
सुमन - ....
प्रिया - हो. मारुतीवाल्यानेच गाडी पुढे घेताना धक्का मारलाय त्या सायकलवाल्याला!
सुमन - ....
प्रिया - तिथेच आहे बघ त्याची सायकल पूर्ण चेंदामेंदा झालाय.
सुमन - ....
प्रिया - हो ना. गाडीवाला त्याला उचलून घेऊन जातोय बघ.
सुमन - ....
प्रिया - हो सज्जन माणूस वाटतो तो गाडीवाला, नाहीतर त्या बिचाऱ्या सायकलवाल्याचे काय झाले असते?
सुमन - ....

पढ़िए और समझिए

एक थरारक प्रसंग

हीच ती त्या अपघाताची जागा! तू फारच लहान होतीस त्यावेळी! नेहमी प्रमाणे मी सकाळी फिरायला गेलो होतो. जाता जाता मी तो भयंकर अपघात बघितला. रस्त्यावर एक ट्रक उभा होता. त्या ट्रकवर एक मारुती थाडकन आदळली. मी तिथेच होतो. क्षणभर भांबावलो. मदत करायला धावलो. पण परिस्थिती हाताबाहेर गेली होती.

मी तिथे पोहेचेपर्यंत काहीच शिल्लक राहिले नव्हते. मारुतीतल्या माणसांना बाहेर पडायला वेळच मिळाला नव्हता. ते सगळं पाहून मी सुन्न झालो होतो. माझे हातपाय थरथरायला लागले होते. जीभ कोरडी पडायला लागली होती. मी कसाबसा सावरलो. शहराच्या दिशेनं धावायला लागलो. धावता धावता एक दुकान दिसलं. सुदैवाने तिथे फोनही होता. पोलिसांना फोन केला. परत घटनास्थळी गेलो. बघता बघता तिथं प्रचंड गर्दी जमली होती. गर्दी काबूत आणता आणता पोलिसांच्या नाकी नऊ आले होते. मला वेळ घालवायला सवड नव्हती. माझी तिथे जरुरही नव्हती. मी तिथून काढता पाय घेतला.

दुसऱ्या दिवशी समजलं. ती मारुती आपल्या काळेकांळांची होती. गाडीत काका, काकू आणि त्यांची लेक - उमा होती.

यापुढे मी कुठलाही अपघात बघेन तेव्हा मला या अपघाताची आठवण येऊन गेली असेल.

शब्दार्थ

लेक	लड़की, बेटी
लहान	छोटा
नेहमीप्रमाणे	हमेशा की तरह
भयंकर	भीषण
बघायला मिळणे	देखने को मिलना
क्षणभर	पलभर, क्षणभर
भांबावणे	भौंचक्का रह जाना
हाताबाहेर	हात से निकलना, पहुँच के बाहर
पोहोचणे	पहुँचना
काही शिल्लक नसणे	कुछ भी बाकी न रहना
वेळ	वक्त, समय
जीभ कोरडी पडणे	जबान सुखना
धावणे	दौड़ना
बघता बघता	देखते ही देखते
प्रचंड गर्दी	प्रचंड भीड़
नाकी नऊ येणे	नाक में दम होना
वेळ घालवणे	समय बिताना
सवड	फुरसत
काढता पाय घेणे	खिसक जाना
समजणे	समझना
जरूरी	जरूरी

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) अपघात कसा झाला?
2) 'मारुती' गाडी कुणाची होती?
3) गाडीत अपघात झाला हेव्हा कोण कोण होतं?
4) काय करताना पोलिसांच्या नाकी नइ आले?

II नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में से समानार्थक शब्दों का प्रयोग कीजिए।

(बहुतेक, जबर, भरधाव, भयानक, पुढून)

बहुधा, समोरून, वेगात येणाऱ्या गाडीवर आदळल्यामुळे भीषण अपघात होतात. कोणीही दगावलं नाही तरी जोरदार मार बसतो.

III नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों का/वाक्यांशों का प्रयोग कर एक एक नया वाक्य बनाइए।

1) मी अगदी घाबरून गेले.
2) ते दृश्य बघून माझ्या अंगावर काटा आला.
3) माझ्या सुनेवर घराची जबाबदारी टाकून मी निर्धास्त झाले.
4) त्याचे रागाचे बोलणे ऐकून मी सुन्न झाले.
5) अपघातात सापडलेल्या मुलाला सुखरूप घरी आलेला पाहून मी सुटेकचा निश्वास टाकला.
6) त्या पूर्ण दाट जंगलातल्या प्रवासात मी जीव मुठीत धरून बसले होते.

IV इस पाठ में आए हुए हिंदी और मराठी के समान अर्थवाले शब्दों की सूची बनाइए।

V मराठी में अनुवाद कीजिए।

एक बार मैं अपने घर कोल्हापूर वापस आ रहा था। बस में सीट का आरक्षण हो गया था इसलिए आराम से खिडकी के पास की सीट पर बैठा था। हम तीन-चार घंटों की यात्रा कर चुके थे। बस एक रेल्वे क्रासिंग पर रुकी। वहाँ और भी कई गाड़ियाँ खड़ी थी। पूछने पर पता चला कि एक दुर्घटना हो गई है। एक बस बारातियों को लेकर जा रही थी और जल्द-बाजी में बस ड्राइवर बिना इधर-उधर देखे पटरी पार कर रह था। बस का तीन चौथाई हिस्सा पटरियों को पार कर चुका था। तभी एक मालगाडी तेजी से आई। बस को टक्कर लगी! लेकिन बड़ी दुर्घटना नहीं घटी। 'सावधानी हटी दुर्घटना घटी' पर सब को अमल करना चाहिए।

VI हिंदी में अनुवाद कीजिए और उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

गाडगे महाराज हे महाराष्ट्राचे थोर संत तर खरेच पण थोडे वेगळ्या प्रकारचे. त्यांनी कधी देवधर्माचं खोटं अवडंबर माजविलं नव्हतं किंवा लोकांना अंधश्रद्धेचा मार्ग दाखविला नव्हता. अनिष्ट रूढींच्या आणि सामाजिक प्रथांच्या विळख्यातून जनसामान्यांना बाहेर काढण्याचं काम त्यानी केलं होतं. मुख्य म्हणजे हे सगळं जनसुधाराचं काम त्यांनी लोकांमध्ये पूर्णतः मिसळून आणि त्यांच्या भाषेत, त्यांना समजेल अशा रीतीने केलं, हे विशेष.

त्यांच्या डोक्यावर नेहमी एक खापराचे गाडगे असायचे. भाकरी ठेवायला, पाणी प्यायला, जेवायला, हात धुवायला असे त्या गाडग्याचे अनेकविध उपयोग असत, या गाडग्यामुळेच त्यांना 'गाडगेमहाराज' हे नाव पडलं होतं.

मी लहानपणी त्यांची एक सभा पाहिली होती. आमच्या बंगल्यासमोर खूप मोठं मोकळं मैदान होतं. सभेच्या दिवशी दुपारी तीन वाजायच्या सुमाराला ते आणि त्याचे अनुयायी हातात मोठमोठाले झाडू घेऊन आले व ते मैदान झाडून स्वच्छ करण्यास त्यांनी खूप जोमाने सुरवात केली होती. खेड्यातल्या जनतेला स्वच्छतेचे महत्त्व पटवून देण्याचा यापेक्षा अधिक परिणामकारक मार्ग मी पाहिला नव्हता. संध्याकाळी सात वाजेपर्यंत पटांगण झाडून लख्ख झालं. त्यानंतर त्यावर पाणी शिंपडलं गेलं.

शेजारच्याच घरातून गाडगेमहाराजांच्या जेवणासाठी दोन भाकरी व मीठ त्यांच्या अनुयायांनी मागून आणलं होतं. त्यांना फक्त ज्वारीच्या भाकरी व मीठच हवं असे. कारण तोच महाराष्ट्रातल्या जनसामान्यांचा आहार होता. कुणी गव्हाच्या पोळ्या किंवा पक्वान्न दिलं तर ते नम्रपणे नाकारलं जायचं. जमिनीवर गोल करून बसूनच ती सारी मंडळी जेवली. साधारण नऊ च्या सुमाराला त्यांच्या भजनाच्या कार्यक्रमाला सुरूवात झाली. सुंदर भजन - "गोपाळा, गोपाळा, देवकीनंदन गोपाळा". भजनात, त्या नादब्रह्मात सगळा श्रोतृवर्ग सामील झाला होता. हजारोंचा श्रोतृसमुह - तल्लीनतेने टाळ्या वाजवून भजन म्हणत होता. मध्ये मध्ये गाडगेबाबा दोन्ही हात उंचावून डोक्यावर धरून मोठमोठ्याने टाळ्या वाजवत. त्यांचा श्रोतृवृंद पण त्यांचे अनुकरण करत होता. तो एक मनाला थक्क करणारा नितांतसुंदर अनुभव होता. भजन करता करता मध्येच थांबून गाडगे महाराज देवदेवतांच्या व्यर्थ अवडंबरावर, समाजातल्या अनिष्ट रुढींवर व हुंडा आणि लग्नात फाजिल खर्च करून कर्जबाजारी होणे इत्यादी अनिष्ट प्रथांवर घणाघाती टीकेचे आसूड ओढीत.

"मल देव बनवू नका. माझ्या मूर्ती बनवू नका. देवळं बनवू नका" ही त्यांची परखड शिकवण होती. ते पक्के बुद्धीप्रामाण्यवादी व तर्कसंगत आचाराचा पाठपुरावा करणारे संत होते.

आपण सगळे जर त्यांनी दाखविलेल्या मार्गावरून चालत राहिलो तर येत्या अर्धशतकानंतर भारत एक प्रगत, सुखी व समाधानी देश झालेला असेल.

शब्दार्थ

परखड	- स्पष्ट, साफ, ढीढ़.
बुद्धिप्रामाण्यवादी	- बुद्धी, संगत आचार विचारों को प्रमाण मानकर चलनेवाला.
तर्कसंगत	- तर्क के परिमाण पर उतरनेवाली, तर्कसंगत.)

टिप्पणियाँ

I नीचे दिए गए वाक्यों के क्रियारूप पर ध्यान दीजिए।

1) परीक्षा संपली होती. परीक्षा खतम हुई थी।
2) अशाच अपघातात मी सापडलो होतो. ऐसी ही दुर्घटना में फस गया था।
3) सगळे निर्धास्त झाले होते. सब निश्चिंत हो गए थे।

मराठी में पूर्ण भूत काल की क्रिया का गठन हिंदी के समान ही सामान्य भूतकाल की क्रिया में 'होना' धातु के उपयुक्त रूप का प्रयोग कर किया जाता है।

उदाहरण:

		एकवचन	*बहुवचन*	
उ.पु.	*(पु.)*	मी उठलो होतो. मैं उठा था।	आम्ही आपण	उठलो होतो. हम उठे थे।
	(स्त्री.)	मी उठले होते. मैं उठी थी।		
म.पु.	*(पु.)*	तू उठला होतास. तुम उठे थे।	तुम्ही आपण	उठला होता. आप उठे थे।
	(स्त्री.)	तू उठली होतीस. तुम उठी थीं।		
अ.पु.	*(पु.)*	तो उठला होता. वह उठा था।	ते उठले होते. वे उठे थे।	
	(स्त्री.)	ती उठली होती. वह उठी थी।	त्या उठल्या होत्या. वे उठी थीं।	
	(नपुं.)	ते उठलं होतं.	ती उठली होती.	

2. नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए।

उ.पु.	*(पु.)*	मी उठलो नव्हतो. मैं उठा नाहीं था।	आम्ही/आपण उठलो नव्हतो. हम/आप उठे नहीं थे।
	(स्त्री.)	मी उठले नव्हते. मैं उठी नहीं थी।	आम्ही/आपण उठलो नव्हतो. हम/आप उठे नहीं थे।
म.पु.	*(पु.)*	तू उठला नव्हतास. तू उठा नहीं था।	तुम्ही/आपण उठला नव्हता. हम उठे नहीं थे।
	(स्त्री.)	तू उठली नव्हतीस.	

		तू/तुम उठी नहीं थी।	
अ.पु.	*(पु.)*	तो उठला नव्हता.	ते उठले नव्हते.
		वह उठा नहीं था।	वे उठे नहीं थे।
	(स्त्री.)	ती उठली नव्हती.	त्या उठल्या नव्हत्या.
		वह उठी नही थी।	वे उठी नहीं थीं।
	(नपुं.)	ते उठलं नव्हतं.	ती उठली नव्हती.

उक्त प्रकार के वाक्यों के निषेधवाचक रूप बनाने के लिए 'हो' के स्थान पर 'नव्हते' के रूपों का प्रयोग करते हैं। इस की पूरी रूपावली उपर दी गई है।

III मराठीं के क्रियाओं में भूतकालिक प्रत्यय 'ल्या' लगाने के बाद नीचे दिए गए अव्ययशब्द/परसर्ग जोड़कर नये प्रयोग बनाए जाते हैं।

- वर	केल्या + वर = करने के बाद
- नंतर	केल्या + नंतर = करने के बाद.
- शिवाय	केल्या + शिवाय = बिना किए/किए बिना।
- वाचून	केल्या + वाचून = बिना किए/किए बिना।
- ला	केल्या + ला = केल्याला - करने को
- चा	केल्या + चा = करने का
- मुळे	केल्या + मुळे = करने के वज़ह से

उदाहरण:

तो बसल्यावर सगळे बसले. तो बसल्यानंतर सगळे बसले.	उसके बैठने पर सब बैठ गए।
तो बसल्याशिवाय सगळे बसले.	उसके बैठे बिना सब बैठ गए।
तो बसल्यावाचून काही बिघडलं नाही.	उसके न बैठने से कुछ नहीं बिगडा।
तो बसल्याला पाच मिनिटं झाली.	उसे बैठे हुए पाँच मिनिट हो गए।
तो बसल्याचा मला आनंद झाला.	उसके बैठने से मुझे खुशी हुई।
तो बसल्यामुळे मला आनंद झाला.	उसके बैठने से मुझे खुशी हुई।

IV नीचे दिए गए प्रयोगों पर ध्यान दीजिए।

1)	मी परत येईपर्यंत तू निघून गेला असशील.	(मेरे वापस आने तक तुम निकल गए होंगे।)
2)	आठ वाजेपर्यंत गाडी स्टेशनवर आली असेल.	(आठ बजे तक गाडी स्टेशन पर आई होगी।)
3)	साडेआठ वाजेपर्यंत गाडी सुटली असेल.	(साढ़े आठ बजे तक गाडी छुट गई होगी।

उपर्युक्त प्रयोगों में संभावना जताने के लिए 'अस' क्रिया के उपयुक्त रूप के साथ मुख्य क्रिया के भूतकालिक रूप का प्रयोग किया गया है। ऐसे प्रयोग को पूर्ण

भविष्यत काल कहते हैं। इन में किसी समय का उल्लेख अनुस्यूत होता है और उस समय दूसरी क्रिया के पूरी तरह समाप्त हो जाने का संकेत दिया जाता है।

इन प्रयोगों की पूरी रूपावली 'जा' क्रिया के साथ नीचे दी गई है।

		एकवचन	*बहुवचन*
उ पु.	*(पु.)*	मी गेलो असेन.	आम्ही/आपण गेलो असू.
		मैं जा चुका होऊँगा।	
	(स्त्री.)	मी गेले असेन.	हम/आप जा चुके होंगे।
		मैं जा चुकी होऊँगी।	
म.पु.	*(पु.)*	तू गेला असशील.	तुम्ही/आपण गेले असाल.
		तुम जा चुके होंगे।	तुम/आप जा चुके होंगे।
	(स्त्री.)	तू गेली असशील.	आप जा चुकी होंगी।
		तुम जा चुकी होगी।	
अ.पु.	*(पु.)*	तो गेला असेल.	ते गेले असतील.
		वह जा चुका होगा।	वे जा चुके होंगे।
	(स्त्री.)	ती गेली असेल.	त्या गेल्या असतील.
		वह जा चुकी होगी।	वे जा चुकी होंगी।
	(नपुं.)	ते गेले असेल.	ती गेली असतील.

इन प्रयोगों के निषेधवाचक रूप बनाने के लिए क्रिया के भूतकालिक रूप के साथ 'नस' क्रिया के उपयुक्त रूप का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण:

अ.पु.	मी गेलो नसेन.	आम्ही/आपण गेलो नसू.
	मैं नहीं जा चुका होऊँगा।	हम नहीं जा चुके होंगे।
म पु.	तू गेला नसशील.	तुम्ही/आपण गेले नसाल.
	तुम नहीं जा चुका होगा।	आप नहीं जा चुके होंगे।
	तू गेली नसशील.	तुम्ही गेल्या नसाल.
	तुम नहीं जा चुकी होगी।	आप नहीं जा चुकी होंगी।
	ते गेले नसतील.	वे नही जा चुके होंगे।
अ.पु.	तो गेले नसेल.	ते गेले नसतील.
	वह नहीं जा चुका होगा।	वे नहीं जा चुके होंगे।
	ती गेली नसेल.	त्या गेल्या नसतील.
	वह नहीं जा चुकी होंगी।	वे नहीं जा चुकी होंगी।
	ते गेले नसेल.	ती गेली नसतील.

धडा पाठ 17

वारल्यांचे बंड

मी : गोदावरीबाई, तुम्ही वारल्यांसाठी खूप काम केलं होतं. त्यांच्यासाठी चळवळ करत होतात त्याबद्दल काही सांगाल?

गोदावरीबाई : का नाही सांगणार? विचारा, तुम्हाला काय विचारयचंय ते. फक्त एकच सांगते, ती चळवळ वारल्यांची होती नि 'वारल्यांचे बंड' म्हणून ओळखली जात होती. मी फक्त निमित्त मात्र होते.

मी : या प्रश्नाकडे तुमचे लक्ष कसे वेधले गेले?

गोदावरीबाई : माझे पती आणि मी ठाणे जिल्ह्यातील शेतकऱ्यांमधे काम करत होतो. त्या निमित्ताने खूप वेळा डहाणू-तलासरी भागात जात होतो. तिथं बहुसंख्य वस्ती आदिवासींची-वारल्यांची होती. त्या वारल्यांचं दुःखी जिणं रोज डोळ्यांना दिसत होतं. आम्ही मग तिथेच काम करण्याचा निर्णय घेतला.

मी : या वारल्यांचे गरिबीशिवाय प्रश्न तरी काय होते?

गोदावरीबाई : त्यावेळी पुष्कळसे वारली गुलामीचं जिणं जगत होते. दारिद्र्य तर होतंच. ते अनेक ठिकाणी असतं पण वारल्यांना आपल्या गुलामीची, पराधीनतेची जाणीवही नव्हती. आणि तोच खरं म्हणजे महत्त्वाचा प्रश्न होता.

वारलियों का विद्रोह

मैं : गोदावरी जी, आपने वारलियों के लिए बहुत काम किया है। उनके लिए आंदोलन भी चलाते थे। उनके बारे में कुछ बताएँगी?

गोदावरीजी : क्यों नहीं बताऊँगी? पूछिए, जो आपको पूछना है! एक बात बता दूँ। यह आंदोलन, वारली लोगों का था। इसे 'वारल्यांचे बंड' नामसे जाना जाता था। मैं तो केवल निमित्त मात्र थी।

मैं : इस समस्या की ओर आपका ध्यान कैसे आकर्षित हुआ?

गोदावरीजी : मेरे पति और मैं ठाणे जिलें के किसानों के बीच काम करते थे। इसी सिलसिले में डहाणू-तलासरी क्षेत्र में अक्सर जाते थे। वहाँ के अधिकांश लोग वारली आदिवासी थे। उन वारलियों की दुख भरी जिंदगी रोज आँखो से दिखती थी। हमने तभी उस जगह काम करने का निश्चय किया था।

मैं : गरीबी के अलावा इन वारलियों की और समस्याएँ क्या थीं?

गोदावरीजी : उन दिनों में बहुत सारे वारली गुलामी की ज़िंदगी जी रहे थे। गरीबी तो थी ही। यह तो बहुत सी जगह होती है। लेकिन वारलियों को अपनी गुलामी, अपनी पराधीनता का बोध तक न था। और देखा जाए तो यही महत्त्वपूर्ण प्रश्न था।

मैं : इसका मतलब? मैं कुछ समझा नहीं?

मी : म्हणजे? मी समजलो नाही

गोादवरीबाई : सांगते. त्यासाठी आधी वारली कशा परिस्थितीत जगत होते ते समजावून घ्या. वारली वेठबिगारीने काम करत होते. ते तांबडं फुटण्यापूर्वीच कामाला लागत होते, आणि काळोख दाटेपर्यंत काम करतच होते. या कामाचा मोबदला मिळत होता एकवेळ पुरेल एवढा भात! तो भातही लाकडाच्या उखळीत रोज कांडावा लागत होता. कांडलेल्या तांदळाची पेज, मिठाचा खडा, पाण्याबरोबर गिळून काम करावं लागत होतं. मूठभर भाताखेरीज दुसरी मजूरी मिळत नव्हती. सारेच दिवसभर कंबर मोडेपर्यंत काम करुन रात्री अर्धपोटी मरगळून पडत होते. पुन्हा पहाट झाली की रहाटगाडगं सुरू होत होतं. कसलाही आनंद नाही, रस नाही, वैचित्र्य नाही! हे पशूचं जीवन दिवसामागून दिवस, वर्षामागून वर्षे ते वारली जगत होते. त्यांचं जग त्यांचा मालक आणि त्यांचं खेडं यापुरतंच मर्यादित होतं. जीव घेतला, उपाशी ठेवलं, बायकांना पळवलं तरी ते वारली ते मुकाट्यानं सहन करत होते. येईल त्या प्रसंगाला मान तुकवत होते.

मी : तुमच्या चळवळीमुळे काय फरक पडला?

गोदावरीबाई : आम्ही फक्त वारल्यांना त्यांच्या परिस्थितीची जाणीव करून देत होतो. त्यांच्या हक्काची जाणीव करून देत होतो. वारल्यांच्या विचारांवरची धूळ

गोदावरीजी : बताती हूँ। इस के पहले यह समझने की कोशिश करें कि वारली किन परिस्थितियों में जी रहे थे। वारली बेगारी पर काम करते थे। पौ फटने से पहले ही वे अपने काम में जुट जाते थे। शामको घना अंधेरा होने तक काम में लगे रहते थे। इस कठिन श्रम के बदले मिलता था एक जून का भात! उस भात को भी लकड़ी की ओखली में कूटना पड़ता था। उस कुटे हुए चावल के माँड को नमक की डली के साथ गले से उतारकर फिर काम में लगना पड़ता था। मुट्ठीभर भात के अलावा कोई और मज़दूरी नहीं मिलती थी। दिनभर कमर तोड़ मजदूरी करके रात को आधापेट खाकर मृतप्राय हो वे सब सो जाते थे। पौ फटते ही फिर वही चक्र शुरु हो जाता था। कोई सुख नही, कोई रस नही, कोई बदलाव नहीं। यह जानवरोंका सा जीवन, दिनोंदिन, सालोंसाल वारली जिए जा रहे थे। उनकी दुनिया उनके मालिक और उनके गाँव तक ही सीमित थी। चाहे कोई उनके प्राण ले ले, उन्हें भूखा रखे, या उनकी औरतों को उठा ले जाए, वारली चुपचाप सब कुछ सह जाते थे। चाहे जो भी बात हो वे उसे सिर झ ुकाकर स्वीकार कर लेते थे।

मैं : आपके आंदोलन से क्या फर्क पड़ा?

गोदावरीजी : हम केवल वारलियों को उन परिस्थितियों के प्रति जागरूक करते थे। उन्हें उनके अधिकारों का बोध कराते थे। उनके विचारों पर जो धूल

जम गई थी उसे झाड़ते थे। आखिर

झटकत होतो. अखेर आत धगधगणारे जे असमाधान होते, जी चीड होती त्या ठिणगीचा स्कोट झाला. आमचा फक्त आधार होता. त्यांच्यातील दबलेल्या माणसाला वर उठायला आम्ही मदत करत होतो. माणूस म्हणून जगण्याचा हक्क आपल्याला आहे याची जाणीव त्यांच्यात निर्माण होत होती. वारली समाज आमूलाग्र बदलत होता हे आम्ही पाहू शकलो. हेच या चळवळीचं यश आहे असं मी मानते. यापुढेही मी हेच काम करत असेन. वारल्यांना शिकवत असेन. मलाखात्री आहे की, हे सर्व ऐकून येणाऱ्या भविण्यात तुम्ही ही मला मदत करत असाल.

उनके अंदर क्रोध और विवशता की चिनगारी भडक उठी। हमने तो केवल उन्हें सहारा दिया था। उनके अंदर जो दबा हुआ मनुष्य था उसे बाहर लाने में हमने मदद कर रहे थे। उन्हें भी मनुष्य की जिंदगी जीने का अधिकार है, की जागृति उन में आ रही थी। वारली समाज में पूर्णतः बदलाव हम देख सकें यही इस आंदोलन की सफलता है ऐसा मैं मानती हूँ। इसके बाद भी मैं यही काम करती रहूँगी। वारलियों को सिखाती रहूँगी। मुझे विश्वास है कि ये सब सुनकर भविष्य में आप भी मेरी मदद करते रहेंगे।

शब्दार्थ

चळवळ	आंदोलन
विचारा	पूछिए
बंड	विद्रोह
निमित्तमात्र	निमित्त मात्र
लक्ष वेधले	ख्याल में आया
जिल्ह्यातील	जिले के
शेतकरी	किसान
खूप वेळा	बहुत बार
वस्ती	बस्ती
डोळा	आँख
डोळ्यांना दिसत होतं	आँखों को दिखती थी
घेतला	लिया
जिणं	जीवन
दारिद्र्य	गरीबी
जाणीव	बोध, भान, एहसास
जगत होते	जीते थे
वेठबिगारी	बेगारी, बंधुआ मजदूर
तांबडं फुटण्यापूर्वी	सूरज निकलने के पूर्व

काळोख	अंधकार
मोबदला	बदले में
एकवेळ	एक समय, एक जून, एक टंक
पुरेल एवढा	काफी
भात	धान, चावल
उखळ	ओखली
कांडलेला	कूटा हुआ
गिळणे	निगलना
मूठभर	मुट्ठीभर
मजूरी	मजदूरी
कंबर मोडेपर्यंत	कमर तोड़
मरगळून पडणे	बेजान होना
रहाटगाडगे	दिनचक्र
मर्यादित	सीमित
उपाशी	भूखा
पळवलं	उठा के ले गया
मुकाट्याने	चुपचाप
मान तुकवणे	सिर झुकाना
धूळ झटकणे	जागरूक करना
चीड	चिढ़
ठिणगी	चिनगारी

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) गोदावरीबाईंनी वारल्यांच्या वस्तीत काम करण्याचे का ठरविले?
2) वारल्यांचे प्रश्न कोणते होते?
3) वारली कशा परिस्थितीत जगत होते?
4) वारल्यांचे जीवन कशापुरते मर्यादित होते?
5) गोदावरीबाईंच्या चळवळीमुळे वारल्यांमध्ये काय बदल झाला?
6) गोदावरीबाई भविष्यात काय करू इच्छितात?
7) या पाठात आलेले वाक्प्रचार व त्यांचे अर्थ सांगा.

II उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1. *उदाहरण:* ती दिवसभर _____ _____ . (चालणे)
ती दिवसभर चालत होती. (चालणे)

1) तू दिवसभर काम _____ _____. (करणे)
2) मी रात्रभर पुस्तक ______ _____. (वाचणे)
3) आम्ही पसारा ______ ______. (आवरणे)
4) तुम्ही गोष्ट ______ ______. (ऐकणे)
5) माळी बागेत पाणी _____ _____. (घालणे)
6) सुमन वसतिगृहात ______ ______. (राहणे)
7) त्या दोघी थकलेल्या _____ _____. (दिसणे)
8) पिल्लं _____ ______. (ओरडणे)
9) आपण चहा _____ _____. (पिणे)
10) तो चित्रपट _____ _____. (पाहाणे)

III उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के निषेध वाचक रूप बनाइए।

उदाहरण: बाबा टेकडीवर फिरायला जात होते.
बाबा टेकडीवर फिरायला जात नव्हते.

1) तू तुझ्या बहिणीशी बोलत होतास.
2) मी काल गावाला जात होते.
3) आम्हाला वारल्यांच्या परिस्थितीची जाणीव होती.
4) त्या दोघी उखळीत भात कांडत होत्या.
5) गरीब मुलं रोज अर्धपोटीच झोपत होती.
6) त्या दोघी बहिणी मुकाट्यानं सहन करत होत्या.
7) ती पिल्लं जवळपास खेळत होती.
8) आपण सगळे मावशीकडे टी.व्ही. बघत होतो.

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* मी निबंध लिहीन.
मी निबंध लिहीत असेन.

1) अमिताभ बच्चन गाणं म्हणेल.
2) सुनील गावस्कर खूप उत्तम खेळेल.
3) ते सर्व सहलीला जातील.
4) आम्ही दुपारी हॉटेलात जेवायला जाऊ.
5) तेव्हा तू शाळेत जाशील.

2. *उदाहरण:* मी निबंध लिहीत असेन.
मी निबंध लिहीत नसेन.

1) धनराज पिल्ले उद्या खेळत असेल.
2) गाडी ठीक साडेसहा वाजता सुटत असेल.

3) मी तेथे कसबसा पोहोचत असेन.
4) यंदाचे अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन अमळनेरला होत असेल.
5) पाचवीतले विद्यार्थी वेगात धावत असतील.

3. *उदाहरण:* मी निबंध <u>लिहीत होते</u>.
मी निबंध <u>लिहीत असेन</u>.
1) तो चहा पित होता.
2) लता मंगेशकर गाणं म्हणत होती.
3) लिएंडर पेस टेनीस खेळत होता.
4) उस्ताद अल्लारखाँ साहेब व उस्ताद झाकिर हुसेन खान साहेब तबला वाजवत होते.
5) मुले क्रिडांगणावर खेळत होती.

4. *उदाहरण:* मी गाणे <u>म्हणत असेन</u>.
मी गाणे <u>म्हणत होतो</u>.
1) सकाळी मी स्नान करत असेन.
2) आम्ही चित्रपट पहात असू.
3) आपण दुपारी झोपत असाल.
4) त्या अभ्यास करत असतील.
5) तुम्ही रात्रीसुद्धा लिहीत असाल.

V बायीं ओर दिए गए शब्दों के साथ दाहिनी ओर दिए गए शब्दों के सही अर्थ से मिलान कीजिए।

कांडलेला	कविता
ऐकलेलं	सिनेमा
बघितलेला	गाणं
लपलेला	भात
वाचलेली	खलनायक
सजलेली	धडा
लिहिलेला	नवरी
भिजलेली	साडी

VI उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।
उदाहरण: ती माणसं काळोख _____ काम करत होती. (दाटणे)
ती माणसं काळोख <u>दाटेपर्यंत</u> काम करत होती.
1) गरीब मुलं कंबर ______ काम करून अर्धपोटी झोपत होती. (मोडणे)

2) पुस्तक वाचून ______ पहाट झाली होती. (संपणे)
3) थिएटरमधे _______ सिनेमा सुरु झाला होता. (पोहोचणे)
4) शाळेत ______ आम्ही खूप हसत होतो. (जाणे)
5) आमचा टी.व्ही. रिपेअर ______ आम्ही मावशीकडे टी.व्ही. बघत होतो. (होणे)
6) प्रकाश ______ खेळत होता. (दमणे)
7) गाडी ______ मी प्लॅटफॉर्मवर उभा होतो. (हलणे)
8) संध्याकाळी अंधार _____ मी मैत्रिणीकडेच होते. (पडणे)
9) भूक ______ बाळ छान खेळत होता. (लागणे)
10) आपण बाहेर जाऊन _______ वरात निघून गेली होती (बघणे)

VII कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

1) वारल्यांना तांदळाची पेज खावी लागत ______. (होते, होती, होता, होतास)
2) रमेश तू काल अभ्यास करत ______. (होती, होतो, होता, होतास)
3) आम्ही नाटक बघत ______. (होता, होती, होतो, होतास)
4) तुम्ही साडी आणायला जात ______. (होतो, होता, होती, होतेस)
5) सुमन वसतिगृहात राहत ______. (होता, होतेस, होतास, होती)
6) रमेश बाळासाठी खाऊ आणत _______. (होती, होता, होतो, होतास)
7) दोन्ही पिल्लं आईसाठी ओरडत ______. (होते, होती, होतो, होतीस)
8) पांडे घर शोधायला निघत ______. (होता, होते, होतो, होती)
9) त्या मुली स्वयंपाक करत _____. (होती, होत्या, होतो, होतीस)
10) आपण झाडाखाली चिंचा खात _____. (होती, होते, होतो, होतास)

VIII संवाद पूरे कीजिए।

प्रिया - सुमन, अंग तुला आपल्या देशातल्या चळवळींबद्दल माहीतच आहे ना?
सुमन - ....
प्रिया - हो, त्याच स्वातंत्र्याबद्दलच्या! अगं आपल्या महाराष्ट्रातील किती तरी लोकांनी भाग घेतला त्यात!
सुमन - ....
प्रिया - हो. तेच ते. आणि बंगालचे बोस आणि पाल. सगळा भारतच गुलामीतून सुटण्यासाठी धडपडत होता.
सुमन - ....
प्रिया - हो बघ ना! दोनशे वर्षे राज्य केलं त्यांनी आपल्या देशात!
सुमन - ....
प्रिया - गांधीजींच्या अहिंसेपुढे त्यांनी गुडघे टेकले. आणि ते परत गेले.

IX नीचे दिए गए चारों खंडों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य बनाइए।

1.

मी	शाळेत	खेळत	होते.
आम्ही	क्रिंडागणावर	विकत	होतात.
तू	ग्रंथालयात	झोपत	होतो.
तुम्ही	बाजारात	चढत	होता.
राम	स्वयंपाकखोलीत	जात	होती.
सीता	बागेत	वाचत	होतं.
मांजर	टेकडीवर	येत	होता.

2.

मी	काम	खात	नव्हतास.
आम्ही	काही	जात	नव्हते.
तू	कुठेच	थकत	नव्हतो.
आपण	सारखे	करत	नव्हती.
रामभाऊ	नेहमी	वाचत	नव्हते.
सीताबाई	कधीच	लिहीत	नव्हत्या.

X कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1) मी झाडाजवळ गेले. (सामान्य भविष्यत्‌काल)
2) ते सारखे रडत आहेत. (अपूर्ण भूतकाल)
3) तुमचे उपकार मी विसरणार नाही. (सामान्य वर्तमानकाल निषेधवाचक)
4) सर्वांनी ते पुस्तक वाचले होते. (पूर्ण वर्तमानकाल)
5) तू पत्र लिहिले स. (सामान्य वर्तमानकाल)
6) शिक्षक वेळेवर पोहोचले आहेत. (पूर्ण भूतकाळ)
7) मुली कबड्डी खेळतात. (सामान्य भूतकाल)
8) मुले शिक्षकांजवळ तक्रार करत असतील. (अपूर्ण वर्तमानकाल)
9) तू खोटे बोलत असशील. (अपूर्ण भूतकाल)
10) आपला राष्ट्रध्वज 'तिरंगा' फडकत आहे. (अूपर्ण भविष्यत्‌काल)
11) मी अभ्यास पूर्ण केला आहे. (पूर्ण भविष्यत्‌काल)

XI पढिए और समझिए

आपलाच देश, आपलीच माणसं!

मी एकटीच जंगलातून पायवाटेनं जात होते. बांधाबांधावरून जाणारी नागमोडी पायवाट. एक गुराखी मुलगा मला वाट दाखवत होता. मी त्याच्याच घरी जात होते आणि विचार करत होते, "यांची स्थिती कशी असेल? हे लोक कसे राहात असतील? काय खात असतील? बहुधा यांना पुरेसं अन्न मिळत नसेल. अंगभर

कपडाही मिळत नसेल. आणि जे मिळत असेल तेही पुरेसं असेल का? ..." इ.इ. मी झ
ापझप चालत होते. डोंगर चढून माथ्यावर पोचते तो सूर्याचा लालभडक गोळा बुडत होता. मी तशीच स्तब्ध उभी राहिले. सूर्य बुडताच अंधार दाटू लागला. क्षणाक्षणानं अंधार दाटत होता. झोपड्यांमधून पेटलेल्या शेकोट्या दिसत होत्या. आम्ही घरी पोचलो. ती खोपटी इतकी लहान होती की वाकल्याशिवाय तिच्यात प्रवेश करताच येत नव्हता. मी कमरेत वाकूनच खोपटीत शिरले.

घरमालक कुडाला टेकून विडी ओढण्यात मग्न होता. त्याला कशाचीही दखल नव्हती, आमचीसुध्दा! आतलं दृश्य पाहून माझ्या छातीत धस्स झालं. मालकिणीभोवती मोठ्या पोटाची उघडी नागडी पोरावळ एकच गिल्ला करत होती. मी गेल्यावर एकदम शांतता पसरली. त्या बाईच्या शेजारी एका मडक्यात पेज दिसत होती. जाडे लालसर तांदूळ, ओबडधोबड चिरलेल्या कांद्याच्या फोडी आणि मीठ घालून उकळलेलं ते मिश्रण! करवंटीच्या पळीनं ती ते मिश्रण पोरांच्या कटोऱ्यांत वाढत होती, एक कटोरा संपला, की पुनः भरत होती. मुले ते पाणी ओरपून ओरपून पीत होती. भाताची शिते व कांद्याच्या फोडी चाटून पुसून खात होती. पाणी ओरपून ओरपून ती पोरं बसल्याजागीच मरगळून पडली. मी होते म्हणून ती बाई आणि तो पोरगा मात्र ताटकळत बसले होते. मी म्हटलं, "कागं? मुलांच पोट भरलं? ती तर झोपली की?" ती म्हणाली, "अर्धपोटीच झोपावं लागतं, काय करणार?"

माझे डोळे भरून आले. घरची आठवण झाली. भरल्यापोटी चॉकलेट - बिस्किटांचे डबे फस्त करणारी नातवंडं डोळ्यासमोर दिसत होती. माझ्या मनात विचारांचे काहूर उठले. मला वाटले, किती वेगळे आहे हे जग!

आपलाच देश, आपलीच माणसे, पण केवढा हा फरक!!

शब्दार्थ

आपला	हमारा
जंगलातून	जंगल में से
पायवाट	पगडंडी
नागमोडी	बलखाती
गुराखी	चरवाहा
वाट	राह
स्थिती	स्थिति
बहुधा	ज्यादातर
पुरेसं	पर्याप्त
अन्न	खाना
अंगभर	तनभर
कपडा	वस्त्र
झपझप	तीव्रगतीसे

चढून	चढ़कर
सूर्याचा लालभडक गोळा	सूरज का लाल सुर्ख गोला
बुडत होता	डूब रहा था
स्तब्ध	चुपचाप, स्तब्ध
उभी राहिले	खड़ी रही
पेटलेल्या	जलती हुई
शेकोटी	अलाव
खोपटी	छोटी सी झोपड़ी
शिरले	घुसना
घरमालक	मकान मालिक
टेकून	टिककर
कुड	बाँस की दीवार
विडी	बीड़ी
दखल	परवाह
आतलं	अंदर का
छातीत	छाती में
धस्स होना	धक् रह जाना
मालकीण	मालकिन
मोठ्या पोटाची	बड़े पेट के
उघडी-नागडी	नंग-धड़ंग
गिल्ला	शोर
मडक्यात	मटके में
पेज	माँड़
जाडे	मोटे
कांदा	प्याज
फोडी	टुकड़े
मीठ	नमक
उकळलेलं	उबलता हुआ
करवंटी	नारियल के खोल का आधा भाग
बसल्या जागीच	बैठने की जगह पर ही
भरल्यापोटी	भरेपेट
नातवंडं	नाती-पोती
काहूर	तूफान
फरक	फर्क

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) लेखिकेला वाट कोण दाखवत होता?
2) घरमालक काय करत होता?
3) घरमालकिणीभोवती गिल्ला करणारी मुलं कशी होती?
4) मुलांची आई मुलांना काय वाढत होती?
5) लेखिकेच्या मनात काहूर का उठले?

II वार्तालाप के आधार पर उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) ती चळवळ ______ होती. वारल्यांचे ______ म्हणून ओळखली जात होती.
2) त्या वारल्यांचं ______ जिणं रोज डोळ्यांना दिसत होतं.
3) ते ______ फुटण्यापूर्वीच ______ लागत होते आणि _____ दाटेपर्यंत काम करत होते.
4) त्यांच जग त्यांचा ______ आणि ______ यापुरतंच मर्यादित होतं.

III नीचे दिए गए दो शब्द समूहों में से समानार्थी शब्द चुनकर सही जोड़ियाँ बनाइए।

अंधार	झोपडी
कंगोरे	पूर्णतः
चळवळ	जाणीव
जिणं	बारकावे
गरिबी	काळोख
ठिकाण	आंदोलन
परावलंबन	जीवन
खोपटी	दारिद्र्य
आमूलाग्र	जागा
दखल	परस्वाधीनता

IV अनुच्छेद में रेखांकित किए गए शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए सही मुहावरों का प्रयोग कीजिए।

(डोळे भरून येणे, कंबर मोडणे, मान तुकवणे, काळोख दाटणे, तांबडं फुटणे, रहाट गाडगे सुरू होणे)

वारली पहाटेपासून संध्याकाळपर्यंत पार दमून जाइस्तोवर काम करत होते. त्यांना विश्रांती नव्हतीच. सकाळ झाली की पुनः तोच दिनक्रम चालू! येईल त्या परिस्थितीशी ते जमवून घेत होते. त्यांची स्थिती पाहून मला फार वाईट वाटलं.

V नीचे दिए गए शब्दों में से चार वाक्यांश बनाइए जिनमें एक-एक विशेषण और एक एक संज्ञा हो।
मूठभर, लालभडक, धगधगणारे, नागमोडी, असमाधान, सूर्य, पायवाट, भात

VI 'मूठभर' इस का अर्थ है मुट्ठी भर। इस का प्रयोग नीचे दिए गए वाक्यों में किया गया है। इसी प्रकार और दो वाक्य बनाइए।
1) मूठभर भाताच्या पेजेवर सबंध कुटुंब जेवलं.
2) मूठभर मावळ्यांच्या मदतीनं शिवाजी लढला.

VII 'सकाळ होणे' इस मुहावरे के लिए नीचे दिए गए मुहावरे समान अर्थ में प्रयुक्त किए जाते हैं। उन्हें पढ़िए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
1) तांबडं फुटणे
2) झुंजुमुंजु होणे
3) कोंबडा आरवणे
4) पहाट होणे
5) दिवस उगवणे

VIII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए क्रियाओं से विशेषण बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
उदाहरण: पडणे = पडलेला = खाली पडलेला रूमाल उचल.
1) बघणे
2) बसणे
3) आणणे
4) देणे
5) दाखवणे
6) पाठविणे
7) करणे

IX हिंदी में अनुवाद कीजिए और उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
'भारताची गानकोकिळा' व 'महाराष्ट्रकन्या' लता मंगेशकर गात होती, 'ए मेरे वतन के लोगो' आणि भारताचे पहिले पंतप्रधान पंडित जवाहरलाल नेहरूंयांच्या डोळ्यातून अश्रू ओघळत होते. ही किमया लतादीदींच्या आवाजाची होती, गीताच्या शब्दांची होती, संगीताची होती. महाराष्ट्राला साहित्य व संगीताची वैभवशाली परंपरा व वारसा लाभलेला आहे. महाराष्ट्रात अनेक जगप्रसिद्ध कलाकार राहात आहेत, राहात होते व राहात असतीलही. कारण महाराष्ट्र कलावंतांची भूमी आहे. येथे साहित्य, संगीत, नृत्य, नाट्य, चित्र, शिल्प, अभिनय, लोककला इ. क्षेत्रांतील अनेक कलाकार आढळतात. परंतु येथे आपण महाराष्ट्रातील संगीतकलेचा व लोकसंगीत-

लोकगीतांचा विचार करणार आहोत. यात शास्त्रीय-उपशास्त्रीय संगीत, नाट्यसंगीत, तमाशा, लावणी, कीर्तन, पोवाडे, गोंधळ, भारूडे, लोकसंगीत, इ. चा समावेश होतो.

नाटकातील गीत म्हणजे नाट्यगीत. यात नाटकातील पात्राच्या भावभावना इ. व्यक्त केलेल्या असतात. हा काव्यप्रकार भावगीताला जवळचा आहे. त्यातून नाटकाचे कथानक पुढे सरकते.

फुगडी, टिपरी, झिम्मा, पिंगा, गौरीचा नाच, दसरा नृत्य, तमाशातील नृत्य, इ. स्त्रीनृत्ये, दिंडी नृत्य, दही काला, टिपरी गोफ, लेझीम, ढोलाचा नाच, दशावतार, घेराचा नाच, कोळी नृत्य, कुणबी नाच. इ. पुरुषांची नृत्ये महाराष्ट्रात प्रसिद्ध आहेत. हे महाराष्ट्राचे विशेष नृत्यप्रकार आहेत.

महाराष्ट्र लोकगीते व लोककलांसाठीही प्रसिद्ध आहे. त्यात तमाशा हा मुख्य प्रकार असून त्यात लावणी संकलित स्वरूपात दिसते. लावणीमुळे तमाशाला आकार येतो. गण-गवळण-श्रृंगारिक लावण्या, भेदिक लावण्या, मुजरा तमाशात येतात. यात सोंगाड्या महत्त्वाचा असतो. सर्वसामान्य जनसमुदायाची बौद्धिक भूक भागवण्याचे काम तमाशातील लावणी करते. होनाजी बाळाचा तमाशा प्रसिद्ध होता. लावणी म्हणजे एक प्रकारचे ग्राम्यगीत. गेयता, श्रृंगार व ग्राम्यता ही लावणीची लक्षणे. यात सवालजबाब असतात, अध्यात्म असते, भक्ती असते. लावणी बरोबर तालासाठी ढोलकी वाजविली जाते. ढोलकीवर थाप पडताच लावणी सुरू होते. रामजोशी, अनंतफंदी, प्रभाकर यांच्या लावण्या लोकप्रिय आहेत. दृकश्राव्यात्मकता, काव्याचे शुद्ध मराठीपण, बहुजनांसाठीचे काव्य व नाट्यात्मकता हे लावणीचे विशेष. उपदेशपर, वैराग्यपर, देवतावर्णनपर, कथनपर, संत-स्थान माहात्म्यपर, सामाजिक व विनोदी इ. प्रकारच्या लावण्या आढळतात. मनोरंजन व उद्‌बोधन ही लावणीची प्रेरणा आहे.

पोवाडा म्हणजे ठासून स्तुती करणे. वीरांच्या पराक्रमाचे, विद्वानांच्या बुद्धिमत्तेचे, एखाद्याच्या सामर्थ्याचे, गुण, कौशल्य इ. चे काव्यात्म वर्णन-प्रशस्ती म्हणजे पोवाडा होय. पोवाड्याची रचनापद्धती कथानिवेदनपद्धतीप्रमाणे म्हणजे प्रथम देव-देवतांना आवाहन, नमन, मुख्य कथा प्रस्ताव, कथा इ. क्रमाने असते. भूपाळी हा एक प्रभावी गीतप्रकार असूनती पहाटे म्हणतात.

भारूड हा लोकगीताचा एक प्रकार आहे. 'बहुरूढ गीत म्हणजे भारूड' वाच्यार्थ व लक्ष्यार्थ असे अर्थाचे दोन स्तर असणारे काव्य म्हणजे भारूड. ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ यांची भारूडे प्रसिद्ध आहेत. एकनाथांनी सुमारे १२५ भारूडे लिहीली. वारकरी नेहमी भारूडे म्हणतात. महाराष्ट्रात आजही भारूड लोकप्रिय आहे.

कीर्तन हा वाङ्मयाचा प्रसार होण्याचा मार्ग असून त्यात पुराणकथन येते. यातून पूर्वीची स्त्री शिकत होती. नारदीय, भजनी व हरिदासी कीर्तन हे कीर्तनाचे प्रकार. यात तत्त्वज्ञान, अभंग, श्लोक, गेयता, हरिभजन, नित्य पूजाविधी, आरत्या, संगीत इ. चा वापर होतो. विशेषतः वारकरी पंथात व सर्वसामान्य लोकांत आजही कीर्तन लोकप्रिय आहे.

महाराष्ट्रात 'गोंधळ' लोकप्रिय आहे. घरातील लग्नकार्याच्या वेळी कुलदैवताच्या प्रसन्नतेसाठी 'गोंधळ' घालतात. हा लोकविधी आहे. गोंधळ्यांच्या अंगावर

तेलकट कपडे, गळ्यात कवड्यांची माळ, डोक्यावर पगडी, हातात संबळ व तुणतुणे असते. प्रथम गणपतीला आमंत्रण देतात, मग इतर देवांना. दिवटी पेटवतात, नाचतात, गातात. ही लोकसंस्कृती आहे. महाराष्ट्रात आजही 'गोंधळ' घालतात.

महाराष्ट्रातील खानदेशात श्रावणात कानबाईचा उत्सव साजरा करतात. यालाच 'रोट' म्हणतात. देवीची पूजा करतात. कानबाई व राणूबाई ह्या दोन बहिणी आहेत असे मानतात. हा उत्सव (सण) फक्त खानदेशातच साजरा होतो.

याशिवाय महाराष्ट्रात देवीची, वासुदेवाची, पोतराजाची, वाघ्यामुरळीची, दिवाळीची (विविध सणांची), कानबाईची, भुलाबाईची गीते, भलरी गीते, कोकणी गीते आदिवासींची, वारल्यांची, वंजाऱ्यांची लोकगीते, भोंडल्याची गीते, सरस्वतीची गीते, गौळणी प्रसिद्ध व लोकप्रिय आहेत. ही गीते लोकगीते असून त्यात बोलीतील शब्द, त्या-त्या प्रदेशाचे किंवा विधीचे वर्णन, संगीत, नृत्य व गायन इ. चा आविष्कार होतो.

जो महाराष्ट्राच्या लोकगीतांचा, संगीताचा अभ्यास करत असेल, महाराष्ट्राची संस्कृती समजून घेत असेल त्याला या सर्वांचा विचार करावाच लागेल.

X मराठी में अनुवाद कीजिए।

मैं अपने मामा के गाँव खेतिया गई थी। वह मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित है। वहीं पास के जंगलों में 'पावरे' जाति के आदिवासी रहते हैं। वहाँ पर शनिवार को बाज़ार लगता है। उस दिन ये 'पावरे' लोग तड़के ही आ जाते हैं। अपने साथ वे गोंद, शहद, आँवले और शुद्ध घी लेकर आते हैं। वे अपने साथ हफ्ते भर का सामान लेकर जाते हैं। मेरे मामा की दुकान पर भी वे आते थे। उन औरतों की वेशभूषा निराली ही थी। कानों में बड़े बड़े झुमके और गले में रंगबिरंगी मणियों की मालाएँ। मैं घंटों उन्हें देखा करती थी।

एक बार मैं निबाली गई। निबाली खेतिया के पास ही है। वहाँ भगोरिया मेला लगा था। यह भील आदिवासियों का बड़ा त्योहार है। मेले में भील युवक-युवतियों की बड़ी भीड़ थी। ढोल-नगाड़े पर उनका नाचना-गाना देखने लायक था। उनकी खुशी भी देखते ही बनती थी। भगोरिये मेले की उस रंगत को मैं बहुत समय तक याद करती रहूँगी। मुझे उन उन्मुक्त भील युवक युवतियों की तरह नाचना गाना नहीं आता। फिर भी मैं उनके गीतों को बार-बार गुनगुनाती रहूँगी, ढोल-चंग की तान पर थिरकता रहूँगी।

XI नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

चळवळ, निमित्त, दारिद्र्य, जाणीव, प्रश्न, लक्ष, बहुसंख्य, आदिवासी, निर्णय, वेठबिगारी, काळोख, मोबदला, वैचित्र्य, प्रसंग, परिस्थिती

XII किसी परिचित जनजाति के बारे में मराठी में एक अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में अपूर्णभूतकाल और अपूर्ण भविष्यत् काल के प्रयोग सिखाए गए हैं। नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1) वारली वेठबिगारीने काम करत होते.
   वारली बेगारी पर काम करते थे।
2) तो भातही लाकडाच्या उखळीत कांडावा लागत होता.
   उस भात को भी लकड़ी की ओखली में कूटना पड़ता था।
3) पुन्हा पहाट झाली की रहाटगाडगं सुरू होत होतं.
   पौ फटते ही फिर वही चक्र शुरू हो जाता था।
4) येईल त्या प्रसंगाला मान तुकवत होते.
   चाहे जो भी बात हो वे उसे सिर झुकाकर स्वीकार कर लेते थे।
5) मूठभर भाताखेरीज दुसरी मजूरी मिळत नव्हती.
   मुट्ठीभर भात के अलावा कोई और मज़दूरी नहीं मिलती थी।

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित क्रिया रूपों में अपूर्ण भूतकालिक क्रियाओं का प्रयोग किया गया हैं। मराठी में अपूर्ण भूतकालिक क्रियारूप बनाने के लिए मूल क्रिया में '-त' प्रत्यय लगाकर अंत में 'होता' के उपयुक्त रूपों का प्रयोग होता है। ध्यान दें कि, मराठी में अपूर्ण भूतकालिक क्रिया केवल कर्ता के पुरुष, वचन और लिंग का अनुसरण करती है। इनका निषेधवाचक रूप बनाने के लिए 'होता' के स्थानपर 'नव्हता' के उपयुक्त रूपों का प्रयोग किया जाता है।

II नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रिया रूपों को देखिए।

उदाहरण:

1) यापुढेही मी हेच काम करत असेन.
   इसके बाद भी मैं यही काम करती रहूँगी।
2) वारल्यांना शिकवत असेन.
   वारलियों को सिखाती रहूँगी।
3) मला खात्री आहे की, हे सर्व ऐकून येणाऱ्या भविष्यात तुम्हीही मला मदत करत असाल.
   मुझे विश्वास है कि ये सब सुनकर भविष्य में आप भी मेरी मदद करते रहेंगे।

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित क्रिया रूपों में अपूर्ण भविष्यत् कालिक क्रियाओं का प्रयोग किया गया है। मराठी में अपूर्ण भविष्यत् कालिक क्रियारूप बनाने के लिए मूल क्रिया में '-त' प्रत्यय लगाकर अंत में 'अस' क्रिया के उपयुक्त भविष्यत् कालिक

रूपों का प्रयोग होता है। ध्यान दें कि, मराठी में अूपर्ण भविष्यत् काल में क्रिया पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पडता। केवल वचन और पुरुष के अनुसार 'अस' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग होता हैं।

III अपूर्ण भविष्यत् कालिक क्रियाओं का निषेधवाचक रूप बनाने के लिए 'अस-' क्रिया के स्थान पर 'नस' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग किया जाता है।
अपूर्ण भविष्यत् काल निषेधवाचक
उदाहरण:

1) वारल्यांना शिकवत असेन. वारलियों को सिखाती रहूँगी।
2) वारल्यांना शिकवत नसेन. वारलियों को नहीं सिखाती रहूँगी।

IV मराठी में 'जाने तक', 'आने तक' इस प्रकार के प्रयोग के लिए स्वरांत क्रिया शब्द में '-ई' और व्यंजनांत क्रिया शब्द में '-ए' प्रत्यय जोड़कर अंत में -'पर्यंत', या '-तो', या '-स्तोवर' परसर्ग लगाया जाता है।
उदाहरण:

1) ते काळोख दाटेपर्यंत काम करतच होते. (दाट + ए + पर्यंत)
शाम को घना अंधेरा होने तक वे काम में लगे रहते थे।
ते काळोख दाटेतो काम करतच होते. (दाट + ए + तो)
ते काळोख दाटेस्तोवर काम करतच होते. (दाट + ए + स्तोवर)
2) मी येईपर्यंत जाऊ नकोस. (ये + ई + पर्यंत) मेरे आने तक न जाओ।
मी येईतो जाऊ नकोस (ये + ई + तो)
मी येईस्तोवर जाऊ नकोस. (ये + ई + स्तोवर)
3) मी येईपर्यंत थांब. (ये + ई + पर्यंत) मेरे आने तक रूको।

IV 'केलेला' (किया हुआ) इस प्रकार के भूतकालिक कृदंत विशेषण बनाने के लिए मराठी में क्रिया शब्द में '-लेला' या '-लेली' या '-लेले' प्रत्यय लिंग-वचन के अनुसार लगते हैं। ध्यान दें कि यदि विशेष्य में विभक्ति लगी हो तो क्रिया शब्द में '-लेल्या' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण: खाल + लेली = खाल्लेली (खाई हुई)
(ये) आ + लेला = आलेला (आया हुआ)
(जा) गे + लेले = गलेले (गये हुए)
आलेल्या मुलीला = आई हुई लड़की को

धडा पाठ 18

मराठी शिकायचंय मला!

अनघा : प्रिया अगं, आजकाल कुठं दिसत नाहीस. असतेस तरी कुठं? अगदी उंबराचं फूल झाली आहेस.

प्रिया : अगं, मी मराठी शिकतेय. रोज संध्याकाळी तास असतो.

अनघा : मराठी? हे काय नवीनच वेड! कुठे शिकतेस?

प्रिया : आपल्या सरकारनं भारतीय भाषा शिकवण्यासाठी केंद्र उघडलं आहे. आपल्याच शहरात. तिथंच जाते.

अनघा : पण मराठीच कशाला?

प्रिया : मी कॉम्प्युटरमधे पीएच.डी. करते आहे. मला नोकरी फक्त महानगरातच मिळेल. मी मुंबईतच नोकरी शोधणार आहे. महाराष्ट्रात नोकरी करायची तर मराठी नको का यायला?

अनघा : आणखी कोण कोण शिकताहेत?

प्रिया : ती बघ आमची टोळी! आम्ही, सगळेच बरोबर जातो.

राकेश : काय चाललंय?

प्रिया : अरे, अनघाला आपल्या मराठी शिकण्याचं नवल वाटतंय.

राकेश : त्यात काय नवल? मी मराठी मुलीच्या प्रेमात पडलो आहे. त्यामुळे मराठी शिकणं मला अत्यावश्यक आहे. नाहीतर व्हायचं 'मराठीने केला कानडी भ्रतार! एकाचे उत्तर एका न ये कानी।'

मुझे मराठी सीखनी है!

अनघा : प्रिया, आजकल तुम कहीं दिखाई नही देतीं। कहाँ रहती हो? तुम तो ईद का चाँद हो गई हो।

प्रिया : अरे, मैं मराठी सीख रही हूँ। रोज़ शाम को कक्षा होती है।

अनघा : मराठी? यह क्या नया पागलपन (है)! कहाँ सीखती हो?

प्रिया : अपनी सरकारने भारतीय भाषाएँ सिखाने के लिए केंद्र खोला है। हमारे ही शहर में। वहीं जाती हूँ।

अनघा : लेकिन मराठी ही क्यों?

प्रिया : मैं कंप्यूटर पीएच.डी. कर रही हूँ। मुझे नौकरी केवल महानगरों में ही मिल सकती है। और मुझे मुंबई में ही नौकरी ढूँढनी है। महाराष्ट्र में नौकरी करना है तो मराठी नहीं आनी चाहिए क्या?

अनघा : और कौन कौन सीख रहे है?

प्रिया : वह देखो हमारी टोली! हम सभी साथ जाते हैं।

राकेश : क्या हो रहा है?

प्रिया : अरे, अनघा को हमारे मराठी सीखने पर बड़ा आश्चर्य हो रहा है।

राकेश : इसमें आश्चर्य क्या है? मैं तो मराठी लड़की से प्रेम करता हूँ। इसलिए मराठी सीखना मेरे लिए बहुत जरूरी है। नहीं तो ऐसा होगा कि मराठी स्त्री ने किया कन्नड पति एक का कहना दूसरे को नहं समझता।

संतोष : अरे अपनी बकवास बंद करो। मैं तो

संतोष : ए, चहाटळपणा पुरे! मी तर मराठी साहित्याच्या प्रेमात पडलो आहे. बी.ए. व्हायच्या आधीच मी ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेते वि.स.खांडेकर यांच्या 'ययाती' चं भाषांतर वाचलं होतं आणि ठरवलं होतं की मराठी शिकायचंच. 'ययाती' मुळातून वाचायची.

रामकुमार : मला तर मराठी शिकायलाच हवी. माझ्या प्रबंधाचा विषयच आहे, 'महाराष्ट्राची लोककला.' मराठी 'तमाशा' बद्दल लिहायचं तर मराठी यायला नको का? भाषेशिवाय संस्कृती कशी समजेल?

महेशचंद्र : मी लहान असताना खूप वेळा महाराष्ट्रात गेलो आहे. माझे मामा तिथे होते. माझ्या बालपणाच्या गोड आठवणी महाराष्ट्राशी निगडीत आहेत. तसंच मला डोंगरदऱ्यातून भटकायला आवडतं. गडकिल्ले पाहायला आवडतात. इतिहास जिवंत होतो गड पाहताना! त्यामुळे मला महाराष्ट्राचं फार आकर्षण आहे. मला महाराष्ट्रात प्रवास करायचा म्हणून मी मराठी शिकतो आहे.

बीना : माझी मावशी पंचवीस वर्षांपूर्वी महाराष्ट्रात गेली होती. ती तिकडेच स्थायिक झाली. ती सचिवालयात शिक्षण खात्यात सचिव आहे. ती तिचे खूप अनुभव सांगते. मीही आय.ए.एस. करणार आहे आणि महाराष्ट्रातच नोकरी करणार आहे. मावशी मराठी नंतर शिकली. मराठी न आल्यामुळे

मराठी साहित्य के प्रेम में पड़ा हूँ। बी.ए. के पहले ही मैंने ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता वि.स.खांडेकर के 'ययाति' उपन्यास का अनुवाद पढ़ा था और तभी निश्चय कर लिया था कि मराठी सीखनी ही है। इस उपन्यास को मूल रूप में पढ़ना है।

रामकुमार : मुझे तो मराठी सीखनी ही चाहिए। मेरे तो शोध-प्रबंध का विषय ही है 'महाराष्ट्र की लोककला।' मराठी 'तमाशा' (नौटंकी) के बारे में लिखना है तो मराठी नहीं आनी चाहिए क्या? भाषा के बिना संस्कृति को कैसे समझेंगे?

महेशचंद्र : मैं बचपन में कई बार महाराष्ट्र गया हूँ। मेरे बाल्यकाल की बहुतसी मधुर स्मृतियाँ महाराष्ट्र से जुड़ी हैं। वैसे भी मुझे पहाड़ों और घाटियों में भटकना अच्छा लगता है। गढ़ और किले देखना भी अच्छा लगता है। गढ़ों को देखते ही इतिहास जीवंत हो उठता है। इसलिए मुझे महाराष्ट्र के प्रति आकर्षण है। मुझे महाराष्ट्र में भ्रमण करना है इसलिए मैं मराठी सीख रहा हूँ।

बीना : मेरी मौसी पच्चीस साल पहले महाराष्ट्र गई थीं। वे वहीं बस गईं। वे सचिवालय के शिक्षा विभाग में सचिव हैं। वे अपने बहुत से अनुभव बताती हैं। मैं भी आई.ए.एस्. करनेवाली हूँ और महाराष्ट्र में ही नौकरी करनेवाली हूँ। मौसी ने मराठी बाद में सीखी। मराठी न जानने के कारण उन्हें शुरू में थोड़ी

असुविधा हुई थी। इसलिए मैं पहले ही मराठी सीख रही हूँ।

राकेश : कक्षा का समय हो गया है। बातें

तिला प्रथम थोडा त्रास झाला होता. म्हणून मी आधीच मराठी शिकते आहे.

राकेश : तासाची वेळ झाली. गप्पा मारत बसू नका.

रामकुमार : जाता जाता बोलू या.

अनघा : मीही येते तुमच्याबरोबर. तुम्ही सगळीजणंच मराठी शिकताहात हे काय कमी कारण झालं मला मराठी शिकायला?

करते मत बैठो।

रामकुमार : जाते-जाते बात करेंगे।

अनघा : मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ। तुम सभी मराठी सीख रहे हो, यह क्या कम कारण है मेरे मराठी सीखने का?

शब्दार्थ

मराठी शिकायचंय	मराठी सीखनी है
आजकाल	आजकल
असतेस कुठे?	कहाँ रहती हो?
वेड	पागलपन
नोकरी	नौकरी
आणखी	और
बरोबर	साथ-साथ
काय चाललंय?	क्या हो रहा है?
नवल वाटते	आश्चर्य हो रहा है
प्रेमात	प्यार में, प्रेम में
अत्यावश्यक	बहुत ज़रूरी
भ्रतार, नवरा	पति, भरतार
पुरस्कार विजेते	पुरस्कार विजेता
भाषांतर	अनुवाद
मूळातून	मूल रूप में
बालपण	बचपन
गोड आठवणी	मधुर स्मृतियाँ
जिवंत	जीता जागता, जीवंत
शिकणे	सीखना
स्थायिक झाली	बस गई
त्रास	असुविधा, कष्ट
तास	घंटा
जाता जाता	चलते चलते

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) प्रिया मराठी कुठे शिकते?
2) राकेशच्या मराठी शिकण्याचे कारण काय आहे?
3) वि.स.खांडेकरांना कोणता पुरस्कार मिळला?
4) महेशचंद्राल काय आवडतं?
5) बीताची मावशी कोण आहे?

II वार्तालाप के आधार पर वाक्य पूरे कीजिए।

1) आपल्या सरकारनं .... भाषा शिकवण्यासाठी .... उघडलं भाहे.
2) महाराष्ट्रात नोकरी करायची तर .... नको का ....?
3) वि.स.खांडेकर यांच्या .... चे भाषांतर वाचलं आणि ठरवलं की .... शिकायचंच.
4) महाराष्ट्रात प्रवास .... म्हणून मी .... शिकतो.
5) मी मराठी साहित्याच्या .... पडलो आहे.
6) भाषेशिवाय .... कशी समजेल?

III उदाहरण के अनुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* मी पुस्तक <u>वाचतो आहे</u>. मी पुस्तक <u>वाचत होतो</u>.

1) मी डोंगर पाहाते आहे. 2) आम्ही भाजी आणतो आहे.
3) तू जेवते आहेस.

2. *उदाहरण:* तू धडा <u>वाचतो आहेस</u>. तू धडा <u>वाचला आहेस</u>.

1) तुम्ही अंगणात काम करत आहात.
2) प्रकाश फुले तोडत आहे.

3. *उदाहरण:* रामराव सामान खरेदी <u>करत आहेत</u>. रामरावांनी सामान खरेदी <u>केलं होतं</u>.

1) आपण पाने गोळा करत आहोत. 2) तू चित्र काढतो आहेस.
3) तो फळं आणतो आहे.

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के निषेधवाचक रूप बनाइए।

1. *उदाहरण:* लोक डोंगर चढत <u>होते</u>. लोक डोंगर चढत <u>नव्हते</u>.

1) तू अभ्यास करत होतीस. 2) तू बागेत बसत होतास.
3) मी बाजारात जात होते.

2. *उदाहरण:* मी सुमनबरोबर <u>खेळत होतो</u>. मी सुमन बरोबर <u>खेळले नाही</u>.
   1) तुम्ही आंबे खात होता. 2) आम्ही विद्यार्थ्यांना शिकवत होतो.
   3) रामू सामान देत होता.

3. *उदाहरण:* प्रिया पुस्तक <u>वाचत होती</u>. प्रियानं पुस्तक <u>वाचलं नाही</u>.
   1) तो घर घेत होता. 2) तो कविता लिहित होता.
   3) ती सिनेमा पाहत होती.

V बायीं ओर दिए गए शब्दों के साथ दाहिनी ओर दिए गए शब्दों का सही मिलान कर वाक्यांश बनाईए।

कांडलेला	गोष्टी
बघितलेले	शिक्षक
रागावलेले	कुत्रं
बसलेलं	डाळ
वाटलेली	मुली
सजलेल्या	किल्ले
चुकलेली	भात
विणलेले	वाट
लिहिलेल्या	पत्र
पडलेलं	रुमाल

VI उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* मला घर <u>आवडलं</u>. मला घर <u>आवडलं आहे</u>.
   1) प्रियाने साडी घेतली. 2) तुम्हाला पुस्तकं मिळाली.
   3) मी त्या गावाला गेलो.

2. *उदाहरण:* उमेशला गोष्ट <u>समजली</u>. उमेशला गोष्ट <u>समजली न</u>?
   1) सुमनने कविता वाचली. 2) मी भाषण ऐकले.
   3) सर्वांनी अभ्यास केला.

1. *उदाहरण:* शांताबाईंना बातमी <u>कळली</u>. शांताबाईंना बातमी <u>कळली नव्हती</u>.
   1) पिल्लाला झोप लागली. 2) आपल्याला खाऊ दिला.
   3) मुलांनी काम केले.

VII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

1. *उदाहरण:* मी धुळ्याला .... (जाणे)

मी धुळ्याला गेले.

1) मी अलाहाबादहून .... (येणे) 2) तू मराठी .... (शिकणे)

2. *उदाहरण:* तू अंगण .... (झाडणे)

तू अंगण झाडत होतीस.

1) आम्ही बागेत .... (बसणे)

2) तुम्ही आंबे .... (खाणे)

3. *उदाहरण:* रमेशने फुले .... (तोडणे)

रमेशने फुले तोडली.

1) मला सुमन बाजारात .... (भेटणे)

2) रामरावांनी सिनेमा .... (पाहणे)

4. *उदाहरण:* पिल्लं दूध .... (पिणे)

पिल्लं दूध प्यायली होती.

1) आपण डोंगरावर .... (चढ)

2) सगळे मराठी .... (शिक)

3) मी साडी .... (आण)

VIII उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* मी मंडईत जाईन. मी मंडईत जाणार आहे.

1) आम्ही मंडईत जाऊ. ....

2) मी वर्गात येईन. ....

2. *उदाहरण:* आम्ही मंडईत जाऊ. आम्ही मंडईत जाणार नाही.

1) तू घरी जाशील. 2) तुम्ही वर्गात जाल.

3. *उदाहरण:* तो खेळ खेळल्यावर घरी गेला. तो खेळ खेळल्यानंतर घरी गेला.

1) तो अभ्यास केल्यावर शाळेत गेला.

2) मी अभ्यास केल्यावर सिनेमा पाहिला.

4. *उदाहरण:* ती अभ्यास केल्यामुळे पास झाली. तिनं अभ्यास केला.

ती पास झाली.

1) त्या झाडावर चढल्यामुळे पडल्या.

2) पिल्लू झाडावर चढल्यामुळे पडलं.

5. *उदाहरण:* पिल्लू दूध पिईपर्यंत थांबा.पिल्लू दूध पिईपर्यंत थांबू नका.

1) तुम्ही डॉक्टर येईपर्यंत थांबा. 2) आपण जेवण होईपर्यंत थांबा.

IX कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर अनुच्छेद पूरा कीजिए।

काल मी चार वाजता घरी .... (जाणे). सर्व काम आटोपून सहा वाजता अभ्यासाला .... (बसणे). रात्री दहा वाजेपर्यंत मी अभ्यास .... (करणे). पूर्ण वाचून मी .... (झोपणे). कारण मला आज सकाळी पाच वाजता .... होते. (उठणे)

पढ़िए और समझिए

भाषा शिकणं म्हणजे काय?

नवीन भाषा शिकणं हा एक सुंदर अनुभव आहे. भाषा शिकणं म्हणजेच ती भाषा बोलणाऱ्यांची संस्कृती शिकणं! प्रत्येक समाजाचे आचार, विचार, रूढी, समजुती, इतिहास, भूगोल यांचं प्रतिबिंब भाषेत असतं. उदाहरणार्थ एस्किमो लोकांच्या भाषेत बर्फाला जवळजवळ वीस निराळे शब्द आहेत. बर्फच त्यांच्या आयुष्याचा आधार आहे. मराठीचीही अशीच वैशिष्ट्ये आहेत. मराठीशी हजारो वर्षांपासून संबंध आलेल्या भाषांचे शब्द तिच्यात सापडतात. कन्नड, अरबी-फारसी, इंग्रजी, आणि हिंदी यांचा तिच्या शब्दसंग्रहावर आणि वाक्यरचनेवर परिणाम झालेला आहे. त्यांच्याकडून काहीना काही घेऊन मराठीनं ते आत्मसात केलेलं आहे. भाषा ही नदीच्या प्रवाहासारखी असते. येणाऱ्या स्त्रोतांना सामावून घेत ती समृद्ध होते.

भाषा शिकणं म्हणजे फक्त व्याकरण शिकणंच नव्हे किंवा शब्दसंग्रह पाठ करणंही नव्हे. समाजाच्या वर्तणुकीचे नियम समजले तरच भाषेचे कंगोरे समजतील.

कुणाशी, कधी, कुठे आणि कसं बोलायाचं हे समजणं म्हणजेच भाषा शिकणं.

शब्दार्थ

अनुभव	अनुभव
रूढी	रूढ़ी
समजुती	धारणाएँ
प्रतिबिंब	परछाँई
बर्फ	बर्फ़
वैशिष्ट्ये	विशिष्टताएँ
वर्षांपासून	वर्षों से
परिणाम	असर
प्रवाहासारखी	प्रवाह जैसी
येणाऱ्या	आनेवाले
फक्त	सिर्फ
पाठ करणं	याद करना
वर्तणूक	बर्ताव

कंगोरे	बारीकियाँ, खुबियाँ
समजतील	समझेंगे
कुणाशी	किससे
कसं बोलायचं	क्या बोलना

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) नवीन भाषा शिकणं म्हणजे कोणत्या गोष्टी शिकणं?
2) एस्किमो लोकांच्या भाषेत बर्फाला किती शब्द आहेत? त्यांच्या आयुष्याचा आधार काय असतो?
3) कोणकोणत्या भाषांचा मराठी शब्दसंग्रहावर आणि वाक्यरचनेवर परिणाम झाला आहे?
4) भाषेची तुलना कशाबरोबर केली आहे?

II अनुच्छेद के आधार पर सही कथन बताइए।

1) एस्किमो लोकांच्या भाषेत बर्फाला फक्त एकच शब्द आहे.
2) नवीन भाषा शिकणं हा एक सुंदर अनुभव आहे.
3) भाषा शिकणं म्हणजे फक्त व्याकरण शिकणं.
4) भाषा शिकणं म्हणजेच ती भाषा बोलणाऱ्यांची संस्कृती शिकणे.

III कोष्ठक में दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द अनुच्छेद में रेखांकित किए गए हैं। रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कीजिए।
(लहानपणी, खूप, जरूरी, पुष्कळ, नवल, अलीकडे)

<u>आजकल</u> <u>अनेक</u> भाषा शिकणं <u>आवश्यक</u> झालं आहे. एखाद्याला <u>खूप</u> भाषा येतात याचं <u>आश्चर्य</u> वाटत नाही. <u>बालपणीच</u> मुलांच्या कानावर दोन किवा तीन भाषा पडतात.

IV विलोम शब्दों को जोडिए।

सकाळ	अनावश्यक
जिवंत	जास्त
आधी	नंतर
कमी	मृत
आवश्यक	संध्याकाळ

V 'तास' शब्द का प्रयोग कर नीचे दिए गए वाक्यों के अनुसार और तीन वाक्य बनाइए जिन में 'तास' का अलग अलग अर्थ हो।

1) मराठीच्या तासाची वेळ झाली.
2) साठ मिनिटांचा एक तास असतो.
3) त्याने लाकूड तासले. गुळगुळीत केले.

VI नीचे दिए गए वाक्यांशों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।
"मराठीने केला कानडी भ्रतार " " उंबराचं फूल"

1) "मला मंजू खूप दिवसात दिसली नाही. "मलाही!
ती अलीकडे .... झाली आहे.
2) तिचं म्हणणं मला कळेना, माझं म्हणणं तिला!
म्हणतात ना ....!

VII उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

1. *उदाहरण:* "मी अनघाला बोलावणार इतक्यात अनघाच आली."
मी अनघाला बोलावणार तोच अनघा आली.

1) मी रमेशला फोन करणार इतक्यात तो घरीच आला.
2) आई सुधाला डबा पाठवणार इतक्यात तीच जेवायला घरी आली.
3) नरेन्द्र सुधाला आपल्या गाडीत बसायला सांगणार, इतक्यात ती सुरेन्द्रच्या गाडीत गेलीसुद्धा.
4) आम्ही जेवायला बसणार इतक्यात पाहुणे आले.

2. *उदाहरण:* मी अनघाला बोलावणार तोच अनघा आली.
मी अनघाला बोलावणार त्याचवेळी अनघा आली.

1) मी बाहेर जाणार तोच मारपीट झाली.
2) तो नाटकाला जाणार तोच सुमनच्या मित्राचा फोन आला.
3) ट्रेन सुटणार तोच मोहन पळत पळत आला.

VIII नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग कर मराठी वाक्य बनाइए।
संध्याकाळी, केंद्र, कॉम्प्युटर, महानगर, नोकरी, नवल, प्रेम, अत्यावश्यक, चहाटळपणा, साहित्य, पुरस्कार, भाषांतर, प्रबंध, संस्कृती, इतिहास.

IX हिंदी में अनुवाद कीजिए।
मराठी भाषेचा आणि कन्नड भाषेचा तसा जवळचा संबंध आहे. महाराष्ट्र आणि कर्नाटक एकमेकांशेजारी आहेत. त्यांच्यांत बरीच सांस्कृतिक देवाणघेवाणही झालेली आहे. उत्तर कर्नाटकाने भारताला व महाराष्ट्राला अनेक गायक दिलेत. गंगुबाई हनगल, पं.भीमसेन जोशी हे त्यापैकीच. नाट्यवेड्या मराठी मनाला प्रिय असलेल्या

नाट्यसंगीताचा उगम कर्नाटक संगीतातूनच झाला आहे. महाराष्ट्राचे दैवत असलेला विठोबाही कर्नाटकातूनच आला. कविवर्य ज्ञानेश्वरांनी म्हटले आहेच "कानडाऊ विठ्ठलु कर्नाटकु, तेणे मज लावियले वेडु" "माझा विठ्ठल कानडी असून तो करणी करणारा आहे. त्याने मला वेड लावले आहे." "मराठीने केला कानडी भ्रतार, एकाचे उत्तर एका न ये कानी" असंही कवीने म्हणून संसारातला एक जोडीदार कन्नड आणि दुसरा मराठी असेल आणि एकानं बोललेलं दुसऱ्याला समजत नसेल तर कसा गंमतीदार घोटाळा होतो याचं मजेदार वर्णन केलं आहे. मराठी स्वयंपाकघर आणि कन्नड स्वयंपाकघर यांत खूप समान शब्द आहेत. स्वयंपाकाच्या पद्धतीत व वापराच्या गोष्टीत पण खूप साम्य आहे. मराठीतल्या 'आल्या' ला कानडीत 'शुंठी' म्हणतात. मराठीतही 'सुंठ' शब्द आहेच. पण तो वाळलेल्या आल्यासाठी. मराठीतली कोथिंबीर इथे 'कोथंब्री' आहे तर पडवळ पडवळच आहे. दोन्ही भाषांमध्ये खूप संस्कृत शब्द आहेत.

एवढ सगळे असून सुद्धा कन्नड भाषा शिकताना मला जड जाते आहे. दिल्लीहून म्हैसूरला आल्यावर आम्हाला म्हैसूर खूप आवडले. मात्र इथे राज्यसरकारच्या विविध कार्यालयातले बोर्डस्, रस्त्यांची व वसत्यांची नावं दाखविणारे सगळे फलक फक्त कन्नडलिपीत. ते वाचता येत नाही म्हणून फार पंचाईत होते. वाण्याशी बोलताना, भाजीवाल्याशी बोलताना, घरगुती नोकरांकडून कामं करून घेताना सगळीकडे अडचणच अडचण सगळंच कन्नड!.

अखेर, कन्नडभाषा खूप जोमाने शिकायचा मी निर्णय घेतला आहे. भारतीय भाषा संस्थानातून कन्नडभाषाशिक्षणक्रमाच्या कॅसेट्स् विकत घेतल्या आहेत. शिवाय त्या भाषेच्या पाठ्यक्रमाची पुस्तकेपण विकत घेतली आहेत. म्हैसूरचे आणि एकंदरीतच कर्नाटकातले लोक खूप मनमिळाऊ आणि नेहमी मदत करायला तयार असणारे आहेत. त्यांच्याशी त्यांच्याच भाषेत बोलून विचार आणि भावनांचे आदानप्रदान करता आले तर किती छान होईल!

XII मराठी में अनुवाद कीजिए।

विवेकहीन बंदर

एक राजा था। उसकी मित्रता एक बंदर से हो गई। वह बंदर सदा राजा के साथ रहता था। राजा को वह बंदर बहुत प्रिय था।

एक दिन राजा के मंत्री ने सोचा यदि उस बंदर को राजा के अंगरक्षक का प्रशिक्षण दे दिया जाए तो ठीक रहेगा। मंत्री ने यह बात राजा से कही। राजा ने सहर्ष अपनी सहमति दे दी। मंत्री ने सेना नायक से कहा कि बंदर को तत्काल अंगरक्षक का प्रशिक्षण दिया जाए। नकल करने में तो बंदर बहुत कुशल होता है। उसने शीघ्र ही प्रशिक्षण पूरा कर लिया।

अब तो बंदर पूरे उत्साह से तलवार कंधे पर उठाए राजा के साथ रहने लगा। मंत्री ने बंदर को समझाया कि, वह सावधानी से राजा की रक्षा करे। जब राजा सो जाता तब बंदर नंगी तलवार कंधे पर रखकर राजा के पलंग के चारों ओर चक्कर लगाता रहता। मंत्री ने बंदर को समझाया कि, कोई भी व्यक्ति अंदर न आ जाए। राजा

के कक्ष में केवल वही व्यक्ति आ सकता था जिसे अंदर आने की अनुमति दी गई थी। बंदर की उस तत्परता से राजा और मंत्री दोनों बहुत खुश थे।

एक दिन जब राजा सो रहा था, तब बंदर नंगी तलवार अपने कंधे पर रखे, पलंग के चारों ओर घूम-घूमकर रखवाली करने लगा। बंदर बहुत सतर्क होकर रखवाली कर रहा था। तभी उसने देखा, एक बड़ी सी मक्खी राजा के सिर पर आ बैठी है। बंदर ने उसे तत्काल उड़ा दिया। मक्खी नाक से उड़कर राजा की गर्दन पर आ बैठी। बार-बार उड़ाने पर भी मक्खी ने राजा के शरीर पर बैठना नहीं छोड़ा। एक जगह से उड़कर दूसरी जगह बैठ जाती। मक्खी की उस हिमाकत से बंदर की खीज बढ़ गई। उसे मक्खी पर गुस्सा आ रहा था। वह ज्यादा खटर-पटर कर के राजा की नींद में भी बाधा नहीं पहुँचाना चाहता था। इसलिए बंदरने एकबार फिर तलवार की नाक से मक्खी को उड़ाया। लेकिन मक्खी भी बड़ी ज़िद्दी निकली। वह फिर आकर राजा की गर्दन पर आ बैठी। अब तो बंदर का गुस्सा चरम सीमा पर पहुँच गया। एक छोटी सी मक्खी तक उसका हुकुम नहीं मान रही है। इसकी यह मजाल!

बंदर गुस्से में पागल हो उठा। उसने आव देखा न ताव। झट से अपनी तलवार सम्हाल ली। मक्खी पर निशाना साध कर एक भरपूर वार कर दिया। तलवार के वार से मक्खी तो उड़ गई किन्तु राजा की गर्दन धड़ से अलग हो गई। राजा का चिल्लाना सुनकर बाहर खड़े संतरी भीतर दौड़े आए। तभी वहाँ मंत्री भी आ पहुँचा। बंदर की मूर्खता और राजा की हत्या देखकर मंत्री ने यों सोचा, "केवल प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने से कोई योग्य नहीं हो जाता। उसमें स्वयं का विवेक भी होना आवश्यक है।"

टिप्पणियाँ

1. वि.स.खांडेकर - जन्म 11-01-1898, सांगली; मृत्यु 2-09-1976
मराठी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार थे। 'हृदयाची हाक' इनका पहला उपन्यास है। बोध और उद्बोधन ये इनकी उपन्यास की विशेषताएँ हैं। 'रूपक कथा' (अन्योक्ति) यह आधुनिक काल में इन्हों ने लिखी। यह इन की पसंदीदा साहित्य-विधा थी। 'कांचनमृग', 'दोन ध्रुव', 'उल्का', 'दोन मने', 'पहिले प्रेम', 'क्रौंचवध', 'ययाती', अमृतवेल' आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'रंकाचे राज्य' इनका एकमेव नाटक है। इनके 'वायूलहरी', 'चांदण्यात', 'सायंकाळ', 'अविनाश', 'तिसरा प्रहर' आदि निबंध संग्रह भी प्रसिद्ध हैं। 'सांजवात', 'हस्ताचा पाऊस', 'कलिका', 'वनदेवता', 'फुले आणि दगड', 'स्त्री आणि पुरुष' आदि इनके कथा संग्रह प्रसिद्ध हैं। 'एका पानाची कहाणी' यह इनकी आत्मकथा है। वे साहित्य में 'जीवनासाठी कला' कला जीवन के लिए के समर्थक थे। इनके 'ययाति' उपन्यास को साहित्य क्षेत्रका सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' 1974 में दिया गया। वे मराठी के 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त करनेवाले पहले लेखक हैं। वे 1958 में सातारा में हुए अखिल भारतीय मराठी नाट्यसंमेलन के और 1941 में सोलापूर में हुए अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन के अध्यक्ष रह चुके

है। खांडेकरजी मूलतः उपन्यासकार, कथाकार और निबंधकार के रूप में जाने जाते है।

वे पेशे से शिक्षक थे। इन्होनें लघु कथा, रूपक कथा, उपन्यास, नाटक, कविता, पटकथा, समीक्षा, निबंध आदि साहित्य-विधाओं की रचना की। 1923 में 'घर कोणाचं' इनकी पहली कथा प्रसिद्ध हुई। इन्हें आदर्श के प्रति आकर्षण था। इनके लेखन में आदर्श, काव्यात्मकता, चिंतनशीलता, उदारता, नवीनता का आकर्षण, निसर्गवर्णन, निर्मलवृत्ति, सामाजिकता आदि का दर्शन होता है। इन्हों ने अनेक नवलेखकों को प्रोत्साहित किया तथा मार्गदर्शन किया। इन्होंने 1 नाटक, 15 उपन्यास, 30 कथासंग्रह, 6 रूपक कथासंग्रह, 11 लघुनिबंधसंग्रह, 12 टीकासंग्रह, 21 संपादन, 18 चित्रपटकथाएँ और 4 प्रकीर्ण पुस्तकें लिखी हैं। इनके लेखन का अनुवाद गुजराती, तमिळ और हिंदी में हुआ है। 'छाया' 'ज्वाला', 'देवता', 'सुखाचा शोध', 'सरकारी पाहुणे' जैसे मराठी और 'बडी माँ', 'सुभद्रा', 'दानापानी' जैसे हिंदी फिल्मों की पटकथाएँ खांडेकरजी की थी। इनके लेखन में कला और जीवन का संगम पाया जाता है। इन्होंने 1924 में 'वैनतेय' (साप्तहिक) का संपादन किया था। इन्हें भारत सरकारने 1968 में 'पद्मभुषण' पुरस्कार से सम्मानित किया था।

2. महाराष्ट्राची लोककला - लोककला में लोकसाहित्य, लोकगीत, लोकसंगीत आदि का समावेश होता हैं। महाराष्ट्र में देवी के, वासुदेव के, पोतराज के वाघ्या मुरली के, विविध त्योहारों के, कानबाई के, आदिवासियों के और गुलाबाई के गीत लोकगीतों के अंतर्गत आते हैं। पोवाडा, कीर्तन, तमाशा, लावणी, भारूड, गौळण लोकनाट्य, लोकनृत्य आदि भी महाराष्ट्र की लोककला में समाविष्ट हैं। लोकनृत्य में फुगडी झि म्मा, पिंगा, टिपरी, लेझीम, दशावतार, कोलीनृत्य, कुणबीनृत्य, तमाशा का नृत्य, गोंधल आदि का उल्लेख आवश्यक है। लावणी और तमाशा महाराष्ट्र की विशेष लोककला है। इन लोकगीतों में लोकजीवन, लोकसंस्कृति और लोकभाषा का दर्शन होता है। अनेक धार्मिक और सामाजिक रिवाजों का इनसे परिचय होता है। इन लोककलाओं का आविष्कार प्रसंगानुरूप और विशिष्ट प्रकार की वेषभूषा के साथ किया जाता है। इनका अध्ययन 'लोकसाहित्य' में होता है। मनोरंजन, उद्‌बोधन, संस्कृतिदर्शन, लोकशिक्षा आदि इन लोककलाओं के हेतु हैं।

3. मराठी तमाशा - तमाशा एक दृश्य-श्राव्य लोककला का प्रकार है। तमाशा महाराष्ट्र की विशेषता है। तमाशा में लावणी का समग्र रूप में दर्शन होता है। लावणी से तमाशा को आकार प्राप्त होता है। गण, गवळण, शृंगारिक लावणियाँ, भेदिक लावणियाँ, मुजरा आदि का समावेश इस में होता हैं। इस में 'सोंगाड्या' महत्त्वपूर्ण होता है। 'मुजरा' पूरा होने के बाद तमाशा खत्म होता है। जनसाधारण की बौद्धिक भूख पूरी करने का काम तमाशा की लावणी करती है। संस्कृत नाट्य में होनेवाले 'भरतवाक्य' का काम तमाशा में 'मुजरा' करता है। मनोरंजन और शिक्षण इस के उद्देश्य हैं। इस के लावणियों में शृंगार, देवताओं का वर्णन, अध्यात्म, तत्त्वज्ञान आदि का अंतर्भाव होता है। इस में

ढोलकी, तबला, खंजरी, टाळ, घुँगरू, हार्मोनिअम, तुणतुणे, एकतारी और अन्य तालवाद्यों का प्रयोग होता है।

धडा / पाठ 19

महाराष्ट्राचा सांस्कृतिक गोडवा

विठ्ठल : विश्वदीप, तुझ्या आमंत्रणावरून मी मागच्या वर्षी आसाम फिरलो. यावर्षी तू महाराष्ट्रात चल. जर तू महाराष्ट्रात गेलास तर तुला खूप काही बघायला मिळेल. मी नाही का आसामात केवढं काही पाहिलं! ब्रह्मपुत्रेचं पात्र किती भव्य आहे! जसा काही समुद्रच! कामाख्यादेवीचं सुप्रसिद्ध मंदीरही पाहिलं. अजून काही दिवस आसामात घालवता आले असते तर आणखी छान वाटलं असतं. पण तरीही खूप मजा आली. आता तुझी पाळी-महाराष्ट्रात जायची.

विश्वदीप : अरे, मी मुंबईला आणि पुण्याला जाऊन चुकलो आहे.

विठ्ठल : पण, महाराष्ट्र म्हणजे फक्त मुंबई आणि पुणं नाही. तुम्ही अन्य प्रांतातले लोक हीच चूक करता. मुंबई आणि पुणं पाहिलं तर तुम्हाला वाटतं सगळा महाराष्ट्र पाहिला. पण महाराष्ट्रात बघण्यासारखं आणखीही खूप आहे. संत्र्यांसाठी जगभरात प्रसिद्ध असलेलं नागपूर आहे, सुंदर आणि टिकाऊ चादरींसाठी प्रसिद्ध सोलापूर आहे, नांदेडचा गुरुद्वारा आहे आणि सिंधुदुर्गचा सागरी किल्लाही आहे.

विश्वदीप : मी यावर्षी जाऊ शकलो तर नक्की जाईन. पण तूही माझ्याबरोबर येऊ शकशील नं?

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक मिठास

विठ्ठल : विश्वदीप, तुम्हारे आमंत्रण पर मैं पिछले साल असम घूमा। इस साल तुम महाराष्ट्र चलो. यदि तुम महाराष्ट्र गए तो तुम्हें काफी कुछ देखने को मिलेगा। मैंने नहीं असम में काफी कुछ देखा ब्रह्मपुत्र का पाट कितना विशाल है। जैसे कोई समुद्र ही (हो)। कामख्या देवी का प्रसिद्ध मंदिर भी देखा। यदि कुछ और दिन असम में बिताता तो और भी अच्छा लगता। पर फिर भी बहुत आनंद आया। अब महाराष्ट्र चलने की तुम्हारी बारी है।

विश्वदीप : अरे! मैं तो मुंबई और पुणे जा चुका हूँ।

विठ्ठल : पर महाराष्ट्र का मतलब सिर्फ मुंबई या पुणे नहीं है। आप अन्य राज्यों के लोग यही गलती करते हैं। अगर आपने मुंबई और पुणे देखा तो समझते हो कि पूरा महाराष्ट्र देख लिया। महाराष्ट्र में देखने लायक और भी बहुत कुछ है। संतरे के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध नागपुर है, सुंदर और टिकाऊ चादरों के लिए प्रसिद्ध सोलापुर है। नांदेड़ का गुरुद्वारा और सिंधुदुर्ग का सागर स्थित किला भी है।

विश्वदीप : यदि मैं इस साल जा सका तो ज़रूर जाऊँगा। पर तुम भी मेरे साथ चल सकोगे न?

विट्ठल : मला जमलं तर मी नक्की येईन. पण मला जरी काही कारणामुळे येणं शक्य झालं नाही तरी तू नक्की जा.

विश्वदीप : असं कसं? तू आला नाहीस तर गंमत येणार नाही. पण समजा, तू जर येऊ शकणारच नसशील तर मला तिथल्या एखाद्या चांगल्या यात्रा कंपनीचा पत्ता देऊ शकशील का?

विट्ठल : अरे, का नाही देऊ शकणार? तू मला आसामच्या फिरतीच्या वेळी केवढी मदत केली होतीस. जर तू मला मदत केली नसतीस तर मी आयुष्यातल्या एका सुंदर अनुभवाला मुकलो असतो.

विश्वदीप : मग सांग महाराष्ट्रात केव्हा जाणं बरं पडेल?

विट्ठल : तू आता गेलास तर रत्नागिरीचा सुप्रसिद्ध हापूस आंबा खाऊ शकशील. भाद्रपदात गेलास तर महाराष्ट्रातला गणेशोत्सव तुला बघायला मिळेल. लोकमान्य टिळकांनी समाजप्रबोधना साठी सार्वजनिक गणेशोत्सव सुरू केला होता. तो त्यांनी सुरू केला नसता तर जनजागृती होऊ शकली नसती.

विश्वदीप : हो, ते खरं आहे. आणि आणखी एक सांगू का? मला माझ्या एक मित्रानं कळवलं आहे की, पुण्याला तर ईद आणि गणेशोत्सव दोन्हीही सगळे मिळून खूप उत्साहानं आणि एकोप्यानं साजरे करतात.

विट्ठल : हो. आणि तू तर मुंबईला पाहिलंच आहेस की, वांद्र्याच्या माऊंटमेरीच्या जत्रेत सगळ्या जातींचे आणि धर्मांचे लोक खूप उत्साहानं भाग घेतात.

विट्ठल : यदि संभव हुआ तो मैं ज़रूर चलूँगा। पर यदि मैं किसी कारण न चल सका तो भी तुम अवश्य जाना।

विश्वदीप : ऐसे कैसे? तुम नहीं चलोगे तो मज़ा नही आएगा। पर समझो, यदि तुम चल ही नहीं सके तो मुझे वहाँ की किसी अच्छी यात्रा - कंपनी का पता दे सकोगे क्या?

विट्ठल : अरे! क्यों नहीं दे सकूँगा? तुमने मेरे असम भ्रमण में मुझे कितनी मदद की थी! यदि तुमने मेरी मदद नहीं की होती तो मैं जीवन के एक बढ़िया अनुभव से वंचित रह जाता।

विश्वदीप : फिर बताओ महाराष्ट्र जाना कब ठीक रहेगा?

विट्ठल : तुम इस समय जाओगे तो रत्नागिरि का प्रसिद्ध हापुस आम खा सकोगे। यदि भादों के महीने में गए तो महाराष्ट्र का गणेशोत्सव तुम्हें देखने को मिलेगा। लोकमान्य तिलक ने समाज में जागृति के लिए सार्वजनिक गणेशोत्सव शुरु किया था। यदि उन्होंने यह नहीं शुरु किया होता तो जन जागृति नहीं हो सकती थी।

विश्वदीप : हाँ, यह तो सच है। एक बात और बताऊँ क्या? मुझे मेरे एक मित्र ने बताया है कि पुणे में तो ईद और गणेशोत्सव दोनों को ही सब मिलकर बड़े उत्साह से और भाईचारे से मनाते हैं।

विट्ठल : हाँ। और तुमने मुंबई में देखा ही है कि बांद्रा की माउंट-मेरी के मेले में सब जातियों के और धर्मों के लोग उत्साह से भाग लेते हैं।

विश्वदीप : बरं, काय रे, महाराष्ट्रात तुम्ही चैत्र शुद्ध प्रतिपदेला 'गुढीपाडवा' म्हणता आणि त्यादिवशी गुढी उभारून नवीन वर्षाचा प्रारंभ करता न?

विट्ठल : हो हो, अगदी बरोबर! त्या दिवशी तू कुठल्याही मराठी माणसाच्या घरी गेलास तर तुला श्रीखंड हमखास मिळेल. आणि महाराष्ट्रातली दिवाळी पण छान असते हं! पूर्ण पाच दिवस! लाडू, चिवडा, चकल्या, सांजोऱ्या, करंज्या, अनारसे, शेव असे खाण्याचे अनेक प्रकार. फटाक्यांची सुंदर आतषबाजी आणि दिव्यांची आकर्षक रोषणाई जर पाहायची असेल तर तुला दिवाळीतच जायला हवं.

विश्वदीप : ध्वनी व वायू प्रदूषण कमी करायचं असेल तर मोठ्या आवाजाच्या आणि जास्त धूर सोडणाऱ्या फटाक्यांवर बंदी हवीच. आणि तशी ती सरकारने घातलीही आहे. तुला ठाऊक आहे न?

विट्ठल : ते मात्र खरं आहे. दिवाळीनंतरचा महाराष्ट्रातला मोठा सण म्हणजे मकरसंक्रांत. त्यावेळी 'तिळगुळ' देतात आणि 'तिळगुळ घ्या, गोडगोड बोला' असं म्हणतात. परस्परसंबंधांतला कटुपणा विसरून स्नेह आणि गोडवा वाढविण्यासाठी तिळगुळ असतो. स्त्रिया त्यादिवशी हळदी कुंकवाचे आयोजन करतात.

विश्वदीप : महाराष्ट्रात होळी साजरी करत नाहीत का?

विश्वदीप : अच्छा, क्यों रे, आप महाराष्ट्र में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वाँ कहते हैं और उसी दिन 'गुड़ी' फहराकर नया साल प्रारंभ करते हैं न?

विट्ठल : हाँ, हाँ, बिल्कुल ठीक। उस दिन यदि तुम किसी मराठी आदमी के घर गए तो तुम्हें श्रीखंड निश्चय ही मिलेगा। और महाराष्ट्र में दिवाली भी बढ़िया होती है। पूरे पाँच दिनों तक। लड्डू, चिवड़ा, चकली, मीठी रोटी, गुझिया, अनारसे, सेव आदि अनेक खाद्य पदार्थ (बनाए जाते है)। यदि पटाखों की सुंदर आतिशबाजी और दीपों की जगमगाहट देखनी हो तो तुम्हें दिवाली पर ही जाना चाहिए।

विश्वदीप : यदि ध्वनि और वायु प्रदूषण कम करना हो तो ज्यादा आवाज वाले और ज्यादा धुआँ छोड़ने वाले पटाकों पर प्रतिबंध लगाना ही चाहिए। सरकार ने ऐसा प्रतिबंध लगाया भी है। तुम्हें मालूम है न?

विट्ठल : वह बाकी सच है। दिवाली कें बाद महाराष्ट्र का प्रमुख त्योहार है मकर-संक्रांति। उस समय 'तिल-गुड़' देते हैं और 'तिल-गुड़ लो, मीठा-मीठा बोलो', कहते हैं। आपसी संबंधो में कटुता भूलकर स्नेह और मिठास बढाने के लिए तिल-गुड़ होता है। स्त्रियाँ इस दिन हल्दी-कुमकुम का आयोजन करती हैं।

विश्वदीप : महाराष्ट्र में होली नहीं मनाते हैं क्या?

विट्ठल : मनाते हैं न। पर हमारी होली उत्तर

विठ्ठल : करतात नं, पण आमची होळी उत्तर भारतांतल्या होळीपेक्षा थोडीशी वेगळी असते. होळीला पुरणाची पोळी असते. तू पुरणपोळी खाल्ली आहेस का?

विश्वदीप : हो. माझ्या दिल्लीतल्या एका मराठी मित्राकडे मी पुरणपोळीची चव घेऊन चुकलो आहे.

विठ्ठल : चल तर मग. महाराष्ट्रात जायच्या तयारीला सुरवात कर आणि तिथल्या पुरणपोळीची चव घे.

भारत की होली से थोड़ी सी भिन्न होती है। होली पर पूरन-पोली बनाते हैं। तुमने पूरन-पोली खाई है क्या?

विश्वदीप : हाँ, दिल्ली के एक मराठी मित्र के घर मैं पूरन-पोली का स्वाद ले चुका हूँ।

विठ्ठल : चलो फिर, महाराष्ट्र चलने की तैयारी शुरु करो और वहाँ की पूरन पोली का स्वाद लो।

शब्दार्थ

आमंत्रण	निमंत्रण
बघायला मिळेल	देखने को मिलेगा
केव्हढं काही	काफी कुछ
भव्य	विशाल
जाऊन चुकलो	जा-चुका
चादर	चादर
येऊ शकणे	आ सकना
गंमत	मज़ा
फिरती	दौरा, भ्रमण
मुकलो असतो	वंचित हना
समाज प्रबोधन	सामाजिक जागृति
सार्वजनिक	सार्वजनिक
एकोप्यानं	मिलजुलकर
गुढीपाडवा	वर्ष प्रतिपदा, वर्ष का पहला दिन
गुढी	गुड़ी
हमखास	जरूर, निश्चय ही
करंज्या	गुझिया
बंदी	प्रतिबंध
वेगळी	अलग
चव	स्वाद

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) विठ्ठलने आसाममध्ये कायकाय पाहिले?
2) महाराष्ट्रात पुण्यामुंबईशिवाय बघण्यासारखं कायकाय आहे?
3) भाद्रपदात महाराष्ट्रात कोणता उत्सव साजरा करतात?
4) सार्वजनिक गणेशोत्सव कोणी व का सुरू केला?
5) महाराष्ट्रात सणांच्या दिवशी केल्या जाणाऱ्या विविध खाद्यपदार्थांची नावे सांगा.
6) महाराष्ट्रातील दिवाळीबद्दल थोडक्यात माहिती सांगा.
7) 'गुढीपाडवा' कधी असतो? त्या दिवशी काय करतात?

II नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों का प्रयोग कर दो-दो नये वाक्य बनाइए।

1) ब्रह्मपुत्रेचं पात्र किती भव्य आहे! (मोठे, विस्तीर्ण)
2) महाराष्ट्रात बघण्यासारखं आणखीही खूप आहे. (पाहण्यासारखं दाखवण्यासारखं)
3) लोकमान्य टिळकांनी समाजप्रबोधनासाठी सार्वजनिक गणेशोत्सव सुरू केला. (जनजागृतीसाठी, एकात्मतेसाठी)
4) दिवाळीत फटाक्यांची आतषबाजी असते. (दिव्यांची रोषणाई, मजाच मजा)
5) प्रदूषण कमी करण्यासाठी मोठ्या आवाजाच्या फटाक्यांवर बंदी हवी. (जास्त धूर सोडणाऱ्या, प्रदूषण वाढविणाऱ्या)

III उपयुक्त अक्षर जोडकर दिए गए शब्द पूरे कीजिए।

1) आ … … णा … रू …
2) … हा रा … त
3) ब … ण्या … र …
4) … यु … त …
5) ग णे … … …
6) मा … ट … री …
7) गु … पा ड …
8) … र ण … …
9) त … … ला

IV नीचे दिए गए शब्दों में से उन शब्दों का चयन कीजिए जो पाठ में आए हैं।

आसाम, पंजाब, महाराष्ट्र, ब्रह्मपुत्रा, मंदीर, पुणे, नाशिक, प्रसिद्ध, जर, गावात, मानवता, शिकवण, संत, ज्ञानेश्वर, तर, नामदेव, शकशील, मुकलो असतो,

हापूस आंबा, सफरचंद, लोकमान्य टिळक, महात्मा गांधी, गणेशोत्सव, दसरा, करंज्या, भेळ, चहा, चिवडा, आतषबाजी, प्रदूषण, घेऊन चुकलो आहे, आई, बाबा, जरी, तरी.

V प्रत्येक शब्द समूह में जो शब्द उस वर्ग का न हो उसे पहचानिए।

1) मुंबई, नागपूर, ब्रह्मपुत्र, सोलापूर, सिंधुदुर्ग.
2) दिवाळी, गुढीपाडवा, गणेशोत्सव, ईद, पुरणपोळी.
3) फटाके, सांजोऱ्या, करंज्या, अनारसे, चकल्या.
4) मराठी, मित्र, दिवाळी, पुरणपोळी, गुढी.
5) सुंदर, आकर्षक, जर, चांगली, सुप्रसिद्ध.

VI कोष्ठक में दिए गए शब्द से संबंधित शब्दों को बताइए।

1.
1) कामख्यादेवी, सावली, गणपती, पाणी (मंदीर)
2) स्वच्छ, नांदेड, नागपूर, नवा, सोलापूर, सिंधदुर्ग (महाराष्ट्र)
3) दिवाळी, गुढीपाडवा, गणेशोत्सव, आंबा, ईद, फुल (दसरा)
4) लाडू, चकल्या, पाच, सांजोऱ्या, करंज्या, फटाके (अनारसे)
5) चिवडा, जाणे, शेव, दुपार, रोषणाई, आतषबाजी (दिवाळी)

VII नीचे दिए गए शब्दों के लिए इस पाठ में आए विशेषण शब्द कोष्ठक में दिए गए हैं। उन्हें उपयुक्त शब्दों के साथ जोड़िए।

पात्र, मंदीर, यात्राकंपनी, अनुभव, दिवाळी, रोषणाई
(सुंदर, आकर्षक, भव्य, चांगली, सुप्रसिद्ध, छान)

VIII उदाहरण के अनुसार दिए गए शब्दों को सही क्रम में रखकर वाक्य बनाइए।

उदाहरण: नाहीस, जर, गावाला, गेला, तू, माझ्याकडे, तर ये,
तू जर गावाला गेला नाहीस तर माझ्याकडे ये.

1) आला, जर, पहिला, पेढे, मी, तर, नंबर, माझा, वाटीन,
2) सुट्टी, जर, येईन, तर, शाळेला, मिळाली, तुमच्याकडे, मी,
3) बागेत, नाही, लवकर, जरी, तरी, घरी, आपण, तू, आलास, जाणार
4) विद्यार्थ्याने, अभ्यास, जर, परीक्षेत, नाही, नाही, उत्तम, मिळणार, यश, तर, केला, त्याला
5) पिकं, जर, पाऊस, येतील, चांगली, तर, पडला, भरपूर,

IX कोष्ठक में दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थक मराठी शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1) मी संपूर्ण महाराष्ट्र .... (देख चुका हूँ।)
2) तू माझ्याबरोबर .... (खेल सकोगे क्या?)

3) विजयने ताजमहाल पाहिला नसता तर तो जीवनातील एका सुंदर अनुभवाला .... (वंचित रह जाता।)
4) महाराष्ट्रात सगळे सण उत्साहाने .... (मनाते हैं।)
5) महाराष्ट्रात तू सागरी किल्लाही .... (देख सकोगे)

IX उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण: तू हे काम करू......... . (शकेल, शकतील, शकतोस)
तू हे काम करू <u>शकतोस</u>.

1) मी यावर्षी गाण्याच्या क्लासला जाऊ .... नाही. (शकणार, शकेल, शकतो)
2) राहुल, तुझा पुण्यातील पत्ता कळवू .... काय? (शकते, शकतो, शकशील)
3) सायली आजारपणामुळे स्पर्धेत भाग घेऊ .... नाही. (शकते, शकली, शकतील)
4) कष्ट केल्याशिवाय यश मिळू .... नाही. (शकत, शकशील, शकतो)
5) द्वितीय भाषा शिकणारे विद्यार्थी व्याकरणात चुका करू .... (शकते, शकणार, शकतात)

X उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों के निषेधवाचक रूप बनाइए।

उदाहरण: जर तू आलास तर मी येईन.
जर तू <u>आला नाहीस</u> तर मी <u>येणार नाही</u>.

1) जर विद्यार्थ्याने अभ्यास केला तर तो उत्तीर्ण (पास) होईल.
2) प्रत्येकाने प्रयत्न केले तर यश मिळेल.
3) मुलांनी आईवडीलांचं ऐकलं तर त्यांचं कल्याण होईल.
4) जर आपण स्वच्छ राहिलो, तर आपले आरोग्य चांगले राहील.
5) जर मन पावन असेल, तर ईश्वराचे दर्शन होईल.

XI 'जर...तर', 'जरी...तरी' जैसे शर्तसूचक शब्दों का प्रयोग कर तीन-तीन नये वाक्य बनाइए।

XII उदाहरण के अनुसार दिए गए प्रत्येक वाक्य जोड़ी को मिलाकर एक-एक वाक्य बनाईए।

1. *उदाहरण:* तू येशील. मी येईन.
<u>जर</u> तू येशील <u>तर</u> मी येईन.

1) मी म्हैसूरमध्ये राहीन. मी वृंदावन गार्डन पाहीन.
2) मला बक्षिस मिळेल. मी सर्वांना पेढे देईन.

3) सर्वजण प्रयत्न करतील. ते काम लवकर होईल.

2. *उदाहरण:* ती गात आहे. तू ऐक.
जर ती गात असेल तर तू ऐक.
1) ती पुरणपोळी करते आहे. तू बासुंदी कर.
2) तो दूध आणतो आहे. तू चहा कर.
3) ते शेक्सपिअरवर लिहित आहेत. तू कालिदासावर लिही.

3. *उदाहरण:* तिला लिहायचं आहे. तिला लिहू दे.
जर तिला लिहायचं असेल तर तिला लिहू दे.
1) त्यांना नाटकात काम करायचं आहे. त्यांना नाटकात काम करू दे.
2) आता विजयला खेळायचं आहे. त्याला खेळू दे.
3) गीता आणि सुनीताला सहलीला जायचं आहे. त्यांना सहलीला जाऊ दे.

4. *उदाहरण:* तू खेळणार नाहीस. मी खेळणार नाही.
जर तू खेळणार नाहीस तर मी खेळणार नाही.
1) निलेश चित्रपटाला जाणार नाही. नितीनसुद्धा जाणार नाही.
2) तुम्ही ते काम करणार नाहीत. तोपण ते काम करणार नाही.
3) शिक्षक विद्यार्थांना रागावणार नाहीत. विद्यार्थी अभ्यास करणार नाहीत.

5. *उदाहरण:* तू मला ते काम सांगितले नाही. मी ते काम केले नाही.
जर तू मला ते काम सांगितले असते तर मी ते केले असते.
1) तू मला बोलवले नाहीस. मी आलो नाही.
2) मी बाजारात गेलो नाही. मी फळे व भाजी आणली नाही.
3) ती 'नेट' ची परीक्षा उत्तीर्ण झाली नाही. ती प्राध्यापक झाली नाही.

पढिए और समझिए।

मराठी काव्याचं अध्ययन करायचं तर सुरवात ज्ञानेश्वरीपासून करायला हवी. ज्ञानेश्वरीकर्ते ज्ञानेश्वर हे जसे थोर कवी होते, तसेच ते महान् चिंतक पण होते. ज्ञानेश्वरीची काव्यात्मकता अजोड आहे. जर श्रेष्ठतेच्या आधारावर जगातल्या सगळ्या साहित्यकृतींची यादी करायचं ठरवलं, तर ज्ञानेश्वरीचं स्थान पहिल्या दहातच असेल.

ज्ञानेश्वरांचे वडील विठ्ठलपंत. त्यांनी तारुण्यात संन्यास घेतला होता. पण नंतर आपल्या गुरूंच्या आज्ञेवरून त्यांनी पुन्हा गृहस्थाश्रमात प्रवेश केला. त्यामुळे चिडलेल्या रुढीवाद्यांनी त्यांचा व त्यांच्या कुटुंबाचा खूप छळ केला. त्यांना वाळीत टाकलं. अखेर, विठ्ठलपंत व त्यांची पत्नी या दोघांनीही जलसमाधी घेतली. ज्ञानेश्वर व त्यांची भावंडं पोरकी झाली. ज्ञानेश्वर जरी या सगळ्या कटू अनुभवांतून गेले होते तरी त्यांनी अमृतासारख्या मधुर वाङ्मयाची निर्मिती केली. सर्वसामान्य वाचक इ

ाानेश्वरीमधल्या गहन तत्त्वज्ञानाला समजू शकला नाही, तरी तिच्यातला रसाळपणा त्याच्या ह्रदयाला भिडतो.

शब्दार्थ

थोर	महान
काव्यात्मकता	कविता का भाव
अजोड	बेजोड़
यादी	सूची बनाना
चिडलेल्या	चिढ़े हुए
रुढीवादी	रुढ़िवादी
छळ करणे	तकलीफ देना
वाळीत टाकणे	बहिष्कृत करना
पोरकी	अनाथ
रसाळपणा	कविता का रस
ह्रदयाला भिडणे	ह्रदय छू लेना

अभ्यास

I नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर मराठी में दीजिए।

1) ज्ञानेश्वरी कोणी लिहिली?
2) ज्ञानेश्वरांच्या वडिलांचं नाव काय होतं?
3) रुढीवाद्यांनी त्यांचा छळ का केला?
4) सर्वसामान्य माणसाला ज्ञानेश्वरीतलं गहन तत्त्वज्ञान समजलं नाही, तरी त्यांतलं काय आवडतं?
5) जगातल्या साहित्यकृतींची श्रेष्ठतेच्या आधारावर यादी करायचं ठरवलं तर काय होईल?

II उपयुक्त अक्षर जोडकर शब्द पूरे कीजिए।

1) अ ... य ...
2) ... ने श्व ... ... र्ते
3) गृ ह ... श्र ... त
4) रू ढी ... ... नी
5) वा ... म या ...

III नीचे दिए गए शब्दों में से पाठ (पढिए और समझिए) में आए शब्दों को पहचानिए और बताइए।
काव्याचं, कथेचं, अध्ययन, कवी, चिंतक, विठ्ठलपंत, शिक्षक, संन्यासधर्म बहिणी, पत्नी, तिखट, मधुर, उदारता, रसाळपणा, हृदयाला.

IV हिंदी में अनुवाद कीजिए।

दोन आक्टोबर हा दिवस संपूर्ण भारतात 'गांधी जयंती' म्हणून साजरा करतात. हा एक महत्त्वाचा राष्ट्रीय सण आहे. या दिवशी आमच्या शाळेत अनेक उत्तम कार्यक्रम साजरे करतात. त्याचा मी अनेकदा अनुभव घेऊन चुकलो आहे. गांधी जयंतीला सर्व विद्यार्थी व शिक्षक सभागृहात जमतात. व्यासपीठावर गांधीजींची प्रतिमा किंवा फोटो ठेवलेला असतो. त्याला प्रमुख पाहुणे व मुख्याध्यापक पुष्पहार व खादीची माळ अर्पण करतात. कार्यक्रमाची सुरूवात गांधीजींच्या 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए' या प्रसिद्ध भजनाने होते. मराठीचे शिक्षक स्वागतपर भाषण करतात. त्यानंतर प्रमुख पाहुणे गांधीजींच्या विचारांवर व कार्यकर्तृत्वावर व्याख्यान देतात. जर आपण हे व्याख्यान ऐकले तर आपल्या ज्ञानात भर पडते. म्हणून सर्वजण हे व्याख्यान लक्षपूर्वक ऐकतात. काही विद्यार्थी प्रश्न विचारतात आणि प्रमुख पाहुणे त्याला उत्तरे देतात. या चर्चेनंतर विद्यार्थी आपले कार्यक्रम सादर करतात. देशभक्तीपर गीते, गांधीजींची भजने म्हणतात. गांधीजींच्या जीवनावरील प्रसंगांचे नाट्यरूपांतर सादर करतात. गांधीजींच्या व गांधीजींविषयीच्या ग्रंथांचे वाचन विद्यार्थी करतात. काही शिक्षक 'माझे सत्याचे प्रयोग' या गांधीजींच्या आत्मकथेचे वाचन करतात. जर विद्यार्थ्यांची इच्छा असेल तर ते सुद्धा गांधीजींबद्दल बोलू शकतात. मी देखील अनेकदा असे बोलून चुकलो आहे. यानंतर मुख्याध्यापक अध्यक्षीय भाषण करतात. यानिमित्ताने होणाऱ्या सूतकताईच्या स्पर्धेत मला अनेकदा पारितोषिकेही मिळाली आहेत. कार्यक्रमाच्या शेवटी हिंदीचे शिक्षक आभारप्रदर्शन करतात. त्यानंतर सर्व विद्यार्थ्यांना खाऊ वाटतात. शेवटी सर्वजण राष्ट्रगीत म्हणतात. या दिवशी आपण जर गैरहजर राहिलो तर या सुंदर कार्यक्रमांपासून, व्याख्यानांपासून आपण वंचित राहातो. राष्ट्रपिता महात्मा गांधींनी सत्य व अहिंसा ही तत्त्वे सांगितली आहेत. त्यांनी दिलेला 'खेड्याकडे चला' हा संदेश आजही उपयुक्त आहे. गांधीजी साध्या सोप्या भाषेत खूप उच्च विचार व तत्त्वज्ञान मांडतात. जर आपण त्यांच्या तत्वांनुसार जगलो तर भारत जगाचे नेतृत्व करू शकेल.

V मराठी में अनुवाद कीजिए।

महाराष्ट्र में गणेशोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाते है। यह पर्व भादों की शुक्ल चतुर्थी से लेकर चतुर्दशी तक मनाते है। दस दिनों तक हर जगह साहित्य, संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम होती है। गणेशजी की प्रतिमा विशेष रूप से तैयार किए गए पंडालों में रखते है। पंडालों को खूब सजाते हैं। झाँकियाँ देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ती है। लोगों का उत्साह और उल्लास देखते ही बनता है। दस दिनों के

बाद प्रतिमाओं को विसर्जित करते हैं। सब ओर सुनाई पड़ता है - "गणपति बाप्पा मोरया, पुढच्या वर्षी लवकर या"।

VI अपने राज्य के किसी प्रसिद्ध त्योहार पर एक छोटा अनुच्छेद मराठी में लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्नलिखित वाक्यप्रकारों का प्रयोग किया है।

1) जर तू महाराष्ट्रात गेलास, तर तुला खूप काही बघायला मिळेल.
यदि तुम महाराष्ट्र गए तो तुम्हें काफी कुछ देखने को मिलेगा।

2) मुंबई आणि पुणं पाहिलं तर तुम्हाला वाटतं सगळा महाराष्ट्र पाहिला.
यदि तुमने मुंबई और पुणे देख लिया तो तुम्हें लगता है कि तुमने पूरा महाराष्ट्र देख लिया।

3) मी यावर्षी जाऊ शकलो तर नक्की जाईन.
यदि मैं इस साल जा सका तो जरूर जाऊँगा।

4) तू आता गेलास तर रत्नागिरीचा सुप्रसिद्ध हापूस आंबा खाऊ शकशील.
यदि तुम इस समय तो रत्नगिरि का प्रसिद्ध हापुस आम खा सकोगे।

5) (तू) भाद्रपदात गेलास तर महाराष्ट्रातला गणेशोत्सव तुला बघायला मिळेल.
अगर तुम भादों के महीने में गए तो तुम्हें महाराष्ट्र का गणेशोत्सव देखने को मिलेगा।

उपर्युक्त वाक्यों में देखा जाता है कि मराठी में हिंदी के "यदि ...... तो" के प्रयोग वाले शर्तसूचक वाक्यों के लिए "जर ...... तर" इन अव्ययों का प्रयोग होता है। इस प्रयोग द्वारा एक वाक्यांश में क्रिया का घटना दूसरे वाक्यांश के क्रिया के घटने पर निर्भर होना व्यक्त किया जाता है।

ध्यान में रखिए कि कभी कभी वाक्यांश से "जर ....." का प्रयोग प्रत्यक्ष रूप से न हो कर, अनुस्यूत होता है।

II नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए।

1) अजून काही दिवस आसामात घालवता आले असते तर आणखी छान वाटलं असतं.
यदि कुछ और दिन असम में बिताता तो और भी अच्छा लगता।

2) जर तू मला मदत केली नसतीस तर मी आयुष्यातल्या एका सुंदर अनुभवाला मुकलो असतो.
यदि तुमने मेरी मदद नहीं की होती तो मैं जीवन के एक बढ़िया अनुभव से वंचित रह जाता।

3) जर लोकमान्य टिळकांनी गणेशोत्सव सुरु केला नसता तर जनजागृती होऊ शकली नसती.
यदि लोकमान्य तिलक ने गणेशोत्सव नहीं शुरु किया होता तो जन जागृति नहीं हो सकती थी।

उपर्युक्त "हेतु हेतुमद-भूतकालिक" वाक्यों का, संबंध अनिवार्य रूप से भूतकाल से होता है तथा उन में प्रत्यक्ष में नही हुए, नही किए गए क्रियाकलापों के परिस्थितिओं का तथा उन के परिणाम/फलरूप क्रियाओं तथा परिस्थितिओं का जिक्र होता है।

III नीचे दिए हुए प्रयोगों पर ध्यान दीजिए।

1) मला जरी काही कारणामुळे येणं शक्य झालं नाही तरी तू नक्की जा.
यदि मैं किसी कारण न चल सका तो भी तुम अवश्य जाना।

2) जरी तू माझ्याकडे आलीस तरी मी तुला भेटणार नाही.
यदि तुम मेरे पास आई भी तो मैं तुम्हें नहीं मिलूँगी।

हिंदी के "यदि-तो भी" "यद्यपि -" "तथापि" जैसे प्रयोग वाले वाक्यों के समान इन वाक्यों में "जरी" - और "तरी" के द्वारा वाक्यांशों को जोडा जाता है। इन के द्वारा एक वाक्यांश में दिए गए क्रिया तथा परिस्थिति का और दूसरे में अनपेक्षित परिणाम का संकेत दिया जाता है।

IV नीचे दिए गए प्रयोगों पर ध्यान दीजिए।

1) मी यावर्षी जाऊ शकलो तर नक्की जाईन.
यदि मैं इस साल जा सका तो जरूर जाऊँगा।

2) तू ही माझ्याबरोबर येऊ शकशील नं?
तुम भी मेरे साथ चल सकोगे न?

3) पण मला काही कारणामुळे जाणं शक्य झालं नाही तरी तू जा.
यदि मैं किसी कारण न जा सका तो भी तुम अवश्य जाना।

4) समजा तू येऊ शकणारच नसशील तर मला तिथल्या एखाद्या चांगल्या यात्रा कंपनीचा पत्ता देऊ शकशील का?
समझो, यदि तुम चल ही न सके तो मुझे वहाँ की किसी अच्छी यात्रा-कंपनी का पता दे सकेंगे क्या?

5) तो (गणेशोत्सव) त्यांनी (लोकमान्य टिळकांनी) सुरू केला नसता तर जनजागृती होऊ शकली नसती.

यदि उन्होंने यह नहीं शुरु किया होता तो जन जागृति नहीं हो सकती थी।

इन वाक्यों में "शक" क्रिया रूप तथा उस से बने हुए कृदन्तशब्दरूपों का प्रयोग किया गया है। हिंदी के "सक" (सकना) अर्थ में इस का प्रयोग होता है।

क्रिया के मूलरूप मे 'ऊ' प्रत्यय लगाकर उस के बाद "शक" के निम्न लिखित रूपों का प्रयोग कर शक्यता बोधक वाक्य बनते हैं।

		एकवचन	*बहुवचन*
उत्तमपुरुष	*(पु.)*	मी जाऊ शकतो.	आम्ही/आपण जाऊ शकतो.
	(स्त्री.)	मी जाऊ शकते.	
मध्यमपुरुष	*(पु.)*	तू जाऊ शकतोस/शकतेस.	तुम्ही/आपण जाऊ शकता.
अन्यपुरुष	*(पु.)*	तो जाऊ शकतो.	ते जाऊ शकतात.
	(स्त्री.)	ती जाऊ शकते.	त्या जाऊ शकतात.
	(नपुं.)	ते जाऊ शकते.	ती जाऊ शकतात.

भूतकाल:

उत्तमपुरुष	मी जाऊ शकलो/शकले.	आम्ही/आपण जाऊ शकलो.
मध्यमपुरुष (पु.)	तू जाऊ शकलास.	तुम्ही/आपण जाऊ शकलात.
(स्त्री.)	तू जाऊ शकली.	तू जाऊ शकलीस.
अन्यपुरुष (पु.)	तो जाऊ शकलास.	ते जाऊ शकले.
(स्त्री.)	ती जाऊ शकली.	त्या जाऊ शकल्या.
(नपुं.)	ते जाऊ शकले.	ती जाऊ शकली.

भविष्यकाल:

उ.पु.	मी जाऊ शकेन.	आम्ही/आपण जाऊ शकू.
म.पु.	तू जाऊ शकशील.	तुम्ही/आपण जाऊ शकाल.
अ.पु.	तो/ती/ते जाऊ शकेल.	ते/त्या/ती जाऊ शकतील.

V नीचे दिए गए प्रयोगों पर ध्यान दीजिए।

1) अरे! मी मुंबईला आणि पुण्याला जाऊन चुकलो आहे.
   अरे! मैं तो मुंबई और पुणे जा चुका हूँ।
2) मी पुरणपोळीची चव घेऊन चुकलो आहे.
   मैं पूरन पोली का स्वाद ले चुका हूँ।

इन वाक्यों में हिंदी के "चुका (हूँ)" के अर्थ में 'चुक' क्रियारूप का प्रयोग किया गया है। "आहे" क्रियारूप के उपयुक्त प्रयोगों के साथ इस का प्रयोग पूर्ण भूतकाल यानि की किसी भी क्रिया के पूर्णतः हो जाने के अर्थ में किया जाता है। इस में पुरुषलिंगवचन वाचक प्रत्यय लगते हैं।

उदाहरण:		*एकवचन*	*बहुवचन*
उत्तमपुरुष	*(पु.)*	मी हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकलो आहे. मैं हापुस आम का स्वाद ले चुका हूँ.	आम्ही/आपण हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकलो आहोत. हम हापुस आम का स्वाद ले चुके हैं।
	(स्त्री.)	मी हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकले आहे. मैं हापुस आम का स्वाद ले चुकी हूँ।	
मध्यमपुरुष	*(पु.)*	तू हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकला आहेस. तुम हापुस आम का स्वाद ले चुकेहो।	तुम्ही/आपण हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकला आहात. आप हापुस आम का स्वाद ले चुके हैं।
	(स्त्री.)	तू हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकली आहेस. तुम हापुस आम का स्वाद ले चुकी हो।	
अन्यपुरुष	*(पु.)*	तो हापूस आंब्याची चव चुकला आहे. वह हापुस आम का स्वाद ले चुका है।	ते हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकले आहेत. वे हापुस आम का स्वाद ले चुके हैं।
	(स्त्री.)	ती हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकली आहे. वह हापुस आम का स्वाद ले चुकी है।	त्या हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकल्या आहेत. वे हापुस आम का स्वाद ले चुकी हैं।
	(नपुं.)	ते हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकले आहे.	ती हापूस आंब्याची चव घेऊन चुकली आहेत.

विशेष ध्यान दीजिए की "चुक" क्रियारूप का मराठी में दूसरा अर्थ भी है - "गलती करना" "भूल करना"।

VI हळदीकुंकू: 'हळदीकंकू' महाराष्ट्र की एक सांस्कृतिक परंपरा है। स्त्रियाँ मकरसंक्रांति जैसे पर्व पर सुहागनों को घर बुलाती हैं। उनके माथेपर 'हळदीकुंकू' (हल्दी और कुमकुम) लगाती हैं। अपने से उम्र में बड़ी सुहागनों के चरण छूती हैं। नारियल, सुपारी हल्दी-गाँठ, रूपया (पैसे), बादाम, खुरमा और चावल, गेहूँ या चना

आदि चीजें या इन में से कुछ चीजें सुहागन के पल्लू में डालती हैं। इसे 'ओटी भरणे' कहते हैं। इस 'हळदीकुंकू' की परंपरा के साथ-साथ जब कोई सुहागन घर आती है तब भी उसके माथेपर हल्दी-कुमकुम लगाकर उसे बिदा करते हैं।

धडा / पाठ 20

देणगी चिपकोची!

पांडे : तू इतकं चांगलं हिंदी कसं बोलतोस?

बापट : अरे, ही चिपकोची देणगी आहे.

पांडे : चिपकोची देणगी?

बापट : हो ना! चिपको आंदोलन त्यावेळी नुकतंच सुरू झालं होतं. आम्ही पंधरावीस जणांनी त्याची पूर्ण माहिती मिळवायचं ठरवलं. सबंध गढवालची भटकंती केली. आम्ही अलकनंदेच्या किनाऱ्यावरील गावन् गाव भटकत असू. त्याचवेळी हिंदी शिकलो. बेधडक बोलायचो. चुकलो तर चुकलो. खरं सांगायचं तर प्रेमाची, माणुसकीची भाषा एकच असते. मग तो गढवाल असो किंवा महाराष्ट्र असो.

पांडे : ते खरं आहे. पण मग परत आल्यावर चिपको आंदोलनाच्या बाबतीत काय करत असता?

बापट : आम्ही मग महाराष्ट्रतही चिपको आंदोलन सुरू केलं.

पांडे : ते कसं?

बापट : आम्ही जंगलातल्या वस्त्यांमधे जायचो. लोकांना जंगलांचं महत्त्व पटवून द्यायचो.

पांडे : भाषणं द्यायचात?

बापट : छे रे! आम्ही गावकऱ्यांत मिसळायचो. आमच्यापैकी कुणी चित्रं काढी, कुणी गाणी म्हणी, कुणी फोटो काढी, कुणी नुसतेच गावकऱ्यांशी गप्पा मारत असे. आमच्यातल्या मुली तर गावातल्या बायकांशी दुधात पाणी मिसळल्यासारख्या एकरूप व्हायच्या।

चिपको की देन!

पांडे : तुम इतनी अच्छी हिंदी कैसे बोलते हो?

बापट : अरे, यह चिपको की देन है।

पांडे : चिपको की देन?

बापट : हाँ, न। चिपको आंदोलन तब शुरु ही हुआ था। हम कोई पंद्रह बीस लोगों ने उसके विषय में पूरी जानकारी प्राप्त करने की ठानी। पूरे गढ़वाल का चक्कर लगाया। अलकनंदा के किनारे के गाँव-गाँव (हम) घूमा करते थे। उसी समय हिंदी सीखी। बेधड़क बोलते थे। भूल हो गई तो हो गई। सच तो यह है कि प्रेम की, या मानवता भाषा एक ही है। फिर चाहे वह गढ़वाल हो या महाराष्ट्र हो।

पांडे : यह तो सच है। पर वापस आने के बाद चिपको आंदोलन के बारे में क्या करते रहते हो?

बापट : हमने फिर महाराष्ट्र में भी चिपको आंदोलन शुरु किया।

पांडे : वह कैसे?

बापट : हम जंगल की बस्तियों में जाया करते थे। लोगों को जंगलों का महत्त्व समझाते थे।

पांडे : भाषण दिया करते थे?

बापट : नहीं रे। हम गाँव वालों से हिल-मिल जाया करते थे। हम में से कुछ (लोग) चित्र बनाया करते थे, कुछ (लोग) गाना गाया करते थे, कुछ (लोग) फोटो खींचा करते थे और कुछ जाकर गाँव वालों के साथ बातें किया करते थे। हमारे साथ की लड़कियाँ तो गाँव की स्त्रियों के साथ ऐसे घुल-मिल गईं जैसे दूध में पानी।

पांडे : त्याचा परिणाम व्हायचा?

बापट : भरपूर! झोपलेले गावकरी पटापट जागे व्हायचे. सगळीकडे जंगलवासियांचा अनुभव तोच असायचा. त्यांची दुःखही तीच असायची आणि समस्याही त्याच असायच्या. त्यामुळे स्थळकाळाची बंधनं गळून पडायची.

पांडे : इसका असर होता था?

बापट : पूरा-पूरा। सोए हुए ग्रामवासी फटाफट जागृत हो जाते थे। हर जगह के वनवासियों का अनुभव तो एक जैसे ही होता था। उनके दुख भी वही होते थे और समस्याएँ भी वही होती थी। इसलिए स्थानकाल के बंधन टूटते जाते थे।

पांडे : मी तुमच्या पथनाट्याबद्दलही ऐकलं आहे.

बापट : आमची पथनाट्ये तर फारच प्रभावी ठरली. आम्ही बोलत बोलत गावातली माहिती गोळा करायचो. त्यावरच उत्स्फूर्त संवाद तयार करायचो. चिपको आंदोलनातील झाडं वाचवायचे नाना उपाय त्यांना नाटकांतून सांगायचो. सर्वात जास्त प्रभाव पडायचा तो बायकांवर!

पांडे : मैंने तुम्हारे नुक्कड़ नाटकों के बारे में भी सुना है।

बापट : हमारे नुक्कड़ नाटक बहुत ही प्रभावी सिद्ध हुए। हम बोलते बोलते गावँ की पूरी जानकारी इकट्ठी कर लेते थे। उसी के ऊपर ही हम फौरन संवाद गढ़लिया करते थे। चिपको आंदोलन के पेड़-पौधे बचाने के नाना प्रकार के उपाय हम नाटकों द्वारा बताया करते थे। सबसे अधिक प्रभावित हुआ करती थीं महिलाएँ।

पांडे : हल्ली तुम्ही काय करीत असता? अजूनही तुम्ही जंगलात जात असता का? तुमचं आंदोलन चालू आहे का?

बापट : हो-हो! अजूनही चालूच आहे. सगळे आपापल्या कामात मग्न असतो तरीही महिन्या दोन महिन्यातून एखादी वारी असतेच जंगलात.

पांडे : आज कल आप क्या करते रहते हो? आप अभी भी जंगल में जाते रहते हो क्या? आपका आंदोलन चालू है क्या?

बापट : हाँ-हाँ! आज भी चल रहा है। हम सभी अपने अपने कामों में व्यस्त रहते हैं। फिर भी महीने-दो महीने में जंगल का एक चक्कर अवश्य ही लगा लेते हैं।

पांडे : पुढच्या वेळेपासून मलाही सांगत जा. मीही येत जाईन तुमच्याबरोबर. चिपको आंदोलनाचं काम करत जाईन. त्यातून मला मानसिक समधानही मिळत जाईल.

पांडे : अगली बार से मुझे भी बताया करो। मैं भी तुम्हारे साथ आया करूँगा। चिपको आंदोलन का काम किया करूँगा। उससे मुझे मानसिक समाधान भी मिलता रहेगा।

शब्दार्थ

बोलतोस	बोलते हो
देणगी	देन
आंदोलन	आंदोलन
नुकतेच	तब ही
माहिती	जानकारी
मिळवायचं ठरवलं	प्राप्त करने की ठानी
भटकंती	भटकन
त्याच वेळी	उसी समय
बेधड़क	बिना झिझक
चुकले तर चुकलो	भूल हो गई तो हो गई
खरं सांगायचं तर	सच तो यह है
माणुसकीची	मानवता की
मग	फिर
खरं	सच
परत	वापस
काय करत असता	क्या करते रहते हो
आम्ही	हमने
सुरुं केलं	शुरु किया
ते कसं	वह कैसे
वस्ती	बस्ती
लोकांना	लोगों को
भाषण देणे	भाषण देना
छे रे	नहीं भाई/नहीं रे
मिसळणे	हिलमिल जाना, घुलमिल जाना
चित्र काढणे	चित्र बनाना
गाणी गाणे	गाने गाना
दुधात पाणी	दूध में पानी
सारख्या	के समान
एकरूप होणे	एकरूप होना
परिणाम	असर
झोपलेले	सोये हुए
पथनाट्य	नुक्कड़ नाटक
ऐकलं आहे	सुना है
प्रभावी	प्रभावकारी
माहिती	जानकारी
सर्वात जास्त	सबसे अधिक
चालू असणे	चालू रहना
मग्न	व्यस्त
वारी	परिक्रमा

अभ्यास

I खालील प्रश्नांची उत्तरे द्या.

1) बापट चांगलं हिंदी का बोलू शकत होते?
2) बापट आणि त्यांच्या मंडळींना 'चिपको' आंदोलना बद्दलची माहिती मिळविण्यासाठी कुठे कुठे भटकावे लागले?
3) गढवालची भटकंती करून परत आल्यावर बापटांनी काय केलं?
4) गावातील लोकांना झाडांचं महत्त्व बापट व मंडळी कशा तऱ्हेने समजावून सांगत असत?

II पाठ वाचून खाली दोन भागात दिलेल्या वाक्यांशांच्या योग्य जोड्या लावून वाक्ये बनवा.

चिपको आंदोलन	महत्त्व पटवून द्यायचो.
अलकनंदेच्या किनाऱ्यावरील	खूप मिसळायचो.
माणुसकीची भाषा	नाटकातून सांगायचो.
लोकांना जंगलाचं	गाव न् गाव भटकलो.
झाडं वाचवायचे उपाय	नुकतंच सुरु झालं होतं.
आम्ही गावकऱ्यांत	एकच असते.

III अधोरेखित शब्दाबद्दल कंसात दिलेल्या शब्दांची योग्य रूपे वापरून वाक्ये बनवा.

1) मी रोज शाळेत जायचो. (झोप), (खेळ)
2) मी रोज लवकर झोपायची. (ऊठ), (जेव)
3) तू वह्या आणायचीस. (ने), (पाड)
4) तू सारखा पडायचास. (रड), (हस)
5) आपण/आम्ही भरभर जेवायचो. (चाल), (आवर)
6) आपण/तुम्ही कधीकधी यायचात. (रागव), (खेळ)
7) रमा स्वयंपाक करायची. (बिघडव), (सांड)
8) राम सायकल चालवायचा. (पाड), (पळव)
9) मांजर झाडाखाली बसायचं. (झोप), (खेळ)
10) रमाबाई लवकर झोपायच्या. (ऊठ), (जा)
11) रामभाऊ भरभर चालायचे. (बोल), (जेव)
12) मांजरं सारखी भांडायची. (खेळ), (झोप)

IV उदाहरणानुसार खालील वाक्ये नकारार्थी करा.

उदाहरण: मी गावाला जायची. मी गावाला जायची नाही.

1) सुनीता फुलांच्या माळा करायची.
2) मी घराघरांत जायचो.
3) आम्ही गढवालचे अनुभव सांगायचो.
4) मुली गावाशी एकरूप व्हायच्या.
5) आपण गावातली माहिती जमवायचो.

6) रमेश नाटकात काम करायचा.
7) पुरुष बाहेरगावी कामाला जायचे.
8) मुलं पटापट झाडांना मिठ्या मारायची.
9) मूल सारखं रडायचं.
10) तू आमच्यात मिसळायचास.
11) तुम्ही गोष्टी सांगायचात.

V उदाहरणानुसार दिलेल्या प्रत्येक वाक्यापासून दोन दोन परिवर्तित वाक्ये बनवा.

1. *उदाहरण:* तू आमच्यात मिसळलास.
तू आमच्यात मिसळायचास.
तू आमच्यात मिसळत असस.

1) मी बसमधून प्रवास केला.
2) आम्ही नागमोडी पायवाटा तुडवल्या.
3) तू गुडगुडी ओढलीस.
4) एखाद्या गृहिणीने शिवणटिपण केले.
5) बायकांनी दळण कांडण केले.
6) म्हातारा खोकला.
7) पोलिस हतबल झाले.
8) मूल अंगणात खेळले.
9) मुलांनी झाडांना मिठ्या मारल्या.

2. *उदाहरण:* मी लहान असताना कविता केल्या.
मी लहान असताना कविता करी.
मी लहान असताना कविता करायचो.

1) तो गावाला गेला.
2) ती रडली.
3) मी लवकर उठलो.
4) ती प्रत्येक शब्दाला हसली.
5) मी निबंध लिहिले.

VI उदाहरणानुसार खालील वाक्ये नकारार्थी करा.

1. *उदाहरण:* मी गावातली माहिती मिळवत असे.
मी गावातली माहिती मिळवत नसे.

1) तिथे एक म्हातारा राहात असे.
2) मी निसर्ग पाहून मोहून जात असे.
3) बापट खेड्यात फेरी मारत असत.
4) रमा गढवालच्या जंगलात जात असे.

2. *उदाहरण:* मी लहान असताना कविता करी.
मी लहान असताना कविता करीत नसे.
1) तू रोज चित्र काढी.
2) संजय सतत गावाला जाई.
3) बायको धान्य कांडी.
4) मी नेहमी गाणी म्हणी.

3. *उदाहरण:* मी रेल्वेतून प्रवास करायचो.
मी रेल्वेतून प्रवास करीत नसे.
1) सगळे नाटक करायचे.
2) गुरंढोरं कुरणात चरायचे.
3) खेळाडू रोज खेळायचे.
4) ती रोज धावायची.

VII कंसात दिलेल्या क्रियापदाची योग्य रूपे वापरून परिच्छेद पूर्ण करा.

1. आमच्या वर्गात एक मुलगा होता. तो झाडावर खूप उंच .... (चढ). आम्ही जवळच्या रानात खूप .... (भटक) वडाच्या झाडावर सूरपारंब्या ..... (खेळ). धडाधड उड्या ...... (मार). एका मुलाला मात्र .... (ये). तो रडत ...... (बस). आम्ही त्याला कसेबसे झाडावर ...... (चढवा). पण तो पुन्हा पुन्हा .... (पड)

2. आम्ही गप्पा .... (मार), नागमोडी पायवाटा ...... असू. (तुडव) निसर्ग ...... असू (पाह). कधी आजूबाजूच्या झाडांवरची फळं. .... (खा) त्या झाडाबद्दल माहिती गोळा ...... असू (कर). मजेत ....(हस) मैलन् मैल आम्ही ...... असू (चाल).

VIII उदाहरणानुसार वाक्ये बदला.

1. उदाहरण: मी निबंध लिहितो.
मी निबंध लिहीत असतो.
1) मुलगा पुस्तक वाचतो.
2) मधू शेंगदाण्याचा लाडू खातो.
3) सचिन तेंडुलकर क्रिकेट खेळतो.
4) ते नेहमीच उशिरा येतात.
5) सर्व मुले अभ्यास करतात.

2. उदाहरणानुसार खालील वाक्ये नकारार्थी करा.
उदाहरण: मी निबंध लिहीत असतो.
मी निबंध लिहीत नसतो.
1) निलेश रोज चित्र काढीत असतो.
2) विजय सतत पुस्तक वाचत असतो.
3) सर्वजण मैलन् मैल चालत असतात.

4) स्टेशनवर सगळे गाडी पकडण्यासाठी धावत असतात.
5) विद्यार्थी वाचन करत असतात.

3. उदाहरणानुसार वाक्ये बदला.

उदाहरण: मी निबंध लिहीन.
मी निबंध लिहीत जाईन.

1) ते रेल्वेतून प्रवास करतील.
2) तो टेनीस खेळेल.
3) आम्ही अभ्यास करू.
4) मुले झाडाला मिठ्या मारतील.

4. उदाहरणानुसार खालील वाक्ये नकारार्थी करा.

उदाहरण: मी निबंध लिहीत जाईन.
मी निबंध लिहीत जाणार नाही.

1) सर्वजण मैलन् मैल चालत जातील.
2) विनय चित्र काढत जाईल.
3) गाडी पकडण्यासाठी सर्वजण धावत जातील.
4) तू रोज चित्र काढत जाशील.
5) त्या रेल्वेतून प्रवास करत जातील.

IX 'भटकणे' या क्रियापदावरून 'भटकंती' हा शब्द तयार होतो.

उदाहरण: मी गढवलामधे भटकलो.
मी गढवालची भटकंती केली.

अशाच प्रकारे कंसात दिलेल्या क्रियापदाच्या योग्य रूपाचा उपयोग करून वाक्ये पूर्ण करा.

1) मला खूप .... असते. (फिरणे)
2) राम तिला .... करतो. (विनवणे)
3) उमाने सायकलची ...... केली. (दुरुस्त करणे)
4) उमेशने डोंगरदऱ्यातून खूप .... केली. (भ्रमण करणे)

X 'तापणे' शब्दाचा उपयोग अनेक वेगवेगळ्या अर्थांत होतो.

उदाहरण:
1) लाकडं तापली/ पाणी तापलं.
2) तापामुळे बाळाचं अंग तापलं.
3) गुरुजी दंगा करणाऱ्या मुलांवर तापले.
4) रडणाऱ्या मुलानं आईला फार ताप दिला.

अशाच प्रकारे प्रत्येक अर्थाचे एक-एक वाक्य बनवा.

पढिए और समझिए।

आम्ही अलकनंदेच्या खोऱ्यात खूप भटकायचो. कधी जीव मुठीत धरून बसमधून प्रवास करायचो. कधी दाट जंगलातल्या नागमोडी पायवाटा तुडवायचो. रोज निसर्गाचं नवं रूप मोहून टाकायचं.

त्या डोंगरउतारावरल्या गावांची रचना अगदी वैशिष्ट्यपूर्ण असायची. गावं उतारा उतारावर विखरुन वसलेली असायची. घरं दुमजली. रुंदीला कमी लांबीला जास्त. तळमजल्यावर धान्य, पेंढा, चारा वगैरे साठवायचे. वरच्या मजल्यावर लोक राहायचे. घराची बांधणी दगडांची. दोन मोठ्या दगडांमधे चिखल, माती, सिमेंटऐवजी परत छोट्या दगडांच्या चिपा भरलेल्या असायच्या. वर स्लेटच्या दगडांची पसरट कौलं! वरती आतून लाकडी छत! दारं खिडक्या ठेंगण्या ठुसक्या असायच्या. घरापुढे लांबट चौकोनी अंगण. तिथे एखादा पांढरीशुभ्र दाढी असलेला म्हातारा गुडगुडी ओढत छानपैकी पाठीवर ऊन घेत बसलेला दिसायचा. एखादी गृहिणी शिवण टिपण करताना दिसायची. एखाद्या कोपऱ्यात धान्य कांडायला छोटंसं उखळ असायचं. रामप्रहरी मुसळीचा लयबद्ध आवाज घुमायचा. जोडीला एखादं गीतही कानावर पडायचं. मला बहिणाबाईंची गाणी आठवायची.

ह्याच शांत साध्यासुध्या बायका जंगलतोडीला ठेकेदार आले की सिंहीणी व्हायच्या. बायकापोरं पटापट झाडांना मिठ्या मारायची. चिपकायची. ठेकेदाराची माणसं, पोलीस सारेच हतबल व्हायचे.

अजूनही गढवालमधली ती साधीभोळी माणसं आणि त्यांनी वाचवलेली ती घनदाट जंगलं डोळ्यासमोरुन हलत नाहीत.

शब्दार्थ

खोरे	वादी, घाटी
जीव मुठीत धरुन	जी (दिल) थाम कर
दाट	घना
नागमोडी	बलखाती
वाटा तुडवणे	खूब-चलना
रूप	स्वरुप, रूप
मोह	आकर्षण, मोह
उतार	ढलान, उतार
विखरून	फैला हुआ
वसलेली	बैठी हुई
रुंदी	चौड़ाई
लांबी	लंबाई
जास्त	ज़्यादा
तळमजला	निचली मंजिल
धान्य	धान
पेंढा	पुआल का गट्ठा (गठरी)

चारा	धास, चारा
साठवणे	संग्रह करना
राहणे	रहना
बांधणी	बनावट
चिखल	दलदल, कीचड़
चिपा	पत्थर के टुकडे
पसरट	चिपटा (परैल)
कौल	खपरैल
छत	छत
ठेंगणी	ठिगनी
अंगण	आँगन
म्हातारा	बूढ़ा
गुडगुडी	गुड़गुड़ी (हुक्का)
ओढणे	पीना (हुक्का आदि)
ऊन	धूप
शिवण टिपण	सिलाई आदि
कांडणे	कूटना
मुसळ	मूसल
लयबद्ध	लयबद्ध
आठवणे	याद आना
सिंहिणी	सिंहनी
मिठी मारणे	आलिंगन करना
हतबल होणे	लाचार होना
वाचवणे	बचाना

अभ्यास

I खाली दिलेल्या प्रश्नांची उत्तरे द्या.

1) आम्ही कुठे भटकत होतो?
2) डोंगर उतारावरल्या गावांची रचना कशी असायची?
3) घरे कशी बांघलेली असायची?
4) रामप्रहरी कसला लयबद्ध आवाज घुमायचा?
5) साध्यासुध्या बायकांच्या धीटपणाच्या वर्णनासाठी कोणता शब्द वापरला आहे?

II खाली दिलेले वाक्यांश पूर्ण करा.

1) ठेंगणं .... घर
2) नाग .... पायवाट
3) शिवण .... करणे
4) पांढरी .... दाढी
5) घन .... अरण्य

6) स्थळ .... बंधन
7) लय .... आवाज
8) साध्या .... बायका

III योग्य अक्षरे जोडून शब्द पूर्ण करा.

1) अ .... नं ..... च्या
2) पा ..... वा .....
3) डों ग ..... उ .... व ..... ल्या
4) ..... ळ म ..... ल्या व .....
5) रा म .... री
6) ब ..... णा ..... ई .....
7) ..... ग ..... तो डी .....
8) ग ढ वा .... ली
9) घ ..... दा .....
10) डो ळ्या ..... मो ....

खाली दिलेल्या शब्दांमधून पाठात आलेले शब्द ओळखा व ते सांगा.

खोऱ्यात, मुठीत, राजा, नागमोडी, तुडवायचो, विखरून, गावं, शहर, गाय, चारा, माती, पसरत, पायरी, काळी, खिडक्या, गुडगुडी, सिगारेट, उखळ, मुसळ, गीत, गाणी, प्यायचो, कंत्राटदार, सिंहीणी, वाघीण, पोलीस, कैदी माणसं, पळत, हलत.

IV हिंदीत भाषांतर करा आणि समर्पक शीर्षक द्या.

प्रगतिपथाकडे वाटचाल करणारा विद्यार्थी सकाळी सूर्योदयापूर्वी उठत असतो. नित्यकर्म केल्यानंतर तो स्नान करत असतो. त्यानंतर तो परमेश्वराची प्रार्थना करत असतो की, तू सतत माझा मार्गदर्शक व रक्षक राहा. पूजेनंतर व्यायाम करणे उत्तम विद्यार्थ्यासाठी आवश्यक आहे. त्याशिवाय शरीर सुंदर, सबल आणि प्रमाणबद्ध होत नसते. ज्या मंदिरात सौंदर्य नसते त्यात विराजमान असणारी मूर्ती कधीही सुंदर असत नाही. व्यायामानंतर थोडे जलपान करणे हितावह असते. त्यानंतर रोजचे वर्तमानपत्रही वाचणे आवश्यक आहे. त्याद्वारा देश, जग, शहर आणि आसपासच्या घडामोडींविषयी माहिती मिळते. ही माहिती नसली तर कधी कधी खूप नुकसान होते. वर्तमानपत्र वाचल्यानंतर विद्यार्थी आपल्या पाठ्यविषयाचा अभ्यास करत असतो. त्यावर विचार करायचा प्रयत्न करत असतो. अशा प्रकारचे संस्कार झालेले विद्यार्थी पूर्वीसुद्धा उत्तम यश मिळवत असत आणि आजही मिळवत असतात. मी सुद्धा विद्यार्थी असताना पहाटे लवकर उठत असे. नंतर स्नान करायचो, पूजा करायचो. तसेच मी व्यायामही करी. आजही हे सर्व मी करत असतो. आमचे सर म्हणायचे, "जो नियमित अभ्यास करत जाईल तोच यशस्वी होईल. जर तुम्ही रोज काहीतरी लिहीत जाल तर तुम्हालाच त्याचा भविष्यात उपयोग होणार आहे. जो विद्यार्थीदशेत कष्ट करत जाणार नाही त्याला पुढे अनेक समस्यांना तोंड द्यावे लागेल." म्हणून मी विद्यार्थीदशेपासूनच खूप

कष्ट करत असे. आमचे सर आम्हाला मार्गदर्शन करत असत. ते म्हणायचे, "विद्यार्थाने शिक्षणही असेच घ्यावे की तो स्वतःच्या व्यक्तिमत्त्वाचा सर्वांगीण विकास करू शकेल. शिक्षणात स्वावलंबन, चारित्र्य, नैतिकता, सेवाभाव, स्वार्थत्याग, धैर्य, राष्ट्रनिष्ठा, मानसिक संतुलन इ. मूल्ये असायला पाहिजेत. ती सर्व विद्यार्थी आत्मसात करू शकला पाहिजे. जर तो ही मूल्ये आत्मसात करू शकत नसेल तर असे शिक्षण व असा विद्यार्थी उपयोगाचा नाही. जो ही मूल्ये आत्मसात करू शकतो तोच खरा विद्यार्थी! आणि जे शिक्षण ही मूल्ये विद्यार्थ्यावर बिंबवू शकते तेच खरे शिक्षण!" आम्ही विद्यार्थीदशेत खूप मेहनत केली. त्याचे फळ आता आम्हाला मिळते आहे. आम्ही जीवनात यशस्वी झालो आहोत. कष्ट न करणारे विद्यार्थी अयशस्वी झाले आहेत. शाळेत असताना आम्ही गाणी म्हणायचो, भाषणं द्यायचो, नाटकं करत असू, स्पर्धेत भाग घ्यायचो, जिंकायचो आणि हरायचोही! आमचा एक मित्र खूप वेगात पळे, एकजण सतत काही ना काही वाची. आम्ही आमच्या सर्व मित्रांचा एक गट तयार केला आहे. उद्या आम्ही सर्वजण भेटणार आहोत. बोलता बोलता जुन्या आठवणींना उजाळा देणार आहोत. गप्पा करतानाच चहानाश्ताही घेऊ. चहा घेऊन झाला की हसत हसत आनंदाने घरी जाऊ. तुम्ही पण येणार का आमच्याबरोबर? तुम्ही आदर्श विद्यार्थी होण्यासाठी वरीलप्रमाणे प्रयत्न करणार ना? निदान प्रयत्न करायला तरी काहीच हरकत नाही. सुधारणा आपोआप होत जाईल. कारण "आधी कष्ट, मग फळ" हेच खरे!

V मराठीत भाषांतर करा.

'चिपको' आंदोलन के कारण देश की जनता को पेड़ों का महत्त्व समझ में आ रहा है। पेड़ देश की संपत्ति है। पेड़ों को काटने से हर तरफ रेगिस्तान हो जाएगा। वर्षा नहीं होगी। नदियों में पानी कम हो जाएगा। सब तरफ वीरानी हो जाएगी और मनुष्य को बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। 'एक पेड़ काटो तो एक पेड़ लगाओ' - इस अभियान का अगर सभी लोग अनुसरण करें तो अनेक मुसीबतों से बच सकते हैं।

वे कुछ दिन कितने सुंदर थे। सब मिल जुलकर रहते थे। आपस के भेद-भाव बातचीत द्वारा दूर हो जाते थे। सब बड़ों का सम्मान करते थे। बड़े छोटों को प्यार करते थे। अपने पराए का भेद नहीं था। गाँव का जीवन बेहतर माना जाता था। भारत गाँव में ही बसता था। गाँव में सारी जरूरतें पूरी हो जाती थीं। सभी अपने हाथों अपना काम करते थे। बुनकर कपड़ा बनता था। किसान अनाज देकर कपड़ा ले लेता था। इसी तरह जरूरत की चीजें आदान-प्रदान के द्वारा मिल जाती थीं। सब मिलकर पर्यावरण की रक्षा करते थे। खूब हरियाली बनी रहती थी। खूब वर्षा होती थी। जीवन और जगत में संतुलन था।

लेकिन आजकल जनसंख्या बढ़ती जा रही है। इसलिए कई समस्याएँ निर्माण हो रही हैं। शहरों में ज्यादा भीड़ होती जा रही है। लोग पेड़पौधों को काटते जा रहे हैं। इससे पर्यावरण का ऱ्हास होता जा रहा है। अगर पर्यावरण को बचाना है तो पेड़ो की रक्षा करनी पड़ेगी। हर एक को पर्यावरण के बारें में जागृति रखनी पड़ेगी। पर्यावरण बचाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रयत्न करना होगा। ऐसा करने से हम

केवल पर्यावरण को ही नहीं बल्कि समग्र मानव जाति को बचा सकते हैं। यही हमारा कर्तव्य भी है।

VI 'झाडे लावा-झाडे जगवा' या विषयावर एक छोटा निबंध मराठीत लिहा.

टिप्पणियाँ

1. पाठ 9 में आपने पढ़ा है कि मूल क्रिया से '-त' प्रत्यय लगाकर अंत में 'अस' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर मराठी में 'अभ्यासिक वर्तमानकालिक' क्रियाएँ बनती हैं। इस पाठ में 'अभ्यासिक काल' का परिचय विस्तारपूर्वक दिया गया है।

नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1) पण मग परत आल्यावर चिपको आंदोलनाच्या बाबतीत काय <u>करत असता</u>?
पर वापस आने के बाद चिपको आंदोलन के बारे में क्या करते रहते हो?
2) हल्ली तुम्ही काय <u>करत असता</u>?
आजकल आप क्या करते रहते हो?
3) अजूनही तुम्ही जंगलात <u>जात असता</u> का?
आप अभी भी जंगल में जाते रहते क्या?

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित क्रिया रूपों में 'अभ्यासिक वर्तमान काल' का प्रयोग किया गया है।

2. मराठी में 'अभ्यासिक भूतकाल' के क्रियारूप तीन प्रकार से बनाए जाते हैं।

प्रथम प्रकार: मराठी में मूल क्रिया में '-आयचा' प्रत्यय लगाकर उसके साथ लिंग, वचन, पुरुष सूचक प्रत्यय लगाकर 'अभ्यासिक भूतकाल' के क्रियारूप बनते हैं।

नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1) आम्ही जंगलातल्या वस्त्यांमध्ये <u>जायचो</u>. — हम जंगल की बस्तियों में जाया करते थे।
2) लोकांना जंगलांचं महत्त्व पटवून <u>द्यायचो</u>. — लोगों को जंगलों का महत्त्व समझाया करते थे।
3) आम्ही गावकऱ्यांत <u>मिसळायचो</u>. — हम गाँव वालों से हिल-मिल जाया करते थे।

नीचे 'जा' मूल क्रिया में - '-आयचा' प्रत्यय जोड़कर' बननेवाले 'अभ्यासिक भूतकालिक' क्रियारूप दिए गए हैं।

		एकवचन		*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी जायचो. मैं जाया करता था।	आम्ही / आपण	जायचो. हम जाया करते थे।
	(स्त्री.)	मी जायची. मैं जाया करती थी।		हम जाया करती थीं।

म.पु.	*(पु.)*	तू जायचास तूम जाया करता था।	तुम्ही आपण	जायचात. आप जाया करते थे।
	(स्त्री.)	तू जायचीस तूम जाया करती थी।		आप जाया करती थीं।
अ.पु.	*(पु.)*	तो जायचा. वह जाया करता था।	ते जायचे. वे जाया करते थे।	
	(स्त्री.)	ती जायची. वह जाया करती थी।	त्या जायच्या. वे जाया करती थीं।	
	(नपुं.)	ते जायचं.	ती जायची.	

इनका निषेध वाचक रूप बनाने के लिए क्रिया के पश्चात 'नाही' जोडा जाता है।

		एकवचन		*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी जायचो नाही. मैं नहीं जाया करता था।	आम्ही आपण	जायचो नाही. हम नहीं जाया करते थे।
	(स्त्री.)	मी जायची नाही. मैं नहीं जाया करती थी।		हम नहीं जाया करती थीं।

म.पु.	*(पु.)*	तू जायचा नाहीस. तुम नहीं जाया करता था।	तुम्ही आपण	जायचा नाहीत. आप नहीं जाया करते थे।
	(स्त्री.)	तू जायची नाहीस. तू नहीं जाया करती थी।		आप नहीं जाया करती थीं।
अ.पु.	*(पु.)*	तो जायचा नाही. वह नहीं जाया करता था।	ते जायचे नाहीत. वे नहीं जाया करते थे।	
	(स्त्री.)	ती जायची नाही. वह नहीं जाया करती थी।	त्या जायच्या नाहीत. वे नहीं जाया करती थीं।	
	(नपुं.)	ते जायचं नाही.	ती जायची नाहीत.	

द्वितीय प्रकार : मराठी में मूल क्रिया में '-त' प्रत्यय लगाकर अंत में 'अस' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोगकर भी अभ्यासिक भूतकालिक क्रियाएँ बनती हैं।

नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1)	आम्ही अलकनंदेच्या किनाऱ्यावरील गावन्‌गाव भटकत असू.	अलकनंदा के किनारे के गाँव-गाँव (हम) घूमा करते थे।
2)	कुणी नुसतेच गावकऱ्यांशी गप्पा मारत असे.	कुछ (लोग) जाकर गाँववालों के साथ बातें किया करते थे।

नीचे 'जा' मूल क्रिया में '-त' प्रत्यय लगाकर 'अस' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर बननेवाले अभ्यासिक भूतकालिक क्रियारूप दिए गए है।

	एकवचन		*बहुवचन*
उत्तम पुरुष	मी जात असे.	आम्ही / आपण	जात असू.
	मैं जाया करता था।/ करती थी।		हम जाया करते थे।/ करती थीं।
मध्यम पुरुष	तू जात असंस	तुम्ही / आपण	जात असा.
	तू जाया करता था।/ करती थी।		आप जाया करते थे।/ करती थी।
अन्य पुरुष	तो / ती / ते जात असे	ते / त्या / ती	जात असत.
	वह जाया करता था/ करती थी।		वे जाया करते थे/ करती थीं।

ध्यान दें कि, इस प्रकार की क्रिया में लिंग के कारण भेद नहीं होता। इनका निषेध वाचक रूप बनाने के लिए 'अस' क्रिया के स्थान पर 'नस' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग किया जाता हैं।

तृतीय प्रकार : मराठी में मूल क्रिया में '-ई' अथवा '-ए' प्रत्यय लगाकर अभ्यासिक भूतकालिक क्रियाएँ बनती हैं। स्वरांत क्रियाओं के साथ '-ई' प्रत्यय जोडकर और व्यंजनांत क्रियाओं के साथ '-ए' प्रत्यय जोडकर अभ्यासिक भूतकालिक क्रियाएँ बनती हैं।

नीचे 'जा' मूल क्रिया में '-ई' प्रत्यय लगाकर बननेवाले अभ्यासिक भूतकालिक क्रिया रूप दिए गए हैं।

	एकवचन	*बहुवचन*
उत्तम पुरुष	मी जाई	(जा + ई)
	मैं जाया करता/करती थी।	
अन्य पुरुष	तो / ती / ते जाई.	ते / त्या / ती जात.
	वह जाया करता था/करती थी।	वे जाया करते थे/करती थीं।

नीचे 'धाव' (दौडना) मूल क्रिया में '-ए' प्रत्यय लगाकर बननेवाले अभ्यासिक भूतकालिक क्रिया रूप दिए गए हैं।

	एकवचन	*बहुवचन*
उत्तमपुरुष	मी धावे. (धाव + ए)	---

	मैं दौडा करता था/करती थी।	
अन्यपुरुष	तो/ती/ते धावे.	ते/त्या/ती धावत.
	वह दौडा करता था/करती थी।	वे दौडा करते थे/करती थीं।

ध्यान दें कि, इस प्रकार के रूप सभी पुरुष वचनों में नहीं बनते हैं। केवल उपर्युक्त रूप बनते हैं। इस प्रकार के वाक्यों के निषेध वाचक रूप मूल क्रिया में '-त' प्रत्यय लगाकर अंत में 'नस' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर बनते हैं।

3) नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रियारूपों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1)	मी ही येत जाईन तुमच्याबरोबर.	मैं भी तुम्हारे साथ आया करूँगा।
2)	चिपको आंदोलनाचं काम करत जाईन.	चिपको आंदोलन का काम किया करूँगा।
3)	त्यातून मला मानसिक समाधानही मिळत जाईल.	उससे मुझे मानसिक समाधान भी मिलता रहेगा।

मराठी में मूल क्रिया में '-त' प्रत्यय लगाकर अंत में 'जा' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर अभ्यासिक भविष्यत् कालिक क्रिया रूप बनाए जाते हैं।

नीचे 'खा' मूल क्रिया में '-त' प्रत्यय लगाकर अंत में 'जा' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर बननेवाले अभ्यासिक भविष्यत् कालिक क्रिया रूप दिए गए हैं।

	एकवचन	*बहुवचन*
उ.पु.	मी खात जाईन.	आम्ही/आपण खात जाऊ.
	मैं खाया करूँगा/करूँगी।	हम खाया करेंगे/करेंगी।
म.पु.	तू खात जाशील.	तुम्ही/आपण खात जाल.
	तू खाया करेगा/करेगी।	आप खाया करेंगे/करेंगी।
अ.पु.	तो/ती/ते खात जाईल.	ते/त्या/ती खात जातील.
	वह खाया करेगा/करेगी।	वे खाया करेंगे/करेंगी।

ध्यान दें कि, मराठी में अभ्यासिक भविष्यत्कालिक क्रिया रूपों में लिंग के कारण भेद नहीं होता। केवल वचन और पुरुष के अनुसार भेद होता हैं। इन के निषेधवाचक रूप 'जा' क्रिया को '-णार' प्रत्यय लगाकर अंत में 'नाही' का प्रयोग कर बनते हैं।

धडा पाठ 21

मधुसूदनराव निवृत्त होतात

वामनराव : काय मधुसूदनराव, काय म्हणतेय निवृत्ती? निवृत्त झाल्यावर इथं येऊन तर गेलात पण करमतंय का इथे? की इथे कुठे येऊन पडलो असं वाटतं? नोकरी करावी लागते का अजून?

मधुसूदनराव : नाही. नोकरी संपून गेली खरी पण काम मात्र नोकरीच्या दुप्पट होऊन जातं माझं.

वामनराव : पण तरीही वेळ जाता जाता नसेल ना? माझे काका मला सांगत होते की निवृत्त झाल्यावर फार जड जातं.

मधुसूदनराव : अहो, नोकरीत असताना वेळेवर कामावर जाणं भाग पडायचं. घरातही जबाबदाऱ्या असल्यामुळे वेळेवर घरी यावं लागायचं. आता वेळेचं बंधन गळून पडलं आहे. भरपूर वेळ आणि मनासारखं काम. यामुळे काम भरपूर होऊन जातं. मात्र खूप दमून जातो.

वामनराव : तुम्ही आत्मचरित्र लिहून टाका आता. तुम्ही साहित्यिक आहातच. तुम्ही कविताही लिहिणार होतात की फक्त गद्यलेखनच करणार होतात?

मधुसूदनराव : आत्मचरित्र लिहायला सुरुवात तर करून झाली आहे. बहुतेक पुढच्या मे महिन्यात पूर्ण होऊन गेलेलं असेल.

वामनराव : आणि तुमचा नाटकाचा छंद? तुम्ही तोही पूरा करून घेणार आहात

मघुसूदनराव सेवानिवृत्त हुए

वामनरनाव : क्यों मधुसूदनराव, सेवानिवृत्ति के बाद हालचाल क्या हैं? निवृत्ती के बाद यहाँ आ तो गए आप मगर जी लगता है क्या यहाँ? या इधर कहाँ आ फँसे ऐसा लगता है? क्या अभी भी नौकरी करनी पडती है?

मधुसूदनराव : नौकरी तो खतम हो गई, लेकिन काम तो नौकरी से दुगना हो जाता है मेरा।

वामनराव : पर समय तो काटे नहीं कटता होगा? मेरे चाचा मुझे बता रहे थे कि निवृत्ति के बाद बहुत मुष्कील होता है।

मधुसूदनराव : नौकरी में था, तो समयपर काम की जगह पर पहुँचना पड़ता था। घर की जिम्मेदारियों की वजह से घर भी समय से आना पड़ता था। अब तो समय का बंधन नहीं रहा है। समय भरपूर (है) और मनपसंद काम इसलिए खूब काम हो जाता है। मगर थक जाता हूँ।

वामनराव : आप अभी आत्मकथा लिख डालिए। आप साहित्यकार तो हैं हि। आप कविता भी लिखने वाले थे या सिर्फ गद्यलेखन ही करनेवाले थे?

मधुसूदनराव : मैं ने आत्मकथा लिखना शुरू किया है। प्रायः अगली मई तर पूरी हो चुकी होगी।

का?

मधुसूदनराव : हो त्यातच तर माझा खूप वेळ निघून जातो. मुलांची नाटकं बसवतो. त्यासाठी मुलांना एकत्र जमवावं लागतं त्यांच्या पालकांची परवानगी मिळवावी लागते. त्यात खूप आनंदही मिळतो आणि जनसंपर्कही घडून जातो.

वामनराव : पण वहिनी काय म्हणताहेत? त्या मजेत आहेत की नाराज आहेत?

मधुसूदनराव : तीही खुश आहे. पूर्वी तिला लवकर उठावं लागायचं. धांदल उडायची तिची! आता मी थोडंफार घरचं सांभाळतो. तिला मदत करतो. तिला जरा विश्रांती मिळून जाते. चार वर्षांनी तीही निवृत्त होणार आहे. तेव्हा मी नि ती दोघं मिळून काम करू. इतकी वर्ष दोघांनाही काम करावं लागत होतं, ते पोटासाठी. आताही करू काम. पण स्वतःसाठी! स्वतःच्या आनंदासाठी! ही कल्पनाच सुखावणारी आहे. मग आयुष्यच निराळं असेल. दोघंही मुक्त. दोघंही तृप्त! बा.भ. बोरकरांनी म्हटलंच आहे नं की अमृतघट भरले तुझ्या घरी, मग तू का वणवण फिरशी बाजारी?

वामनराव : और आपका नाटक का शौक? आप वह भी पूरा करनेवाले हैं क्या?

मधुसूदनराव : जी,हाँ। उसी में मेरा काफी समय चला जाता है। अपने निर्देशन में बच्चों से नाटक करवाता हूँ। उसके लिए बच्चों को इकट्ठा करना पड़ता है। उन के माता-पिता की अनुमति लेनी पड़ती है। उस में बहुत आनंद भी मिलता है और जन संपर्क भी हो जाता है।

वामनराव : लेकिन भाभीजी क्या कहती हैं? खुश हैं या नाराज हैं?

मधुसूदनराव : वें भी खुश हैं। पहले तो उन्हें जल्दी उठना पड़ता था। हड़-बड़ी में रहती थीं। अब मैं घर का थोड़ा बहुत काम संभालता हूँ। उनकी मदद करता हूँ। उन्हे थोड़ा आराम मिल जाता है। चार वर्षों के बाद वे भी सेवानिवृत्त होनेवाली हैं। तब मैं और वें हम दोनों साथ काम करेंगे। इतने बरस काम करना पडा था वह पेट की खातिर। अब भी काम करेंगे पर खुद के लिए। अपने आनंद के लिए। इसकी कल्पना मात्र से मुझे सुख मिलता है। उस के बाद, जीवन ही निराला होगा। दोनों ही मुक्त दोनों ही तृप्त! बा.भ. बोरकरजी ने कहा ही है न कि तुम्हारे घर अमृत के घड भरे हैं, तब तू क्यों बाजार में मारा मारा फिरता है?

शब्दार्थ

इथं कुठे येऊन पडलो	इधर कहाँ आ फँसा?
वाटणे	चाहना
नोकरी	नौकरी
पण	लेकिन

दुप्पट	दुगना
वेळ जाता जात नाही	समय काटे नही कटता
वेळेवर	समयपर
भाग पडणे	कोई भी बात सख्ती से करना पडना है
जबाबदाऱ्या	जिम्मेदारियाँ
यायला लागायचं	आना पडता था
थकून जातो	थक जाता हूँ
आत्मचरित्र	आत्मकथा
सुरवात करणे	शुरू करना
छंद	शौक
खूप	भरपूर
नाटक बसवणे	नाटक (निर्देशित) करना
परवानगी	अनुमति
लवकर	जल्दी
धांदल	हड़-बड़ी
थोडंफार	थोडा बहुत
इतकी	इतनी
स्वतःसाठी	खुद के लिए
निराले	निराला
तृप्त	तृप्त

अभ्यास

I खाली दिलेल्या प्रश्नांची उत्तरे द्या.
1) नोकरीत असताना मधुसूदनरावांना काय करावे लागे?
2) निवृत्तीनंतरच्या काळात मधुसूदनराव काय करणार होते?
3) मधुसूदनरावांचे आत्मचरित्र कधी पूर्ण झालेलं असेल?
4) मधुसूदनराव हल्ली नाटकासंबंधी काय करतात?
5) मधुसूदनरावाच्या नोकरीच्या काळात त्यांच्या पत्नीला काय करावे लागे?
6) पत्नीच्या निवृत्तीनंतर मधुसूदनरावांचा काय बेत आहे?

II धडा वाचून त्यानुसार वाक्ये पूर्ण करा.
1) नोकरी .... गेली खरी पण काम मात्र नोकरीच्या दुप्पट ....
2) घरातही .... असल्यामुळे .... घरी .... लागायचं.
3) आता वेळेचं बंधन .... पडलं आहे.
4) मुलांची .... बसवतो.
5) मी थोडंफार .... सांभाळतो तिला जरा विश्रांती ....

III कंसात दिलेल्या क्रियापदांच्या योग्य रूपांचा उपयोग करून वाक्ये पूर्ण करा.

1) तू पटकन गृहपाठ .... (कर, टाक) मग खेळायला जा.
2) तू त्याच्याकडे ...., (जा, ये) तो तुला नीट मार्गदर्शन करील.
3) माझ्याकडून फार मोठी चूक .... (हो, जा) आता मला प्रायश्चित्त करायला हवं.
4) आपण कुठे जंगलात .... (ये, पड) असं त्याला वाटलं.
5) मी पुरणपोळीची चव .... (घे, चुक)

IV कंसातून योग्य शब्द निवडून वाक्ये पूर्ण करा.

1) लोकमान्य टिळकांनी घोषणा दिली .... "स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे". (म्हणून, कारण, की)
2) सिनेमाला जाणार आहेस .... नाटकाला? (पण, की, तरी)
3) मी इतकी थकून गेले होते .... मला ते काम करावंच लागलं. (जरी, तरी, आणि)
4) तो आला .... एकदम जेवायला बसला. (कारण, तरी, आणि)
5) त्यानं उशिरा येण्याचं असं काही कारण सांगितलं .... मला त्याला माफ करावंच लागलं. (असून, पण, की)

V उदाहरणानुसार वाक्ये पूर्ण करा.

1. *उदाहरण:* मी अभ्यास <u>करणार</u> <u>होतो</u> पण दिवे गेले.

1) मी नाटकाला .... पण ऐनवेळी पाहुणे आले.
2) आम्ही नाटक .... पण मुलांना सुट्टी नव्हती.
3) सुमन भाजी .... पण तिच्याजवळ पैसे नव्हते.
4) शांताबाई पत्र .... पण त्यांना पेन सापडलं नाही.
5) रमेश माझ्याबरोबरच जेवायला .... पण एवढ्यात त्याचे मित्र आले.
6) रामभाऊ नोकरी .... पण ते आजारी पडले.
7) मुली गढवालला .... पण त्यांची परीक्षा होती.

2. *उदाहरण:* मी रजा <u>घेणार नव्हतो</u> पण ताप उतरला नाही.

1) मी नाटकाला .... पण सगळ्यांनी खूप आग्रह केला.
2) आम्ही काम .... पण आम्हाला ते करावंच लागलं.
3) तू तिला पैसे .... ना? मग का दिलेस?
4) तुम्ही गावाला .... ना? मग कसे गेलात?
5) रामभाऊ भाषण .... पण त्यांना ते द्यावंच लागलं.
6) राम गढवालला .... ना? मग का गेला?

VI उदाहरणानुसार कंसात दिलेल्या शब्दाच्या योग्यरूपाचा 'अस' क्रियापदाच्या योग्य रूपा बरोबर उपयोग करून वाक्ये पूर्ण करा.

उदाहरण: मी गावाला गेलो असेन.

1) तू गावाला गेली होतीस ना? खूप मजा .... (कर).
2) मी ते लिहून .... (संपव)
3) मी घंटा ऐकली नाही मी .... (झोप)
4) सीतानं आधीच अभ्यास .... (कर)
5) रामनं मांजराला .... (मार)
6) तुम्ही कुत्र्याला दूध .... (दे)
7) राम त्यावेळी शाळेत .... (जा)
8) आम्ही त्यावेळी बागेत .... (बस)

VII उदाहरणानुसार वाक्ये पूर्ण करा.

उदाहरण: मी चित्र काढत असेन.

1) परीक्षेसाठी रमा खूप अभ्यास ....
2) तू दूपारी आराम ....
3) तुम्ही आज दिवसभर स्वयंपाक ....
4) रमेश आता पुस्तक ....
5) आम्ही सिनेमा ....

VIII कंसात दिलेल्या शब्दाच्या योग्य रूपाचा उदाहरणानुसार उपयोग करून वाक्ये पूर्ण करा.

उदाहरण: मी उद्या बहुतेक गावाला जाणार असेन.

1) तो उद्या मुंबईला .... (जा)
2) रमा दिवाळीसाठी साडी .... (घे)
3) तू दिवसभर .... ना? उद्या सुट्टी आहे. (झोप)
4) तुम्ही नाटकात काम .... ना? (कर)
5) आम्ही निवृत्तीनंतर गावी स्थायिक .... (हो)
6) अहमद ईदसाठी नवे कपडे .... (घे)

IX कंसात दिलेल्या शब्दांतून योग्य तो शब्द निवडून वाक्ये पूर्ण करा.

1) प्रकाश उद्या मुंबईला .... असेल. (जातो, जाणार, गेलास)
2) सुनंदाने बाबांना पत्र .... असेल. (लिहीत, लिहिणार, लिहिले)
3) बाबा आता फिरायला .... असतील. (जाते, जात, गेला)
4) आतापर्यंत रमाबाई निवृत्त .... असतील. (झाला, होत, झाल्या)
5) काल तू धबधब्याखाली आंघोळ .... असशील. (करतोस, केली, करणार)

X खाली दिलेल्या दोन भागांतील शब्दसमूह घेऊन योग्य जोड्या बनवा.

रामू शाळेत	लिहिणार होतो.
मी आत्मचरित्र	करणार होती.
रमा स्वयंपाक	पाहणार होते.
आम्ही गावाहून	आणणार होत्या.
आईसाहेब आंबे	करणार होतास.
रामभाऊ नाटक	सांगणार होता.
तू नाटकात काम	येणार होतो.
तुम्ही गोष्ट	येणार होता.

XI उदाहरणानुसार वाक्ये पूर्ण करा.

उदाहरण: तो शाळेत जात असेल. तो शाळेत गेला असेल.

1) मी शाळेत .... मी शाळेत ....
2) आम्ही शाळेत .... आम्ही शाळेत ....
3) रमा शाळेत .... रमा शाळेत ....
4) तू शाळेत .... तू शाळेत ....
5) तुम्ही शाळेत .... तुम्ही शाळेत ....

XII खालील वाक्ये नकारार्थी करा.

1) मी गावाला गेलो असेन.
2) ती गावाला गेली असेल.
3) तो गावाला जात असेल.
4) आम्ही गावाला जात असू.
5) तू गावाला जाणार असशील.
6) त्या गावाला जाणार असतील.
7) तुम्ही गावाला जाणार असाल.
8) आपण गावाला जात असाल.

XIII कंसांत दिलेल्या क्रियापदांच्या योग्य रूपांबरोबर 'अस' क्रियापदाचे योग्य रूप वापरून खालील परिच्छेद पूर्ण करा.

एव्हाना मधुकरराव निवृत .... (हो). ते आता आराम .... (कर). एखादं पुस्तक लिहायला .... (घे). कविता .... (कर). आणखी एका वर्षाने रमाबाईही निवृत्त .... (हो). त्यानंतर ती दोघंही खूप प्रवास .... (कर). नातवंडाना .... (खेळ). आयुष्यभर त्यांनी खूप कष्ट .... (कर). उर्वरित आयुष्यात त्यांना विश्रांती .... (मिळ).

पढिए और समझिए

निवृत्ती

चार वर्षांपूर्वी मी निवृत्त झालो. त्यावेळी माझ्या वयाला अठ्ठावन्न वर्षे पूर्ण झ ाली. खरं म्हणजे त्याहीपूर्वी तीन वर्षे मला निवृत्त व्हावे लागले असते. कारण सरकारने निवृत्तीचे वय पंचावन्न ठरवले होते. माझे दैव बलवत्तर होते. मला पंचावन्न वर्षे पूर्ण होणार होती त्याच्याआधी दोनच महिने सरकारने निवृत्तीवयाची मर्यादा वाढवली. परत अठ्ठावन्न वर्षे केली. नवा नियम आल्यामुळे मला फायदा झाला. यापूर्वीच मी निवृत्तीनंतर काय करणार, कसे जीवन जगणार, खर्चावर कसे नियंत्रण ठेवणार याचा विचार केला होता. घराची डागडुजी करणे भाग होते. मुलीचे लग्न करणे भाग होते. यासाठी पैसे लागणार होते. त्यासाठी नोकरी शोधणार होतो. पण अचानक नोकरीचे वय वाढल्यामुळे मला सर्व बेत बदलावे लागले. मी या अचानक मिळालेल्या तीन वर्षांचा फायदा घेतला. पंचावन्नाव्या वर्षीच आपण निवृत्त झालो आहोत असे मी मानून टाकले. निवृत्तीवेतना इतक्याच पैशात खर्च भागवू लागलो. त्यामुळे खूप पैसे जमून गेले. पैसे जमवल्यामुळे घराची डागडुजी केली. मुलीचे लग्न करून टाकले. त्यामुळे निवृत्तीनंतर नोकरी करावी लागली नाही.

आता जे काम करतो ते फक्त स्वतःच्या आनंदासाठी! लहान मुलांची नाटकं बसवतो, बागकाम करतो, प्रवास करतो, खूप लिहीतो. या सगळ्यात समाधान मिळते. त्यामुळे कसलंही दडपण येत नाही. आज मी कृतार्थ जीवन जगत आहे. आता त्याचे बोलावणे येणार असेल तेव्हा येवो. मी कोणत्याही क्षणी तयार आहे.

शब्दार्थ

चार वर्षांपूर्वी	चार साल पहले
त्यावेळी	उस समय
अठ्ठावन्न	अठ्ठावन
खरं म्हणजे	सच कहें तो
त्याहीपूर्वी	उस से भी पहले
व्हावे लागले असते	होना पड़ता था
पंचावन्न	पचपन
दैव	भाग्य
बलवत्तर	जोरदार
मर्यादा	अवधि, सीमा
जगणे	जीना
नियंत्रण	रोक
घराची डागडुजी	घर की मरम्मत
वाढणे	बढ़ जाना
बेत	योजना

बदलणे	बदलना
अचानक	अचानक
मानणे	मानना,
भागवणे	निभाना, चलाना (खर्च)
दडपण	बोझ
त्याचं	उस का (भगवान का)
बोलावणं	निमंत्रण, बुलावा

अभ्यास

I खाली दिलेल्या प्रश्नांची उत्तरे द्या.

1) चार वर्षांपूर्वी माझ्या वयाला किती वर्षे पूर्ण झाली?
2) खरे म्हणजे मला कितव्या वर्षी निवृत्त व्हावे लागले असते?
3) निवृत्ती वयाची मर्यादा किती वर्षांनी वाढली?
4) अचानक नोकरी वाढल्यामुळे प्रथम मला काय करावे लागले?
5) अचानक पैसे मिळल्याने मला काय करता आले?

II रेखांकित शब्दाच्या जागी कंसात दिलेले शब्द भरून वाक्ये पूर्ण करा. जरूर तेथे वाक्यरचनेत आवश्यक तो बदल करा.
(आयुष्य, पूर्वी, विश्रांती, अजिबात, दुरुस्ती, अलिकडे, निर्बंध)

1) आता वेळेचं मुळीच बंधन नाही.
2) तिला आताशा जरा आराम मिळतो.
3) त्याच्या आधीच मी निवृत्त झालो.
4) घराची डागडुजी केली.

III 'दमणे' पासून 'दमणूक' हा शब्द बनतो.
उदाहरण: मी दमते. माझी दमणूक होते.
याच प्रकारे खाली दिलेल्या शब्दांवरून दुसरे शब्द बनवा.
करमणे, वागणे, फसवणे

IV 'निवृत्त' वरून 'निवृत्ती' शब्द बनतो.
मधुसूदनराव निवृत्त होतात.
निवृत्तीनंतर मधुसूदनराव सुखी आहेत.
याच प्रकारे खाली दिलेल्या शब्दांपासून दुसरे शब्द बनवा.
तृप्त, मुक्त, श्रीमंत, गरीब

V 1) या धड्यात असे अनेक शब्द आले आहेत जे मराठी व हिंदीत समान आहेत.

उदाहरण: काम, भरपूर, आराम, निवृत्ती. (हिंदी मध्ये "निवृत्ति") आतापर्यंत शिकलेल्या धड्यांमधून आलेले असे वीस शब्द शोधा आणि लिहा.

2) त्या प्रमाणे, नोकरी, निराळा, खूप, सुरू हे असे शब्द आहेत की त्यांचा अर्थ दोन्ही भाषांत एकसारखाच आहे पण लिहिण्याच्या पद्धतीत थोडासा फरक आहे. अशा प्रकारचे वीस शब्द लिहा.

VI खाली दिलेल्या शब्दांचे दोन अर्थ होतात. ते समजून घ्या. आतापर्यंत वाचलेल्या धड्यांमधून असे आणखी शब्द शोधा आणि लिहा.

1) ओढणे - खलनायक नायिकेला <u>ओढतो</u>.
म्हातारा गुडगुडी <u>ओढतो</u>.

2) भाग पडणे - घराचे तीन भाग पडले.
मला लग्न करणे भाग पडले.

3) बसवणे - त्याने सर्वांना खाली बसवले.
त्याने लहान मुलांचे नाटक बसवले.

VII खाली दिलेल्या शब्दांपासून वाक्ये बनवा.
निवृत्ती, दुप्पट, जबाबदारी, भरपूर, बंधन, दमणूक

VIII हिंदीमध्ये भाषांतर करा व समर्पक शीर्षक द्या.

सेवानिवृत्त होणे ही माणसाच्या आयुष्यातील एक महत्त्वाची घटना असते. काही लोक सेवानिवृत्तीनंतरच्या आयुष्याचा मजेनं उपभोग घेताना दिसतात. माणसाला मनापासून जे काम आवडतं, ते काम करण्याचं स्वातंत्र्य त्याला निवृत्तीनंतर मिळतं. तो आपल्या आवडत्या कलांचा उपभोग घेऊ शकतो. गाण्याच्या, नाटकांच्या हव्या त्या कार्यक्रमांना जाऊ शकतो, हवं तेव्हा वाचनालयात जाऊ शकतो व हवी ती पुस्तकं वाटेल तेवढा वेळ वाचण्याचा आनंद लुटू शकतो. वेळेचं बंधन त्याला नसतं. आतापर्यंतच्या धकाधकीच्या आयुष्यात त्याच्या अंगातल्या कलागुणांच्या विकासाला हवा तसा वाव मिळालेला नसतो. पण आता कामाची सक्ती संपून गेलेली असते. आता त्या कलागुणांकडे तो लक्ष देऊ शकतो. गाणं शिकू शकतो. चित्रं काढू शकतो. नाटकं दिग्दर्शित करू शकतो नि नाटकात कामही करू शकतो.

इतके दिवस पोटापाण्यासाठी नोकरी करताना आपल्या पत्नीकडे, मुलाबाळांकडे लक्ष द्यायला त्याला वेळ मिळालेला नसतो. आता रिटायरमेंट नंतर तो त्यांच्या बरोबर हवा तेवढा वेळ घालवायला मोकळा असतो. आता तो बायकोबरोबर फिरायला जाऊ शकतो नि हॉटेलातही जाऊ शकतो; प्रेक्षणीय स्थळांनाही जाऊ शकतो आणि सहलींनापण. दोघेही रसिकपणाने जीवनाच्या क्षणाक्षणाचा इतका आस्वाद घेऊ शकतात की मन तृप्त व्हावं.

मात्र हे करण्यासाठी निवृत्तीनंतरच्या आयुष्याबद्दल निवृत्तीपूर्वीच नीट तयारी करायला हवी. ही तयारी अनेक प्रकारची असते. निवृत्तीनंतरच्या आरामासाठी

निवृत्तीआधीच पुरेसं आर्थिक बळ उभं करायला हवं असतं. मनाचीही खूप तयारी आधीपासूनच करावी लागते. नाहीतर निवृत्तीनंतरचं आयुष्य बेचव होऊन जातं.

IX मराठी में अनुवाद कीजिए।

कुछ लोग निवृत्ति के पश्चात् हड़बड़ी भूलकर आराम की जिंदगी जीना चाहते हैं। कुछ लोग निवृत्ति के बाद अपने कुटुंब के सदस्यों के और नातियों पोतियों के साथ समय बिताना चाहते हैं।

कुछ समाज सेवा करना चाहते हैं। उस में भी कुछ लोग किसी समाज सेवी संस्था से जुड़कर समाज सेवा करना चाहते हैं। कुछ लोग अपने निजी स्तरपर ही समाज सेवा के कार्य में जुड़ जाते हैं। लेकिन मेरी योजना (इससे) भिन्न है। मैं बच्चों का स्कूल खोलना चाहता हूँ जहाँ बच्चे आराम से छुट्टियाँ बिताएँगे। 5 से 16 साल तक के बच्चे यहाँ आकर पुस्तकें और मैगज़ीन (पत्र-पत्रिकाएँ) पढ़ सकेंगे। मैं भिन्न-भिन्न आयु-वर्ग के बच्चों के उपयुक्त, उनका रुचि के अनुसार, पुस्तकें खरीदूँगी। ये आयुवर्ग 5 से 8 साल, 9 से 12 साल तथा 13 से 16 साल के हो सकते हैं। बच्चे अपनी निजी पुस्तकें भी ला सकेंगे। पहले वर्ग (5 से साल तक) के बच्चों के माँ-बाप भी इस वाचन-पाठशाला अपने बच्चों के साथ आ सकेंगे। वे अपने बच्चों के साथ बैठकर उनकी रुचि की पुस्तकें पढ़ कर सुना सकेंगे और दूसरे बच्चों की सहायता भी कर सकेंगे। इस स्कूल में 'ऊँची आवाज़ में पढ़ने के सत्र' भी होंगे। अधिक आयु के बच्चे अल्पवयस्क बच्चों को कहानियाँ, कविताएँ सुनाया करेंगे और उनके साथ भाषा पर आधारित खेले, जैसे 'पहेलियाँ', 'बुझौडल', 'नटखट प्रश्नोत्तर', खेलेंगे। समाचार पत्र पढ़ने के भी अलग सत्र होंगे। मेरी कल्पना है कि मेरा 'पाठ-नुक्कड़' बच्चों के लिए 'पढ़ो और जानो', 'पढ़ो और बढ़ो' और 'पढ़ो और खेलो' वाला स्थान होगा।

टिप्पणियाँ

I नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया के रेखांकित रूपों पर ध्यान दीजिए।

1)	निवृत्त झाल्यावर इथं येऊन तर गेलात.	निवृत्ती के बाद यहाँ आ तो गए।
2)	मी कुठे येऊन पडलो?	मैं कहाँ आ पडा?
3)	नोकरी संपून गेली.	नौकरी खतम हो गई।
4)	काम मात्र नोकरीच्या दुप्पट होऊन जातं.	बल्कि काम नौकरी से दुगना हो जाता है।
5)	मी खूप दमून जातो.	मैं बहुत थक जाता (हूँ)।
6)	तुम्ही आत्मचरित्र लिहून टाका.	आम आत्मकथा लिख डालिए।
7)	जनसंपर्क घडून जातो.	जनसंपर्क हो जाता है।
8)	तुम्ही नाटकाचा छंद पूरा करून घेणार.	आप नाटक की शौक पूरा करनेवाले होंगे।

इन वाक्यों में दो क्रियारूपों का प्रयोग है। एक क्रिया दूसरे का सहायक है। सहायक क्रियाओं को जोडने से प्रधान क्रिया के अर्थ में बहुत सी अर्थछवियाँ जुड जाती हैं। हिंदी में सहायक क्रियारूप क्रिया के मूल रूप में जोडी जाती है और मराठी में उसे पूर्व कालिक कृदंत के साथ जोडते हैं। "लिहून टाका", इस क्रियारूप में लिहून, यह पूर्वकालिक कृदंत है तथा "टाका" यह सहायक क्रिया का रूप। "लिहून टाका" इन शब्द समूह को संयुक्त क्रियापद कहते हैं। ध्यान दीजिए कि इस पूरे शब्दसमूहद्वारा एकही क्रिया का बोध होता है। मुख्य क्रिया का बोध पूर्वकालिक कृदंत से होता है, मगर वाक्य को पूर्णता सहायक क्रियापद से आती है। "येऊन पडलो" में सहायक क्रिया का प्रयोग कार्य की अनिवार्यता का बोध कराता है। कभी कभी वक्ता की राय में क्रिया का फल सुखद नही होता।

"काम नोकरीच्या दुप्पट होऊन जातं" "नोकरी संपून गेली" आदि में स्वेच्छा के बिना किए गए कार्य का बोध किया जाता है। "मी पुरणपोळीची चव घेऊन चुकले आहे" "इस वाक्य में कार्य का कर्ता के लिए पूर्ण हो जाने का बोध है।

"मी कविता लिहून टाकली" प्रयोग कार्य का कर्ता के लिए पूर्ण हो जाने का तथा कर्ता के कार्य की जिम्मेदारी से मुक्ति पानेका अर्थ व्यक्त करता है।

II नीचे दिए गए प्रयोगों को देखिए।

1)	इथं करमतं का <u>की</u> इथे कुठे येऊन पडलो असं वाटतं.	यहाँ जी लगता है क्या? <u>या</u> लगता है यहाँ कहाँ आ फँसे?
2)	तुम्ही कविताही लिहिणार आहात <u>की</u> फक्त गद्यलेखनच करणार?	आप कविता भी लिखनेवाले हैं <u>या</u> केवल गद्यलेखन ही करेंगे?

इन प्रयोगों में "की" हिंदी के "या" के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। इस को <u>विकल्पबोधक</u> कहते हैं। दो वाक्यों के या दो शब्दों के बीच इसका प्रयोग होता है।

III नीचे दिए गए प्रयोगों की ओर ध्यान दीजिए।

1)	माझे काका मला सांगत होते <u>की</u> निवृत्त झाल्यावर फार जड जातं.	मेरे चाचा मुझे बता रहे थे कि निवृत्ती के बाद मुष्कील होता है।

2) बा.भ.बोरकरांनी म्हटलंच आहे नं की अमृतघट भरले तुझ्या घरी, मग तू का वणवण फिरशी बाजारी.

इन वाक्यों में "की" अव्यय का प्रयोग हिंदी के "कि" के अर्थ में किया है। इस अव्यय 'की' का प्रयोग किसी व्यक्ति का कथन, सोच, भावना, अनुभव आदि को उद्‌धृत करना है। उस के पहले/बाद में वक्ता का उल्लेख होता है।

IV "तो इतका खेळला की त्याचे पाय दुखू लगले" इस वाक्य में "की" का प्रयोग परिणाम बोधक अर्थ में किया गया है।

V "माझा पहिला नंबर आला की मी पेढे वाटीन" इस वाक्य में "की" का प्रयोग शर्त बोधक अर्थ में हुआ है।
मेरा पहिला नंबर आएगा, तो मैं पेडे बाँटूंगी।

VI निम्न प्रयोगों को देखिए।

नोकर संपून गेली पण काम मात्र दुप्पट होऊन जातं माझं.	नौकरी खतम हो गई, लेकिन काम दुगना हो जाता है मेरा।
"पण वहिनी काय म्हणताहेत?	पर भाभी (जी) कैसी हैं?
पण वेळ जात नसेल नं?	लेकिन समय काटे नही कटता होगा न?
आणि तुमच्या नाटकाचा छंद?	और आप का नाटक का शौक?

मराठी में 'पण', 'व' आणि 'नि' ये उभयान्वयी अव्यय शब्द हैं जो दो वाक्यों को या दो शब्दों को जोडते हैं। "आणि" 'व', और 'नि' का अर्थ है 'और'। 'पण' का अर्थ है 'मगर' - 'लेकिन'।

VII 1. नीचे दिए गए वाक्य प्रयोगों की ओर ध्यान दीजिए।

तुम्ही/तो ही (नाटकाचा छंद) पूरा करून घेणार असाल.	आप वह भी (नाटक का शौक) पूरा करनेवाले होंगे।
चार वर्षानी तीही निवृत्त होणार आहे.	चार सालों के बाद वह भी निवृत्त होनेवाली है।

जानेवाला था, होने को था - इस प्रकार के वाक्य बनाने के लिए मराठी में क्रिया में 'णार' प्रत्यय लगाकर उस के बाद 'हो' के उपयुक्त रूप का प्रयोग करते हैं. इसकी भूतकालिक रूपावली नीचे दी गई है।

जा

		एकवचन	*बहुवचन*
उ.पु.	*(पु.)*	मी जाणार होतो. मैं जानेवाला था।	आम्ही जाणार होतो. हम जानेवाले थे।
	(स्त्री.)	मी जाणार होते. मैं जानेवाली थी।	आपण जाणार होतो. हम जानेवाली थीं।
म.पु.	*(पु.)*	तू जाणार होतास. तुम जानेवाले थे।	तुम्ही / आपण } जाणार होता. आप जाने वाले थे।
	(स्त्री.)	तू जाणार होतीस. तुम जानेवाली थीं।	
अ.पु.	*(पु.)*	तो जाणार होता. वह जानेवाला था।	ते जाणार होते. वे जाने वाले थे।
	(स्त्री.)	ती जाणार होती.	त्या जाणार होत्या.

	वह जानेवाली थी।		वे जाने वाली थीं।
(नपुं.)	ते जाणार होतं.		ती जाणार होती.

2. इन वाक्यों का निषेध वाचक रूप बनाने के लिए 'णार' के बाद 'नव्हता' (ना होता का मिला हुआ रूप) के रूप लगाते हैं।

इस की भी पूरी रूपावली नीचे दी गई है।

नव्हता

		एकवचन	*बहुवचन*	
उ.पु.	*(पु.)*	मी जाणार नव्हतो.	आम्ही	जाणार नव्हतो.
		मैं नहीं जाने वाला था।		हम नहीं जानेवाले थे।
	(स्त्री.)	मी जाणार नव्हते.	आपण	हम नहीं जानेवाली थीं।
		मैं नहीं जानेवाली थी।		
म.पु.	*(पु.)*	तू जाणार नव्हतास.	तुम्ही	जाणार नव्हता.
		तू/तुम नहीं जानेवाले थे।		आप नहीं जानेवाले थे।
	(स्त्री.)	तू जाणार नव्हतीस.	आपण	आप नहीं जानेवाली थीं।
		तुम नहीं जानेवाली थीं।		
अ.पु.	*(पु.)*	तो जाणार नव्हता.		ते जाणार नव्हते.
		वह नहीं जानेवाला था।		वे नहीं जानेवाले थे।
	(स्त्री.)	ती जाणार नव्हती.		त्या जाणार नव्हत्या.
		वह नहीं जानेवाली थी।		वे नहीं जानेवाली थी।
	(नपुं.)	ते जाणार नव्हतं.	ती जाणार नव्हती.	

धडा पाठ 22

महाराष्ट्र दर्शन

मोहन : काय यशवंतराव पाहुणे कुठले?

यशवंत : उत्तरप्रदेशातले. पण खास महाराष्ट्राचा दौरा करायला आले आहेत.

मोहन : काही विशेष कारण?

तिवारी : अहो, मी मराठी शिकलो आणि तेव्हाच ठरवलं होतं की मराठी बोलणाऱ्यांचा प्रदेश महाराष्ट्र पहायचाच. आज संधी मिळाली आहे.

मोहन : वा! तुम्ही तर फार छान मराठी बोलता.

तिवारी : हो मी काही महिने मुंबईला होतो, म्हणून बोलायला शिकलो मराठी.

मोहन : हो का? बरं यशवंत, यांना एखादा किल्लाही दाखवा. नाहीतर असं करा, महाबळेश्वरलाच घेऊन जा त्यांना म्हणजे एकीकडे आपलं थंड हवेचं ठिकाण पहायला मिळेल आणि दुसरीकडे प्रतापगडही पाहता येईल. एका दगडात दोन पक्षी!

यशवंत : दाखवायला आवडलं असतं सगळं पण मला एवढा वेळ नाही. रात्र थोडी सोंगं फार. म्हणून मी त्यांना पुण्याजवळचा सिंहगड दाखवावा म्हणतो. नाहीतर शेवटी कोल्हापूर जवळ पन्हाळा आहेच. यातल्या प्रत्येक किल्ल्याची आगळी शौर्य गाथा आहे.

'देह जावो अथवा राहो' याच वृत्तीने शिवाजीचे मावळे लढले.

महाराष्ट्र दर्शन

मोहन : क्या यशवंतरावजी (ये) मेहमान कहाँ के (हैं)?

यशवंत : उत्तर प्रदेश के (हैं)। पर वे विशेष रूप से महाराष्ट्र घूमने आए हैं।

मोहन : कोई खास कारण?

तिवारी : जी हाँ। मैं मराठी सीखा और तभी सोच लिया था कि मराठी बोलनेवालों का प्रदेश-महाराष्ट्र देखना ही है। आज मौका मिला है।

मोहन : वाह। आप तो बहुत अच्छी मराठी बोलते हैं।

तिवारी : जी हाँ। मैं कुछ महिने मुंबई में था इसलिए मराठी बोलना सीख गया।

मोहन : अच्छा! यशवंत इन्हें एकाध किला भी दिखाइए। नहीं तो ऐसा कीजिए इन्हें महाबलेश्वर ले जाईए। इससे एक और अपना ठंडी हवा वाला स्थान देखने को मिलेगा और दूसरी और प्रतापगढ़ का किला भी देख सकेंगे। एक पत्थर से दो पक्षियों का शिकार।

यशवंत : सभी दिखाना अच्छ लगता था मुझ ो। पर मेरे पास इतना समय नहीं (है)। समय कम है और देखने के लिए बहुत कुछ (है)। इसलिए सोचता हूँ कि उन्हें पुणे के पासवाला सिंहगढ दिखाऊँगा। नहीं तो अंत में कोल्हापूर के पास पन्हाळा तो है ही। इन में से हर एक किले की अपनी एक अलग

शौर्य की गाथा है। चाहे शरीर जाए (मृत्यु आए) या रहे मगर देशकार्य करना ही है इसी भावना से शिवाजी के

मोहन : ज्या प्रांतात जायचं त्या प्रांताची भाषा आली तर फारच मजा येईल नाही?

तिवारी : नक्कीच. मी सांगेन तुम्हाला भटकून आल्यावर.

यशवंत : मी मुद्दाम रजा काढली आहे आठ दिवसांची. यांना जितकी होतील तितकी ठिकाणं दाखवणार आहे. महाराष्ट्राचं कुलदैवत पंढरीचा विठोबा दाखवीन, कोल्हापूरची महालक्ष्मी दाखवीन. शिवाय महाराष्ट्राची सांस्कृतिक राजधानी पुणं दाखवीन. म्हटलं आहे नं "पुणं तिथं काय उणं?"

मोहन : महाराष्ट्र जेवढा किल्ल्यांसाठी प्रसिद्ध आहे तेवढाच अजिंठा-वेरुळसाठीही प्रसिद्ध आहे. तेही दाखवा यांना.

तिवारी : ते मी आधीच पाहिले आहे.

मोहन : आणि यशवंतराव तुम्हाला जर वेळ झाला तर पाहुण्यांना एखादं मराठी नाटक दाखवा. बालगंधर्वमधे!

तिवारी : हो हो मला नाटक पहायचंच आहे. आणि जरी वेळ नसला तरी काढायलाच हवा. नाटकाशिवाय कसला महाराष्ट्र?

मोहन : बरं तर यशवंतराव, तुम्ही पाहुण्यांबरोबर महाराष्ट्रदर्शन करून या. पण आल्याबरोबर आमच्याकडे जेवायला यायचं हं! महाराष्ट्र पाहणं जितकं महत्त्वाचं आहे तितकंच महाराष्ट्रीय जेवणाही महत्त्वाचं आहे. छानपैकी वरणभात आणि श्रीखंडपुरीचा बेत करायला सांगतो हिला. बरं, त्यासोबत बटाटे वडे करायला सांगू की कांद्याची भजी? अहो, तुमचे पाहुणे ते आमचे पाहुणे!

यशवंत : ठीक आहे. येतो तर! आठ दिवसानंतर रविवारी आहोतच तुमच्या

सिपाही लडे।

मोहन : जिस प्रदेश जाना है उस प्रदेश की भाषा जानती हो तो मजा आएगा, नहीं?

तिवारी : निश्चय ही! घूम आने के बाद मैं आपको बताऊँगा।

यशवंत : मैं ने खास आठ दिन की छुट्टी ली है। इन्हें जितनी हो सकेगी उतनी जगह दिखाऊँगा। महाराष्ट्र के कुलदेवता पंढरी के विठोबा दिखाऊँगा। कोल्हापूर की महालक्ष्मी दिखाऊँगा। इसके अलावा महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी पुणे दिखाऊँगा। कहा ही है न कि "जहाँ पुणे वहाँ कम क्या (है)?"

मोहन : महाराष्ट्र जितना किलों के लिए प्रसिद्ध है उतना ही अजंता एलोरा के लिए भी है। इन्हें वह भी दिखाइए।

तिवारी : उन्हें तो मैं पहले ही देख चुका हूँ।

मोहन : और, यशवंतराव यदि आपके पास समय हो तो मेहमान को बालगंधर्व (थिएटर) में एकाध मराठी नाटक भी अवश्य दिखाइए।

तिवारी : हाँ हाँ! नाटक तो मुझे देखना ही है और अगर समय नहीं भी है तो निकालनाही चाहिए। नाटक के बिना महाराष्ट्र कैसा?

मोहन : ठीक है यशवंतराव, आप मेहमान के साथ महाराष्ट्र दर्शन कर आइए। पर आते ही हमारे घर खाना खाने आइएगा हां। जितना महत्त्वपूर्ण महाराष्ट्र देखना है उतना ही महत्त्वपूर्ण महाराष्ट्र का खाना है। मैं अपनी इन्हें बढिया सा दालभात और श्रीखंड पूरी का आयोजन करने को कहता हूँ। अच्छा! उस के साथ बटाटेवडे बनाने को कहूँ या प्याज के पकोडे? अरे आपके मेहमान हमारे मेहमान।

यशवंत : ठीक है। तो आता हूँ। आठ दिन के बाद आपके घर हैं ही दालभात और

घरी श्रीखंडावर ताव मारायला!	श्रीखंड-पूड़ी का जी भर कर स्वाद लेने।

शब्दार्थ

पाहुणे	मेहमान
कुठले	कहाँ के
दौरा	घूमना, दौरा
विशेष	विशेष
शिकलो	सीखा
पाहणे	देखना
संधी	मौका
दाखवणे	दिखाना
शिवाय	अलावा
थंड हवेचे ठिकाण	ठंडी हवा का स्थान/पहाड़ी स्थान
एक दगडात दोन पक्षी	एक तीर में दो निशानें (एक पत्थर दो पक्षियों का शिकार)
देह जावो अथवा राहोचाहे	शरीर जाए या रहे
भटकून येणे	घूम आना
आधीच	पहले ही
वेळ काढणे	समय निकालना
जेवायला यायचं	खाना खाने आना
ताव मारणे	स्वाद लेना
वरण	पकाई हुई दाल जिसे चावल के साथ परोसा जाता है
श्रीखंड	एक मिठाई जिसे दही और चीनी से बनाया जाता है। महाराष्ट्र में उसे पूरी के साथ खाते है।
बेत	आयोजन, खाने का पक्वान्न

अभ्यास

I खाली दिलेल्या प्रश्नांची उत्तरे द्या.

1) पाहुणे कुठले आहेत? ते कशासाठी आले आहेत?
2) पाहुणे चांगलं मराठी का बोलू शकतात?
3) महाबळेश्वर कशासाठी प्रसिद्ध आहे? त्याच्याजवळ कुठला किल्ला आहे?
4) शिवाजीचे मावळे कुठल्या वृत्तीने लढले?
5) पाहुण्यांसाठी जेवणाचा काय बेत करायचा मोहनचा विचार आहे?

II धड्याच्या आधारावर खाली दिलेल्या दोन खंडातले वाक्यांश जोडून वाक्ये बनवा.

पाहुणे महाराष्ट्राचा	पन्हाळा आहेच.

एकाच दगडात	सोंगं फार.
कोल्हापूर जवळ	आठ दिवसांची!
रात्र थोडी	राजधानी पुणं दाखवीन.
मी रजा काढली आहे	दोन पक्षी.
महाराष्ट्राची सांस्कृतिक	दौरा करायला आले आहेत.

III कंसात दिलेल्या शब्दांतून योग्य तो शब्द निवडून वाक्ये पूर्ण करा.
(की, म्हणून, तेव्हा, कारण, म्हणजे, त्यावेळी, तर, आणि, तोपर्यंत, तेवढे)

1) दिवस .... रात्र मिळून वार होतो.
2) प्रकाश पास झाला .... त्यांच्या आईला आनंद झाला.
3) आम्ही कुंदाकडे गेलो .... कुंदा बाहेर खेळत होती.
4) मी इथे थांबतो .... तू दुकानात जाऊन ये.
5) जेवढी वस्तू चांगली .... पैसे जास्त.
6) तू मला खाऊ दिलास .... मी तुला पेन्सिल देईन.
7) दंगा झाला .... ते घरी नव्हते.
8) बागेत फुलं दिसली .... आशा नाचायला लागते.
9) सुमन आज ऑफिसात आली नाही .... तिचा पाय दुखत होता.
10) दूधवाला आला .... आपण चहा करू.

IV खाली दिलेल्या दोन भागांतून योग्य ते वाक्यांश घेऊन वाक्य बनवा.

1)	प्रियाने साडी घेतली पण	मी सुद्धा जेवले नाही.
2)	जोपर्यंत सुरेश जेवला नाही तोपर्यंत	त्याचा लहान भाऊ पण हुशार आहे.
3)	जितका रमेश हुशार आहे तितकाच	तिने ती आज नेसली नाही.
4)	माझे सगळे पैसे संपले कारण	मी गावाला जाईन.
5)	आमच्या शाळेला सुटी मिळाली की	मी तिच्यासाठी खाऊ आणला.
6)	कुंदा रागावली म्हणून	कडाक्याचे उन पडू लागले.
7)	उन्हाळा सुरु झाला आणि	मी खूप खर्च केला.

V खालील वाक्यांमध्ये कंसात सांगितल्याप्रमाणे बदल करा.

1) त्याने खूप प्रयत्न केला, - पण त्याला यश मिळाले नाही.
(जरी-तरी चा उपयोग करून वाक्य पुन्हा लिहा.)
2) तो मोठ्याने बोलला - आणि त्याचा घसा बसला.
('कारण' वापरून वाक्य पुन्हा लिहा.)
3) पाऊस आला व तिथे चिखल झाला.
('मुळे' चा उपयोग करून वाक्य पुन्हा लिहा.)
4) काळोख वाढत गेला नि भीती वाढत गेली.
("जसजसा-तसतसा (शी) चा उपयोग करून वाक्य पुन्हा लिहा.)

5) तो मूर्ख नाही म्हणून तुझा चुकीचा उपदेश ऐकणार नाही.
("इतका-की" चा उपयोग करून अर्थ न बदलता वाक्य पुन्हा लिहा.)

VI प्रत्येक वाक्यासमोर कंसात तीन तीन पर्याय दिले आहेत. योग्य पर्याय निवडा व वाक्ये पूर्ण करा.

1) गीताने चहा केला होता, पण (मी तो घेईन, मी तो घेतला, मी तो घेतला नाही)
2) अरविंदने अभ्यास केला म्हणजे (तो पास होईल, तो पास झाला, तो पास होणार नाही)
3) संध्याकाळी शाळा सुटायच्या वेळी शाळेची घंटा वाजली की (शाळा बंद होते, शाळा सुरू होईल, शाळा सुरू झाली)

VII 'तर' ऐवजी 'म्हणून' आणि 'म्हणून' ऐवजी 'तर' शब्द वापरून आवश्यक तो बदल करून पुढील वाक्ये लिहा.

1) प्रकाश माझ्या घरी आला तर मी चहा करीन.
2) तू शाळेत वेळेवर गेलास म्हणून गुरूजी तुला बक्षीस देतील.

VIII जेव्हा-तेव्हा वापरून व आवश्यक तो बदल करून खालील वाक्ये पुन्हा लिहा.

1) आईनी मांजराला दूध दिले नाही तर मांजर ओरडतं.
2) ज्योतीनी किल्ली हरवली तर कपाट उघडता येणार नाही.

IX 'तर' बद्दल 'की' वापरून खालील वाक्ये पुन्हा लिहा.

1) आम्ही बागेत गेलो तर भेळ खाऊ.
2) त्यांनी अभ्यास केला तर आम्हाला आनंद होईल.
3) बाबांनी गोष्ट सांगितली तर सुनंदा झोपते.

X खालील वाक्यांमध्ये 'तर' बद्दल 'तरी' वापरा आणि' योग्य तो बदल करून वाक्ये पुन्हा लिहा.

1) तू आलीस तर मी गावाला जाईन.
2) बाबांनी गोष्ट सांगितली तर सुनंदा झोपते.

XI अधोरेखित शब्दाऐवजी कंसात दिलेले शब्द घालून आवश्यक ते बदल करून वाक्ये पुन्हा लिहा.

मी हिंदी शिकलो <u>की</u> उत्तरप्रदेशचा दौरा करीन.
(तर, म्हणून, कारण, पण, आणि, म्हणजे, ज्यावेळी, जोपर्यंत, तेव्हा, तरी)

XII कंसात दिलेले शब्द वापरून आवश्यक त्या बदलांसह पुढील वाक्ये जोडून लिहा.

1)	तो खूप चालतो.	त्याचे पाय दुखतात. (तर)
2)	ती चहा घेते.	तिला मळमळलं (आणि)
3)	ती कोपऱ्यात बसली होती.	तिला लागलं नाही. (कारण)
4)	सूर्य बुडतो.	अंधार दाटू लागतो. (जसजसा-तसतसा)
5)	तू साक्षर होतेस.	मला आनंद झाला. (त्यावेळी)
6)	तू निघून गेलीस.	मला तुझी आठवण येते. (तरी)
7)	तुम्ही कन्नड शिकलात	कर्नाटकात फिरणं सोपं होईल. (की)

XIII खाली दिलेल्या उदाहरणांत दाखविल्याप्रमाणे वाक्ये तयार करा.

उदाहरण: पावसाळा सुरू होत नाही.
शेतकरी आणि इतर लोकही अस्वस्थ असतात.

जोपर्यंत पावसाळा सुरू होत नाही तोपर्यंत शेतकरी आणि इतर लोकही अस्वस्थ असतात.

1) बाबा देवळात जाऊन येतात.
आपण घर स्वच्छ करू या.

2) सुमन अभ्यासाला बसत नाही.
आपण रेडिओवर गाणी ऐकू.

XIV उदाहरणानुसार खालील दोन-दोन वाक्यांचे एकेक वाक्य बनवा.

उदाहरण: आईचा स्वयंपाक झाला नाही.
आपण पाटपाणी करूया.
आईचा स्वयंपाक होईपर्यंत आपण पाटपाणी करू या.

1) आपल्या देशातील सर्वजण सुशिक्षित होत नाहीत.
आपल्या देशाची खऱ्या अर्थाने प्रगती होणार नाही.

2) चांगला पाऊस पडणार नाही.
पिकांचं उत्पादन वाढणार नाही.

XV कंसात दिलेल्या शब्दांपैकी योग्य शब्द घेऊन परिच्छेद पूर्ण करा.

(जोपर्यंत, तोपर्यंत, जरी, तरी, जेव्हा-तेव्हा, तेव्हा-तेव्हा, जसे, तसे, जेथे-जेथे, तिथली)

मी .... महाराष्ट्राच्या औद्योगिक प्रगतीबद्दल विचार करते .... मला महाराष्ट्राच्या औद्योगिक प्रगतीचे कौतुक वाटते. महाराष्ट्रात मराठी भाषी लोकांइतकेच इतर भाषिक आहेत. .... सिंधी, पंजाबी, गुजराती .... दक्षिण भारतीय! .... ते लोक इतर प्रांतातील असले .... ते येथे आले व स्थायिक झ ााले. कारण म्हणतात ना .... राहू तो आपला प्रांत .... राहू .... भाषा आपली भाषा! ही भावना .... येणार नाही .... भारत एक होणार नाही. महाराष्ट्राची प्रगती झाली कारण सर्व भारतीयांनी त्यात भाग घेतला.

पढ़िए और समझिए

प्रणाम माझा घ्यावा हा श्री महाराष्ट्रदेशा!

महाराष्ट्राचे वर्णन एका कवीने "राकट देशा, कणखर देशा, दगडांच्या देशा" असे केले आहे आणि ते सार्थही आहे. सह्याद्रीच्या पश्चिमेकडचा समुद्रपट्टीचा प्रदेश तो कोकण तर पूर्वेकडचा पठारी प्रदेश तो देश. सह्याद्रीच्या डोंगरदऱ्यांत आणि कडे-कपारीत महाराष्ट्रीय संस्कृतीचा जितका विकास झाला आहे तितकाच तो भीमा, गोदा, कृष्णा यांच्या सुपीक खोऱ्यांतही झाला आहे.

या डोंगरदऱ्यांमुळेच शिवाजीसारख्या एका मावळयाला मूठभर सैनिकांच्या सहाय्याने शक्तीशाली आक्रमणाला तोड देता आले. शिवाजी महाराजांनी जर डोगरदऱ्यांतील गनिमीकाव्याची कास धरली नसती तर शत्रूला जेरीला आणणे त्यांनाही कठीण गेले असते. त्या सुवर्णयुगाची साक्ष देत अनेक गडकिल्ले अजूनही महाराष्ट्रात उभे आहेत.

महाराष्ट्राचा मानबिंदू छत्रपती शिवाजी महाराज जसे इथे होऊन गेले तशीच भारतीय इतिहासात आपले कायमचे नाव कोरून ठेवणारी झाशीची राणीही इथे जन्मली. झाशीची राणी युद्धात लढता लढता मारली गेली खरी, पण ती कीर्तीरूपाने अमर झाली. देह जावो अथवा राहो, कीर्ती युगायुगापर्यंत टिकणारी असते.

एकीकडे महाराष्ट्र ही योध्याची भूमी आहे, तर दुसरीकडे ती साधुसंतांची पावन भूमी आहे. ज्ञानेश्वर तुकाराम रामदास यांसारख्या संतांनी या भूमीला विचारधन दिले व यामुळेच या भूमीचे वैचारिक संतुलन कायम राहिले.

आधुनिक काळात स्वराज्यमंत्र जपणारे बाळ गंगाधर टिळक जसे इथे जन्मले तसेच स्त्रीमुक्तीसाठी अहर्निश झटणारे धोंडो केशव कर्वे, समाजसुधारकांचे अग्रणी आगरकर, गोखले आणि दलितांचे कैवारी फुले आणि बाबासाहेब आंबेडकर हे ही इथेच जन्मले. आज औद्योगिकदृष्ट्या एक अग्रेसर प्रांत म्हणून महाराष्ट्र जेवढा प्रसिद्ध आहे, तेवढाच तो देशाला सहकारमंत्र देणारा म्हणून ख्यातनाम आहे. निखळ सहकारी तत्त्वावर चाललेल्या असंख्य कारखान्यांचे जाळे महाराष्ट्रभर पसरले आहे.

भारताचं हॉलिवुड समजली जाणारी मुंबई महाराष्ट्राची शान आहे. या चित्रपटनगरीमुळे भारताच्या कानाकोपऱ्यातून लोक कामासाठी इथे येतात.

महाराष्ट्राने आपली सांस्कृतिक वैशिष्ट्ये जिवापाड जपली आहेत. महाराष्ट्र नाट्यवेडा देश आहे. मराठी माणूस जितका आधुनिक प्रायोगिक नाटकांचा आनंद घेतो तितकाच तो लोकनाट्यात-तमाशातही रंगून जातो. असा हा महाराष्ट्र! म्हणूनच कवी म्हणतो,

राकट देशा, कणखर देशा
दगडांच्या देशा
नाजुक देशा, कोमल देशा
फुलांच्याही देशा
प्रणाम घ्यावा माझा हा
श्री महाराष्ट्रदेशा!

शब्दार्थ

वर्णन	विवरण, वर्णन
सार्थ	अर्थ सहित
समुद्रपट्टी	समुद्र का किनारा
डोंगर	दऱ्या
खाई	पहाड़
कडेकपारी	पर्वत-खाई
विकास	प्रगति, विकास
मूठभर	मुट्ठीभर
शक्तीशाली	बलवान, शक्तिशाली
तोंड देणे	सामना करना
गनिमीकावा	चतुराई
कास धरणे	पकड कर रखना
साक्ष	गवाही
मानबिंदू	मान चिह्न
नाव कोरणे	नाम खुदवाना
युगायुगांपर्यंत रिकणारी	युगयुगान्तरतक रहनेवाली
योद्ध्यांची भूमी	शूरवीरों की भूमि
साधुसंतांची	साधुसंतों की
पावन	पवित्र
वैचारिक संतुलन	विचारोंका संतुलन
काळ	जमाना
अहर्निश	दिनरात
झटणे	कोशिश करना
अग्रणी	अग्र-गण्य
कैवारी	उध्दारक
निखळ	सिर्फ
जाळे	जाल
कानाकोपरा	कोना-कोना
जीवापाड	जानसे जादा
नाट्यवेडा	नाटक के शौकीन
कणखर	कठिण, सख्त

अभ्यास

I खाली दिलेल्या प्रश्नांची उत्तर घा.

1) महाराष्ट्राचे वर्णन कवीने कसे केले आहे?

2) महाराष्ट्रात कोणकोणत्या नद्यांची सुपीक खोरी आहेत?

3) शिवाजी महाराजांनी कोणत्या प्रकारच्या युद्धाची कास धरली?

4) भारतीय इतिहासांत आपले नाव कुणी कोरून ठेवले आहे?
5) या महाराष्ट्रभूमीला कोणी विचारधन दिले?

II थोड्याश्या फरकाने अर्थ किती बदलतो ते पहा. या सर्व शब्दांचा वाक्यांत उपयोग करा.

पाहणे (देखना) पाहुणे (मेहमान)
दोरा (धागा) दौरा (दौरा)
मजा (मजा) मोजा (मोजा)
किल्ला (किला) किल्ली (चाबी)
वेळ (समय) वेड (पागलपन)

IV उदाहरणासाठी दिलेली तीन वाक्ये वाचा प्रत्येक वाक्यात 'बरोबर' चा अर्थ वेगळा आहे. उदाहरणाप्रमाणे "बरोबरचा" योग्य उपयोग करून खाली दिलेली तीन वाक्ये पूर्ण करा.

1. *उदाहरण:*
1) पाहुण्यांबरोबर आमच्याकडे या.
2) आल्याबरोबर तुमच्याकडे आलो.
3) तुम्ही म्हणता ते बरोबर आहे.

2. 1) नीला .... सुधा खेळत होती.
2) वाचल्या .... मला सारं समजलं.
3) तू गणित .... सोडवलं आहेस.

V उदाहरणानुसार तशीच आणखी दोन-दोन वाक्ये लिहा.

उदाहरण: नाटकाशिवाय ....?
नाटकाशिवाय कसला महाराष्ट्र?

1) श्रीखंडपुरीशिवाय ....?
2) मित्राशिवाय .... ?
3) देवाशिवाय .... ?
4) खेळाशिवाय ....?

VI कंसात दिलेल्या वाक्प्रचारां पैकी योग्य तो वाक्प्रचार योग्य त्या बदलानिशी वापरून खालील वाक्ये पूर्ण करा.

(एका दगडात दोन पक्षी (मारणे), कास धरणे, साक्ष देणे, तोंड देणे, जेरीस आणणे, नाव कोरणे, रात्र थोडी सोंगे फार, ताव मारणे)

1) घरी गेल्यावर बायकोच्या रागाला .... लागले.
2) शालिनीने विद्येची .... म्हणून ती विद्वान झाली.
3) हे पुस्तक आपल्या मैत्रीची ....
4) सगळ्यांनीच जेवणावर ....
5) आदिवासी बायकांनी अखेर ठेकेदारांना ....
6) महात्मा फुल्यांनी इतिहासात आपले ....

7) पाऊस पडल्यामुळे बागेला पाणीही मिळालं आणि माझे कष्टही वाचले, म्हणतात ना, ...

8) घरातला पसारा आवरायचाय, स्वयंपाक करायचाय आंघोळ व्हायचीय, आणि पाहुणे यायला तीनच तास उरलेत. काय करू? ....

V खालील शब्दांचा उपयोग करून वाक्ये बनवा.

(खास, मुद्दाम, बेत, गनिमी कावा, पावनभूमी, अग्रणी, कैवारी, अग्रेसर)

VI डावीकडे दिलेल्या स्तंभातील शब्दांच्या उजवीकडे दिलेल्या स्तंभातील शब्दांशी योग्य जोड्या लवा.

ख्यातनाम	कणखर
राकट	कोमल
नाजूक	सदैव
कायम	शुद्ध
निखळ	प्रसिद्ध

VII हिंदीत भाषांतर करा आणि समर्पक शीर्षक द्या.

महाराष्ट्र हा वैविध्याने नटलेला प्रदेश आहे. एका टोकाला कोकण तर दुसऱ्याला विदर्भ. शिवाय मराठवाडा, खान्देश आणि पश्चिम महाराष्ट्र. कोकणाला परमेश्वराने निसर्गसौंदर्याची केवढी मोठी देणगी दिली आहे! एकीकडे सह्याद्रीच उत्तुंग अभेद्य कडे तर दुसरीकडे अत्यंत मनोहर समुद्रकिनारा. तिथे सुंदर पर्वतराजीही आहे आणि नारळीपोफळीच्या बागा पण आहेत. परत, सगळीकडे हिरवळीचे साम्राज्य. कोकणरेल्वेने कोकणवासियांच्या जीवनात मोठीच क्रांती केली आहे. पूर्ण कोकण आता सुलभ यात्रेच्या टप्प्यात आला आहे. कोकणरेल्वेचा प्रवास आहे ही अत्यंत रम्य, नयनांना सुखद. तंत्रज्ञानाच्या दृष्टिकोणातूनदेखील कोकण रेल्वे हे एक आश्चर्य आहे कारण अत्यंत प्रगत विज्ञानाचा या रेल्वेच्या उभारणीत उपयोग करण्यात आला आहे. कोकणपट्टीने केवळ महाराष्ट्रालाच नव्हे तर पूर्ण देशाला अत्यंत उच्च कोटीचे नेते, लेखक आणि कलाकार दिले. टिळक, आगरकर, गोखले, खांडेकर, दांडेकर ही सगळी मंडळी मूळची कोकणातलीच. विदर्भाबद्दल बोलायचे तर तोही कुठल्याही बाबतीत कमी नाही. मग, कोणी हे मान्य करो अथवा न करो. अत्यंत सुपीक आणि सधन असा हा प्रदेश आहे. असे म्हणतात की, विदर्भातले रामटेक म्हणजेच कालिदासाच्या मेघदूतांतला रत्नगिरी आहे. इन्दुमती, दमयंती आणि रुक्मिणी या खरे म्हणजे विदर्भकन्याच. संत एकनाथांचे पैठण आणि शिवाजीचे गुरु असलेल्या रामदासस्वामींचे जांब मराठवाडयात आहे, तसाच जायकवाडीचा प्रकल्पपण तिथली प्रकल्पाच्या पाण्यावरली म्हैसुरच्या वृंदावनगार्डनच्या धर्तीवरची नृत्य करणारी कारंजी रमणीय आहेत. पैठणच्या पैठणी साड्यांचे मनोहारी रंग, सुंदर नाजूक जरकाम आणि कलाबनुचे काम यांनी मोहित न झालेली स्त्री विरळा.

खान्देशाबद्दल बोलयचं तर जळगाव-भुसावळच्या केळ्यांनी आणि नाशिकच्या द्राक्षांनी ज्याच्या तोंडाला पाणी सुटत नाही असा माणूस कुठे भेटणार नाही. खान्देशातील अमळनेर ही सानेगुरुजींची कर्मभूमी. मराठीच्या सुप्रसिद्ध कवयित्री बहिणाबाई चौधरी आणि बालकवी हे खान्देशचेच.

पश्चिममहाराष्ट्राबद्दल तर बोलायलाच नको कारण अनेक महान संतांची, वीरांची आणि साहित्यिकांची ती जन्मभूमी व कर्मभूमी होती.

भारतातल्या एकूण बारा ज्योतिर्लिंगांपैकी पाच एकट्या महाराष्ट्रात आहेत-ती म्हणजे भीमाशंकर, परळी-वैजनाथ, औंढया-नागनाथ, वेरुळचा घृष्णेश्वर आणि त्र्यंबकेश्वर. औरंगाबादचा बिबीका मकबरा आणि दौलताबादचा किल्ला हेही फार प्रसिद्ध आहेत. एकूण काय, महाराष्ट्रावर परमेश्वाराची फार कृपा आहे हेच खरे!

VIII मराठीत भाषांतर करा.

महाराष्ट्र हमारे देश का एक औद्योगिक और सांस्कृतिक राज्य है। हम जब महाराष्ट्र का नाम लेते हैं, तब हमारे सामने बाल गंगाधर तिलक का आदर्श आता है। वे महाराष्ट्र के ही नहीं बल्कि पूरे भारत के महान व्यक्ति थे।

समाजसुधार के क्षेत्र में आगरकर महोदय का नाम सबसे उपर है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन और समाज सुधारों का सूत्रपात किया। गाँधी जी, गोपाल कृष्ण गोखले जी को अपना प्रेरणा पुरुष एवं आदर्श मानते थे।

महाराष्ट्र के ही एक और विभूति का नाम हमें याद रखना चाहिए। वह है भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ.बाबासाहब आंबेडकर, तिलक और डॉ.भीमराव आंबेडकर महाराष्ट्र के महान पुरुष थे।

दलितों के उद्धार के लिए डॉ.आंबेडकर और महात्मा गाँधी का प्रयास महत्त्वपूर्ण है। डॉ.आंबेडकर के समान ही ज्योतिबा फुले का नाम भी दलितों के उत्थान के लिए बहुत प्रेरक है। ज्योतिबा फुले ने नारीशिक्षा और अछूत्तोद्धार के लिए बहुत प्रयास किए किन्तु उन्हे समाज का पूरा-पूरा सहयोग नही मिला। अपने शिक्षा आंदोलन में उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा किन्तु उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी।

महाराष्ट्र जिस प्रकार महापुरुषों के लिए प्रसिद्ध है उसी प्रकार प्राकृतिक सौंदर्य के लिए भी।

यह वीरों का राज्य है। शिवाजी और तानाजी इस महान वीरभूमि के ही सपूत थे।भारत वासियों को अपने इस महान राज्यपर गर्व है।

IX कंसांत दिलेल्या शब्दांमधून योग्य शब्द शोधून खालील उतारा पूर्ण करा.

(छान, शिकत, संधी, करायला, प्रदेश, जा, ठिकाण, पाहता, दगडात, थोडी, नाही)

मी महाराष्ट्रातला दौरा .... आलो आहे. मी जेव्हा मराठी .... होतो तेव्हाच रवल होतं की मराठी बोलणाऱ्यांचा .... महाराष्ट्र पहायचाच. आज .... मिळाली. काय हो तिवारी, तुम्ही तर मराठी .... बोलता. मोहन, तू पाहुण्यांना महाबळेश्वरला घेऊन .... एकीकडे थंड हवेचे .... पहायला मिळेल आणि दुसरीकडे प्रतापगड ही .... येईल. एकाच .... दोन पक्षी. मला मात्र एवढा वेळ .... रात्र .... सोंगं फार.

X भारताच्या महाराष्ट्राशिवाय दुसऱ्या कुठल्याही राज्याबद्दल एक छोटा निबंध लिहा.

टिप्पणियाँ

I नीचे दिए गए वाक्यों की ओर ध्यान दीजिए।

1) मी मराठी शिकलो आणि ठरवलं की महाराष्ट्र पहायचाच. (मैं मराठी सीखा और तय किया महाराष्ट्र देखना ही है।)
2) मी मुंबईला होतो म्हणून बोलायला शिकलो मराठी (मैं मुंबई में था, इसलिए सीखा मराठी।)
3) मला दाखवायला आवडलं असतं सगळं पण मला एवढा वेळ नाही. (मुझे सभी दिखाना अच्छा लगता था पर मेरे पास इतना समय नही।)
4) मल वेळ नाही म्हणून मी त्यांना पुण्याजवळचा सिंहगड दाखवीन. (मेरे पास समज नही इसलिए मैं उन को पुणे के पासवाला सिंहगड दिखाऊँगा।)
5) "देह जावो अथवा रहो" - "देह जाए, या रहे"
6) मी त्यांना कोल्हापूरची महालक्ष्मी दाखवीन. शिवाय, महाराष्ट्राची सांस्कृतिक राजधानी पुणं दाखवीन. (मैं उन्हें कोल्हापूर की महालक्ष्मी दिखाऊँगा, इस के अलावा, महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी पुणे दिखाऊँगा।)

जब इस तरह की संरचना बनाई जाती है जिस में एक वाक्यांश दूसरे के अधीन न हो और दोनो ही मुख्य अथवा प्रधान हो तो, उसे "संयुक्त वाक्य कहते हैं। इस में दो या अधिक वाक्य प्रधानत्व बोधक उभयान्वयी अव्ययों द्वारा जोडे जाते हैं। मराठी में ऐसे मुख्य अव्ययों की सूची नीचे दी गई है।

आणि (और), व (और), नि (और), अन् (और), न् (और), आणखी (और), आणिक (और) - ये सब समुच्चयबोधक अव्यय हैं। वे प्रथम वाक्यांश द्वारा किए हुए कथन में कुछ और ज़ादा जोड देते हैं।

पण, परंतु, परी, बाकी - ये न्यूनत्व बोधक अव्यय हैं जो कि पहिले वाक्यांश में किए गए कथन में कुछ त्रुटियों का बोध कराते हैं।

वा, अथवा, की, किंवा - विकल्पबोधक उभयान्वयी अव्यय - जिनका हिंदी के 'या' के अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

म्हणून, सबब, याकरिता, यास्तव - ये परिणामबोधक अव्यय पहिले वाक्यांश में दिए गए क्रिया के परिणाम का बोध कराते हैं।

II नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए।

1) ज्या प्रदेशांत जायचं त्या प्रदेशाची भाषा आली तर फारच मजा येईल. (जिस प्रदेश में जाना है उस प्रदेश की भाषा आती हो तो मजा आएगा।)
2) यांना जितकी होतील तितकी ठिकाणं दाखविणार आहे. (इन्हें जितनी जगह सकती है, उतनी दिखाऊँगा।)

3) महाराष्ट्र जेवढा किल्ल्यांसाठी प्रसिद्ध आहे, तेवढाच अजिंठा - वेरूळ साठी ही प्रसिद्ध आहे. (महाराष्ट्र जितना किलो के लिए प्रसिद्ध है उतना ही अजंता एलोरा के लिए भी मशहूर है।)

4) महाराष्ट्र पाहण जितकं महत्त्वाचं तितकंच महाराष्ट्रीयन जेवणही महत्त्वाचं आहे. (महाराष्ट्र देखना जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही महत्त्वपूर्ण महाराष्ट्र का खाना भी है।)

5) तुम्हाला जर वेळ झाला, तर पाहुण्यांना एखादं मराठी नाटक दाखवा (यदि आप के पास समय हो, तो मेहमान को एक मराठी नाटक दिखाइए।)

उपर्निदिष्ट वाक्यों में भी दो या अधिक वाक्यों को जोड दिया गया है। लेकिन ध्यान दीजिए कि इन जोड दिए गए वाक्यों में एक प्रधान तथा दूसरा गौण या प्रधानवाक्य पर आश्रित हैं। अपने आप में इन का पूर्ण अर्थ नही बनता। इस प्रकार से बनाए गए वाक्यों को मिश्र वाक्य कहते हैं। ऐसे वाक्यों में जो शब्द जोडने का कार्य करने हैं वे अक्सर जोडियों में पाए जाते हैं। जैसे कि स्थान सूचक "जिथे-तिथे", दिशा - सूचक - जिकडे - तिकडे, समय - सूचक -जेव्हा-तेव्हा, ज्यावेळी-त्यावेळी, जोपर्यंत-तोपर्यंत, ज्या-प्रमाणे-त्याप्रमाणे, संकेतसूचक - जर-तर, जरी-तरी आदि. इन शब्दों द्वारा जोडे गए कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं।

1)	जिथे तू असशील तिथे मी असेन.	जहाँ तू होगी वहाँ मैं होऊँगा।
2)	जिकडे पहावं तिकडे हिरवळच हिरवळ आहे.	जिधर देखो उधर हरियाली ही हरियाली है।
3)	जर तू अभ्यास केलास तर तुला यश मिळेल.	यदि तुम पढाई करोगे तो तुम सफलता पाओगे।
4)	जरी तू गावाला गेलास, तरी लवकर परत ये.	यद्यपि तुम गाँव जाओ, तो भी समयपर वापस आओ।
5)	ज्यावेळी थंडी पडते त्यावेळी तेल गोठतं.	जब सर्दी पडती है, तब तेल जम जाता है।
6)	जोपर्यंत तू सांगणार नाहीस, तोपर्यंत मला कळणार कसे?	जब तक तुम मुझे कहोगे नही, तबतक मुझे कैसे पता चलेगा?

III नीचे दिए गए वाक्यों में भी गौणत्वदर्शक उभयान्वयी अव्ययों ने दो वाक्यों को - एक प्रधान और दुसरा आश्रित जोडने का कार्य किया है।

1) तो म्हणाला कि मी हरलो.
उसने कहा की मैं हार गया।
उभयान्वयी अव्यय की - स्वरूप बोधक

2) त्याल बक्षिस मिळालं कारण त्याने चागला निबंध लिहिला.
उस को पुरस्कार मिला क्यों कि उस ने अच्छा निबंध लिखा।
उभयान्वयी अव्यय - कारण = कारण बोधक

3) चांगलं शिक्षण मिळावं म्हणून तो पुण्याला गेला,
अच्छी शिक्षा पानी थी, इसलिए वह पुणे गया।

4) जर-तर तथा जरी-तरी - संकेत सूचक उभयान्वयी अव्यय हैं। इनका उपयोग पहले ही दिखाया गया है।

धडा पाठ 23

आपण आणि आपल्या भाषा

गोपाळ : माधवराव, तुम्ही ही बातमी वाचलीत का?

माधव : कोणती? ती भाषेबद्दल आलेली बातमी ?

गोपाळ : या बातम्या रोज रोज वाचताना वाटतं या भाषांच्या प्रश्नावर देशात समस्या तर निर्माण केल्या जाणार नाहीत ना?

माधव : नाही गोपाळराव, तसं होऊ दिलं जाणार नाही. अर्थात तुम्हाला वाटतं ते काही चूक नही.

गोपाळ : भारताची भाषावर प्रांचरचना न केली जाता सुटसुटीत अशा चार किंवा पाच शासकीय विभागात विभागणी केली गेली असती तर हे प्रश्न तरी उद्‌भवले नसते! त्या त्या भागांतील सर्व भाषांना गुण्यागोविंदाने नांदणे भाग पडले असते.

माधव : मला हे तुमचे मत पटत नाही. आपल्या राज्यकारभाराची भाषा मातृभाषाच हवी हे बरोबरच आहे. तेच नैसर्गिकही आहे. त्यामुळे आपल्याकडून हा कारभार चालवला जात आहे असे प्रत्येकाला वाटेल! तसेच भाषावार प्रांतरचनेने निरनिराळ्या प्रादेशिक भाषांची समृद्धीही साधली जात आहे.

गोपाळ : पण मग भाषिकवादांचे काय? भाषाभाषांतील वाढत्या तेढीचे परिणाम काय होत आहेत हे तर रोजच्या पाहण्यात येत आहेत.

हम और हमारी भाषाएँ

गोपाल : माधवराव, तुमने यह खबर पढ़ी है क्या?

माधव : कौनसी? वह भाषा के बारे में आई हुई खबर?

गोपाल : हाँ। हररोज ऐसी खबरें पढ़कर लगता है कि भाषाओं के इस प्रश्न पर देश में समस्याएँ तो नहीं खडी की जाएँगी?

माधव : नहीं गोपालराव ऐसा नहीं होने दिया जाएगा। हालांकि तुम्हारे सोचने में कोई भूल नही है।

गोपाल : भाषा के आधारपर राज्यों की रचना न करते हुए यदि प्रशासनिक दृष्टि से देश को चार या पाँच हिस्से में बाँट दिया जाता तो ये प्रश्न उठते ही नहीं। तब हर भागों की सभी भाषाओं को साथ साथ प्रेम से रहना ही पड़ता।

माधव : मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। अपना राज-काज मातृभाषा में हो यही उचित है। यही स्वाभाविक भी है। इससे हर-एक को लगेगा कि सारा राज-काज उसके द्वारा ही चलाया जा रहा है। भाषावर राज्यों की संरचना से सभी प्रादेशिक भाषाओं का सहज विकास भी हो रहा है।

गोपाल : लेकिन भाषा विवादों का क्या होगा? भाषा भाषा के बीच बढ़ते वैमनस्य के परिणाम तो हररोज दिखाई दे रहे हैं।

माधव : होय, खरं आहे. भाषा अभिमानाला दुरभिमानाचे स्वरूप येत आहे. त्यामुळे हे प्रश्न उग्र स्वरूप धारण करत आहेत. या दुष्ट प्रवृत्तीपासून आपल्या नागरिकांना दूर ठेवण्याचे सर्व प्रयत्न राज्य सरकारांकडून केले गेले पाहिजेत. आपल्यासारख्या सुशिक्षित नागरिकांकडूनही असे प्रयत्न करण्यात आले पाहिजेत.

गोपाळ : मला वाटतं, सहिष्णुता, सहकार्य, बंधुभाव ह्या गुणांचा लोप तर होत नाही ना?

माधव : होय. अशी भीती मला वाटू लागली आहे खरी पण याच गुणांची लोकशाहीच्या पोषणासाठी आवश्यकता आहे. तेव्हा या गुणांचा सर्वत्र आग्रहाने पुरस्कार केला गेला पाहिजे. विशेषतः मुलांना त्यांच्या संस्कारक्षम वयातच या गुणांचं बाळकडू पाजलं गेलं पाहिजे. तसं झालं तरच उद्याच्या समाजाला या प्रश्नांतून मुक्त केलं जाईल.

गोपाळ : म्हणजे शेवटी तुम्ही शिक्षणावर आलात तर!

माधव : होय, सुनागरिकत्वाला सुसंस्कारांचा पाया हवाच. योग्य प्रकारचे शिक्षण हेच तर आपल्या सर्व प्रश्नांचे एकमेव उत्तर आहे.

माधव : यह तो सच है। भाषागत स्वाभिमान धीरे धीरे कट्टरता में बदलता जा रहा है। इसलिए यह समस्या उग्र रूप धारण कर रही है। अपने देशवासियों को इस दुष्प्रवृत्ति से दूर रखने के लिए राज्य सरकारों द्वारा हर तरह के प्रयत्न किए जाने चाहिए। हम जैसे सुशिक्षित नागरिकों के द्वारा भी इस तरह के प्रयत्न किए जाने चाहिए।

गोपाल : मुझे लगता है कि सहिष्णुता, सहकारिता, बंधुत्व आदि गुण लुप्त तो नही होते जा रहे हैं।

माधव : हाँ यह भय तो मुझे भी लगने लगा है। पर लोकतंत्र के पोषण के लिए ऐसे गुणों की आवश्यकता है। अतः इन गुणों को आग्रहपूर्वक बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विशेष रूप से बच्चों को बाल्यकाल से ही आयु में ऐसे गुणों की शिक्षा दी जानी चाहिए। तभी कल के समाज को इन प्रश्नों से मुक्त किया जाएगा।

गोपाल : यानि की, आखिर आप शिक्षण पर आ ही गए।

माधव : हाँ। अच्छी नागरिकता को अच्छे संस्कारों की नींव तो चाहिए ही। अच्छी शिक्षा ही हमारी सारी समस्याओं का एकमात्र उत्तर है।

शब्दार्थ

बातमी	खबर, समाचार
अर्थात	मतलब, अर्थात
चूक	गलती, चूक
विभागणी	विभाजन
(प्रश्न) उद्‌भवणे	(प्रश्न) निर्माण होना, उठना, खड़ा होना
गुण्यागोविंदाने	राजी खुशी से, सुख पूर्वक

नांदणे	सुखसे रहना (मराठी में नांदणे का अर्थ एक विशेष रूप में होता है। लड़की जब ससुराल में राजीखुशी से रह रही होती है तब कहा जाता है "मुलगी सुखात नांदत आहे."
कारभार	कार्यभार, कामकाज
साधणे	मुमकिन होना
वाद	वाद, वाद-विवाद
तेढ	दुश्मनी
धारण करणे	धारण करना
लोप होणे	नष्ट होना, लुप्त होना
भीती	डर, भय
शेवटी	आखिर में, अंत में
पाया	नींव, बुनियाद

अभ्यास

I खालील प्रश्नांची उत्तरे द्या.

1) भाषेच्या प्रश्नाबद्दलच्या बातम्या रोज रोज वाचतांना गोपाळरावांना काय वाटतं?
2) भारताची विभागणी करण्याबद्दल गोपाळरावांचे काय मत आहे?
3) भाषेबद्दलचे प्रश्न उग्र स्वरूप का धारण करत आहेत?
4) लोकशाहीला पोषक असे कोणते गुण आहेत?
5) सुनागरिकत्वाचा पाया कोणता आहे?

II उदाहरणानुसार खालील वाक्यांचे दोन प्रकारे परिवर्तन करा.

उदाहरण: मी डबा आणला.
माझ्याकडून डबा आणला गेला किंवा.
माझ्याकडून डबा आणण्यात आला.

1) कामगारांनी जिना पाडला. 2) सरकारने रस्ता रूंद केला.
3) विद्यार्थ्याने धडा वाचला.

2. *उदाहरण:* मी बातमी वाचली.
माझ्याकडून बातमी वाचली गेली.
किंवा माझ्याकडून बातमी वाचण्यात आली.

1) वहिनीने मंगळागौर साजरी केली. 2) शाळेने खंडाळ्याला सहल काढली.
3) मजूरांनी भिंत बांधली.

3. *उदाहरण:* राम औषध प्यायला.
रामकडून औषध प्यायलं गेलं.
किंवा रामकडून औषध पिण्यात आलं.

1) कलाकारांनी नाटक बसवलं. 2) सचिवांनी परिपत्रक पाठविलं.
3) पालकांनी लग्न जुळवलं.

III उदाहरणानुसार खालील वाक्यांमध्ये परिवर्तन करा.

उदाहरण: समितीकडून कार्यक्रम केला गेला.
समितीकडून कार्यक्रम करण्यात आला.

1) लेखकाकडून कादंबरी लिहिली गेली.
2) माझ्याकडून पुस्तक वाचलं गेलं.
3) सर्वांकडून आंबे खाल्ले गेले.
4) त्यांच्याकडून चित्रपट पाहिला गेला.

IV डावीकडे दिलेल्या शब्दांच्या उजवीकडे दिलेल्या वाक्यांशांशी योग्य जोड्या लावून वाक्ये तयार करा.

चादरी	डॉक्टरकडून देण्यात आलं.
कविता	त्याच्याकडून करण्यात आली.
फाईली	मुलांकडून लावण्यात आली.
औषध	आईकडून निवडले गेले.
झाडे	माझ्याकडून धुण्यात आल्या.
गहू	शिपायाकडून आणल्या गेल्या.

V खालील वाक्यात अधोरेखित शब्दाऐवजी दिलेले शब्द वापरून नवीन वाक्ये तयार करा.

रामाकडून आंबा खाल्ला गेला.

बटाटेवडे
चिंच
गोळ्या
केळं
बोरे

VI उदाहरणानुसार खालील वाक्यांचे परिवर्तन करा.

उदाहरण: काकांनी धडा वाचला.
काकांकडून धडा वाचला गेला.

1) काकांनी अहवाल लिहिला. 2) काकांनी कविता केली.
3) काकांनी बातमी ऐकली. 4) काकांनी वृत्तपत्र घेतले.
5) काकांनी परिपत्रक वाटले.

VII उदाहरणानुसार खाली दिलेल्या वाक्यांच्या जोडीमधील दुसरे वाक्य पूर्ण करा.

1. *उदाहरण:* मी रोज अभ्यास करतो.
माझ्याकडून रोज अभ्यास केला जातो.

1) मुली वर्गात कविता वाचतात.
मुलीकंडून वर्गात कविता ....

2) शिपाई तासातासाने घंटा वाजवतो.
शिपायाकडून तासातासाने घंटा ....

3) आई पायाला रक्तचंदनाचा लेप लावेल.
आईकडून पायाला रक्तचंदनाचा लेप ....

4) दिग्दर्शक दुष्काळावर माहितीपट तयार करतील.
दिग्दर्शकाकडून दुष्काळावर माहितीपट तयार ....

2. उदाहरण : मी ते काम केले.
माझ्याकडून ते काम करण्यात आले.

1) सर्वांनी झाडे लावली.
सर्वांकडून झाडे ....

2) विद्यार्थ्यांनी डबे खाल्ले.
विद्यार्थ्यांकडून डबे ....

3) आम्ही ते नाटक पाहिले.
आमच्याकडून ते नाटक ....

4) तिने सर्व कविता वाचल्या.
तिच्याकडून सर्व कविता ....

IIIV खालील संवाद पूर्ण करा.

गुरुजी, सव्वीस जानेवारीच्या कार्यक्रमाची आखणी तुमच्यावर सोपवण्यात आली होती सांगा पाहू, काय काय तयारी करण्यात आली आहे?

....

झेंडावंदन कुणाच्या हस्ते केले जाणार आहे?

....

बक्षिसे बाबूरावांकडूनच दिली जाणार आहेत ना?

....

नाही, नाही पहिला कार्यक्रम पहिलीच्या वर्गातर्फेच सादर करण्यात येऊ दे.

....

स्वागतगीत दुसरीच्या मुलींकडूनच बसवलं गेलं आहे ना?

....

पण आभार देशपांडे बाईंकडूनच मानले जातील ना?

....

IX उदाहरणानुसार कंसातील शब्दांची योग्य रूपे करून व योग्य क्रमाने ते शब्द ठेवून वाक्ये बनवा.

उदाहरण: (मी) (सिनेमा) (पाह) (तो) (ये)
तो सिनेमा माझ्याकडून पाहण्यात आला.

1) (ते) (चित्र) (काढणे) (जा) (एक) (रंगीत)
2) (ये) (पाहणे) (आम्ही) (एक) (चित्रपट) (जुना) (काल) (देवआनंदचा)
3) (तो) (खूप) (चित्रपट) (ही) (दिग्दर्शन) (करणे) (ये) (रहस्यमय)
4) (शाळा) (आखणे) (जा) (कार्यक्रम) (एक)

X उदाहरणानुसार खालील वाक्यांचे परिवर्तन करा.

उदाहरण: रामकडून श्लोक म्हटला गेला.
रामने श्लोक म्हटला.

1) मुख्याध्यापकांकडून उद्‌घाटन करण्यात आले.
2) मुलांकडून कार्यक्रम आखले गेले.
3) लोकांकडून मिरवणूक काढली गेली.
4) ज्योतीबांकडून स्त्रीशिक्षणाचा पाया घालण्यात आला.
5) मुलीकडून कामं करण्यात आली.

पढ़िए और समझिए

भाषा आणि राष्ट्रीय एकात्मता

स्वराज्य मिळालं, स्वातंत्र्य मिळालं पण राज्यकारभार परकीय भाषेतच चालवण्यात येत होता. भारतीय भाषांतून राज्यकारभाराच्या मागण्या करण्यात येत होत्या. भाषावर प्रांतरचनेचे वचन देण्यात आले होते. त्या वचनपूर्तीची वाट पाहण्यात येत होती. अखेर पोट्टू श्रीरामलू यांच्या उपोषणाने हा प्रश्न धसास लागला. भारताच्या लोकशाही शासनाकडून भाषावर प्रांतरचना करण्यात आली. पण त्यामुळे प्रश्नांचा निकाल लावला गेला नाही. सरकारला नवनवीन प्रश्नांचा सामना करावा लागला. मराठी भाषिक महाराष्ट्र, कन्नड भाषिक कर्नाटक, तेलुगू भाषिक आंध्र असे प्रांत निर्माण करण्यात आले. सर्व एक भाषिक लोक एकाच प्रांतात येणे शक्यच नव्हते. प्रत्येक प्रांतात निकटवर्ती प्रांतातील भाषिक थोड्या संख्येने राहणे अपरिहार्य होते. या भाषिक अल्पसंख्यांकांचे नवीन प्रश्न निर्माण झाले. सरकारवर अनेक प्रकारचे दबाव आणले जाऊ लागले. आंदोलने करण्यात आली. भाषेमुळे कटुता निर्माण झाली. पण हे काही स्वार्थी लोकांचे काम होते. खरे तर भारतीय लोक कधीही संकुचित मनोवृत्तीचे नव्हते आणि नाहीत. आपण नेहमीच दुसरी भाषा, साहित्य, संस्कृती, वेशभूषेचा आदर करीत असतो. भाषावर प्रांतरचनेमुळे त्यात काहीही फरक पडला नाही. आजही अनेक लोक दुसऱ्या प्रांताची भाषा शिकतात. त्या भाषेतील साहित्यकृतींचे भाषांतर आपल्या भाषेत करतात. राज्य आणि केंद्र सरकारकडूनही अशा प्रकारच्या भाषिक देवाणघेवाणीला प्रोत्साहन देण्यात येते. अनेक तरूण याच दिशेने काम करण्यास उत्सुक आहेत हे

आशादायक आहे. काही लोक भाषेच्या नावावर वाद निर्माण करण्याचा प्रयत्न करतात. परंतु ते यशस्वी होत नाहीत. लोकांना हे माहित आहे की, भाषा परस्परांना जोडणारी असते तोडणारी नव्हे.

शब्दार्थ

मागण्या	माँगें
करण्यात	करने में
देण्यात आले होते	दिया गया था
उपोषण	अन्नजल का त्याग
धसास लागणे	पूरा करना
शासनाकडून	शासन द्वारा
निकाल	फल, परिणाम, नतीजा
सामना करणे	सामना करना
शक्यच नसणे	बस में नहीं होना
निकटवर्ती	पासवाले
थोडा	कम
कटुता	कड़वाहट
स्वार्थी	स्वार्थी, खुदगर्ज
संकुचित मनोवृत्ती	संकुचित मनोवृत्ति, तंगनज़री
आदर करणे	सम्मान करना, आदर करना
फरक	फर्क, अंतर, भिन्नता
दुसऱ्या	दूसरे
साहित्यकृती	साहित्यकृति
भाषांतर	अनुवाद
देवाणघेवाण	आदानप्रदान, बढ़ावा देना
प्रोत्साहन	प्रोत्साहन
तरुण	तरुण, युवक, युवा
याच दिशेने	इस दिशा मे
उत्सुक	उत्सुक, इच्छुक
आशादायक	आशाजनक
यशस्वी	यशस्वी
परस्परांना	आपस में, एक दूसरे को
जोडणारी	जोड़नेवाली
तोडणारी	तोड़ने वाली

अभ्यास

I खालील प्रश्नांची उत्तरे द्या.

1) स्वराज्य मिळाल्यानंतर लोकांच्या काय मागण्या होत्या?
2) भारतीय लोक कसे आहेत?
3) आजही अनेक लोक काय करतात?
4) केंद्र व राज्यसरकारकडून भाषेच्या बाबतीत काय करण्यात येते?
5) भाषा कशी असते?

II खालील वाक्ये अभ्यासा व कसांतील शब्दांची योग्य रूपे रेखांकित शब्दाऐवजी वापरून वाक्य पूरे करा.

(सगळे, खास, प्रयत्न, वैरी, अखेर, जरा, भीती)

1) मूठभर मावळ्यांच्या साहाय्यने शिवाजीने शत्रूला जेरीस आणले.
2) सरकारने शांततेसाठी खास प्रयास केले पाहिजेत.
3) आज रात्री विशेष पाहुणे येणार आहेत.
4) सर्वत्र भयाचं वातावरण आहे.
5) शेवटी भाषावर प्रांतरचना करण्यात आली.
6) बाळाला थोडा ताप आला आहे.
7) सर्व लोक भयभीत झाले होते.

III योग्य त्या वाक्प्रचारांचे योग्य रूप वापरून खालील वाक्ये पूर्ण करा.

(दबाव आणणे, बाळकडू पाजणे, प्रश्न धसास लागणे, प्रश्नाचा निकाल लागणे, गुण्यागोविंदाने नांदणे, सामना करणे)

1) भारतात सर्व धर्माचे लोक .... तोच सुदिन!
2) आलेल्या प्रसंगाचा .... हेच धीराचं लक्षण!
3) देशप्रेमाचे .... तरच नवी पिढी देशभक्त होईल.
4) अखेर जनतेने सरकारवर ....
5) त्या कामगार नेत्याच्या बलिदानाने कामगारांचा ....
6) सात वर्षे वाट पाहिल्यावर अखेर त्या ....

IV हिंदीत भाषांतर करा आणि समर्पक शीर्षक द्या.

प्रत्येक राज्याचा राज्यकारभार त्या-त्या राज्याच्या भाषेतूनच चालविला गेला पाहिजे. राज्यसरकारची सर्व परिपत्रके, ध्येयधोरणे आणि नियम राज्यभाषेतूनच प्रसिद्ध केले गेले पाहिजेत. कारण राज्यातील बहुसंख्य लोकांकडून ती भाषा बोलली जाते. अनेकांकडून ती वापरली जाते. त्यामुळे सरकारचे नियम इ.सर्व लोकांना समजतील. प्रत्येकाला वाटेल की, आपल्याकडूनच राज्यकारभार चालविला जात आहे. आपल्यालाही राज्यकारभारात सामील करून घेतले गेले आहे असे सर्वांना वाटेल.

त्यामुळे लोकशाही खऱ्या अर्थाने अस्तित्वात येईल. लोकांना राज्यकारभाराबद्दल आत्मीयता वाटेल.

छत्रपती शिवाजी महाराजांनीही आपला राज्यकारभार मराठीतून करण्यासाठी 'राज्यव्यवहारकोश' तयार करवून घेतला होता. लोकमान्य टिळकांकडूनही स्वराज्य, स्वदेश, स्वधर्म आणि स्वभाषा या चार सूत्रांचा पुरस्कार करण्यात आला होता. तसेच स्वातंत्र्यवीर वि.दा. सारकरांकडूनही मराठी भाषाशुद्धीचे खूप प्रयत्न करण्यात आले. आता प्रत्येक राज्याची एक राज्यभाषा आहे. सर्व राज्यकारभार राज्यभाषेतून होतो आहे. महाराष्ट्राची राज्यभाषा मराठी आहे.

राज्यकारभाराबरोबरच शिक्षणही मातृभाषेतूनच दिले गेले पाहिजे. कारण प्रत्येकजण आपले विचार, मते, भावना इ.मातृभाषेतून उत्तम प्रकारे व्यक्त करू शकतो. भावना व विचारांचा हा आविष्कार उत्स्फूर्तपणे मातृभाषेतूनच होत असतो. म्हणूनच मातृभाषा ही मनाची भाषा असते. जर विद्यार्थ्याला मातृभाषेतून शिक्षण दिले तर तो ते उत्तम प्रकारे ग्रहण करू शकतो. परंतु मातृभाषेऐवजी परभाषेतून शिक्षण दिले तर त्याची अवस्था 'हेही नाही आणि तेही नाही' अशी होते. म्हणजे तो धड मातृभाषाही शिकू शकत नाही आणि परभाषाही नीट समजू शकत नाही. मातृभाषेचे संरक्षण व संवर्धन करायचे असेल तर प्रत्येकाकडून मातृभाषाच बोलली गेली पाहिजे. प्रत्येकजण निदान दहावीपर्यंत तरी मातृभाषेतूनच शिकला पाहिजे. प्रत्येकाला मातृभाषेतील पुस्तके उपलब्ध करून दिली गेली पाहिजेत. प्रत्येकाने ती वाचली पाहिजेत. मातृभाषा समृद्ध होण्यासाठी त्यात उत्तमोत्तम ग्रंथरचना केली गेली पाहिजे. विविध भाषांमधील उत्तमोत्तम ग्रंथसंपदा मातृभाषेत म्हणजे मराठीत (माझी मातृभाषा मराठी आहे.) आणली गेली पाहिजे. महाराष्ट्रातील पालकांकडून आपल्या मुलांना मराठीतूनच शिकण्याचा आग्रह झाला पाहिजे. मातृभाषा केवळ साहित्याची भाषा न राहता ज्ञानभाषा झाली पाहिजे. विविध भाषांमधील ज्ञान तज्ज्ञांकडून मराठीत आणण्यात आले पाहिजे. मी मराठीचा, माझ्या मातृभाषेचा पुरस्कार करतो आहे याचा अर्थ मला इतर भाषांबद्दल द्वेष आहे असे नाही. कारण सर्व भाषा परस्परांच्या भगिनी आहेत. त्या सर्वत्र गुण्यागोविंदानेच नांदायला हव्यात. एक मात्र खरे की, माता, मातृभूमी, आणि मातृभाषा महत्त्वाच्या आहेत, वंदनीय आहेत.

V मराठीत भाषांतर करा.

भारत एक विविधरंगी देश है। यहाँ अनेक धर्मों के लोग रहते हैं। सबके रहन-सहन वेशभूषा एवं खानापान भिन्न-भिन्न हैं। सभी लोगों द्वारा अपना स्वतंत्र जीवन निर्वाह किया जाता है।

जिस प्रकार हमारा देश धर्मों और रहन-सहन में विविध रूपी है उसी प्रकार भाषा के रूप में भी विविध रूपी है। इसीलिए भारत को बहुभाषी देश कहा गया है। भारत के हर राज्य की अपनी भाषा है। हरराज्य के निवासियों द्वारा अपनी भाषा बोली जाती है।

हिंदी हमारी राजभाषा है। तथापि संविधान में अन्य भाषाओं को भी सम्मानजनक दर्जा दिया गया है। संविधान के अनुसार केंद्रीय सरकार का काम काज हिंदी में किया जाना चाहिए। जहाँ-जहाँ भी केंद्रीय सरकार द्वारा पत्र व्यवहार किया जाता है वहाँ-वहाँ हिंदी का ही प्रयोग होता है।

राज्यों का कामकाज संबंधित राज्य की राजभाषा में चलाया जाता है। इसलिए हरएक राज्य की स्वीकृत भाषा को भी विकास के लिए पूर्ण अवसर दिया जा रहा है।

राज्यों में वहाँ की ही राजभाषा का प्रयोग होने से वहाँ के नागरिकों को सुविधा हो रही है। राज्य की भाषा के साहित्य का भी विकास हो रहा है। हर राज्य के साहित्यकारों द्वारा अपने-अपने राज्य की भाषा का विकास किया जा रहा है। उस प्रकार जहाँ राज्यों की अलग-अलग भाषाओं का विकास हो रहा है उसी प्रकार अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिंदी का भी समान रूप से विकास हो रहा है।

भाषा के इस सामंजस्य द्वारा भारत एक सूत्र में बंधा हुआ है।

VI 'माझी मातृभाषा' या विषयावर मराठींत एक निबंध लिहा.

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में मराठी के 'कर्मवाच्य' का प्रयोग सिखाया गया है। नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रिया रूपों पर ध्यान दीजिए।

उदाहरण:

1) आपल्याकडून हा कारभार चालवला जात आहे असे प्रत्येकाला वाटेल.
हर एक को लगेगा कि सारा राज-काज उसके द्वारा चलाया जा रहा है।
2) या गुणांचा सर्वत्र आग्रहाने पुरस्कार केला गेला पाहिजे.
इन गुणों को आग्रह पूर्वक बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
3) भाषावर प्रांतरचना केली गेली.
भाषावार प्रांतरचना की गई। (भूतकाळ)
4) भाषावार प्रांतरचना केली जाते.
भाषावार प्रांतरचना की जाती है। (वर्तमानकाळ)
5) भाषावार प्रांतरचना केली जाईल.
भाषावार प्रांतरचना की जाएगी। (भविष्यकाळ)

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित क्रियारूपों में मराठी के 'कर्मवाच्य' का प्रयोग किया गया है। मराठी में ऐसे प्रयोगों के लिए हिंदी के समान ही मूल क्रिया के 'भूतकालिक' रूप के बाद 'जा' क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हैं।

2. नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित क्रिया रूपों पर ध्यान दीजिए।
उदाहरण:

1) भाषा भाषांमधील वाढत्या तेढीचे परिणाम काय होत आहेत
हे तर रोजच्या पाहण्यात येत आहेत.
भाषा भाषा के बीच बढ़ते वैमनस्य के परिणाम तो हररोज दिखाई दे रहे हैं।
2) आपल्यासारख्या सुशिक्षित नागरिकांकडूनही असे
प्रयत्न करण्यात आले पाहिजेत.
हम जैसे सुशिक्षित नागरिकों को के द्वारा भी इस तरह के प्रयत्न
किए जाने चाहिए।
3) भाषावार प्रांतरचना करण्यात आली.
भाषावार प्रांतरचना की गई है। (भूतकाळ)
4) भाषावार प्रांतरचना करण्यात येते.
भाषावार प्रांतरचना की जाती है। (वर्तमानकाळ)
5) भाषावार प्रांतरचना करण्यात येईल.
भाषावार प्रांतरचना की जाएगी। (भविष्यकाळ)

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित क्रिया रूपों में भी मराठी के 'कर्मवाच्य' का प्रयोग किया गया है। मराठी में ऐसे वैकल्पिक प्रयोगों के लिए मूल क्रिया में '-ण्यात' जोड़कर 'ये' (आना) क्रिया के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हैं।

ध्यान दे कि, मराठी में 'कर्मवाच्य' प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है। दोनों प्रकार का कर्मवाच्य समान रूपसे सर्वत्र प्रयुक्त हो सकता है।

मराठी में कर्मवाच्य प्रयोग बनाने के लिए मूल वाक्य के कर्ता को करण कारक का परसर्ग '-कडून' जोड़कर मूल क्रिया के भूतकालिक रूप के साथ 'जा' क्रिया के उपयुक्त रूप का प्रयोग होता है। ऐसे वाक्यों में कर्ता कई बार अभिप्रेत या अस्पष्ट होता है। जब कर्म को प्राधान्य देकर विधान करना होता है या कर्ता स्पष्ट नहीं होता है, या कर्ता का उल्लेख टालना होता है तब ऐसा प्रयोग किया जाता है।

धडा पाठ 24

मराठी शिक्षक

गोखले : सर, मी आत येऊ का?

मुख्याध्यापक : या गोखले या. कशी काय वाटली आमची शाळा? आवडली का? आणि तुमचं काम काय म्हणतंय? अरे शंकर, दोन कप चहा पाठवून दे लवकर!

गोखले : शाळा तर खूप आवडली आणि सर तुम्हाला मराठी छान बोलता येतंय की।

मुख्याध्यापक : अहो, गोखले, मी उत्तर कर्नाटकातला. शिक्षणही तिथंच झालं. आता गेली पंचवीस वर्षं मी इथं पुण्यात आहे. म्हणून मराठी येतं. अर्थात तुमच्याइतकं नाही. अजूनही अधूनमधून कन्नड शब्द येतात. गेली दहा वर्षे या कर्नाटक हायस्कूलचा हेडमास्तर आहे. पुन्हा एकदा मातृभाषेच्या सेवेची संधी मिळालीय.

गोखले : सर, थोडी अडचण आहे. मला कन्नड येतं ते बोलण्या समजण्यापुरतं! लिहायला वाचायला येत नाही. इथं मी मराठीचा शिक्षक म्हणून नेमलो गेलोय. पण मुलं सारी कन्नडभाषिक आहेत. बाकी सारे विषय कन्नडमधून शिकतात. त्यांना मराठी शिकताना फार अडचणी येतात.

मुख्याध्यापक : अहो गोखले, ह्या मुलांना

मराठी शिक्षक

गोखले : सर, क्या मैं अंदर आऊँ?

मुख्याध्यापक : आइए गोखले जी आइए। आपको हमारी पाठशाला कैसी लगी? अच्छी लगी क्या? और आपका काम कैसे चल रहा है? अरे शंकर, जल्दीसे दो कप चाय भिजवाना।

गोखले : पाठशाला तो बहुत अच्छी लगी और सर आप को तो मराठी बहुत अच्छी बोलनी आती है।

मुख्याध्यापक : अरे गोखले जी, मैं मूलतः उत्तर कर्नाटक का। शिक्षा भी वहीं हुई। अब गए पच्चीस सालसे यहाँ पुणे में हूँ। इसलिए मराठी आती है। पर आप की तरह नही। अब भी यहाँ-वहाँ कन्नड़ शब्द आ जाते हैं। पिछले दस सालोंसे कर्नाटक हाइस्कूल का हैडमास्टर हूँ। एक बार फिर मातृभाषा की सेवा करने का अवसर मिला है।

गोखले : सर थोड़ी कठिनाई है। मुझे कन्नड़ तो आती है लेकिन सिर्फ बोलने समझ ाने तक। लिखना, पढ़ना नहीं आता। यहाँ मैं मराठी का शिक्षक नियुक्त किया गया हूँ। पर सभी बच्चे कन्नड़ भाषी हैं। (वे) बाकी के सब विषय कन्नड़ माध्यम से पढ़ते हैं। उन्हें मराठी सीखने में काफी दिक्कतें आती हैं।

मुख्याध्यापक : गोखले, इन बच्चों को मराठी

मराठी अनिवार्य भाषा म्हणून शिकायची आहे. ती या प्रांतात राहतात तेव्हा त्यांना इथली भाषा आलीच पाहिजे.

गोखले : ते खरं आहे. पण त्यासाठी खास तेवढ्यासाठी तयार केलेली पुस्तकंही हवीत. मला अजून तशी पुस्तकं मिळाली नाहीत. शिवाय मला कन्नड भाषा नीट येत नाही. मला जर चांगलं कन्नड येईल तर या विद्यार्थ्यांना मराठी शिकवायल मदत होईल.

मुख्याध्यापक : पण मला वाटतं गोखले, 'बालभारतीनं' अमराठी मुलांना मराठी शिकविण्याकरीता पुस्तकं तयार केलेली आहेत. त्याबद्दल चौकशी करा. आणि इथं 'डेक्कन कॉलेजात' केंद्र सरकारची 'पश्चिम विभागीय भाषा केंद्र' नावाची एक संस्था आहे. तिथंही चौकशी करा. शिवाय 'महाराष्ट्र राज्यभाषा संचालनालयाशी' संपर्क साधा. अरे हो, चहा घ्या.

गोखले : उगीचच त्रास घेतलात. सर, पण माझं कन्नड शिक्षण?

मुख्याध्यापक : अरे तेच तुम्हाला आता सांगणार होतो. म्हैसूरला केंद्र सरकारच्या 'भारतीय भाषा संस्थान'चे 'दक्षिण विभागीय भाषा केंद्र' आहे. तिथं चारही दक्षिण भारतीय भाषा-तमिळ, तेलुगू, कन्नड, मलयाळम या शिकवल्या जातात. हा दहा महिन्यांचा कोर्स आहे. तिथं हायस्कूल-शिक्षकांना कुठल्याही एका भाषेच्या प्रशिक्षणासाठी पाठवता

येतं. तुमची इच्छा असेल तर संस्थेतर्फे

अनिवार्य भाषा के रूप में सीखनी है। वे इस राज्य में रहते हैं इसलिए उन्हें यहाँ की भाषा आनी ही चाहिए।

गोखले : यह तो सच है। लेकिन इसके लिए विशेषरूप से तैयार की गई पुस्तकें चाहिए। मुझे तो ऐसी पुस्तकें नही मिली हैं। इसके अलावा, मुझे कन्नड भाषा अच्छी तरह नहीं आती। यदि मुझे कन्नड भाषा अच्छी तरह आती है तो इन विद्यार्थियों को मराठी सीखाने में मदद होगी।

मुख्याध्यापक : पर गोखले जी, मुझे लगता है कि 'बाल भारती' ने अमराठी बच्चों को मराठी सिखाने के लिए कुछ पुस्तकें तैयार की हैं। उनके बारे में पता कीजिए और यहाँ 'डेक्कन कालेज' में केंद्र सरकार की 'पश्चिम विभागीय भाषा केंद्र' नाम की एक संस्था है। वहाँ भी पूछताछ कीजिए। इसके अलावा 'महाराष्ट्र राज्य भाषा संचालनालय' से भी संपर्क कीजिए। अरे हाँ, चाय लीजिए।

गोखले : आपने बेकार ही कष्ट लिया। हाँ सर पर मेरा कन्नड़ शिक्षण?

मुख्याध्यापक : वही आप से कहने जा रहा था। मैसूर में केंद्र सरकार के 'भारतीय भाषा संस्थान' का 'दक्षिण विभागीय भाषा केंद्र' है। वहाँ दक्षिण भारत की चारों भाषाएँ जैसे तमिळ, तेलुगू, कन्नड़ और मलयाळम सिखाई जाती हैं। यह दस महिनों का पाठ्यक्रम है। वहाँ हाईस्कूलों के शिक्षकों को किसी एक भाषा में प्रशिक्षण के लिए प्रति नियुक्त

किया जा सकता है। यदि आपकी इच्छा हो तो मैं संस्था की ओर से आपको वहाँ

तुम्हाला कन्नड शिकण्यासाठी पाठवण्याची मी शिफारस करीन.

गोखले : वा सर, तुम्ही माझे दोन्ही प्रश्न सोडवलेत. मी 'महाराष्ट्र राज्यभाषा संचालनालय', 'बालभारती' तसेच 'डेक्कन कॉलेजा'त कन्नड भाषिकांना मराठी शिकवण्यासंबधी पुस्तकांची चौकशी करतो. शिवाय तुम्ही कृपा केलीत तर वर्षभरात मला कन्नडही उत्तम शिकता येईल.

मुख्याध्यापक : अहो गोखले, यात माझी कसली कृपा! आपल्या शाळेसाठी ते आवश्यक आहेच. आणि तुम्हीही उत्साही आहात. तुमचा उत्साह असाच राहो. मी पाहतो आणखी तुम्हाला काय मदत करतां येते ते.

गोखले : धन्यवाद सर. येतो. तासाची वेळ झाली.

मुख्याध्यापक : बरं आहे. पुन्हा भेटू तर।

कन्नड सीखने के लिए भेजने की सिफारिश करूँगा।

गोखले : वाह सर! आपने मेरे दोनोंही प्रश्नों का समाधान कर दिया। मैं राज्य-भाषा निदेशालय, 'बालभारती' और 'डेक्कन कॉलेज' में कन्नड भाषियों को मराठी सिखाने के लिए पुस्तकों के बारे में पूछूँगा। इसके सिवाय यदि आपकी कृपा रही तो सालभर में मैं कन्नड़ अच्छी तरह सीख सकूँगा।

मुख्याध्यापक : अजी गोखले जी, इस में मेरी कृपा कैसी? अपने स्कूल के लिए यह आवश्यक ही है। और आप भी उत्साही हैं। आपका उत्साह इसी तरह बना रहे। मैं देखता हूँ कि आपको और मदद कैसे करूँगा।

गोखले : धन्यवाद! चलता हूँ। कक्षा का समय हो गया है।

मुख्याध्यापक : ठीक है। अच्छा फिर मिलेंगे।

शब्दार्थ

मी आत येऊ का?	क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?
कशी वाटली	कैसी लगी
पाठवून दे	भेज दो
तुमच्याइतकं	तुम्हारे जितना
अडचणी	कठिनाइयाँ, अड़चनें
बोलणे	बोलना
समजणे	समझना
समजण्यापुरतं	समझने तक
लिहिणे	लिखना
वाचणं	पढ़ना
आलीच पाहिजे	आनी ही चाहिए
तशी पुस्तके	उस तरह की किताबें
चौकशी	पूछताछ

उगाच	बिना कारण के
सोडवणे	सुलझाना, छुड़ाना
उत्तम	अच्छा
कृपा	मेहरबानी, कृपा
उत्साही	उत्साह से भरपूर, उत्साहित

अभ्यास

I धडा वाचून खालील प्रश्नांची उत्तरे द्या.

1) मुख्याध्यापक मराठी चांगली का बोलू शकत होते?
2) श्री. गोखलेंची काय अडचण होती?
3) अमराठी मुलांना मराठी शिकविण्यासाठी कोणी पुस्तके तयार केली आहेत?
4) डेक्कन कॉलेजात कोणती संस्था आहे?
5) म्हैसूरला केंद्र सरकारची भाषेसंबंधी कोणती संस्था आहे?
6) दक्षिण भारतीय भाषा शिकविण्याचा कोर्स किती महिन्यांचा आहे?

II धडा वाचून खाली दिलेली वाक्ये पूर्ण करा.

1) मी गेली दहा वर्षे या कर्नाटक .... चा .... आहे.
2) पुन्हा एकदा .... सेवेची .... मिळाली.
3) मला कन्नड येतं ते .... पुरतं!
4) बालभारतीने .... मुलांना .... शिकवण्याकरीता पुस्तकं तयार केलेली आहेत.

III एखाद्या विधानाला अनेक प्रकारचे प्रतिसाद मिळतात. खाली दिलेल्या प्रत्येक विधानाला आणखी तीन तीन प्रतिसाद लिहा.

1. काय कशी काय वाटली शाळा?
हं. ठीक आहे.
उत्तम! फारच चांगली आहे शाळा!
इथली शिस्त फार चांगली आहे.
इथून तिथून सगळ्या शाळा सारख्याच!
इतकी भरमसाठ फी घेतात!

2. इथे मराठी अनिवार्य भाषा म्हणून शिकवतात.
का? असलेल्या भाषा कमी होत्या?
इंग्रजीशिवाय दुसरी भाषा हवी कशाला?
मराठी आल्यानं काय मिळणार आहे?
मराठी तर यायलाच हवं.

3. ही शाळा मोठी आहे.
कसली आलीय मोठी?
नुसती शाळाच मोठी. शिस्त अजिबात नाही.
नसायला काय झालं? मुलांकडून भरमसाठ फी घेतात.
नुसती मोठीच नाही. छानही आहे.

IV कंसातील क्रियापदांची योग्य रूपे वापरून वाक्ये पूर्ण करा.

1) सासूबाईंनी .... गोष्ट सांगितली. (पड)
2) त्यानं घरात पाऊल .... घर उजळलं. (टाक)
3) उद्या .... माझ्या वह्या घेऊन ये. (ये)
4) तो रोज सकाळी भूपाळी .... असतो. (गा)
5) ती रात्री .... दिवसभरात काय काय झालं ते त्याला सांगते (जेव)
6) तो .... मला म्हणाला "किती सुंदर दिसतेस तू!" (हस)
7) तो .... एकदम थांबला. (बोल)
8) घरातून बाहेर .... जग कसं समजणार? (पड)
9) ते पुस्तक .... माझं आयुष्यच बदललं. (वाच)
10) ती .... एवढी मोठी झाली. (बघ)

V उदाहरणात दाखविल्याप्रमाणे 'जा' या क्रियापदाची योग्य रूपे वापरून खाली दिलेल्या वाक्यत्रयींचे सगळे संच पूर्ण करा.

उदाहरण: तो जातो. ती जाते. ते जाते.

1) तो गेला. ....
2) तो जाईल. ....
3) तो जाणार आहे. ....
4) तो जाणार होता. ....
5) तो जाणार असेल. ....
6) तो जातोय. ....
7) तो जात होता. ....
8) तो जात असेल. ....
9) तो गेलाय. ....
10) तो गेला होता. ....
11) तो गेला असेल. ....
12) तो जात असतो. ....
13) तो जात असे. ....
14) तो जाई.......... ....
15) तो जायचा. ....

16) तो जात जाईल. ....

VI अधोरेखित शब्दाऐवजी कंसातील शब्दांचा वापर करून त्यासाठी, योग्य ते बदल करून नवी वाक्ये बनवा.

1) घर मिळेल तेव्हा मी तुला सांगीन. (की)
2) मोठा पाऊस आल्यावर माझी छत्री मोडली. (तेव्हा)
3) एवढा मोठा अपघात झाला पण मला काही झालं नाही. (तरी)
4) पाऊस पडेल म्हणून मी बाहेर गेले नाही. (कारण)
5) तुझं ऐकल्यामुळे माझे पैसे वाचले. (म्हणून)
6) पाऊस पडला की थंडी वाजते. (तर)
7) झाडं तोडली तर पाऊस कमी होतो. (म्हणजे)
8) ठेकेदार आल्यावर बायका सिंहीणी होतात. (आणि)
9) ठेकेदार आले तरी झाडं तोडू शकले नाहीत. (पण)
10) मी झोपडीत शिरल्यावर थक्क झाले. (तेव्हा)

VII कंसांतले शब्द वापरून वाक्ये पूर्ण करा.
(जळत्या, घातलेले, वाहणाऱ्या, झुलते, तळलेल्या, साचलेले, लिहीणारी, पेटती, रांगती, फाडणारी)

1) आम्ही तळ्यात .... पाणी पाहिले.
2) सगळे कागद .... मुलगी शाळेत गेली आहे.
3) आईनी .... पुऱ्या खूप फुगलेल्या होत्या.
4) तू .... लाकडाजवळ उभा राहू नकोस.
5) तो .... सिगारेट तोंडात ठेवून हिंडत होता.
6) दिवाळीत नवीन कपडे .... लोक आमच्या घरी आले.
7) रस्त्यावरून .... पाण्यात मुलांनी होड्या सोडल्या.
8) आश्रमात जिकडे तिकडे .... मुलं होती.
9) विद्यार्थ्यांनी प्रवासात .... मनोरे पाहिले.
10) सर्वात उत्तम कविता .... मुलगी वर्गात पहिली आली.

VIII पुढील अपूर्ण वाक्ये योग्य ते वाक्यांश जोडून पूर्ण करा.

1) जोपर्यंत कन्नड येणार नाही तोपर्यंत ....
2) मला कन्नड आलं की ....
3) विद्यार्थाना मराठी शिकायला त्रास होतो कारण ....
4) हेडमास्तरांनी मदत केली म्हणून ....
5) मला तुम्ही परवानगी दिलीत तर ....
6) मला मराठी जितकं चांगलं येतं तितकंच ....
7) ज्याप्रमाणे प्रत्येकाला कन्नड यायला हवी त्याप्रमाणे ....

8) जेव्हा मला कन्नड येईल तेव्हा ....
9) जसजसा मी कन्नड बोलू लागलो तसतसा ....
10) मी शाळेत आलो आणि ....

IX खालील शब्द योग्य क्रमाने लावून वाक्ये तयार करा.

1) शिक्षकांकडे, आम्हाला, करमलं, आमच्या, पाहुण्यांना, गोव्यात, शिकवणाऱ्या, इतिहास, आलेल्या, वर्गात, खूप.
2) पुण्यातल्या, मित्रांनी, पहिल्या, फिरल्या, बागा, पुण्याला, परवा, मोठ्या, नाटक, काल, सुहासच्या, पाहिलं, आलेल्या, मुंबईहून, रात्री.
3) झालेल्या, गप्पा, खुर्च्यांवर, टी.व्ही. समोर, आपापल्या, ठेवलेल्या, घरी, त्या, नंतर, आणि, पिऊन, बायकांनी, काल, टी.व्ही वर, नाटकाबद्दल, चहा, मारल्या, खूप, बसून, गेल्या.
4) उजेडात, गणपतीपुढे, झगमगत्या, म्हणतो, बाबांनी, आईनी, ठेवतो, केलेले, सजवलेल्या, मोहन, दिव्यांच्या, मोदक, आरती, आणि.
5) इत्यादी, डोलणारी, म्हैसूरहून, गोल गोल, खोलीत, खेळण्यांमधे, उड्या, आणलेला, मांडलेल्या, मोहनच्या, बाहुली, मारणारं, टांगा, लाकडाच्या, माकड, फिरणारी, होती, खेळणी, विमान.

X पुढे दिलेल्या क्रियापदांपासून वर्तमानकाळ, भविष्यकाळ, भूतकाळवाचक वाक्ये स्वतः तयार करा.

1) वहा 2) जळ 3) धाव 4) उगव 5) फिर

पढ़िए और समझिए

पत्र I माननीय निर्देशक,
भाषा संचालनालय,
महाराष्ट्र राज्य,
सचिवालय, मुंबई.

महोदय,

मी खाली सही करणार विनायक कृष्ण कुळकर्णी पुणे येथील सरकारमान्य कर्नाटक हायस्कूलमध्ये द्वितीय अनिवार्य भाषा मराठी या विषयाचा शिक्षक आहे.

महाराष्ट्र राज्यातील कन्नड अल्यसंख्याकांनी चालविलेली कन्नड माध्यमातून शिक्षण देणारी ही शाळा आहे. या शाळेत राज्य सरकारच्या धोरणानुसार मराठी हा विषय अनिवार्य द्वितीय भाषा म्हणून शिकवला जातो. याबाबत आपणाकडून मार्गदर्शनाची नम्र अपेक्षा बाळगत आहे.

1) कन्नड मातृभाषेच्या शाळेत मराठी ही द्वितीय भाषा म्हणून शिकण्यास योग्य अशी क्रमिक पुस्तके महाराष्ट्र सरकारने वा त्याच्या शिक्षण संचालनालयाने तयार केली आहेत का? असतील तर ती कोठे उपलब्ध होतील?
2) मी मराठी भाषिक असून मला कन्नड पूर्ण स्वरूपात शिकावयाचे आहे या संदर्भात अशा प्रकारच्या प्रशिक्षणासंबंधी आपण मला मार्गदर्शन कराल काय?

आपल्याकडून त्वरित उत्तराची अपेक्षा बाळगणारा,

आपला नम्र,
विनायक कृष्ण कुळकर्णी

23 मार्च 2005
कर्नाटक हायस्कूल
पुणे-2

पत्र II महाराष्ट्र राज्य भाषा संचालनालय सचिवालय मुंबई

प्रिय महोदय,

आपले दिनांक 23 मार्च 2005 चे पत्र मिळाले. आपल्या अडचणींसंदर्भात आपण खालील ठिकाणी संपर्क साधू शकता.

1) कन्नडमधून मराठी भाषा शिकवण्यासाठी 'बालभारती' पुणे व 'पश्चिम विभागीय भाषा केंद्र' डेक्कन कॉलेज, पुणे यांच्याशी संपर्क साधावा. ते तुम्हाला तपशीलवार माहिती देतील.

2) कन्नडेतर भाषिकांना कन्नड शिकवण्याचे 10 महिन्यांचे प्रशिक्षण केंद्र सरकारच्या म्हैसूरस्थित 'भारतीय भाषा संस्थान'च्या 'दक्षिण विभागीय भाषा केंद्रा'तर्फे दिले जाते. या प्रशिक्षणासाठी अनुदानित शाळेत काम करणाऱ्या शिक्षकांना पूर्णपगारी पाठविण्याची तरतूद असून प्रशिक्षणकाळात केंद्र सरकारतर्फे शिष्यवृत्तीही मिळते. याच्या तपशीलाबाबत 'भारतीय भाषा संस्थान, मानसगंगोत्री - म्हैसूर 570 006' च्या संचालकांशी आपण संपर्क साधू शकता.

कळावे.

आपला,

सचिवालय, निदेशक भाषा संचालनालय,
मुंबई. महाराष्ट्र राज्य यांच्याकरता

शब्दार्थ

शिकवला जातो	सिखाया जाता है
शिकण्यास योग्य	पढ़नेलायक
त्वरित	जल्दी से
अडचणी	समस्या
खालील ठिकाणी	नीचे दिए गए स्थान पर
संपर्क साधणे	संबंध स्थापित करना
माहिती	जानकारी
तर्फे	की ओर से
शिष्यवृत्ती	छात्रवृत्ति

I खालील प्रश्नांची पत्र I च्या आधारे उत्तरे द्या.

1) हे पत्र कोणाला लिहीले आहे?
2) या पत्रात कोणत्या शाळेचा उल्लेख केलेला आहे?
3) राज्यसरकारचे धोरण काय आहे?
4) लेखकाने कोणत्या गोष्टीची मागणी केली आहे?
5) लेखकाची मातृभाषा कोणती आहे?

II खालील प्रश्नांची पत्र II च्या आधारे उत्तरे द्या.

1) हे पत्र कोणाकडून पाठविण्यात आले आहे?
2) या पत्रात कन्नडमधून मराठी शिकविण्यासाठी कुठे संपर्क करायला सांगितले आहे?
3) कन्नडेतर भाषिकांना कन्नड शिकविण्याचा कोर्स कुठे चालविला जातो?
4) या कोर्ससाठी कोणाला पाठवले जाते व त्यांना काय सवलती असतात?
5) कन्नडेतर भाषिकांना कन्नड शिकविण्याच्या कोर्समध्ये प्रवेश घेण्यासाठी कुणाशी संपर्क साधला पाहिजे?

III खाली दिलेल्या वाक्याच्या चार जोड्या नीट पहा. यात अनुक्रमे येणे, वाटणे, चालणे आणि लागणे यांचे दोन दोन अर्थ आहेत.
आणखी चार जोड्या तयार करा.

1. 1) मांजर घरात येतं. 2) मला मराठी येतं.
2. 1) रेखा चटणी वाटते. 2) काय कशी काय वाटते शाळा?
3. 1) सुनिताचा बाळ आता चालतो. 2) मला चहा चालतो.
4. 1) रमाच्या पायाला ठेच लागते. 2) मला सकाळी कॉफी लागते.

IV खालील वाक्ये नीट वाचा. अधोरेखित शब्दाऐवजी कंसातील योग्य तो शब्द घालून वाक्ये पुन्हा लिहा.
(परत, खरं, नीट, इतर, सक्तीची, खूप, सगळी, अवघड, केव्हा, खेरीज)

1) सारी मुलं वर्गात कन्नड बोलतात.
2) मराठी शिकताना फार अडचणी येतात.
3) मराठी ही अनिवार्य भाषा म्हणून शिकवली जाते.
4) मला कन्नड धड बोलताही येत नाही.
5) कन्नड मुलांना मराठी शिकवणे कठीण नाही.
6) तुम्ही म्हणता ते बरोबर आहे.
7) याशिवाय इतरही उपाय आहेत.
8) पुन्हा एकदा यावं लागेल तुम्हाला!
9) कधी येणार आहात?
10) बाकी सारे विषय कन्नडमधून शिकवतात.

V 1) 'क्रम' शब्दापासून "क्रमिक" शब्द बनतो. याचप्रकारे खाली दिलेल्या शब्दांपासून नवे शब्द बनवा.
भाषा, इच्छा, संस्कृती, प्रांत, विचार, समाज, धर्म, सप्ताह, मानस
2) 'भारत' शब्दापासून 'भारतीय' शब्द बनतो, याचप्रकारे खाली दिलेल्या शब्दांपासून नवे शब्द बनवा.
विभाग, जात, प्रांत

VI हिंदी व मराठीमध्ये सारखे असलेले व या धड्यात आलेले सगळे शब्द शोधून लिहा।

VII हिंदीत भाषांतर करा आणि समर्पक शीर्षक द्या.

"शिक्षक हे संस्कृतीचे संरक्षक व संवर्धक असतात" असे जागतिक किर्तीचे तत्त्वज्ञ व आदर्श शिक्षक डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन यांनी म्हटले आहे. 'शिक्षक' या शब्दाचा अर्थ काय? शि म्हणजे शिव, शुभ, पवित्र, क्ष म्हणजे क्षमता, आणि क म्हणजे कर्तव्य, कर्म, कल्याण. म्हणजेच इतरांचे, विद्यार्थ्यांचे कल्याण करण्याची क्षमता असणारा शिव म्हणजे शिक्षक. म्हणजेच इतरांचे कल्याण करण्याची क्षमता असणारा आणि तेच ज्याचे कर्तव्य आहे, कर्म आहे तो शिक्षक. शिक्षक कसा असावा? व्रती असावा, व्यासंगी, बहुश्रुत, अभ्यासू, कष्टाळू असावा. नीतिमूल्यांचे पालन करणारा, सेवाभावी असावा. शिक्षकांबद्दल आदर व्यक्त करण्यासाठी पाच सप्टेंबर (डॉ.राधाकृष्णन यांचा जन्मदिवस) हा दिवस 'शिक्षकदिन' म्हणून साजरा करतात आणि गुरूंबद्दल आदर व्यक्त करण्यासाठी आषाढ शुद्ध पौर्णिमा 'गुरूपौर्णिमा' म्हणून साजरी केली जाते.

आपल्या भारतीय संस्कृतीत गुरूचे महत्त्व विशद केले आहे. गुरूला महत्त्वाचे स्थान दिले गेले आहे. आई हा प्रत्येकाचा पहिला गुरू असतो. वडील दुसरे गुरू आणि आईवडिलांनंतर शिक्षक हा प्रत्येकाचा गुरू असतो. प्राचीन काळात धौम्यऋषी-आरूणी, द्रोणाचार्य-एकलव्य श्रीकृष्ण-अर्जुन, समर्थ रामदासस्वामी-शिवाजी महाराज असे अनेक आदर्श गुरूशिष्य होऊन गेले. या सर्वांनी आदर्श गुरू आणि आदर्श शिष्य कसा असावा

हे दाखवून दिले आहे. यांतील प्रत्येक जण खूप कष्ट करत होता, गुरूंची सेवा करत होता आणि असे करता करता शिकत होता. यातूनच गुरूशिष्य परंपरा निर्माण झाली. यांतील प्रत्येक गुरूने आपल्या शिष्याला शिकवून अशा योग्यतेचे बनविले की, त्याने आदर्श निर्माण केला. पूर्वीच्या काळात शिकण्यासाठी शिष्य गुरूकडेच राहायचा. या आदर्शापर्यंत येण्यासाठी प्रत्येकाने किती कष्ट घेतले असतील, शिकताना कायकाय सोसले असेल त्याचे त्यालाच ठाऊक! कारण कष्ट केल्याशिवाय विद्या मिळत नाही.

शिक्षकाने विद्यार्थाला असे ज्ञान द्यायला हवे की ज्यामुळे तो अज्ञान, अंधकार आणि बंधन यातून मुक्त होईल. आदर्श शिक्षक चारित्र्य, नीतिमत्ता, स्वावलंबन, धैर्य, इ.मूल्ये विद्यार्थ्यावर बिंबवितो. त्याला स्वतःच्या पायावर उभे राहण्यासाठी समर्थ बनवितो. त्याला घडवितो, आकार देतो. त्याच्यातील सुप्त कलागुणांच्या विकासाला वाव देतो. विद्यार्थ्याला केवळ परीक्षार्थी न बनविता खऱ्या अर्थाने विद्यार्थी बनवितो, ज्ञानार्थी बनवितो. केवळ अभ्यासक्रमातील विषय शिकवून न थांबता तो विद्यार्थ्याला जीवनावश्यक असे सर्व ज्ञान देत असतो. विद्यार्थ्याकडून अभ्यास करवून घेतो. शिक्षण ही दुतर्फी आणि जिवंत प्रक्रिया आहे. म्हणूनच आदर्श शिक्षक शिकविताना शिक्षण प्रक्रियेत विद्यार्थ्यांनाही सामावून घेतो. त्यांना प्रश्न विचारतो. उत्तरे देण्यास प्रवृत्त करतो. त्यांना वाचन, लेखन, मनन, चिंतन करायला भाग पाडतो. विद्यार्थ्याच्या अडचणी, शंका आणि प्रश्न यांचे निरसन करतो. विद्यार्थ्यात कोणतीही कमतरता, दोष, दुर्गुण राहणार नाही याची काळजी घेतो. विद्यार्थ्याला परका मानत नाही. उलट त्याच्यावर पुत्रवत प्रेम करतो. त्याचे ज्ञानचक्षू उघडून त्याला जगाकडे बघायची आणि जगायची दृष्टी देतो. त्याच्यावर सहकार्य, सेवाभाव, बंधुभाव, सहिष्णुता ही मूल्ये बिंबवितो. आदर्श शिक्षक प्रत्येकाकडून काहीना काही गुण घेत असतो, शिकत असतो. मग समोरची व्यक्ती लहान असो अथवा मोठी. कारण आदर्श शिक्षक हा आदर्श विद्यार्थी असतो. तो विद्यार्थ्याच्या व्यक्तिमत्त्वाचा सर्वांगीण विकास करतो. म्हणूनच भारतीय संस्कृतीत शिक्षकाला (गुरूला) ब्रह्मा, विष्णू, महेशाची उपमा दिली आहे. गुरूला 'परब्रह्म' म्हटले आहे. म्हणूनच गुरू वंदनीय आहे. म्हटलंच आहे ना की, "शिक्षक हा विद्यार्थी परायण असावा, विद्यार्थी ज्ञानपरायण असावा आणि ज्ञान सेवापरायण असावे."

IX मराठीत भाषांतर करा.

भारत की राजभाषा हिंदी है। प्रत्येक राज्य की अपनी राज्यभाषा भी है जो उस राज्य में प्रथम भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है और प्रशासन का कार्य भी उसी में चलाया जाता है। चूँकि सभी देशवासियों को किसी भी राच्य में रहने-कमाने का अधिकार है, इसलिए भारत के किसी भी क्षेत्र का निवासी अन्य क्षेत्र में रोज़ीरोटी के लिए जाता ही है। अपने मूल क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जानेसे वहाँकी भाषा न समझने के कारण उसे कठिनाईयों का सामना करना पड सकता है। यदि भावी निवास-क्षेत्र की भाषा का भी ज्ञान हो तो काफी आसानी हो सकती है। इसलिए सभी भारतवासियों के लिए अपनी प्रथम भाषा के अतिरिक्त देश की किसी अन्य भाषा का ज्ञान यदि अनिवार्य

नहीं तो आवश्यक बन ही जाता है और हिंदी क्षेत्र के निवासियों को हिंदी तो सहज में ही प्रथम भाषा के रूपमें प्राप्त होती है, उन्हें अन्य क्षेत्र की भाषा का भी ज्ञान अर्थात्, लिखना, पढ़ना, समझना आना चाहिए।

जैसे-जैसे हम देश के विविध भाषाओं का समान करेंगे वैसे-वैसे देश की राजभाषा हिंदी के विकास को भी बल मिलेगा। हमें ये बात सदा याद रखनी चाहिए कि, हम भारतीय पहले हैं और मराठी, गुजराती अथवा अन्य भाषा भाषी बाद में। सच्चे भारतीय होने के लिए हमें भारत की समस्त भाषाओं का समान रूप से सम्मान करना चाहिए। ऐसा करके हम भारतीय एकता को मज़बूत करेंगे।

भाषा और संस्कृति का परस्पर गहरा संबंध है। भाषा से ही संस्कृति का विकास होता है। यदि हम अन्य राज्य की भाषा को सीखेंगे तो हमें उस राज्य की संस्कृति का भी ज्ञान हो जाएगा।

X खाली दिलेल्या शब्दांचा वापर करून मराठीत एक-एक वाक्य बनवा.
शाळा, लवकर, शिक्षण, हेडमास्तर, मातृभाषा, संधी, अडचण, अनिवार्य, प्रांत, कठीण

XI

1. आपण कन्नड भाषी आहात. मराठी शिकल्यावर आपण एका सुप्रसिद्ध कन्नड पुस्तकाचे मराठीत भाषांतर केले आहे. त्याच्या प्रकाशनार्थ अर्थसाहाय्यासाठी भाषा संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य यांना पत्र लिहा.

2. आपण प्रथितयश मराठी लेखक आहात. एका कन्नडभाषी उदयोन्मुख लेखकाने मराठीत लेखन केले आहे. त्याला त्याच्या प्रयत्नांबद्दल त्याचे कौतुक करणारे पत्र लिहा.

शब्दसूची

सूची में आए संक्षेप और विशेष जानकरी

1. सं. - संज्ञा
2. पु. - पुल्लिंग
3. स्त्री. - स्त्रीलिंग
4. नपुं. - नपुंसकलिंग
5. वि. - विशेषण
6. क्रि.वि. - अथवा क्रि.वि.अ. - क्रियाविशेषण अथवा क्रियाविशेषण अव्यय
7. क्रि. - क्रियापद
8. वा.प्र - वाक्प्रचार
9. सर्व. - सर्वनाम
10. ब.व. - बहुवचन
11. अ. - अव्यय
12. संबो. - संबोधन

सूची करते समय 'त' के बाद 'त्र' को रखा है। । 'त' के शब्द खत्म होने के बाद 'त्रास, त्रिवेणीसंगम' आदि 'त्र' के शब्द दिए हैं। अनुस्वारवाले शब्द प्रत्येक वर्ण (अक्षर) के बाद अर्थात 'क' के बाद 'कं', 'का' के बाद 'कां', 'कि' के बाद 'किं' वाले शब्द ऐसे क्रम में रखे हैं। स्वरमालिका (अ, आ, इ ,ई उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः) इस क्रमसे दी गई है। स्वरों से शुरु होनेवाले शब्दों में अनुस्वारवाले शब्द अंत में दिए हैं। युक्ताक्षर (जोडाक्षर) वाले शब्दों को वर्णानुसार अंत में दिया है। उदा. 'पोहोचणे-पहुँचना', के बाद 'प्रकार, प्रगति' आदि शब्द या 'वैशिष्ट्य-विशिष्टता' के बाद 'व्यत्यय, व्याप' आदि शब्द। 'श्र' को 'श' के बाद रखा (दिया) है। 'ऋ' स्वर के साथ बननेवाले 'कृपा', 'गृह' आदि शब्दों को दीर्घ ऊ-कार के बाद अर्थात 'कूड', 'गूळ' के बाद रखा है। शब्दों के अर्थ हिंदी में उनके सामने दिए है। 'ˆ' (रफार) को 'र' के बाद रखा है। उदा. 'सारखा' के बाद 'सार्थ' या 'निरोप' के बाद 'निर्णय', 'निर्धास्त' आदि शब्द। पाठ या अनुच्छेद में कई बार शब्द 'मूळगाव' 'ठीक आहे', 'घराजवळ', 'आपल्या' इसप्रकारसे आए हैं। उनको सूचिबद्ध करते समय सूची में 'मूळ' और 'गाव', 'ठीक' और 'आहे', 'घर', 'आपला' इस प्रकार से समाविष्ट किया है। उर्वरित शब्दों के क्रम अपनी पुस्तक की 'भूमिका' में 'लिपि तथा उच्चारण' के अंतर्गत दी गई वर्णमालानुसार रखा है।

ध्यान दें कि ओढणे = घसीटना, पीना (हुक्का आदि)' ऐसे दो भिन्न अर्थवाले कुछ शब्द सूची में आए हैं उनको सूची में दो बार समाविष्ट किया गया है।

अ

अखेर (सं.स्त्री.)13(ख)	आखिर
अख्खा (वि.)14(क)	पूरा
अगं (संबोधन/अव्यय)1(क)	अरे (पति/पत्नी को इस नाम से पुकारता है)
अगदी (क्रि.वि.)1(ख)	बिल्कुल
अगोदर (क्रि.वि.)7(ख)	पहले
अग्रणी (सं.पु.)22(ख)	अग्रगण्य
अचानक (क्रि.वि.)21(ख)	अचानक
अचूक (वि.)14(ख)	अचूक
अजिबात (क्रि.वि.)2(क)	जरा भी
अजोड (वि.)19(ख)	बेजोड
अट्ठावन्न (वि.)21(ख)	अट्ठावन
अडचण (सं.स्त्री.)4(क)24(क)24(ख)	अड़चन, समस्या, कठिनाई
अडवणे (क्रि.)12(क)	विरोध करना
अडाणीपणा (सं.पु.)12(ख)	अनाड़ीपन
अडीच (वि.)2(क)13(क)	ढ़ाई
अत्यवस्थ (वि.)12(ख)	गंभीर रूप से बीमार
अत्यावश्यक (वि./क्रि.वि.)18(क)	बहुत जरूरी
अर्थात (अ.)23(क)	अर्थात, मतलब
अद्ययावत (वि.)8(ख)	अद्यतन
अनुभव (सं.पु.)18(ख)	अनुभव
अन्न (स.नपुं.)17(ख)	खाना
अपघात (सं.पु.)16(क)	दुर्घटना
अपंगत्व (सं.पु.)15(ख)	पंगुता
अभ्यास (सं.पु.)3(क)3(ख)7(क)	पढ़ाई, अध्ययन
अर्धा (वि.)2(क)	आधा
अर्वाच्य (वि.)3(ख)	जो बोलना नहीं चाहिए
अवघड (वि.)7(क)	कठिन
अवघडणे (क्रि.)16(क)	अकड जाना
अश्रू (सं.पु.)15(ख)	आँसू
असणे (क्रि.)18(क)	होना
असाच (वि.)3(क)	ऐसे ही
अस्वस्थता (सं.स्त्री.)16(क)	बेचैनी
अहर्निश (क्रि.वि.)22(ख)	दिनरात

अहवाल (सं.पु.)4(क)	रिपोर्ट
अहो (अव्यय/संबोधन)1(क)	अजी (पत्नी पति को ऐसे पुकारती है)
अंगठे बहाद्दर (वा.प्र.)15(क)	अंगूठा छाप
अंगण (सं.नपुं.)3(क)20(ख)	आँगन
अंगभर (वि.)17(ख)	तनभर
अंगात येणे (वा.प्र.)8(क)	भूत लगना
अंगावर काटा उभा राहणे (वा.प्र.)16(क)	बदनपर रोंगटे खडे होना

आ

आई (सं.स्त्री.)1(क)3(क)	माँ
आकर्षण (सं.नपुं.)8(ख)9(ख)	आकर्षण
आखणे (क्रि.)12(क)	बनाना
आखूड (वि.)13(क)	लंबाई में छोटा
आज (क्रि.वि.)4(ख)	आज
आजकाल (क्रि.वि.)2(ख) 7(ख)18(क)18(ख)	आजकल
आजार (सं.पु.)12(ख)14(ख)	बीमारी
आजूबाजूला (क्रि.वि.)6(क)	आसपास
आजोबा (सं.पु.)1(क)	दादाजी, नानाजी
आठवण (सं.स्त्री.)15(ख)	याद, स्मृति
आठवणे (क्रि.)20(ख)	याद आना
आणखी (वि.)18(क)	और
आणणे (क्रि.)5(क)12(क)	लाना
आणि (अ.)1(क)	और
आत (परसर्ग)3(क)10(क)17(ख)	अंदर
आता (क्रि.वि.)4(क)14(क)	अब, अभी, तुरंत
आत्मचरित्र (सं.नपुं.)21(क)	आत्मकथा
आत्मविश्वास (सं.पु.)15(ख)	आत्मविश्वास
आदर (सं.पु.)23(ख)	आदर, सम्मान
आदळणे (क्रि.)16(क)	जोर से गिरना
आधी (अ.)2(क)3(क)22(क)	पहले
आनंदात सामील होणे (वा.प्र.)13(ख)	खुशी में शामिल होना
आपला (वि.)1(ख)17(ख)	अपना

आपोआप (क्रि.वि.)7(क)	अपनेआप
आमचा (वि.)5(क)	हमारा
आमंत्रण (सं.नपुं.)19(क)	निमंत्रण
आम्ही (सर्वनाम)1(क)	हम
आयुष्य (सं.नपुं.)12(क)	जीवन
आरडाओरडा (सं.पु.)3(क)3(ख)	हल्लागुल्ला, शोर, शोरगुल
आरक्षण (सं.पु.)16(क)	आरक्षण
आराम (सं.पु.)21(क)	आराम, विश्राम
आवड (सं.स्त्री.)10(ख)	पसंद
आवडणे (क्रि.)10(क)14(ख)	पसंद आना, अच्छा लगना
आवडनिवड (सं.स्त्री.)9(क)	अपनी पसंद
आवरणे (क्रि.)3(क)10(ख)	ठीक करना, समेटना
आशादायक (वि.)23(ख)	आशाजनक
आहे (क्रि.)1(क)2(क)	है
आज्ञा (सं.स्त्री.)12(क)	आज्ञा
आंदोलन (सं.नपुं.)20(क)	आंदोलन
आंधळा मागतो एक डोळा, देव देते दोन (कहावत)15(क)	अंधा माँगे एक आँख, भगवान दे दो।
आंबा (सं.पु.)5(क)	आम

इ

इकडे (क्रि.वि.)1(क)	इधर, यहाँ
इच्छा (सं.स्त्री.)15(क)	इच्छा
इतका (वि.)21(क)	इतना
इतर (वि.)5(क)	अन्य
इथे (अ.)1(ख)12(ख)	यहाँ

उ

उकळणे (क्रि.)17(ख)	उबालना
उखळ (सं.नपुं.)17(क)	ओखली
उगवती (सं.स्त्री./वि.)12(ख)	उभरती
उगाच (क्रि.वि)24(क)	बिनाकारण

उघडणे (क्रि.)14(ख)	खोलना
उघडानागडा (वि.)17(ख)	नंगधड़ंग
उघडाबोडका (वि.)5(ख)	नंगा, ठूँठा
उजवा (वि.)16(क)	दाहिना
उजवा हात (वि.)6(ख)	दाहिना हाथ
उडीद (सं.पु.)2(क)	उड़द
उणे (सं.नपुं.)9(ख)	कमी
उतरणे (क्रि.)14(क)	उतरना
उतार (सं.पु.)20(ख)	उतार, ढलान
उत्तम (वि.)6(क)24(क)	उत्तम, बहुत अच्छा
उत्साह (सं.पु.)4(ख)	उत्साह
उत्साही (वि.)24(क)	उत्साहित, उत्साह से भरपूर
उत्सुक (वि.)23(ख)	उत्सुक, इच्छुक
उद्‌भवणे (क्रि.)23(क)	निर्माण होना, उठना, खडा होना
उदयाला येणे (क्रि.)8(ख)	उदित होना
उद्या (क्रि.वि.)6(क)11(क)	कल
उन्हाळा (सं.पु.)6(क)9(क)	गर्मी, गर्मी का मौसम
उपाय (सं.पु.)14(ख)	उपाय
उपाय सुचवणे (क्रि.)12(क)	उपाय सुझाना
उपाशी (वि.)17(क)	भूखा
उपोषण (सं.नपुं.)23(ख)	अन्नजल का त्याग
उभी राहणे (क्रि.)17(ख)	खड़ी रहना
उशिरा (क्रि.वि.)16(क)	देर से
उशीर (सं.पु.)2(क)3(क)	देर
उसळत्या (वि.)11(ख)	उछलती
उंच (वि.)5(ख)	उँचे
उंचावणे (क्रि.)8(ख)	उठाना
उंची (सं.स्त्री.)9(ख)	कीमती, महँगे

ऊ

ऊन (सं.नपुं./वि.)20(ख)	धूप

ए

एकच (वि.)4(ख)	एकही
एकटा (वि.)7(क)8(क)9(क)10(क)	अकेला
एकटा जीव सदाशिव (वा.प्र.)15(क)	अकेली जान
एकत्र (क्रि.वि.)4(क)9(क)	इकट्ठा
एकत्र आणणे (क्रि.)9(क)	मिलाना
एकदम (क्रि.वि.)13(ख)	एकाएक, अचानक
एकरूप होणे (क्रि.)20(क)	एकरूप होना
एकवेळ (क्रि.वि.)17(क)	एक समय, एक जून, एक टंक
एकात्मता (सं.स्त्री.)23(ख)	एकता, ऐक्य
एकीकडे (क्रि.वि.)8(ख)	एक तरफ, एक ओर
एकुलता (वि.)1(ख)	इकलौता
एकेक (वि.)2(क)	हरएक, एक-एक
एकोपा (सं.पु.)19(क)	एकी
एखादा (वि.)13(ख)	कोई एक
एवढा (वि.)7(क)	ऐसा, ऐसा भी

ऐ

ऐकणे (क्रि.)20(क)	सुनना
ऐक्य (सं.नपुं.)23(ख)	ऐक्य, एकता

ओ

ओझे (सं.नपुं.)6(क)7(ख)	बोझ
ओढणे (क्रि.)8(क)	घसीटना
ओढणे (क्रि.)20(ख)	पीना (हुक्का आदि)
ओरडणे (क्रि.)3(क)	चिल्लाना
ओलांडणे (क्रि.)16(क)	पार करना
ओळख (सं.स्त्री.)1(क)	परिचय

औ

औषध (सं.नपुं.)14(ख)	दवा

क

कडा (सं.पु.)16(क)	खडा पहाड
कडेकपारी (सं.स्त्री.)22(ख)	खड़ी पहाडियाँ और घाटियाँ
कटुता (सं.स्त्री.)23(ख)	कड़वाहट
कणखर (वि.)22(ख)	सख्त, कडा
कदाचित (क्रि.वि.)13(ख)	शायद
कपडा (सं.पु.)17(ख)	वस्त्र
कधी (क्रि.वि)3(ख)14(क)16(क)	कब, कभी
कमी (वि.)2(क)5(ख)	कम
कमीतकमी (वि.)13(क)	कमसे कम
करणे (क्रि.)5(क)23(ख)	करना
करमणूक (सं.स्त्री.)11(ख)	मनोरंजन
करवंटी (सं.स्त्री.)17(ख)	नारियल के खोल का आधा भाग, नारियल का आधा कवच
करंजी (सं.स्त्री.)19(क)	गुझिया
कर्मचारी (सं.पु.)4(क)	कर्मचारी
कलमी (वि.)5(ख)	कलमी
कल्पना (सं.स्त्री.)15(क)	कल्पना
कसाबसा (क्रि.वि)14(क)	किसी तरह
कळणे (क्रि.)7(क)8(क)	समझना
कंगोरा (सं.पु.)7(क)12(क)	बारीकि, खुबि
कंटाळा (सं.पु.)7(क)12(क)	ऊब
कंबर (सं.स्त्री.)17(क)	कमर
काढणे (क्रि.)12(क)	खोलना
काढता पाय घेणे (वा.प्र.)16(ख)	खिसक जाना
कातडी (सं.स्त्री.)12(ख)	त्वचा
कानाकोपरा (सं.पु.)22(ख)	कोना कोना
काम (सं.नपुं.)7(क)10(ख) 12(क)15(क)	काम

कामकाज (सं.नपुं.)4(ख)	कामकाज
काय (सर्वनाम)1(क)2(क) 8(क)12(क)20(क)	क्या?
कायदा (सं.पु.)2(ख)	कायदा, नियम
कारभार (सं.पु.)23(क)	कार्यभार, कामकाज
कार्यक्रम (सं.पु.)4(ख)	कार्यक्रम
कार्यालय (सं.नपुं.)9(ख)	विवाहभवन, कार्यालय
काल (क्रि.वि.)13(क)	कल
काव्यात्मकता (वि.)19(ख)	कविता का भाव
कास धरणे (क्रि.)22(ख)	आधार लेना
काही (वि.)8(क)10(ख)16(ख)	कुछ
काहूर (सं.नपुं.)17(ख)	तूफान
काळ (सं.पु.)22(ख)	जमाना
काळजी (सं.स्त्री.)6(क)	चिंता
काळाबाजार (सं.पु.)2(ख)	काला बाजार
काळोख (सं.पु.)17(क)	अंधकार
कांजिण्या (सं.स्त्री.)12(ख)	बड़ी चेचक
कांडणे (सं.पु.)17(ख)	कूटना
कांदा (सं.पु.)17(ख)	प्याज
किमती (वि.)6(क)	कीमती, महँगा
किराणा (सं.पु.)2(क)	किराना सामान, किराना माल
किंकाळी (सं.स्त्री.)3(ख)	चीख
कुजबुज (सं.स्त्री.)3(ख)	फुसफुसाहट
कुठे (क्रि.वि.)9(क)10(क)16(क)	कहाँ
कुत्रा (सं.पु/संज्ञा नपुं.)1(ख)	कुत्ता
कुवत (सं.स्त्री.)13(क)	क्षमता
कुंकू (सं.नपुं.)5(क)	सिंदूर, कुंकुम
कुंड (सं.नपुं.)6(क)	कुंड, जलाशय
कूड (सं.नपुं.)17(ख)	टाटकी गोबर और मिट्टीसे लिपी हुई दिवार
कृपा (सं.स्त्री.)24(क)	कृपा, मेहरबानी
केवढा (वि.)19(क)	कितना
केवळ (वि.)8(ख)	केवल
कैवारी (सं.पु.)22(ख)	हिमायती
कोण (सर्वनाम)1(क),2(क)	कौन

कोसळणे (क्रि.)16(क)	गिरना
कौल (सं.नपुं.)20(ख)	खपरैल

ख

खडक (सं.पु.)8(क)	चट्टान
खरचटणे (क्रि.)16(क)	खरोचें आना
खरा (वि.)20(क)21(ख)	सच
खरोखर (क्रि.वि)16(क)	सचमुच
खर्च (सं.पु.)7(ख)	खर्च
खळकळून (क्रि.वि)3(ख)	खिलखिलाकर
खाई (सं.स्त्री.)22(ख)	पहाड
खाऊ (सं.पु.)1(क)	मिठाई
खाद्यपदार्थ (सं.पु.)6(क)	खाने-पीनेकी चीजें
खालील (वि.)24(ख)	निम्नलिखित
खास (वि.)8(ख)	खास
खांदा (सं.पु.)16(क)	कंधा
खिसा (सं.पु.)2(ख)	जेब
खुश (क्रि.वि.)21(क)	खुश, समाधानी, आनंदी
खूप (वि.)1(क)5(क)6(ख) 8(ख)17(क)21(क)	बहुत, भरपूर, खूब
खेडे (सं.नपुं.)12(क)	गाँव
खेळ (सं.पु.)3(क)	खेल
खेळणे (क्रि.)7(क)	खेलना
खोखो (सं.पु.)3(क)	खो खो का खेल
खोपटी (सं.स्त्री.)17(ख)	छोटीसी झोपड़ी
खोरे (सं.नपुं.)20(ख)	वादी, घाटी
खोल (वि.)6(क)	गहरी

ग

गजबज (सं.स्त्री.)9(ख)	भीड़, शोरगुल
गजरा (सं.पु.)9(ख)	गजरा
गड (सं.पु.)6(ख)	गढ़
गणपती (सं.पु.)6(क)	गणेशजी
गणवेष (सं.पु.)7(ख)	वर्दी
गप्प (वि.)8(क)	चुप
गप्पागोष्टी (सं.स्त्री.ब.व.)20(क)	बातें
गप्पा मारणे (क्रि.)10(क)	बातें करना
गरम (वि.)14(क)	गरम
गर्दी (सं.स्त्री.)9(ख)	भीड़
गळणे (क्रि.)12(ख)	गिरना, बहना
गंमत (सं.स्त्री.)15(ख)19(क)	मज़ाक, मौज-मस्ती, मज़ाकवाली बात
गाणे (सं.नपुं./क्रि.)9(ख)20(क)	गीत, गाना
गालगुंड (सं.स्त्री.)12(ख)	गलसुआ
गाव (सं.नपुं.)5(ख)	गाँव, बस्ती
गावठी (वि.)5(ख)	देशी
गिल्ला (सं.पु.)17(ख)	शोर
गिळणे (क्रि.)17(क)	निगलना
गुडगुडी (सं.स्त्री.)20(ख)	गुडगुडी (हुक्का)
गुढी (सं.स्त्री.)19(क)	गुड़ी
गुढीपाडवा (सं.पु.)19(क)	वर्षप्रतिपदा-हिंदु वर्ष का पहला दिन
गुण्यागोविंदाने (क्रि.वि.)23(क)	राजीखुशीसे, सुखपूर्वक
गुपित (सं.नपुं.)15(क)	गुप्तबात, राज़
गुराखी (सं.पु.)17(ख)	चरवाहा
गुळगुळीत (वि.)4(ख)	गोलमोल, अस्पष्ट
गूळ (सं.पु.)2(क)	गुड़
गृहपाठ (सं.पु.)7(क)	गृहकार्य
गैरसमजूत (सं.स्त्री.)12(ख)	भूल
गोड (वि.)6(ख)18(क)	मीठा, मधुर
गोवर (सं.पु.)12(ख)	चेचक
गोष्ट (सं.स्त्री.)3(क)14(ख)	वस्तु, पदार्थ, बात, कहानी
गोळा करणे (क्रि.)5(क)	इकट्ठा करना
गोंधळ (सं.पु.)3(क)	हड़बड़ी
गौरव (सं.पु.)3(ख)	गौरव

ग्राहक (सं.पु.)2(क)	ग्राहक

घ

घडणे (क्रि.)12(क)	होना, घटीत होना
घमघमाट (सं.पु.)5(ख)	महक
घर (सं.नपुं.)1(ख)10(क) 13(क)21(ख)	मकान
घरमालक (सं.पु.)17(ख)	मकान मालिक
घर सोडणे (क्रि.)10(ख)	घर से निकलना
घाईगर्दी (सं.स्त्री.)9(क)	जल्दबाजी
घाट (सं.पु.)6(क)	घाटी
घाबरणे (क्रि.)14(क)14(ख)	घबराना
घेणे (क्रि.)1(क)5(ख)8 (क)11(क)17(क)	लेना

च

चकचकाट (सं.पु.)9(ख)	चकाचौंध
चकरा मारणे (क्रि.)7(ख)	चक्कर लगाना
चढणे (क्रि.)17(ख)	चढ़ना
चर्चा (सं.स्त्री.)4(क)	चर्चा
चलणे (क्रि.)5(क)	चलना
चव (सं.स्त्री.)19(क)	स्वाद
चव पाहणे (क्रि.)14(ख)	चखना
चहापाणी (सं.नपुं.)7(क)	चायपानी
चहाबिहा (सं.पु.)1(क)	चायवाय
चळवळ (सं.स्त्री.)17(क)	आंदोलन
चादर (सं.स्त्री.)19(क)	चादर
चार (वि.)21(ख)	चार
चारा (सं.पु.)20(ख)	घास, चारा
चाहता वर्ग (सं.पु.)8(ख)11(क)	प्रशंसक
चांगला (वि.)8(ख)	अच्छा
चिखल (सं.पु.)20(ख)	दलदल, कीचड़

चिडणे (क्रि.)19(ख)	चीढ़ना
चित्र (सं.नपुं.)20(क)	चित्र
चित्रकला (सं.स्त्री.)7(ख)	चित्रकला
चित्रपट (सं.पु.)8(ख)	चित्रपट, फिल्म
चिपाड (सं.नपुं.)12(ख)	आँख का कीचड़
चिवडा (सं.पु.)1(क)10(क)	चिवडा
चिंच (सं.स्त्री.)5(क)	इमली
चीड (सं.स्त्री.)17(क)	चिढ़
चीप (सं.स्त्री.)20(ख)	पत्थर का टुकडा
चुकणे (क्रि.)20(क)	भूल करना
चूक (सं.स्त्री.)23(क)	गलती, चूक
चोहीकडे (वि.)6(ख)	चारों तरफ
चौकशी (सं.स्त्री.)24(क)	पूछताछ

छ

छटा (सं.स्त्री.)5(ख)	छटा
छत (सं.नपुं.)20(ख)	छत
छळ करणे (क्रि.)19(ख)	तकलीफ देना
छंद (सं.पु.)21(क)	शौक
छाती (सं.स्त्री.)17(ख)	छाती
छान (वि.)1(क)5(क)	खुबसुरत, सुंदर, अच्छा, बढिया
छे (अ.)20(क)	नहीं
छोटा (वि.)3(ख)13(क)	छोटा
छोटुकली (वि.)1(क)	छुटकी

ज

जखमी होणे (क्रि.)16(क)	जख्मी होना
जखमेवर मीठ चोळणे (वा.प्र.)12(ख)	घावपर नमक छिडकना
जग (सं.नपुं.)11(क)11(ख)	दुनिया, संसार
जगणे (क्रि.)17(क)21(ख)	जीना
जगभर (क्रि.वि.)8(ख)	दुनिया भर
जबाबदारी (सं.स्त्री.)21(क)	जिम्मेदारी

जमणे (क्रि.)7(क)13(ख)	कर पाना
जरा (क्रि.वि)1(क)10(क)	थोड़ा, जरा
जरूरी (सं.स्त्री.)16(ख)	जरूरी
जवळच (क्रि.वि.)13(क)	पास ही
जवळजवळ (क्रि.वि.)16(क)	करीब करीब
जवळपास (क्रि.वि.)13(क)	नजदीक
जंगल (सं.नपुं.)8(क)17(ख)	जंगल
जागा (सं.स्त्री.)3(क)6(क)	जगह
जाड (वि.)17(ख)	मोटा
जाणीव (सं.स्त्री.)12(ख)17(क)	बोध, भान, एहसास, ज्ञान
जाणे (क्रि.)5(क)8(क)13(क)	जाना, निकल जाना
जादातर (वि.)12(ख)	ज्यादातर
जास्त (वि.)20(ख)	ज्यादा
जाळे (सं.नपुं.)22(ख)	जाल
जिणे (सं.नपुं.)17(क)	जीवन
जिना (सं.पु.)14(क)	सीढ़ियाँ
जिरे (सं.नपुं.)2(क)	जीरा
जिल्हा (सं.पु.)17(क)	जिला
जिवंत (वि.)8(ख)18(क)	जीता जागता, जीवंत, ज्वलंत
जीभ कोरडी पडणे (वा.प्र.)16(ख)	जबान सुखना
जीव (सं.पु.)16(क)	जान
जीव भांड्यात पडणे (वा.प्र.)14(क)	जान में जान आना
जीव मुठीत धरणे (वा.प्र.) 16(क)20(ख)	जीथ मकर रखना, जी (दिल) थामकर
जुई (सं.स्त्री.)5(क)	जूही
जुजबी (वि.)12(ख)	छोटा मोटा
जुनं पडकं (वि.)6(क)	जीर्णशीर्ण
जुना (वि.)8(ख)	पुराना
जुनी (वि.)15(क)	पुरानी
जुलाब (सं.पु.)14(क)	दस्त
जुळवून घेणे (क्रि.)12(क)	निभाना, समझौता करना
जेवण (सं.नपुं.)3(क)22(क)	खाना, भोजन
जोडणे (क्रि.)23(ख)	जोड़ना
जोम (सं.पु.)8(ख)	जोश, उत्साह

झ

झगमगते (वि.)11(क)	जगमगाते
झटणे (क्रि.)22(ख)	जुटना, खुब तकलीफ उठाना
झटपट (क्रि.वि.)7(क)	झटपट, फटाफट
झपझप (क्रि.वि.)17(ख)	तीव्र गतीसे
झरा (सं.पु.)11(ख)	झरना
झाड (सं.नपुं.)5(क)	पेड
झाडी (सं.स्त्री.)6(क)	झाडियाँ
झुडूप (सं.नपुं.)5(ख)	झाडी
झुळूक (सं.स्त्री.)6(क)	हवा का झोंका
झेंडू (सं.पु.)5(क)	गेंदा
झोप (सं.स्त्री.)16(क)20(क)	नींद

ट

टेकडी (सं.स्त्री.)6(ख)11(क)	पहाडी
टेकणे (क्रि.)17(ख)	टिकना
टेकाड (सं.नपुं.)6(ख)	टीला
टेबल (सं.नपुं.)3(क)8(क)	टेबल, मेज़

ठ

ठणका (सं.पु.)14(क)	तीखादर्द
ठाम (वि.)9(क)	दृढ
ठिकाण (सं.नपुं.)22(क)	स्थळ
ठिणगी (सं.स्त्री.)17(क)	चिगारी
ठीक (वि.)1(क)	ठीक
ठेंगणा (वि.)5(ख)20(ख)	ठिगना, नाटा
ठेंगणाठुसका (वि.)5(ख)	ठिगना, नाटा

ड

डबा (सं.पु.)7(ख)	डिब्बा
डुलकी (सं.स्त्री.)16(क)	झपकी
डेरेदार (वि.)5(ख)6(क)	घनी छायावाला, घना
डोलणे (क्रि.)11(क)	डोलना
डोळा (सं.पु.)3(ख)17(क)	आँख
डोळे भरुन येणे (वा.प्र.)15(ख)	आँख भर आना
डोंगर (सं.पु.)6(क)6(ख)22(ख)	पहाड, पर्वत

ढ

ढेप (सं.स्त्री.)2(क)	भेली
ढेरपोट (वि.)12(ख)	बडापेट

त

तक्रार (सं.स्त्री.)4(क)4(ख)	शिकायत
तब्येत (सं.स्त्री.)12(क)	तबीयत
तयार (वि.)8(ख)	तैयार
तरीही (क्रि.वि.)2(ख)13(क)	फिर भी
तरुण (वि.)9(क)11(क)23(ख)	तरुण, युवक, युवा
तर्फे (अ.)24(ख)	की ओर से
तऱ्हा (सं.स्त्री.)5(ख)10(ख)	प्रकार, रीति
तळमजला (सं.पु.)29(ख)	निचली मंजिल
तंत्र (सं.पु.)8(ख)	तंत्र
ताई (सं.स्त्री./संबोधन)2(क)	बहन, बहन के लिए संबोधन
ताजा (वि.)12(क)	ताज़ा
ताप (सं.पु.)14(क)	बुखार
ताव मारणे (वा.प्र.)22(क)	स्वाद लेना
तास (सं.पु.)13(क)18(क)	घंटा
तांदूळ (सं.पु.)2(क)	चावल
तांबडं फुटणे (वा.प्र)17(क)	सूरज निकलना, दिन निकलना
तिखट (वि.)2(क)	तीखा
ती (सर्व.)11(क)	वह
तीर्थक्षेत्र (सं.नपुं.)1(क)	तीर्थस्थान

तीन (वि.)10(ख)	तीन
तुम्ही (सर्वनाम)1(क)8(क)	आप
तू (सर्वनाम)1(क)	तू
तूर (सं.स्त्री.)2(क)	अरहर
तृप्त (वि.)3(ख)21(क)	संतुष्ट, तृप्त
ते (सर्वनाम)1(क)20(क)	वह
तेढ (सं.स्त्री.)23(क)	दुश्मनी
तेरडा (सं.पु.)5(क)	गुलमेहँदी
तो (सर्वनाम)1(ख)	वह
तोडणे (क्रि.)5(क)23(ख)	तोडना
तोंड (सं.नपुं.)14(ख)	मुँह
त्रास (सं.पु.)10(क)18(क)	असुविधा, कष्ट, तकलीफ
त्रिवेणी संगम (वि.)1(क)	त्रिवेणीसंगम, तीन नदियों का संगम
त्रैमासिक (वि.)4(क)	त्रैमासिक
त्वरित (क्रि.वि.)24(ख)	जल्दी से

थ

थकणे (क्रि.)10(क)21(क)	थकना
थरकाप (सं.पु.)16(क)	काँपना
थंडगार (वि.)5(ख)6(क)	बहुत ठंडा, ठंडा-ठंडा
थांबणे (क्रि.)10(क)	रुकना
थेंब (सं.पु.)12(ख)	बूँद
थोडा (वि.)23(ख)	कम
थोडफार (वि.)21(क)	थोडाबहुत
थोर (वि.)19(ख)	महान

द

दखल (क्रि.वि.)17(ख)	परवाह
दगड (सं.पु.)20(ख)	पत्थर
दगावणे (क्रि.)16(क)	चल बसना
दर्जा (सं.पु.)8(ख)	दर्जा, श्रेणी
दडपण (सं.नपुं.)21(ख)	बोझ

दणादण (वि.)3(ख)	दनादन
दमणे (क्रि.)7(ख)	थकना
दाखविणे (क्रि.)3(क)13(क)22(क)	दिखाना
दागिना (सं.पु.)9(ख)	गहना, आभूषण
दाट (वि.)6(क)20(ख)	घना
दारिद्र्य (सं.नपुं.)17(क)	गरीबी
दांडा (सं.पु.)16(क)	डंडा
दिवस-दिवस (क्रि.वि.)12(क)	कई कई दिन
दिवसभर (क्रि.वि.)7(क)	दिनभर
दिसणे (क्रि.)9(क)	दिखाई देना
दीडपाव (वि.)2(क)	देढ़पाव
दुकान (सं.नपुं.)2(क)	दुकान
दुखावणे (क्रि.)14(क)	दर्द होना
दुप्पट (वि.)21(क)	दुगना
दुर्लक्ष (सं.नपुं.)14(क)	अनदेखा
दुसरा (वि.)23(ख)	दूसरा
दूध (सं.नपुं.)1(क)20(क)	दूध
दूर (क्रि.वि.)13(क)14(क)	दूर
दृष्टी (सं.स्त्री.)11(क)	दृष्टि
देऊळ (सं.नपुं.)6(क)	मंदिर
देणगी (सं.स्त्री.)20(क)	देन
देणे (क्रि)1(क)2(क)23(ख)	देना
देवाणघेवाण (सं.स्त्री.)23(ख)	आदानप्रदान, बढ़ावा देना
दैव (सं.नपुं.)21(ख)	भाग्य
दोन (वि.)5(क)8(क)13(ख)	दो
दौरा (सं.पु.)15(क)22(क)	दौरा

ध

धक्का बसणे (वा.प्र.)15(क)	दंग रह जाना
धड (वि.)12(क)	ठीक तरह से
धन्य (वि.)3(ख)	धन्य
धबधबा (सं.पु.)6(क)	जल प्रपात
धसास लागणे (वा.प्र)23(ख)	पूरा करना

धस्स होणे (वा.प्र.)17(ख)	धक् रह जाना
धाकधूक (सं.स्त्री.)16(क)	धक धक
धाडकन (क्रि.वि.)14(क)	धड़ाम से
धान्य (सं.नपुं.)20(ख)	धान
धारण करणे (क्रि.)23(क)	धारण करना
धावणे (क्रि.)11(क)16(ख)	दौड़ना
धांदल (सं.स्त्री.)21(क)	हड़बड़ी
धुळीत खेळणे (वा.प्र.)12(ख)	धूल में खेलना
धूळ झटकणे (वा.प्र.)17(क)	जागरुक करना
धोका (सं.पु.)16(क)23(ख)	धोखा
ध्येय (सं.नपुं.)4(ख)	लक्ष्य
ध्येयवादी (वि.)12(क)	आदर्शवादी

न

नको (क्रि.वि.)2(क)	नहीं
नक्की (क्रि.वि.)12(क)	अवश्य, जरूर
नख (सं.नपुं.)5(ख)	नाखून
नटणे (क्रि.)9(ख)	सजना
नमस्कार (सं.पु.)1(क)	नमस्कार, नमस्ते
नवनवीन (वि.)8(ख)	नई नई
नवल (सं.नपुं.)18(क)	आश्चर्य
नवा (वि.)1(क)	नया
नवीन (वि.)13(क)	नई
नहाणे (क्रि.)11(क)	नहाना
नंतर (क्रि.वि.)13(ख)	बाद में
नाकी नऊ येणे (वा.प्र.)16(ख)	नाक में दम होना
नागमोडी (वि.)17(ख)20(ख)	बलखाती
नाच (सं.पु.)8(क)	नाच
नाचगाणे (सं.नपुं.)8(क)	नाचगाना
नाटक (सं.नपुं.)21(क)	नाटक
नात (सं.स्त्री.)1(क)	पोती, नातिन
नातवंडं (सं.नपुं.)9(क)17(ख)	नातीपोती
नातेवाईक (सं.पु.)9(क)	रिश्तेदार

नाव (सं.नपुं.)1(क)22(ख)	नाम
नाही (क्रि.वि.)1(क)2(क)13(ख)	नहीं
नांदणे (क्रि.)23(क)	सुखसे रहना, (मराठी में 'नांदणे' का अर्थ एक विशेष रूप में होता हैं। लड़की जब ससुराल में राजीखुशी से रह रही होती है तब कहा जाता है"मुलगी सुखात नांदत आहे")
निकटवर्ती (वि.)23(ख)	पासवाले
निकाल (स.पुं.)23(ख)	फल, परिणाम, नतीजा
निखळ (वि.)22(ख)	सिर्फ
निगडीत (वि.)6(ख)	जुड़ी हुई
नितळ (वि.)6(क)	निर्मल
निदान (सं.नपुं.)8(क)	कम से कम
निमित्त (सं.नपुं.)17(क)	निमित्त
निमुळता (वि.)5(ख)	नुकीला
नियंत्रण (सं.नपुं.)21(ख)	रोक
निराळा (वि.)4(ख)10(ख)12(क)21(क)	निराला, अलग, अनोखा
निरोप (सं.पु.)15(ख)	बिदाई संदेश
निर्णय (सं.पु.)14(ख)	निर्णय
निर्धास्त (क्रि.वि.)16(क)	निश्चींत
निःश्वास (स.पु.)10(ख)16(क)	चैन की सांस
निसर्ग (सं.पु.)8(क)	प्रकृति
नीट (वि.)3(क)	ठीकसे
नुकता (वि.)14(ख)16(क)20(क)	अभी अभी, हाल ही में
नुसता (वि./क्रि.वि.)3(क)6(ख)12(ख)	सिर्फ, केवल
नेमका (वि.)15(क)	ठीक
नेसणे (क्रि.)9(ख)	पहनना
नेहमी (क्रि.वि)2(क)4(क) 4(ख)8(क)9(ख)16(ख)	सदैव, हमेशा, सदा
नोकरी (सं.स्त्री.)18(क)21(क)	नौकरी
न्हाणी घर (सं.नपुं.)13(क)	स्नान घर

प

पटकन (क्रि.वि.)14(ख)	झट से

पटणे (क्रि.)13(क)	पसंद आना, अच्छा लगना
पट्टा (सं.पु.)8(क)	पट्टा
पडणे (क्रि.)14(क)	पडना, गिरना
पडल्या पडल्या (क्रि.वि)15(क)	पड़े पड़े
पण (अ.)4(ख)21(क)	पर, लेकिन
पत्र (सं.नपुं.)10(क)	पत्र, चिट्ठी
पथनाट्य (सं.नपुं.)20(क)	नुक्कड नाटक
पदरी निराशा येणे (वा.प्र.)12(ख)	झोली में निराशा आना
परडी (सं.स्त्री.)5(क)	डलिया
परत (क्रि.वि.)5(क)20(क)	वापस
परवा (क्रि.वि.)18(क)	परसों
परवानगी (सं.स्त्री.)21(क)	अनुमति
परिणाम (सं.पु.)18(ख)20(क)	असर
परिपत्रक (सं.नपुं.)4(क)	परिपत्र
पसरट (वि.)20(ख)	चिपटा (परैल)
पसारा करणे (क्रि.)10(ख)	पसारा करना
पहाट (सं.स्त्री.)7(ख)	उषाकाल
पळवणे (क्रि.)17(क)	उठा के ले जाना
पंचावन्न (वि.)21(ख)	पचपन
पाऊस (सं.पु.)6(क)	बारिश, वर्षा
पाठ करणे (क्रि.)18(ख)	याद करना
पाठकोरा (वि.)15(क)	एकतरफ कोरा
पाठविणे (क्रि.)4(क)24(क)	भेजना
पाठीमागे (क्रि.वि.)3(क)11(क)	पीछे की तरफ
पाढा (सं.पु.)3(ख)	पहाड़ा
पाणी (सं.नपुं.)1(क)	पानी
पान (सं.नपुं.)5(क)	पत्ता
पाय (सं.पु.)10(क)14(क)	पैर, पाँव
पायवाट (सं.स्त्री.)17(ख)	पगडंडी
पाया (सं.पु.)23(क)	नींव, बुनियाद
पारिजातक (सं.नपुं.)5(क)	हरसिंगार
पालक (सं.पु.)7(ख)	पालक, मातापिता
पाव (वि.)2(क)	पाव
पावणेदोन (वि.)2(क)	पौने दो

पावन (वि.)22(ख)	पवित्र
पावसाळा (सं.पु.)6(क)	बारिश का मौसम
पाहgणे (क्रि.)1(क)8(क)9(ख)22(क)	देखना
पाहायला पाहिजे (क्रि.)5(ख)	देखना चाहिए
पाहणा (सं.पु.)22(क)	मेहमान
पांढरा (वि.)5(क)	सफेद
पांढराशुभ्र (वि.)5(क)14(ख)	शुभ्रसफेद
पिल्लू (सं.नपुं.)1(ख)	पिल्ला
पिवळसर (वि.)5(क)	हल्का पीला
पिवळाधमक (वि.)5(क)	गहरा पीला
पिंपळ (सं.पु.)5(क)	पीपल
पुढे (अ.)4(ख)	आगे
पुरणे (क्रि.)8(क)	काफी होना
पुरस्कार (सं.पु.)18(क)	पुरस्कार
पुरेल एवढा (वि.)17(क)	काफी
पुरेसे (वि.)17(ख)	पर्याप्त
पुस्तक (सं.नपुं.)3(क)	पुस्तक, क़िताब
पूर्ण (वि.)1(क)	पूरा
पृथ्वी प्रदक्षिणा (सं.स्त्री.)8(क)	पृथ्वी की परिक्रमा
पेज (सं.स्त्री.)17(ख)	माँड
पेटणे (क्रि.)17(ख)	जलना
पेरु (सं.पु.)5(क)	अमरुद
पेंढा (सं.पु.)20(ख)	पुआल, पयाल
पोट खपाटीला जाणे (वा.प्र.)14(क)	पेट पीठ से लगना
पोटभर (क्रि.वि.)10(क)	भरपेट
पोटासाठी दाही दिशा (वा.प्र.)9(क)	रोजी रोटी के लिए कहीं भी जाना
पोतं (सं.नपुं.)2(क)	बोरी
पोरका (वि.)19(ख)	अनाथ
पोहोचणे (क्रि.)16(ख)	पहुँचना
प्रकार (सं.पु.)5(क)	प्रकार
प्रगती (सं.स्त्री.)4(ख)	प्रगति
प्रगतिपुस्तक (सं.नपुं.)3(क)	प्रगतिपत्र
प्रचंड (वि.)5(ख)16(ख)	प्रचंड, विशाल
प्रतिबिंब (सं.नपुं.)18(ख)	परछाँई

प्रत्यक्ष (वि.)12(क)	वास्तव
प्रत्येक (वि.)2(ख)	हर एक
प्रभावी (वि.)20(क)	प्रभावकारी
प्रयत्न (सं.पु.)4(ख)	प्रयत्न
प्रवाह (सं.पु.)18(ख)	प्रवाह
प्रसंग (सं.पु.)16(क)	घटना
प्रसिद्ध (वि.)6(ख)	प्रसिद्ध
प्राण (सं.पु.)6(ख)	प्राण, जान
प्रेम (सं.नपुं.)18(क)	प्रेम, प्यार
प्रेक्षक (सं.पु.)8(ख)	दर्शक
प्रोत्साहन (सं.नपुं.)23(ख)	प्रोत्साहन

फ

फक्त (क्रि.वि.)1(क)2(ख)	सिर्फ
फजिती (सं.स्त्री.)14(ख)15(ख)	फजीहत
फरक (सं.पु.)17(ख)23(ख)	फर्क, अंतर, भिन्नता
फळ (सं.नपुं.)5(ख)	फल
फाईल (सं.स्त्री.)4(क)	फाइल
फायदा (सं.पु.)7(क)	फायदा
फार (वि.)2(क)2(ख)8(ख)13(क)14(क)14(ख)	ज्यादा, बहुत
फिरती (सं.स्त्री.)19(क)	दौरा
फोड (सं.स्त्री.)17(ख)	टुकड़ा

ब

बघणे (क्रि.)1(क)2(क)8(क)19(क)	देखना
बदल (सं.पु.)4(क)	बदलाव, परिवर्तन
बदलणे (क्रि.)21(ख)	बदलना
बहीण (सं.स्त्री.)1(ख)9(क)	बहन
बहुगुणी (वि.)13(क)	बहुत गुणोंवाली
बहुतेक (वि.)16(क)	शायद
बहुधा (क्रि.वि.)14(ख)17(ख)	बहुधा, शायद, ज्यादातर
बर्फ (सं.पु.)11(ख)	बर्फ़

बरे (सं.नपुं.)1(क)	अच्छा
बरोबर (वि.)5(क)12(क)18(क)	साथमें, ठीक, साथ, साथसाथ
बलवत्तर (वि.)21(ख)	जोरदार
बसणे (क्रि.)1(क)	बैठना
बंड (सं.नपुं.)17(क)	विद्रोह
बंदी (सं.स्त्री.)19(क)	प्रतिबंध
बंधुप्रेम (सं.नपुं.)3(ख)	भाई का प्रेम
बाई (सं.स्त्री.)8(क)	श्रीमतीजी
बाग (सं.स्त्री.)5(क)8(क)	बगीचा
बाजार (सं.पु.)2(ख)7(क)	मंडी, बजार
बाजू (सं.स्त्री.)4(क)	बाजू
बाटली (सं.स्त्री.)14(ख)	बोतल
बातमी (सं.स्त्री.)16(क)23(क)	खबर, समाचार
बाबा (सं.पु./संबोधन)1(क)	पिताजी, पिताजी के लिए संबोधन
बायको (सं.स्त्री.)1(क)	पत्नी
बाहुली (सं.स्त्री.)1(क)	गुड़िया
बाहेर (क्रि.वि./अ.)13(क)	बाहर
बाळ (सं.नपुं./सं.पु./संबोधन)1(क)	बच्चा, बेटा (बेटे के लिए संबोधन)
बांधणी (सं.स्त्री.)20(ख)	बनावट
बिचारा (वि.)8(क)	बेचारा
बुडणे (क्रि.)17(ख)	डुबना
बेचाळीस (वि.)2(क)	बयालीस
बेत (सं.पु.)21(ख)22(क)	योजना, खानेका पक्वान्न
बेधडक (क्रि.वि.)20(क)	बिना झिझक
बैठक (सं.स्त्री.)13(क)	बैठक
बोलणे (क्रि.)20(क)24(क)	बोलना
बोलावणे (क्रि.)21(ख)	बुलाना

भ

भटकंती (सं.स्त्री.)20(क)	भटकन
भयंकर (वि.)9(क)16(ख)	भयंकर, भीषण
भरधाव (क्रि.वि.)16(क)	तेज
भरपूर (वि.)6(क)7(क)	भरपूर, काफी

भरमसाठ (क्रि.वि.)2(ख)7(ख)	भरमार, बहुत
भराभर (क्रि.वि.)5(क)	जल्दी जल्दी
भरुन काढणे (वा.प्र.)12(क)	वसूलना
भव्य (वि.)19(क)	विशाल
भाऊजी (सं.पु./संबोधन)12(क)	भाईसाहब, देवर, देवर के लिए संबोधन
भाग पडणे (क्रि.)21(क)	कोई भी बात सख्ती से करनी पडना
भागवणे (क्रि.)21(ख)	निभाना, चलाना (खर्च)
भाजी (सं.स्त्री.)7(क)12(क)	सब्जी
भाडे (सं.नपुं.)13(क)	किराया
भात (सं.पु./नपुं.)17(क)	धान, चावल
भाराभर (वि.)7(ख)	बहुत अधिक
भाव (सं.पु.)2(क)2(ख)	कीमत, भाव
भाव खाणे (वा.प्र.)3(क)	ज्यादा समझना
भाषण (सं.नपुं.)20(क)	भाषण
भाषांतर (सं.नपुं.)18(क)23(ख)	अनुवाद
भांडण (सं.नपुं.)3(क)	झगड़ा
भांबावणे (क्रि.)16(ख)	भौंचक्का रह जाना
भिजणे (क्रि.)6(क)	भीगना, गीला होना
भिंत (सं.स्त्री.)3(ख)	दीवार
भीती (सं.स्त्री.)23(क)	डर, भय
भेटणे (क्रि.)11(क)12(क)	मिलना
भोकाड पसरणे (वा.प्र.)14(ख)	धाड़ मार कर रोना
भ्रतार (सं.पु.)18(क)	नवरा, पति, भरतार

म

मग (क्रि.वि.)20(क)	फिर
मग्न (वि.)20(क)	मगन, व्यस्त
मजूरी (सं.स्त्री.)17(क)	मजदूरी
मत (सं.नपुं.)9(क)	विचार
मदत (सं.स्त्री.)7(क)13(ख)	मदद
मधुर (वि.)6(क)	मधुर, मीठा
मन (सं.नपुं.)10(ख)	मन
मनावर घेणे (वा.प्र.)15(क)	करने की ठान लेना

मनासारखे (वि.)13(ख)	मनचाहा
मगरळून पडणे (क्रि.)17(क)	बेजान होना
मर्यादा (सं.स्त्री.)21(ख)	अवधि, सीमा
मर्यादित (वि.)17(क)	सीमित
मलम (सं.नपुं.)14(क)	मरहम
मलूल होणे (वा.प्र.)14(क)	फीका पड़ जाना
मस्त (वि.)8(क)13(ख)	मजेदार, अच्छा
महत्त्व (सं.नपुं.)12(क)	महत्त्व
महाग (वि.)2(क)7(ख)	महँगा
महागाई (सं.स्त्री.)2(ख)	मँहंगाई
मळमळणे (क्रि.)10(क)	जी मिचलाना
मंगल कार्यालय (सं.नपुं.)9(ख)	विवाहभवन
मंडई (सं.स्त्री.)2(ख)	बाजार
मंडळी (सं.स्त्री.)12(क)	मंडली
मागणी (सं.स्त्री.)23(ख)	माँग
मागवणे (क्रि.)4(क)	प्राप्त करना, आमंत्रित करना, मंगवाना
मागे (क्रि.वि.)7(क)	पीछे, कमजोर
माझा (सर्वनाम)1(क)1(ख)4(क)	मेरा, मेरी
माझे आई (संबोधन)8(क)	मेरी माँ
माणूसकी (सं.स्त्री.)2(ख)20(क)	मानवता, इन्सानियत
मानणे (क्रि.)21(ख)	मानना
मान तुकवणे (वा.प्र.)17(क)	सिर झुकाना
मार्ग (सं.पु.)15(क)	राह, रास्ता, पथ
मार्गदर्शन (सं.नपुं.)15(क)	मार्गदर्शन
मारामारी (सं.स्त्री.)8(क)	मारपीट
मालक (सं.पु.)10(ख)	मालिक
मालकीण (सं.स्त्री.)17(ख)	मालकिन
मावशी (सं.स्त्री.)1(क)	मौसी
मावळणे (क्रि.)8(ख)11(क)	अस्त होना
माहिती (सं.स्त्री.)9(क)20(क)24(ख)	जानकारी
माहितीपत्रक (सं.नपुं.)14(ख)	सूचनापत्रक
माहीत असणे (क्रि.)3(क)	मालूम होना
माळा (सं.पु.)15(क)	ऊपरी
मांडणे (क्रि.)23(ख)	रखना

मिठी (सं.स्त्री.)20(ख)	अलिंगन
मित्र (सं.पु.)1(क)	मित्र, दोस्त
मित्रमंडळ (सं.नपुं.)11(ख)	मित्र मंडली
मिसळणे (क्रि.)20(क)	घुलमिल जाना, हिलमिल जाना
मिळविणे (क्रि.)20(क)	प्राप्त करना
मी (सर्वनाम)1(क)	मैं
मीठ (सं.नपुं.)17(ख)	नमक
मुकणे (क्रि.)19(क)	वंचित रहना
मुकाट्याने (क्रि.वि.)17(क)	चुपचाप
मुकामार (सं.पु.)14(क)	गुम चोट, अंदरुनी चोट
मुरगळणे (क्रि.)14(क)	मोच आना
मुलगा (सं.पु.)1(ख)	लड़का, बेटा
मुलगी (सं.स्त्री.)9(क)	लड़की, बेटी
मुलाखत (सं.स्त्री.)11(क)	मुलाकात, साक्षात्कार
मुसळ (सं.नपुं.)20(ख)	मूसल
मुसळधार (वि.)6(क)	मूसलाधार
मूठ (सं.स्त्री.)5(ख)	मुट्ठी
मूठभर (वि.)17(क)22(ख)	मुट्ठीभर
मूर्ती (सं.स्त्री.)6(क)	मूर्ति
मूळ (सं.नपुं.)18(क)	मूल
मूळ गाव (सं.नपुं.)1(क)	मूलगाँव, जन्म स्थान
मैल (सं.पु.)12(क)	मील
मोठा (वि.)12(ख)	बड़ा
मोबदला (सं.पु.)17(क)	बदले में
मोह (सं.पु.)20(ख)	मोह, आकर्षण
मोहरी (सं.स्त्री.)2(क)	सरसों
मोहीम (सं.स्त्री.)15(क)	अभियान
म्हणजे (अ.)1(क)	मतलब, यानि
म्हणून (अ.)2(ख)	इसलिए
म्हातारा (वि.)20(ख)	बूढ़ा

य

यजमान (सं.पु.)15(क)	पति

यश (सं.नपुं.)17(क)	यश
यशस्वी (वि.)23(ख)	यशस्वी
यादी (सं.स्त्री.)2(क)19(ख)	पर्ची, सूची
यायला लागायचं (क्रि.)21(क)	आना पडता था
युग (सं.नपुं.)2(ख)	युग
येणे (क्रि.)1(क)8(क)	आना
योजना (सं.स्त्री.)4(ख)	योजना

र

रक्तचंदन (सं.नपुं.)14(क)	लालचंदन
रडारड (सं.स्त्री.)8(क)	रोनाधोना
रत्न (सं.नपुं.)10(ख)	रत्न
रमणे (क्रि.)12(क)	जी लगना, मन लगना
रस (सं.पु.)4(ख)	रुचि
रस घेणे (क्रि.)15(क)	रुचि लेना
रसाळपणा (सं.पु.)19(ख)	रसीलापन
रस्ता (सं.पु.)9(ख)	रास्ता, राह, पथ
रहाटगाडगे (सं.नपुं.)17(क)	दिनचक्र
रंगमंच (सं.पु.)3(ख)	रंगमंच
रंगाचा बेरंग (वा.प्र.)8(क)	रंगमे भंग, मजा किरकिरा
रंगून जाणे (क्रि.)11(क)	मग्न हो जाना
रागावणे (क्रि.)7(क)	नाराज होना, बुरा मानना
राजकारण (सं.नपुं.)8(क)	राजनीति
रात्र (सं.स्त्री.)9(ख)	रात
रात्रभर (क्रि.वि.)14(क)	रातभर
राहणे (क्रि.)15(क)20(ख)	रहना
रिकामा (वि.)11(क)	खाली
रुग्ण (सं.पु.)12(ख)	रोगी
रुंदी (सं.स्त्री.)20(ख)	चौड़ाई
रुढी (सं.स्त्री.)19(ख)	रुढ़ी
रुप (सं.नपुं.)20(ख)	रुप, स्वरुप
रोजी (सं.स्त्री.)12(ख)	रोजगार

ल

लग्नसराई (सं.स्त्री.)9(ख)	शादी का मौसम
लयबद्ध (वि.)20(ख)	लयबद्ध
लवकर (क्रि.वि.)2(क)13(ख)21(क)	जल्दी
लहान (वि.)16(ख)	छोटा
लळा लागणे (वा.प्र.)15(क)	से हिल जाना
लक्ष (सं.नपुं.)13(क)17(क)	ख्याल, ध्यान
लाजणे (क्रि.)15(क)	शर्माना
लाजाळू (वि.)15(ख)	शर्मिली
लालभडक (वि.)5(क)17(ख)	सूर्खलाल
लांब (वि./क्रि.वि.)12(क)	दूर
लिहिणे (क्रि.)24(क)	लिखना
लिंबू (सं.नपुं.)5(क)	नीबू
लेक (सं.पु.)10(ख)	बेटा, लड़का
लेक (सं.स्त्री.)10(ख)16(ख)	लड़की, बेटी
लोक (सं.नपुं.)20(क)	लोग
लोप होणे (क्रि.)23(क)	नष्ट होना, लुप्त होना

व

वक्तृत्व स्पर्धा (सं.स्त्री.)7(ख)	भाषण प्रतियोगिता
वचन (सं.नपुं.)23(ख)	वचन, वायदा
वड (सं.पु.)5(क)	वट, बरगद
वडील (सं.पु.)1(ख)	पिता
वधूवर सूचक मंडळ (सं.नपुं.)9(ख)	वधुवर जानकारी केंद्र
वय (सं.नपुं.)9(क)	उम्र, आयु
वरात (सं.स्त्री.)9(ख)	बारात
वर्ग (सं.पु.)1(ख)12(क)	कोर्स
वर्तणूक (सं.स्त्री.)18(ख)	बर्ताव
वर्तमानपत्र (सं.नपुं.)15(ख)	अखबार
वर्ष (सं.नपुं.)9(ख)17(क)	वर्ष, साल
वस्ती (सं.स्त्री.)13(क)17(क)20(क)	बस्ती
वस्तू (सं.स्त्री.)2(क)	चीज

वहिनी (सं.स्त्री.)1(क)12(क)	भाभी
वही (सं.स्त्री.)3(क)15(क)	कापी, पुस्तिका
वळण (सं.नपुं.)16(क)	मोड़
वा (अ.)1(क)	वाह
वाकणे (क्रि.)7(ख)17(ख)	झुक जाना
वागणे (क्रि.)21(क)	बर्ताव करना
वाचणे (क्रि.)2(क)8(क)13(क) 15(क)24(क)	पढ़ना, बचना
वाचनालय (सं.नपुं.)11(ख)	पुस्तकालय
वाचवणे (क्रि.)20(ख)	बचाना
वाट (सं.स्त्री.)17(ख)20(ख)	राह, रास्ता, पथ
वाटणे (क्रि.)10(क)21(क)	लगना, चाहना
वाट बघणे (क्रि.)8(क)	बाट जोहना
वाढणे (क्रि.)8(ख)21(ख)	बढ़ना, बढ़ जाना
वाद (सं.पु.)23(क)	वाद, वादविवाद
वापरणे (क्रि.)8(ख)	प्रयोग करना
वारंवार (क्रि.वि.)12(ख)	बारबार
वारा (सं.पु.)6(क)	हवा
वारी (सं.स्त्री.)20(क)	परिक्रमा
वार्ताहर (सं.पु.)11(क)	पत्रकार
वाव (सं.पु.)12(क)	अवसर
वास्तव (वि.)12(क)	वास्तविकता, यथार्थ
वाहता (वि.)11(ख)	बहता
वाहवा (अ.)8(ख)	वाह वाह
वाळीत टाकणे (वा.प्र.)19(ख)	बहिष्कृत करना
विचार (सं.पु.)4(क)14(क)	विचार, सोच
विचारणे (क्रि.)17(क)	पूछना
विजेता (सं.पु.)8(ख)	विजेता
विडी (सं.स्त्री.)17(क)	बीड़ी
विनंती (सं.स्त्री)12(क)	बिनंती
विनोदी (वि.)15(ख)	विनोदी, मज़ाकिया
विभाग (सं.पु.)4(क)	विभाग, भाग
विभागणे (क्रि.)23(क)	विभाजन
विशेष (वि.)22(क)	विशिष्ट

विशेषतः (क्रि.वि)12(क)	विशेषकर
विश्रांती (सं.स्त्री.)7(क)14(क)	आराम, विश्राम
विषबाधा (सं.स्त्री.)14(ख)	विष का असर
वीज (सं.स्त्री.)12(क)	बिजली
वेग (सं.पु.)16(क)	गति
वेगळा (वि.)12(ख)19(क)	अलग, निराला
वेचक (वि.)8(ख)	चुने हुए
वेठबिगारी (सं.स्त्री.)17(क)	बेगारी, बंधुआ मजदूर
वेडावाकडा (वि.)8(क)	आडातिरछा
वेळ (सं.पु.)7(क)16(ख)21(क)22(क)	वक्त, समय
वैराण (वि.)11(ख)	वीरान
वैरी (सं.पु.)23(ख)	दुश्मन
वैशिष्ट्य (सं.नपुं.)11(ख)	विशिष्टता
व्यत्यय (सं.पु.)10(क)	बाधा
व्याप (सं.पु.)12(क)	झमेला, कामों का ढेर

श

शक्तिशाली (वि.)22(ख)	बलवान, शक्तिशाली
शक्य (वि.)23(ख)	संभव
शपथ (सं.स्त्री.)15(ख)	शपथ, कसम
शाबासकी (सं.स्त्री.)3(ख)	शाबाशी
शाब्बास (अ.)1(क)	शाबाश
शासन (सं.नपुं.)23(ख)	शासन
शाळा (सं.स्त्री.)1(ख)	स्कूल
शांतता (सं.स्त्री.)10(ख)	शांती
शिकणे (क्रि.)12(क)15(क) 18(क)22(क)24(ख)	सीखना
शिकवणे (क्रि.)7(क)12(क)24(ख)	सिखाना
शिरणे (क्रि.)17(ख)	घुसना
शिव (सं.पु.)6(क)	शिवजी
शिवणकाम (सं.नपुं.)12(क)	सिलाई
शिवणटिपण (सं.नपुं.)20(ख)	सिलाई आदि
शिवाय (अ.)6(क)22(क)	अलावा, के सिवाय, अतिरिक्त

शिष्यवृत्ती (सं.स्त्री.)24(ख)	छात्रवृत्ति
शिक्षण (सं.नपुं.)4(क)7(ख)	शिक्षा
शिक्षा (सं.स्त्री.)3(ख)	सज़ा
शिंग (सं.नपुं)13(क)	सींग
शेकडो (वि.)9(ख)	सैंकड़ो
शेकोटी (सं.स्त्री.)17(ख)	अलाव
शेजारी (सं.पु.)16(क)	पड़ोसी
शेतकरी (सं.पु.)17(क)	किसान
शेवट (सं.पु.)23(क)	आखिर, अंत
शेवटचा (वि.)15(ख)	आखरी
शेवंती (सं.स्त्री.)5(ख)	सेवंती
शेंगदाणा (सं.पु.)2(क)	मूंगफली दाना
शोध (सं.पु.)3(क)	खोज
शोधून काढणे (क्रि.)15(क)	खोज निकालना
श्रीखंड (सं.नपुं.)22(क)	एक मिठाई जिसे दही और चीनी से बनाया जाता है। महाराष्ट्र में उसे पुरी के साथ खाते है।

स

सकाळ (सं.स्त्री.)7(ख)	प्रातःकाल, सवेरा
सक्ती (सं.स्त्री.)14(क)	जबरदस्ती
सगळा (वि.)2(क)3(क)4(क) 4(ख)5(क)10(क)	सारा, सब, सभी
सगेसोयरे (सं.पु.ब.व.)11(ख)	सगेसंबंधी
सचिव (सं.पु.)4(ख)	सचिव
सज्जा (सं.पु.)11(क)	छज्जा
सत्य (सं.नपुं.)2(ख)	सत्य, सच्चाई
सध्या (क्रि.वि.)2(क)6(क)	फिलहाल, आजकल, हालही में
सभा (सं.स्त्री.)4(क)	सभा, बैठक
सभोवती (क्रि.वि.)6(ख)	आसपास
समजणे (क्रि.)16(ख)24(क)	समझना
समजूत (सं.स्त्री.)14(ख)	धारणा, समझ
समाजकार्य (सं.नपुं.)7(ख)	समाजकार्य
समाजप्रबोधन (सं.नपुं.)19(क)	सामाजिक जागृति
समाधान (सं.नपुं.)15(ख)	समाधान

समाधी (सं.स्त्री.)6(ख)	समाधि
समारंभ (सं.पु.)7(ख)	समारोह
समुद्रकाठ (सं.पु.)8(क)	समुद्र का किनारा
समुद्रपट्टी (सं.स्त्री.)22(ख)	समुद्र का किनारा
समोर (क्रि.वि.)3(क)16(क)	सामने
सर्व (सर्वनाम)4(क)5(क)9(ख)	सब, सारे
सर्वसामान्य (वि.)8(ख)	जनसाधारण
सल्ला (सं.पु.)11(क)	सलाह
सवड (सं.स्त्री.)16(ख)	फुरसत
सवय (सं.स्त्री.)12(क)	आदत
सव्वा (वि.)2(क)	सवा
सहन करणे (क्रि.)14(क)	सह लेना
सहल (सं.स्त्री.)6(क)	सैर, पिकनिक
सही (सं.स्त्री.)3(क)	हस्ताक्षर
संकुचित (वि.)23(ख)	संकुचित, तंगनज़री
संख्या (सं.स्त्री.)8(ख)	संख्या, अंक
संडास (सं.पु.)13(क)	शौचालय
संधी (सं.स्त्री.)22(क)	मौका
संध्याकाळ (सं.स्त्री.)7(क)	शाम का वक्त, संध्यावेला
संपर्क (सं.पु.)24(ख)	संपर्क
संमती (सं.स्त्री.)12(क)	सहमती
संसार (सं.पु.)9(क)	घरगृहस्थी
साठवणे (क्रि.)20(ख)	संग्रह करना
साधणे (क्रि.)23(क)	मुमकिन होना
साधा (वि.)6(क)	सादा
सामना करणे (वा.प्र.)23(ख)	सामना करना
सारखा (वि.)20(क)	के समान
सार्थ (वि.)22(ख)	अर्थसहित
सार्वजनिक (वि.)19(क)	सार्वजनिक
सावली (सं.स्त्री.)6(क)	छाँव
सासू (सं.स्त्री.)5(क)	सास
साहित्यकृती (सं.स्त्री.)23(ख)	साहित्यकृति
साक्ष (सं.स्त्री.)22(ख)	गवाही
साक्षर (वि.)15(क)	साक्षर

सांगणे (क्रि.)1(क)13(ख)	बताना, कहना
सिद्ध करणे (क्रि.)15(क)	कर दिखाना
सिंहीण (सं.स्त्री.)20(ख)	सिंहनी
सुकणे (क्रि.)14(क)	सूखना, सूख जाना
सुखसोयी (सं.स्त्री.)12(क)13(ख)	सुख सुविधाएँ
सुचणे (क्रि.)11(क)	सूझना
सुटका (सं.स्त्री.)16(क)	छुटकारा
सुट्टी/सुटी (सं.स्त्री.)8(क)	छुट्टी
सुन्न (क्रि.वि)16(क)	सन्न
सुभाषित (सं.नपुं.)3(ख)	सुभाषित, शिक्षाप्रद कथन
सुरळीत (वि.)16(क)	बिना किसी बाघा के
सुरुवात (सं.स्त्री.)21(क)	शुरुवात
सुरू करणे (क्रि.)20(क)	शुरु करना
सुरु (वि.)20(क)	शुरु
सुलभ (वि.)15(क)	आसान
सुवास (सं.पु.)5(ख)	खुशबू
सुशोभित (वि.)9(ख)	सुशोभित, सजा हुआ
सुळसुळाट (सं.पु.)7(ख)	बडी संख्या में
सूचना (सं.स्त्री.)4(क)	सुझाव
सूज (सं.स्त्री.)14(क)	सूजन
सोडवणे (क्रि.)24(क)	सुलझाना, छुडाना
सोनार (सं.पु.)2(ख)	सुनार
सोनेरी (वि.)11(क)	सुनहरा
सोय (सं.स्त्री.)6(क)	इंतजाम
स्तब्ध (वि.)17(ख)	स्तब्ध, चुपचाप
स्थळ (सं.नपुं.)9(क)	रिश्ता
स्थायिक होणे (क्रि.)18(क)	बस जाना
स्थिती (सं.स्त्री.)17(ख)	स्थिती
स्वच्छ (वि.)2(क)	साफ
स्वतः (क्रि.वि.)9(क)21(क)	खुद
स्वतंत्र (वि.)9(क)13(क)	अलग
स्वप्ने रंगवणे (वा.प्र.)11(क)12(क)	सपने संजोना
स्वयंपाक (सं.पु.)12(क)	पाक कला
स्वयंपाकघर (सं.नपुं.)13(क)	रसोईघर

स्वरूप (सं.नपुं.)23(क)	रूप, स्वरूप
स्वर्ग दोन बोटे उरणे (वा.प्र.)13(ख)	स्वर्ग दो उंगलियों के दुरीपर होना, स्वर्गिय आनंद होना
स्वस्त (वि.)2(ख)13(ख)	सस्ता
स्वार्थी (वि.)23(ख)	स्वार्थी, खुदगर्ज

ह

हगवण (सं.स्त्री.)12(ख)	दस्त
हतबल होणे (वा.प्र.)20(ख)	लाचार हना
हमखास (क्रि.वि.)19(क)	जरूर, निश्चय ही
हरभरा (सं.पु.)2(क)	चना
हल्ली (क्रि.वि)8(ख)	आजकल, अभी
हवा (वि.)2(क)9(ख)	चाहिए
हस्तलिखित (सं.नपुं.)15(ख)	हस्तलिखित
हस्तव्यवसाय (सं.पु.)7(ख)	हस्तउद्योग
हळूहळू (क्रि.वि)2(क)	धीरे धीरे
हा (सर्वनाम)1(क)2(क)	यह
हात पिवळे करणे (वा.प्र.)9(क)	हाथ पीले करना, शादी करना
हातभार लावणे (वा.प्र.)7(ख)	हाथ बँटाना
हाताबाहेर (क्रि.वि.)16(ख)	हाथसे निकलना, पहुँच के बाहर
हाताळणे (क्रि.)8(ख)	निबटाना
हाल (सं.पु.)12(क)	तकलीफ
हाल कुत्रा खात नाही (वा.प्र.)12(ख)	कुत्ते से भी बदतर
हिरवागार (वि.)6(क)	हराभरा
हिशेब (सं.पु.)15(क)	हिसाब
ही (अ.)1(क)	भी
हृदयाला भिडणे (वा.प्र.)19(ख)	हृदय छू लेना
हो हो (क्रि.वि.)1(क)	हां, हां

क्ष

क्षण (सं.पु.)14(ख)16(ख)	पल

मराठी संख्याएँ

१	एक
२	दोन
३	तीन
४	चार
५	पाच
६	सहा
७	सात
८	आठ
९	नऊ
१०	दहा
११	अकरा
१२	बारा
१३	तेरा
१४	चौदा
१५	पंधरा
१६	सोळा
१७	सतरा
१८	अठरा
१९	एकोणीस
२०	वीस
२१	एकवीस
२२	बावीस
२३	तेवीस
२४	चोवीस
२५	पंचवीस
२६	सव्वीस
२७	सत्तावीस
२८	अठ्ठावीस
२९	एकोणतीस
३०	तीस
३१	एकतीस
३२	बत्तीस
३३	तेहेतीस
३४	चौतीस
३५	पस्तीस
३६	छत्तीस
३७	सदतीस
३८	अडतीस
३९	एकोणचाळीस
४०	चाळीस
४१	एकेचाळीस
४२	बेचाळीस
४३	त्रेचाळीस
४४	चव्वेचाळीस
४५	पंचेचाळीस
४६	शेहेचाळीस
४७	सत्तेचाळीस
४८	अठ्ठेचाळीस
४९	एकोणपन्नास
५०	पन्नास
५१	एकावन्न
५२	बावन्न
५३	त्रेपन्न
५४	चौपन्न
५५	पंचावन्न
५६	छपन्न
५७	सत्तावन्न
५८	अठ्ठावन्न
५९	एकोणसाठ
६०	साठ
६१	एकसष्ट
६२	बासष्ट
६३	त्रेसष्ट
६४	चौसष्ट
६५	पासष्ट
६६	सहासष्ट
६७	सदुसष्ट
६८	अडुसष्ट
६९	एकोणसत्तर
७०	सत्तर
७१	एकाहत्तर
७२	बहात्तर
७३	त्र्याहत्तर
७४	चौऱ्याहत्तर
७५	पंचाहत्तर
७६	शाहत्तर
७७	सत्त्याहत्तर
७८	अठ्ठ्याहत्तर
७९	एकोणऐंशी
८०	ऐंशी
८१	एक्याऐंशी
८२	ब्याऐंशी
८३	त्र्याऐंशी
८४	चौऱ्याऐंशी
८५	पंचाऐंशी
८६	शहाऐंशी
८७	सत्त्याऐंशी
८८	अठ्ठ्याऐंशी
८९	एकोणनव्वद
९०	नव्वद
९१	एक्याण्णव
९२	ब्याण्णव
९३	त्र्याण्णव
९४	चौऱ्याण्णव
९५	पंचाण्णव
९६	शहाण्णव
९७	सत्त्याण्णव
९८	अठ्ठ्याण्णव
९९	नव्याण्णव
१००	शंभर

याप्रमाणे एक शून्य वाढवत नेऊन

१००	शंभर
२००	दोनशे
३००	तीनशे
४००	चारशे
५००	पाचशे
६००	सहाशे
७००	सातशे
८००	आठशे
९००	नऊशे
१,०००	हजार (सहस्त्र)
१०,०००	दहा हजार (दशसहस्त्र)
१,००,०००	लाख (लक्ष)
१०,००,०००	दहा लाख (दशलक्ष)
१,००,००,०००	कोटी
१०,००,००,०००	दहाकोटी (दशकोटी)
१,००,००,००,०००	अब्ज
१०,००,००,००,०००	खर्व
१,००,००,००,००,०००	निखर्व
१०,००,००,००,००,०००	महापद्म
१,००,००,००,००,००,०००	शंकू
१०,००,००,००,००,००,०००	जलधी
१,००,००,००,००,००,००,०००	अंत्य
१०,००,००,००,००,००,००,०००	मध्य
१,००,००,००,००,००,००,००,०००	परार्ध